आधुनिक चीनी कहानियां

संपादक: क. म. पाणिक्कर

अनुवादक: शिवदानसिंह चौहान, विजय चौहान

आधुनिक चीनी कहानियाँ

सम्पादक

क० म० पानीक्कर

अनुवादक

शिवदानसिंह चौहान

विजय चौहान

दिल्ली

रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स

प्रकाशक
रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
४८७२, चाँदनी चौक,
दिल्ली

मूल्य
छः रुपए आठ आने

बालकृष्ण, एम० ए० द्वारा युगान्तर प्रेस, डफरिन पुल, दिल्ली में मुद्रित

आभार-स्वीकार

जिन लेखकों की कहानियाँ इस संग्रह में ली गई हैं और जो कुल मिलाकर आधुनिक चीन का सम्यक् चित्र उपस्थित करती हैं, उनके प्रति सम्पादक अपना आभार प्रकट करना कर्त्तव्य समझता है। जिन मित्रों ने इन कहानियों के चुनाव और सम्पादन में सहायता दी है, विशेषकर पीकिंग विश्वविद्यालय के प्रो० योग चेन-शेंग और प्रो० चांग फेंग-चुआन के प्रति हम आभारी हैं जिनके चीनी साहित्य के विशद् ज्ञान पर आधारित परामर्श अत्यन्त उपयोगी रहे हैं। साथ ही हम प्रो० और श्रीमती विलियम एम्सन, श्री और श्रीमती डेरेक ब्रायन, और श्री एडवर्ड यूड के प्रति भी कृतज्ञ हैं जिनके विचारोत्तेजक सुझावों और मित्रवत् सहयोग से हमने लाभ उठाया है।

जनवादी चीनी सरकार के नई दिल्ली स्थित दूतावास के प्रति भी हम कृतज्ञ हैं जिसने इस पुस्तक के कवर पेज का डिजाइन बनाने में मदद देकर हमें उपकृत किया है।

विषय-सूची

प्रस्तावना

चीन में साम्यवादी क्रान्ति की सफलता और एक जनवादी सरकार की स्थापना से समूचे विश्व की आँखें उस देश पर केन्द्रित हो गई हैं। लेकिन चीन की जनता के बारे में बाहर के लोगों की जानकारी अभी शून्य के ही बराबर है, जब कि इस क्रान्तिकारी युग में चीनी जनता के रहन-सहन, रीति-रिवाज और दृष्टिकोण में तीव्र परिवर्तन होते रहे हैं। इस लिए इन कहानियों का संग्रह इस विश्वास के आधार पर ही किया गया है कि स्वयं चीनी लेखक ही यह बता सकते हैं कि उनकी जनता के सामने कौन-कौन सी समस्याएँ हैं और उन्होंने उनका समाधान कैसे खोजा है।

वैसे तो इन कहानियों का चुनाव उनकी अपनी श्रेष्ठता के आधार पर किया गया है, पर साथ ही यह ध्यान भी रखा गया है कि कुल मिला कर वे सन् १९११ की क्रान्ति से लेकर चीन में अब तक घटित होने वाले परिवर्तनों का सम्यक् चित्र उपस्थित कर सकें। यह अनुमान न किया जाय कि एक पुस्तक के अन्दर ही समग्र चित्र उपस्थित किया जा सकता है, केवल इस बात का भरसक प्रयत्न किया गया है कि यह यथासाध्य अधिक से अधिक प्रतिनिधि संकलन बन सके।

हमें लू सुन से ही प्रारम्भ करना स्वाभाविक लगा, क्योंकि उन्होंने ही अपनी मौलिक कहानियों की रचना करके जन-भाषा में आधुनिक चीनी साहित्य को अपने विकास पथ पर अग्रसर किया। उनमें से उनकी तीन कहानियां यहां संग्रहीत हैं। निर्ममता-पूर्वक उन्होंने अपने

व्यंग्यास्त्र से चीन की उन्नति में बाधक कन्फ्यूशियस द्वारा प्रतिपादित रूढ़िबद्ध आचरणशीलता की जड़ों पर कुठाराघात किया। कन्फ्यूशियस के नियमों के आधार पर टिकी पारिवारिक व्यवस्था के बन्धनों के विरुद्ध, जिन्होंने चीन को मौत जैसी अचलता के शिकंजे में जकड़ रखा था, उनका क्रोध भड़क उठा, जिसकी झलक हमें उनकी कहानी 'एक पागल की डायरी' में मिलती है। इस कहानी में उन्होंने इस पारिवारिक व्यवस्था को नरभक्षी धर्म के रूप में चित्रित किया है। इसी विषय का चित्रण किंचित कम आक्रोशपूर्ण और अधिक हास्यमय रूप में और इस प्रकार संभवतः कम स्मरणीय शब्दों में अपनी दूसरी कहानी 'साबुन की टिक्की' में किया है।

चीनी लोगों की एक बड़ी कमजोरी यह है कि अपना सब कुछ गँवा कर भी वे अपनी 'मर्यादा' का ढोंग बनाये रखते हैं। लू सुन की लेखनी की तीक्ष्ण-धार इस विषय पर भी खूब चली। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा यह दिखाया कि यह भावना मिथ्याभिमान और मनमोदक खाते रहने की खोखली प्रवृत्ति के संयोग से पैदा होती है, और यदि लोग इस भावना में डूबे रहे तो जनता का कभी उद्धार न होगा, वह उन्हीं दुखदायी जीवन-परिस्थितियों में सदा के लिए फँसी रहेगी, जिनमें उसका जन्म हुआ है। एक व्यक्ति की यातनाओं के प्रति दूसरों की उपेक्षा और अपहेलना पाकर यह प्रवृत्ति अकर्मण्यता पैदा करती है। लू सुन की सर्वश्रेष्ठ कहानी, 'आह क्यू की सच्ची कहानी, में यही केन्द्रीय विचार है। किन्तु चूँकि 'आह क्यू की सच्ची कहानी' के लिए पूरी पुस्तक का कलेवर चाहिए, इसलिए उसका सन्देश 'कुँग-ई-ची' के द्वारा इस संग्रह में दिया गया है। हमने अपने पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखकर इस कहानी का नाम बदल कर 'कुँग किस लिए ?' कर दिया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि लू-सुन ने अपनी कृतियों के द्वारा जन-भाषा में चीनी साहित्य के विकास और चीनी क्रान्ति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उनसे लेकर चाओ शू-ली तक पहुँचने में कई मंजिलें

गुज़र जाती हैं, लेकिन इन मंज़िलों की दिशा एक है, उनके बीच एक स्वाभाविक विकास-सूत्र की कड़ी पिरोई हुई है। लू सुन ने उस विजय के लिए झाड़झंखाड़ काट कर मार्ग तैयार किया जिसके प्रतीक आज चाओ शू-ली हैं। लू सुन की कटुता चाओ शू-ली के हास्य-विनोद में परिणत हो गई है, जो खिली हुई धूप के समान पाठक के हृदय को गरमाता है। सर्वहारा क्रान्ति की विजय अभी तक पूरी तरह मजबूत नहीं हो पाई है, संघर्ष जारी है, लेकिन कृषि-सुधार की सर्वव्यापी चेष्टा, सामन्ती अनाचारों के अन्त और विवाह की समस्या पर अधिक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास ने तरुण स्त्री-पुरुषों के लिए सुख पूर्ण भविष्य की संभावनाओं के द्वार खोलकर इस बात का विश्वास पैदा कर दिया है कि जो लोग अब तक बन्धन-ग्रस्त, कुँठित, शोपित और पीड़ित थे, उनका भविष्य उज्ज्वल है।

विदेशों में लोग चीन की क्रान्ति को कहीं ग़लत न समझ बैठें, इस लिए हमारा सुझाव है कि चाओ शी-ली को चीन का नेक प्रतिनिधि समझा जाय, क्योंकि उनकी रचनाओं में कहीं भी प्रतिहिंसा या प्रतिकार की भावना का लेश भी नहीं है। और यदि इस भावना की कहीं कोई छाया आ भी गई है तो वह उतनी ही हानि-हित है जितनी चेन-शेंग की कहानी में। 'ली यू-त्साई के गीत' नाम की कहानी में हमें बताया गया है कि बुरे जमीन्दारों का दमन ज़रूरी है और 'स्याओ एर्र-ही का विवाह' नाम की कहानी में बताया गया है कि अन्ध विश्वासों का मखौल उड़ाया जाना चाहिए, लेकिन इनमें उन सब के लिए भी आशा का सन्देश है जो अपने पुराने तौर-तीरके छोड़कर अपना सुधार करने और एक नये जनवादी चीन का निर्माण करने के लिए तत्पर हैं।

तो, आशावाद ही नये चीन का उदान्त स्वर है, जिस तरह उदासी से भरा निराशावाद इससे पूर्व का स्वर था। 'नन्हे हुआन की व्यथा' नाम की कहानी में नन्हे बालक की मूक निरुपायता, 'अतीत' में व्यक्त कुंठा भाव, 'लिन स्टोर' में विपरीत परिस्थितियों के विरुद्ध विकट आशाहीन संघर्ष

और 'सींग वाला चाँद' की कटुता की तुलना 'जब मैं लाल आकाश वाले गाँव में थी' की आशावादिता, धरती में सुरंगे बिछी हैं ! सावधान !' के आत्म निर्भर विश्वास और चाओ शू-ली की कहानियों के सरल हास्य, विनोद, उज्ज्वल विवेक, और संतुलन से कीजिए जिनसे इस संग्रह का अन्त होता है। आशावाद का यह स्वर वर्तमान पाश्चात्य साहित्य में यदा-कदा ही सुनने को मिल पाता है।

चीन के सर्वहारा लेखक वर्तमान चीन के हैं, किन्तु यह समझने के लिए कि वे क्या कहना चाहते हैं, यह ज़रूरी है कि उनसे तुरन्त पूर्व के लेखकों का उल्लेख किया जाय। और ऐसे लेखक जैसे माओ तुन, जो वर्तमान संस्कृति मंत्री हैं और लाओ शी जो अखिल चीन लेखक संघ के सब से प्रमुख सदस्य हैं, हमें वर्तमान और वर्तमान से पूर्व के बारे में प्रामाणिक रूप से बता सकते हैं।

पा चिन जो प्रधानतः उपन्यासकार हैं और कुओ-मो-जो चीन की जनवादी सरकार के उप-प्रधान मंत्री हैं और चीन की जन-भाषा के विख्यात कवि हैं, इन दोनों प्रसिद्ध लेखकों की कहानियों में से चुनाव करने की कठिनाई के कारण, हमें खेदपूर्वक उन्हें इस संग्रह में नहीं ला सके हैं। फिर भी, ऐसी आशा है कि यह संग्रह इतना व्यापक है कि आधुनिक चीन की एक अंधेरी रात और एक शुभ्र दिन का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ है।

पीकिंग क० म० पानीक्कर

लू सुन

(१८८१–१९३६)

लू सुन, कहानीकार, अनुवादक, निबन्धकार और विद्वान् लेखक चाऊ शू-जेन का साहित्यिक नाम है। इनके नाम का सही उच्चारण तो लू सुन है, लेकिन इन दो शब्दों को लू शुन, और लूसिन भी लिखा जाता है। इनका जन्म ३ अगस्त (१८८१) को शाओसिंग के एक विद्वान् के घर में हुआ था। लू सुन अभी तेरह वर्ष के ही थे कि उनके परिवार पर भारी मुसीबत आ पड़ी और कुछ वर्ष बाद जब इनके पिता की मृत्यु हुई तो इनकी माँ बड़ी मुश्किल से इन्हें शिक्षा-प्राप्ति के लिए नानकिंग के नौसेना विद्यालय में भेज सकीं। छः महीने के बाद इनका तबादिला खनिज और रेलवे के स्कूल में हो गया और वहाँ से डिग्री प्राप्त कर लेने पर उन्हें आगे पढ़ने के लिए सरकारी छात्रवृत्ति देकर जापान भेजा गया। यह सोचकर कि चीन की चिकित्सा-प्रणाली दकियानूसी और अपर्याप्त है, वे दो साल तक वहाँ डाक्टरी पढ़ते रहे। लेकिन रूस-जापान युद्ध के बीच एक घटना घटी, जिससे उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि चीन को एक नये जीवन की आवश्यकता है, चिकित्सा-विज्ञान तो उसका अंगमात्र है। इसके बाद से उन्होंने चीनी जनता को जागृत करने के लिए साहित्य के शक्तिशाली अस्त्र को अपनाया।

उनके प्रारम्भिक प्रयत्नों में युरोप के उन छोटे देशों की कहानियों का संकलन तथा अनुवाद था, जिनकी जनता को दमन और अत्याचार सहना पड़ रहा था।

विदेश में शिक्षित अनेक दूसरे विद्यार्थियों की तरह चीन वापस लौटने पर केवल अध्यापन-क्षेत्र ही उनके लिए खुला था। लेकिन १९१२ में मंचू वंश को पलटने में क्रांति की सफलता के बाद उन्होंने शिक्षा सचिवालय में नियुक्त होना स्वीकार कर लिया और नई सरकार के पेकिंग जाने पर वे क्रमशः पेकिंग के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय ट्रेनिंग युनिवर्सिटी तथा महिला युनिवर्सिटी में चीनी साहित्य के अध्यापन का कार्य करते रहे।

लू सुन की साहित्यिक सरगर्मी ४ जुलाई के प्रसिद्ध आन्दोलन से लगभग एक वर्ष पहले शुरू हुई। उस समय की लिखी कहानियों के कारण उन्हें आधुनिक चीनी-साहित्य में ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ। 'एक पागल की डायरी' नामक कहानी 'नवयुवक' पत्र में मई १९१८ में प्रकाशित हुई। इस कहानी को तत्काल सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि उस समय तरुण-वर्ग के लिए कन्फ्यूशियस द्वारा प्रचलित परिवार-व्यवस्था के बंधन असहनीय हो गए थे। उसके बाद और अनेक क्रांतिकारी विचारों की कहानियाँ प्रकाशित हुई। इनमें से 'आह क्यू की सच्ची कहानी' लेखक की सर्वोत्तम कृति मानी जाती है। यह कहानी 'चेन पाओ' के साहित्य-संस्करण में दिसम्बर १९२१ से धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई थी।

१९१८ से १९२५ तक में लू सुन ने २६ कहानियाँ लिखीं, जिनका संग्रह दो भागों में 'नान हान' (क्रन्दन) और 'पा-न हुआँग' (हिच-किचाहट) के शीर्षकों से प्रकाशित हुआ।

१९२५ में महिला विश्वविद्यालय की छात्राओं की एक हड़ताल में विद्यार्थियों का पक्ष लेने के कारण लू सुन को नौकरी से अलग होना पड़ा। अगले वर्ष वे उग्र विचारों वाले अन्य कई अध्यापकों समेत चीनी-साहित्य के प्रोफ़ेसर बन कर अमोय चले गए। कुछ महीनों बाद वे कैन्टन गए, जो उस समय चीन के क्रांतिकारी आन्दोलन का केन्द्र था। वहाँ वे सुन-यात-सेन विश्वविद्यालय के अधिपति (डीन) नियुक्त किये गए।

१९२७ में शंघाई जाकर उन्होंने क्रांतिकारी साहित्य के प्रश्न पर

'क्रयेटिव सोसायटी' तथा 'सुन सोसायटी' से भीषण संघर्ष शुरू कर दिया। उस समय से वे साहित्य-जगत् की सरगर्मियों में अग्रणी रहने लगे और विषम परिस्थितियों के निर्मम तर्क ने उनका यह विश्वास और भी दृढ़ कर दिया कि साम्यवादी क्रांति की सफलता के लिए ऐसे सर्वहारा साहित्य की आवश्यकता है, जो शस्त्र का काम दे सके। १९३० में वाम-पक्षी लेखकों की 'चाईना लीग' में शामिल होकर आपने कई वामपंथी पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे, जो छपने के फ़ौरन बाद ही कुओमिन्तांग सरकार द्वारा ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर दिये गए।

१९३६ में, अपनी लेखनी द्वारा क्रांति के उद्देश्यों के लिए अविरल संघर्ष करते हुए शंघाई में लू सुन का देहान्त हो गया।

समकालीन चीनी आलोचक लू सुन के क्रांतिकारी लेखों को ऊँचा स्थान देते हैं, लेकिन विदेशी पाठकों के लिए उनका महत्त्व लेखों की अपेक्षा कहानियों के कारण अधिक है। यह कहानियाँ अपनी मौलिकता, तीव्र व्यंग्य तथा चीनी-समाज को खोखला बनाने वाली कमज़ोरियों के गम्भीर विश्लेषण के कारण अपूर्व हैं। "चीन में सर्वहारा क्रांति क्यों आवश्यक है?" इस प्रश्न का सबसे स्पष्ट उत्तर लू सुन ने ही दिया है। प्रायः लू सुन की तुलना गोर्की से की जाती है। उनकी शैली बहुत कुछ स्विफ़्ट से मिलती-जुलती है। लू सुन ने अपनी मातृभाषा में साहित्य-रचना करके मार्ग प्रदर्शन किया। प्राचीन शास्त्रीय प्रभाव से मुक्त न होने पर भी उनकी भाषा, दैनिक बोलचाल की भाषा थी। प्राचीन अंग्रेज-लेखकों की अपेक्षा, जिनका उद्देश्य क्रांति की बजाय सुधार मात्र था, लू सुन के विचारों में क्रांतिकारी तत्वों का समावेश कहीं अधिक है। इसीलिए लू सुन को साम्यवादी क्रांति के हरावल दस्ते में शामिल किया जाता है, जो सर्वथा उचित है।

एक पागल की डायरी

दो भाई थे, जिनके नाम यहाँ देना जरूरी नहीं है। दोनों मिडिल स्कूल में मेरे घनिष्ठ मित्र थे, लेकिन चूँकि आगे चलकर हम लोगों का साथ छूट गया, इसलिए कुछ दिनों के बाद मुझे उनकी खोज-खबर की सूचना मिलनी भी बन्द हो गई। पर कुछ दिन पहले, मैंने सुना कि उन में से एक भाई सख्त बीमार है, अतः जब मैं अपने घर लौटा तो विशेष रूप से उनसे भेंट करने गया। बड़े भाई ने मेरा स्वागत करते हुए बताया कि छोटा भाई बीमार था। आने के लिए धन्यवाद देते हुए उसने मुझे फिर से विश्वास दिलाया कि रोगी अब बिल्कुल अच्छा हो गया है और सरकारी नोकरी पाने की गरज से कहीं बाहर चला गया है। इतना कह कर वह अट्टहास करके हँस पड़ा और यह बताने के लिए कि उसके भाई की बीमारी किस हद तक आगे बढ़ चुकी थी, उसने मुझे वह डायरी दिखाई जो उसने अपनी विक्षिप्त अवस्था में लिखी थी। उसका विचार था कि शायद वह उसके मित्रों के काम की हो।

डायरी लेकर मैं घर चला आया और उसको पढ़कर मुझे मालूम हुआ कि मेरे मित्र को यह वहम हो गया था कि सारा संसार उसके मार्ग में बाधा बनकर खड़ा हो गया है और उसे उत्पीड़ित देखना चाहता है। जिस भाषा में डायरी लिखी गई है वह अत्यन्त ऊबड़-खाबड़, अस्त-व्यस्त और उलझी हुई है और उसमें असंयत और अनर्गल उक्तियों की भरमार है। न उसमें लिखने की तारीखें ही दी गई हैं। रोशनाई और लिखावट

भी एक सी नहीं है। इन बातों से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि एक ही बार में यह सारी डायरी नहीं लिखी गई। चूँकि फिर भी इस डायरी में आदि से अन्त तक एक प्रकार का तर्क-सूत्र मिलता है, इसलिए मानसिक रोगों के विशेषज्ञों के सामने रखने के लिए मैं उसकी नकल उतार रहा हूँ। मैंने एक शब्द का भी कहीं हेर-फेर नहीं किया है। केवल नाम बदल दिये हैं, यद्यपि ये सारे नाम मेरे अपने गाँव के लोगों के हैं, जिन्हें बाहर की दुनिया बिलकुल नहीं जानती। किन्तु इस से मूल पाठ पर कोई असर नहीं पड़ता। जहाँ तक शीर्षक का सम्बन्ध है—रोग से मुक्त होने पर मेरे मित्र ने ही यह नाम रखा था, और मैं उसको बदलने का कोई उचित कारण नहीं देखता।

अप्रैल २
गण-राज्य का सातवाँ वर्ष
(अर्थात् १९१८)

[१]

आज बड़ी तेज चाँदनी छिटकी हुई है।

मैंने ऐसा चमकीला चाँद तीस वर्ष से देखा ही नहीं। आज इसे देख कर अपूर्व ताजगी का अनुभव किया है। फिर मुझे ख्याल हुआ कि ये तीस वर्ष एक स्वप्न की तरह ही गुज़र गये। लेकिन मुझे अत्यन्त सावधान रहना चाहिए। नहीं तो—चाओ का कुत्ता मुझे इस तरह क्यों देखता? और बार-बार।

मेरे डरने का कारण है।

[२]

आज चाँद का नामोनिशान नहीं। मुझे मालूम है कि कोई अनिष्ट कहीं पनप रहा है। आज सुबह जब मैं बाहर गया तब खूब सतर्क था। बड़े चाओ की मुख-मुद्रा अत्यन्त विचित्र हो रही थी। लगता था जैसे वह मुझसे डरा हुआ हो, और बदले में मेरे साथ कोई बुराई करने की

सोच रहा हो। और भी वहाँ छै-सात आदमी थे जो मेरे बारे में काना-फूँसी कर रहे थे। उन्हें डर था कि मैं कहीं उन्हें देख न लूँ। सड़क पर चलने वाले सारे लोग भी ऐसे ही थे। उनमें से एक व्यक्ति तो अत्यधिक खूँखार था। उसने सीधे मेरे मुख पर अपना पूरा मुँह खोलकर अट्टहास किया। यकायक चोटी से लेकर पाँव के तलवों तक मेरे अन्दर कँपकँपी दौड़ गई। मुझे मालूम है कि उनकी तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं।

लेकिन मैं भयभीत नहीं हुआ। वैसे ही सड़क पर चलता रहा। बच्चों का एक झुंड भी मेरे बारे में बातें कर रहा था। उनकी भाव-भंगी भी बड़े चाओ जैसी ही थीं। उनके चेहरे नीले पड़ गये थे। और मैंने सोचा, "नन्हे-नन्हे बच्चों से मेरी कौन-सी दुश्मनी है कि वे भी वैसे ही हो गये हैं ?" मुझ से न रहा गया और मैं चिल्लाया, "बताओ तो !" इस पर वे भाग गये।

मैंने सोचा, "बड़े चाओ से मेरी कोन सी दुश्मनी है, और सड़क पर चलने वाले राहगीरों से मेरी कौन-सी दुश्मनी है ?" केवल इतनी ही न कि बीस साल पहले मैंने श्री कू-चिऊ के बहीखाते को पैरों तले रौंद दिया था, और श्री कू-चिऊ इस पर बेहद चिढ़ गये थे। बड़े चाओ तो उनको जानते भी नहीं, लेकिन उन्होंने इस घटना के बारे में जरूर सुना होगा, और अब वे इस अपमान का बदला चुकाना चाहते हैं। उन्होंने सड़क पर चलने वाले राहगीरों को उकसा कर मेरा दुश्मन बना दिया है। लेकिन ये बच्चे, उन्हें क्या हुआ ? वे तो उस समय पैदा भी नहीं हुए थे। वह मेरी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर क्यों घूरते हैं जैसे मुझसे भय खा रहे हों और जैसे मेरी हत्या करने पर तुले हों। इससे मैं भी डर गया हूँ। अचरज और दुःख से मेरा अन्तर भर गया है।

अब समझा—उनके माता-पिता ने उन्हें ऐसा व्यवहार करने के लिए सिखा दिया है।

[३]

मुझे रात को नींद नहीं आती। इन्सान को समझने से पहले हर चीज़ की भली प्रकार से परीक्षा करनी पड़ती है।

ये लोग—कुछ को तो मजिस्ट्रेट ने शिकँजे में खड़ा रखा, कुछ के मुँह पर बड़े ज़मींदारों ने थप्पड़ मारे, कुछ की बीवियों को ज़मींदारों के छुटभय्यों ने गालियाँ दीं और लेनदारों ने बीसियों माँ-बाप को मौत के घाट उतार दिया; लेकिन इतनी मुसीबतें झेलने पर भी वे लोग कल की तरह भयभीत नहीं थे—न ही क्रोध से वे उतने आगबबूला हुए थे।

इनमें सब से असाधारण कल सड़क वाली वह औरत थी। उसने अपने बेटे को थप्पड़ मार कर कहा, "जी करता है, तुझे खा जाऊँ, और अपने ग़ुस्से को ठंडा करूँ।" लेकिन बोलते वक्त वह मेरी ओर देख रही थी। मैं अपने मन के भाव को न छिपा सका। उसी समय भयभीत चेहरों वाले लोगों ने दाँत निकाल कर ज़ोर से हँसना शुरू कर दिया। तब चेन लाओ ब्रू मुझे घसीट कर घर ले गया।

वह मुझे घसीट कर घर ले गया। घर पर लोगों के व्यवहार से ऐसा मालूम होता था जैसे वे मुझे जानते ही न हों। उनके चेहरे और लोगों की तरह ही थे। जब मैं पढ़ने के कमरे में घुसा तो उन्होंने बाहर से ताला बन्द कर दिया जैसे लोग किसी मुर्ग़ी या बत्तख़ को बाड़े में बन्द कर देते हैं, इस बात से मेरी परेशानी और भी बढ़ती जाती है।

कुछ दिन हुए जब वुल्फ गाँव के काश्तकारों ने आकर सूचना दी कि उनके ज़िले में अकाल पड़ गया है। उन्होंने मेरे भाई को बताया कि गाँव वालों ने वहाँ एक बड़े शातिर ग़ुण्डे को मारा था, जिसके बाद उनमें से कई आदमियों ने उसका पेट चीर कर उसका दिल और कलेजा निकाल लिया। अपना पौरुष बढ़ाने के लिए उन्होंने टुकड़ों को भूनकर खा लिया। इस बातचीत के बीच में ही मैं वहाँ पहुँच गया। काश्तकारों और मेरे भाई ने मुझे गन्दी निगाह से देखा। अब मुझे पता चल गया कि उन्होंने

भी मेरी ओर उसी दृष्टि से देखा था जिस दृष्टि से बाहर की भीड़-भाड़ मुझे देखती है।

इस बात का विचार करते ही चोटी से लेकर पाँव के तलवों तक मेरी कँपकँपी छूट जाती है।

जब वे उस गुण्डे का कलेजा निकाल कर हड़प गये, तो मुझे क्यों नहीं हड़प लेंगे।

सोचिये तो, उस स्त्री ने क्या कहा था, "जी करता है, तुझे खा जाऊँ।" और फिर इस बात को फीके चेहरों वाली भीड़ के बत्तीसी खोल कर अट्टहास करने के साथ और इन काश्तकारों की कहानी के साथ मिलाकर देखिये, निश्चय ही उनके शब्दों में कोई गुप्त संकेत छिपा था। उनके शब्दों में ज़हर भरा था और उनके अट्टहास में छुरियाँ छिपी थीं। उनकी चमकती हुई श्वेत दँतावली इस बात का सबूत थी कि वे आदम ख़ोर दरिन्दे हैं।

अब, जहाँ तक मेरा विचार है, मैं शातिर गुण्डा नहीं हूँ, लेकिन चूँकि मैंने श्री कू-चिऊ के बहीखाते को पैरों तले रौंदा था, इसलिए इस बात को जोर देकर कहना मेरे लिए कठिन है। ऐसा लगता है कि उनके कई विचारों का तो मैं बिल्कुल अनुमान नहीं लगा पाता। इसके अलावा वे साफ-साफ क्रुद्ध होकर मेरे मुँह पर मुझे भेड़िया कहते हैं। मुझे याद है, जब मेरे बड़े भाई मुझे निबन्ध लिखना सिखाया करते थे। तब किसी भले व्यक्ति की भी अगर मैं नुक्ताचीनी करता तो वे मेरे निबन्ध के नीचे समर्थन की लकीर खींच देते; और अगर मैं दुष्ट लोगों के प्रति सहृदयता दिखाता तो वे टिप्पणी करते, "तुम साधारण जनसमूह से भिन्न होने के कारण आश्चर्यजनक हो।" मैं उनके विचारों को किस प्रकार भाँप सकता हूँ, विशेषकर जब वे किसी को हड़पने के लिये तरह-तरह के मुँह बना रहे हों।

अब हरेक चीज को समझने से पहले उसकी परीक्षा करना आवश्यक है। आदि काल से लेकर अब तक इन्सान अक्सर हड़पे जाते रहे हैं।

मुझे याद है लेकिन साफ़ तौर से नहीं। मैं इसे एक इतिहास की पुस्तक में खोज रहा था लेकिन उसमें कोई तारीखें नहीं थीं; हर पृष्ठ पर केवल दान, न्यायशीलता, नैतिकता और अच्छाई" आदि अनर्गल शब्द लिखे थे, मैं करवटें बदलता रहा, लेकिन नींद नहीं आई, इससे पहले कि मैं पंक्तियों के बीच लिखे शब्दों को पढ़ सकता, मैंने ध्यानपूर्वक किताब को जाँचने में आधी रात गुज़ार दी। पूरी किताब केवल दो शब्दों से भरी थी, 'आदम-खोरी।"

किताब के वे सारे शब्द, और वे सारी बातें जो काश्तकारों ने कही थीं, अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोल कर हँस रही हैं और मेरी ओर अजब दृष्टि से देख रही हैं।

मैं भी तो एक आदमी हूँ। वे मुझे हड़पना चाहते हैं।

[४]

आज सुबह जब मैं चुपचाप बैठा था, चेन लाओ-वू ने खाना भिजवाया। एक कटोरी सब्ज़ी और एक कटोरी उबली हुई मछली। मच्छली की आँखें सफ़ेद और सख़्त थीं। उसका मुँह आदमखोरों की तरह खुला हुआ था। कुछेक कौर खाने के बाद, मुझे पता नहीं चला कि वह फिसलनी चीज मछली थी या आदमी, इसलिये मैंने सब कुछ फर्श पर उगल दिया।

मैंने कहा, "लाओ-वू, मेहरबानी करके मेरे भाई से कहो कि मैं सख्त ऊब गया हूँ और बाग़ में घूमना चाहता हूँ।" लाओ-वू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बाहर चला गया। लेकिन कुछ देर बाद लौट कर उसने दरवाजा खोल दिया।

मुझे सचमुच नहीं मालूम था, कि वे लोग मेरे साथ क्या करने जा रहे हैं। लेकिन मैं यह जानता था कि वे अपने पँजे ढीले नहीं करेंगे, मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरा भाई एक बूढ़े को मेरे पास लाया, जो आहिस्ता-आहिस्ता मेरी ओर आ रहा था। उसे डर था कि मैं उसकी आँखों में

छिपे भयानक भावों को न देख लूँ इसलिए वह ज़मीन पर आँखें गड़ाये चल रहा था। उसने कनखियों से मेरी ओर देखा। मेरे भाई ने कहा, "आज तो तुम काफी अच्छे दीख रहे हो।" मैंने कहा, "हाँ" मेरे भाई ने कहा, "हमने तुम्हें ठीक करने के लिए डाक्टर हो को बुलाया है।" मैंने कहा, "बहुत अच्छा।" क्या वे सोचते थे कि मैं नहीं जानता कि वह बूढ़ा छद्मवेश में एक जल्लाद था ? मेरी नाड़ी देखने के बहाने वह यह जानना चाहता था कि मैं उसकी रस्सी के लिये पर्याप्त मोटा हूँ या नहीं, और इस नेक काम के लिए उसे एक रोटी का टुकड़ा इनाम में मिलेगा। लेकिन मैं डरा नहीं। हालाँकि मैं उन लोगों की तरह आदमखोर नहीं हूँ, तो भी मेरी हिम्मत उनसे ज्यादा है। मैं अपनी दोनों मुट्ठियाँ बाँध कर इस बात का इन्तज़ार करने लगा कि देखें वह क्या करते हैं। बूढ़ा काफी देर तक चुपचाप आँखें मूँद कर मेरी नाड़ी देखता रहा। वह बहुत समय तक चुप रहा। फिर उसने अपनी शैतान की सी आँखें खोलीं और बोला, "दुनिया भर की बातें मत सोचा करो। कुछ दिनों के लिये चुपचाप रह कर अपना स्वास्थ्य सुधारो, तो तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे।"

"दुनियाँ भर की बातें मत सोचा करो ! चुपचाप रह कर अपना स्वास्थ्य सुधारो !" अगर स्वास्थ्य सुधरते-सुधरते मैं मोटा हो गया तो इन लोगों के मज़े रहेंगे। मेरे हाथ क्या आयेगा ? मैं 'बिल्कुल ठीक' कैसे हो पाऊँगा ? यह लोग जो दूसरों को हड़पना चाहते हैं, सामने से मारने की हिम्मत नहीं रखते, अपने इरादों पर पर्दा डाल कर रखते हैं।—ये मुझे हँसा-हँसा कर मार डालेंगे। मैं अपने पर काबू न पा सका। मुझे हँसी के फव्वारे छूटने लगे। मैं पूर्ण रूप से सुखी था। मैं जानता था कि मेरी हँसी में दलेरी और सच्चाई की भावना भरी है। मेरा भाई और बूढ़ा आदमी अवाक् रह गये। आखिर मेरी दलेरी और सच्चाई की भावना ने उन्हें पराजित कर दिया था।

लेकिन अगर मुझ में हिम्मत होगी तो मुझे हड़पने के लिये उनका

लालच और भी बढ़ेगा क्योंकि वे मेरी हिम्मत को खुद हज़म करना चाहेंगे। बूढ़ा आदमी दरवाज़े से बाहर चला गया, लेकिन थोड़ी दूर जाने पर उसने धीमी आवाज़ में मेरे भाई से कहा, "जल्दी ले जाओ" मेरे भाई ने सर हिला कर हामी भरी। अच्छा तो आप भी इस में शामिल हैं। हालांकि मुझे इस रहस्योद्‌घाटन की उम्मीद नहीं थी, तो भी मुझे हैरानी नहीं हुई। मेरा सगा भाई भी मुझे हड़पने की साज़िश में शामिल है!

वह आदमख़ोर दानव मेरा भाई है!

मैं एक आदमख़ोर दानव का भाई हूँ!

अगर वे मुझे हड़प भी लें, तो भी मैं एक आदमख़ोर दानव का भाई रहूंगा।

[४]

फिर मैंने सोचा कि मान लो कि वह बूढ़ा छद्मवेश में जल्लाद नहीं था बल्कि सचमुच का डाक्टर था—तो भी वह आदमख़ोर है। आधुनिक डाक्टरी के पितामह लो शी-चेन अपनी पुस्तक "जड़ी-बूटियों" में साफ़ लिख गये हैं कि इन्सान के गोश्त को तल कर खाया जा सकता है। क्या अब वह बूढ़ा इन्कार कर सकता है कि वह आदमख़ोर नहीं है?

और रहा मेरा भाई—मैं झूठ-मूठ ही उस पर शक नहीं करता। पढ़ाने के दिनों में एक बार उसने स्वयं कहा था कि 'इन्सान रोटी के लिये अपने बच्चे बेच सकता है।' और एक बार एक दुष्ट व्यक्ति का ज़िक्र करते हुऐ उसने कहा था कि मौत तो उसके लिये बहुत कम सज़ा है, "उसका गोश्त खाने के बाद उसकी चमड़ी की दरी बनानी चाहिये।" मैं तब बहुत छोटा था और मेरा दिल बड़ी देर तक धड़कता रहा। और उस दिन जब वुल्फ गाँव के लोगों ने इन्सान के दिल और कलेजा खाने का हाल सुनाया तो मेरे भाई को बिल्कुल

हैरानी नहीं हुई। वह लगातार सिर हिला कर हामी भरता रहा। आप इस बात से अन्दाज़ लगा सकते हैं कि वह पहले की ही तरह ज़ालिम है। अगर कोई "रोटी के लिये अपने बच्चों को बेच सकता है"—तो वह सब कुछ बेच सकता है। वह किसी को भी हड़प सकता है। पहले तो मैं उसके उपदेशों को बिना कोई प्रश्न पूछे चुपचाप सुन लेता था, लेकिन अब मैं जान गया हूँ कि मुझे उपदेश देते समय भी न सिर्फ़ उसके मुँह पर इन्सान की चर्बी पुती हुई थी, बल्कि, उसके दिल में भी लोगों को हड़पने की इच्छा समाई हुई थी।

[६]

चारों ओर अन्धेरा है! पता नहीं चलता दिन है या रात। चाओ के कुत्ते ने फिर भूँकना शुरू कर दिया है।

शेर की हिंस्रता, ख़रगोश की भीरुता, लोमड़ी की चालाकी...............।

[७]

मुझे उनके राज़ का पता चल गया है। वे मुझे एक दम से नहीं मारना चाहते। उनकी मजाल नहीं क्योंकि वे इसके परिणाम से डरते हैं। इसीलिये अब वे इकट्ठे होकर मुझे भूल-भूलैयों में डालना चाहते हैं ताकि मैं आत्महत्या कर लूँ। अगर उस दिन सड़क पर लोगों की मुख-मुद्राओं का सम्बन्ध मेरे भाई के व्यवहार से जोड़ा जाय, तो मेरा अनुमान रुपये में पन्द्रह आना सही निकलेगा। उनकी खुशी तो इसी बात में है कि मैं कमर से अपनी रूमाली खोल कर अपने गले में फाँसी लगा कर आत्महत्या कर लूँ। मेरा दम घुट जायेगा! उन्हें कोई हत्यारा भी नहीं कहेगा और उन्हें मुँह माँगी मुराद भी मिल जायगी। निश्चय ही वे खुशी के मारे उछलेंगे। और अगर मैं डर और चिन्ता से घुल-घुल कर मर जाऊँ, तो मैं पतला हो जाऊँगा लेकिन तो भी वे खुशी से सर हिलायेंगे।

वे केवल मुर्दों का गोश्त खा सकते हैं। ज़रा मैं भी देखूँ। एक दफ़ा मैंने "लकड़बग्घा" नामक जानवर के बारे में पढ़ा था। उसका चेहरा और आँखें भयानक थीं। वह अक्सर मुर्दों का गोश्त खाता, यहाँ तक कि बड़े से बड़े हड्डी के टुकड़ों को भी निगल जाता। मुझे उसकी बात सोचते ही डर लगता है, लकड़बग्घा भेड़िये का नातेदार है और भेड़िया कुत्ते का। उस दिन चाओ का कुत्ता बार-बार मेरी ओर देख रहा था वह भी यही सोच रहा होगा। वह भी इन लोगों के साथ है और अपने हिस्से की राह देख रहा है। बूढ़े ने अपनी आँखें भले ही ज़मीन पर गड़ा रखी हों, लेकिन मुझे धोखा नहीं हुआ।

सबसे अधिक दया का पात्र तो मेरा भाई है। आखिर वह भी एक इन्सान है। फिर उसे डर क्यों नहीं लगता? वह मुझे हड़पने की साज़िश में क्यों शामिल है? क्या वह इस बात का आदी हो गया है, और इसको पाप नहीं समझता? या वह अपनी आत्मा के खिलाफ़, जान-बूझ कर यह पाप कर रहा है?

मैं तुम्हारे समेत सब आदमखोरों को लानत भेजता हूँ। मैं तुम्हारे समेत सब मनुष्यभक्षी दानवों को जीतूँगा।

[८]

अब उनके सामने यह सब विचार साफ़ हो गए होंगे......।

अचानक एक नौजवान मेरे नज़दीक आया। उसकी उम्र बीस से अधिक न थी। मैं उसके चेहरे को ठीक से न देख सका। लेकिन वह मुस्कुरा रहा था। उसने मुझे देखकर सिर हिलाया। उसकी मुस्कुराहट बनावटी थी। मैंने उससे पूछा, "क्या आदमखोरी अच्छी बात है?" उसने मुस्कुराकर जवाब दिया, "इस साल कोई अकाल नहीं पड़ा, फिर आदमखोरी की क्या ज़रूरत है?" मैं फ़ौरन ताड़ गया कि वह भी साज़िश में शामिल है। वह भी आदमियों को हड़पना पसन्द करता है। तब मेरी हिम्मत सौ गुना बढ़ गई।

मैंने फिर आग्रहपूर्वक उससे पूछा, "क्या यह ठीक है ?"

"इन चीजों के बारे में पूछने से क्या लाभ है ? तुम सचमुच बड़े विनोदी आदमी हो। आज कितना बढ़िया मौसम है।"

"हाँ, मौसम बहुत बढ़िया है। चाँदनी खिली हुई है। लेकिन मैं पूछता हूँ, क्या यह उचित है ?"

वह मेरे आग्रह से सोच में पड़ गया और बुड़बुड़ाकर बोला, "नहीं।"

"यह जवाब ठीक नहीं। फिर वे लोग क्यों आदमख़ोरी पर तुले हुए हैं ?"

"यह झूठ है।"

"झूठ है ! उन्होंने भेड़िया गाँव में ऐसा किया। और सब पुरानी किताबों में यह बात ताजे खून की तरह लाल स्याही से लिखी हुई है।"

डर से उसके चेहरे का रंग बदल गया। अपनी आँखों को घुमाते हुए उसने कहा, "हो सकता है यह बात सच हो। हमेशा से ही ऐसा होता आया है।"

"हमेशा से—लेकिन क्या यह उचित है ?"

"मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता। इस प्रसंग को बंद करो। इस बात पर अड़ना तुम्हारी ग़लती है।"

मैं उछल कर खड़ा हो गया और उसकी ओर टकटकी बाँधकर घूरने लगा। लेकिन वह जा चुका था। मैं सर से लेकर पाँव तक पसीने में तर हो गया। वह मेरे भाई से कितना छोटा था, तो भी वह साज़िश में शामिल है। इसके माँ-बाप ने जरूर इसे ऐसी शिक्षा दी होगी। मुझे डर है कि इसने अपने बेटे को भी यही सिखाया है। इसीलिए तो बच्चे भी मेरी ओर भयानक दृष्टि से देखते हैं।

[६]

वे और आदमियों को हड़पना चाहते हैं, लेकिन खुद नहीं चाहते कि उन्हें कोई हड़प ले। वे अपने चारों ओर सन्देह-भरी नजरों से देखते हैं—

उनकी आँखें एक दूसरे के चेहरे को भेदती नजर आती हैं।

अगर वे अपने इस विचार को छोड़ दें तो सब काम विश्वासपूर्वक कर सकते हैं। घूम-फिर कर, खाना खाने के बाद चैन से सो सकते हैं। कितनी शान्ति है ऐसा करने में। अपनी आदतों को सुधारना, ठीक वैसा ही है, जैसा दहलीज़ लाँघ कर, पहाड़ी दर्रे के पार के दृश्य का सौन्दर्य देखना।

लेकिन पिता और बेटे, भाई और बहनें, पति और पत्नियाँ, दोस्त और दुश्मन, शिक्षक और विद्यार्थी—और अजनबी—सब लोग इस साज़िश में शामिल हैं।

[१०]

आज तड़के ही उठकर मैं अपने भाई को देखने गया। वह बड़े कमरे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ आकाश की ओर देख रहा था। मैंने पीछे से जाकर उसका रास्ता रोक लिया और शान्त, गम्भीर स्वर में कहा, "भाई, मुझे आपसे कुछ कहना है।"

"कहो।" उसने जल्दी से पीछे मुड़कर, सिर हिलाते हुए जवाब दिया।

"मुझे थोड़े से शब्द ही कहने हैं, लेकिन उन्हें कहने में कठिनाई होती है, मेरा विचार है कि आदिकाल में सब जंगली लोग आदमखोर थे। बाद में उनके विचार बदल गये। उनमें से कुछेक ने मनुष्य-भक्षण छोड़ दिया। अपनी नैतिकता सुधारने की प्रबल इच्छा ने उन्हें इन्सान बना दिया—मेरा मतलब है, सच्चा इन्सान। उनमें से कुछ ने मनुष्यभक्षण को जारी रखा। वे कीड़े-मकोड़ों की तरह थे। पहले वे मछली थे, मछली से मुर्गे और मुर्गे से बन्दर—फिर बन्दर से आदमी बने, उनमें से कुछ सुधरना नहीं चाहते थे, और वे अब भी कीड़े हैं। ऐसे लोग, आदमख़ोरी न करने वालों की अपेक्षा कितने शर्मनाक और घृणित हैं! इन दो श्रेणियों में कीड़ों और बन्दरों से भी अधिक अन्तर है।

पुराने जमाने में यी-या ने अपने बेटे का गोश्त पका कर ची और चू[1] को परसा था। यह किसे मालूम था कि जब से पान-कू[2] ने ज़मीन को आकाश से अलग किया, तब से लेकर यी-या के बेटों तक लोग आदमख़ोरी करते रहे। फिर यी-या के बेटों से लेकर सू-सी-लिंग[3] तक भी यही प्रथा जारी रही और सू-सी-लिंग के बाद उन्होंने भेड़िया गाँव में आदमख़ोरी शुरू की। पिछले साल जब एक आदमी को चौराहे पर फाँसी दी गई तो एक तपेदिक का मरीज़ अपराधी के कटे हुए सिर के खून में एक रोटी का टुकड़ा भिगो कर चाट गया—उसे आशा थी कि ऐसा करने से उसका रोग दूर हो जायगा।

"अगर वे सब आदमख़ोरी करने पर तुले हैं तो मेरे भाई, आप उन्हें रोक नहीं सकते। लेकिन आप क्यों इस साजिश में शामिल हुए? ये आदमख़ोर राक्षस तो जो करें, थोड़ा है। हो सकता है वे मुझे हड़प लें, और आप को भी। और वे उसी साजिश में एक-दूसरे को भी हड़प सकते हैं। लेकिन यकायक अगर वे अपने को सुधार लें तो हर कोई चैन की साँस ले। इस हालत में भी हम विशेष रूप से स्नेह कर सकते हैं। मेरे भाई, उनका साथ छोड़ दो! उनसे कोई वास्ता मत रखो! उन्हें कह दो कि तुम मजबूर हो। मैं जानता हूँ कि तुम 'न' कह सकते हो, क्योंकि उस दिन जब काश्तकारों ने लगान कम करने की याचना की थी तो तुमने साफ़ 'न' कर दी थी।"

(१) यी-या की कहानी चुंचूँ काल की है। ची और चू प्रारम्भिक चू वंश (ई० पू० ११२२-२५५) के दो बदनाम शासक थे।

(२) पान-कू—एक पौराणिक देवी जिसने पृथ्वी को आकाश से अलग किया था।

(३) सू-सी-लिंग—छिंग वंश के अन्तिम काल में जापान से शिक्षा प्राप्त करके लौटने वाला विद्यार्थी। उसे १९११ की क्रान्ति के अवसर पर क्रान्तिकारी होने के जुर्म में हाँगचाओ में गिरफ्तार कर लिया गया था।

मेरा भाई मेरी बातों पर पहले तो उपेक्षा-पूर्वक मुस्कराता रहा। लेकिन जल्दी ही उसका चेहरा भयानक हो गया और जब मैंने साज़िश में छिपी नीयत का पर्दा फाश किया तो उसका चेहरा बिल्कुल फीका पड़ गया। बड़े दरवाजे के बाहर लोगों की भीड़ इकट्ठी थी, बड़ा चाम्रो और उसका कुत्ता भी भीड़ में शामिल थे। वे सब अपनी गर्दन ऊपर उठाए आगे सरक रहे थे। मैं कुछ लोगों को नहीं पहचान सका। लगता था कि उनके चेहरों पर नक़ाब पड़ी हुई है। लेकिन बाकी लोगों के चेहरे भयानक थे, वे अपने दाँत बाहर निकाल कर अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिए होंठ चबा रहे थे। मैं ताड़ गया कि सब उसी साजिश में शामिल हैं—वे सब आदमखोर राक्षस थे। तो भी मैं जानता था कि उनके विचार और भावनाएँ और हैं। कुछ सोचते थे कि सदा से ही ऐसा होता आया है और आदमख़ोरी में कोई बुराई नहीं। कई यह जानते हुए भी, कि यह अनुचित है, आदमख़ोरी करते थे। उन्हें अपना भंडा फूटने का डर था, इसीलिये वे मेरी बातों पर रुष्ट थे और चिढ़ रहे थे।

उसी समय मेरे भाई को भी क्रोध आया और वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया, "भागो यहाँ से! एक पागल को देखने में तुम्हें क्या मज़ा आता है?"

अब मैं उनकी एक और चाल को जान गया। अपने को सुधारने की बजाय उन्होंने और तैयारियाँ कर रखी हैं। मेरे ऊपर "पागल" की मोहर लगा दी है। मुझे खा लेने के बाद भी उनकी तारीफ ही होगी। जब काश्तकारों ने उस गुण्डे को हड़पने की बात बताई, तब भी उनका यही रुख था। यह तो उनकी पुरानी चाल है।

फिर चैन लाम्रो-चू आगबबूला होकर हमारे पास आया। लेकिन वह मुझ पर कैसे अपना रौब गाँठ सकता था? मैंने षड्यन्त्रकारियों से बात करने का आग्रह किया, "सुधर जाओ। तुम्हें दिल की तह से सुधरना चाहिए। क्या तुम्हें मालूम है कि दुनिया में आदमखोरों के लिए कोई जगह नहीं रहेगी? तुम अगर न सुधरे तो अपने आप हड़पे जाओगे।

अगर तुमने बहुत से बच्चों को जन्म दिया तो सच्चे इन्सान उन्हें जड़ से नष्ट कर देंगे। जैसे शिकारी भेड़ियों को मारते हैं। तुम्हें कीड़े-मकोड़ों की तरह तबाह किया जाएगा।"

चेन-लाओ-वू ने सब लोगों को वहाँ से भगा दिया। मेरा भाई भी पता नहीं किधर ग़ायब हो गया। चेन-लाओ ने मुझसे अपने कमरे में वापस जाने का आग्रह किया। कमरे की हालत अजब थी। छत के शहतीर और कड़ियाँ काँपने लगे। कुछ देर बाद उनका आकार बहुत बड़ा हो गया और वे मेरे ऊपर आ गिरे।

वे बड़े भारी हैं, हिलते तक नहीं। वे चाहते हैं कि मैं मर जाऊँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि वे सचमुच इतने भारी नहीं, मैं उन्हें धक्का देकर दूर हटा दूँगा। मेरा शरीर पसीने से लथपथ है। लेकिन मुझे कोई भी चिल्लाकर यह कहने से नहीं रोक सकता, "फ़ौरन सँभल जाओ। जड़ से अपना सुधार करो। यह बात जान लो कि दुनिया में आदमख़ोर लोगों को कोई जगह न होगी।"

[११]

आजकल सूरज नहीं निकलता। दरवाजा कभी नहीं खोला जाता। दिन में दो बार खाना खाने की सलाइयाँ थामते समय मुझे अपने भाई का ख्याल आया—मुझे लगा कि मेरी बहन की मृत्यु का कारण वह ही है। माँ के समय मेरी बहन केवल पाँच वर्ष की थी। बेचारी कितनी प्यारी थी! मेरी आँखों के सामने अब भी उसकी तस्वीर नाच रही है। माँ लगातार रो रही थी और भाई उसे मना कर रहा था। शायद उसकी आत्मा ने उसे धिक्कारा हो—क्योंकि उसने बहन को हड़प लिया था। अगर उसकी आत्मा उसे धिक्कारती, तो......।

मेरी बहन को मेरे भाई ने हड़प लिया। पता नहीं, माँ इस बात को जानती थी या नहीं।

माँ ज़रूर जानती होगी, लेकिन रोते समय उसने कुछ नहीं कहा।

शायद वह भी इस बात को उचित समझती हो। मुझे याद है, जब मैं पाँच वर्ष का था तब मेरे भाई ने मुझे बताया था कि माँ-बाप के बीमार होने पर एक पितृ-भक्त बेटे को चाहिए कि वह अपने शरीर में से गोश्त का टुकड़ा काट कर माँ-बाप को खिलायें। और माँ ने कभी इस बात को अनुचित नहीं कहा। अगर एक टुकड़ा खाने में कोई हर्ज नहीं तो सारे शरीर को भी हड़पा जा सकता है। लेकिन मुझे याद है, माँ का रोना सुनकर कलेजा फटता था। इसे याद करते ही मैं उदास हो जाता हूँ। कितनी विचित्र बात है।

[१२]

इस बात की कल्पना भी बर्दाश्त नहीं की जा सकती कि चार हज़ार साल से इन्सान एक दूसरे को हड़पता आया है। मुझे सिर्फ आज ही यह ख़्याल आया है कि मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी इन्हीं लोगों के साथ बिताई है। जब घर का इन्तज़ाम भाई के हाथ में था, तो मेरी बहन मर गई। क्या पता उसने चुपचाप बहन का गोश्त हमारे खाने में मिला दिया हो।

हो सकता है, अनजाने में मैं ही अपनी बहन को हड़प गया हूँ। और अब हड़पे जाने की मेरी बारी है।

मेरे पूर्वज चार हज़ार साल से आदमख़ोरी करते आए हैं। हालाँकि मुझे इतने समय तक इस बात का पता ही नहीं चला। अब मैं जान गया हूँ। सच्चे इन्सान का मिलना बड़ा मुश्किल है।

[१३]

शायद अब भी ऐसे बच्चे मौजूद हैं, जिन्होंने कभी आदमी का गोश्त नहीं चखा। इन बच्चों की रक्षा करो।

अप्रैल १९१८

कुँग-[illegible]

लू-गाँव में शराब की दुकानों का ढाँचा और जगहों की दुकानों से न्यारा था। इन सब दुकानों की खिड़कियाँ सड़क की ओर खुलती थीं। बढ़ई के त्रिकोण पैमाने की सी भद्दी खिड़कियों के पीछे पानी लगातार उबलता रहता, ताकि दिन के किसी भी समय ग्राहकों की शराब गर्म की जा सके। मज़दूर लोग दोपहर को या शाम को अपने काम से लौट कर ठर्रे के गर्म गिलास पर चार तांबे के सिक्के खर्च करते। यह बीस साल पहले की बात है—(अब तो एक गिलास ठर्रा शराब दस सिक्कों से कम में नहीं मिलती) और खिड़की के बाहर खड़े होकर वे घर जाने से पहले गर्म-गर्म ठर्रे के घूँट पेट में उँड़ेलते। शराब को हज़म करने के लिये वे एक सिक्का और खर्च करके उबले बाँस की टहनियों की या सोयाबीन के साक की लबालब भरी एक तश्तरी खरीद सकते थे। एक दर्जन सिक्के में तो गोश्त की एक तश्तरी मिलती थी, लेकिन ऊँची फतूही पहनने वाले ग्राहकों के लिये, जो मजदूर थे, यह विलासिता की वस्तु थी। बहुत कम लोगों के पास इसे खरीदने के लायक पैसे थे। सिर्फ लम्बे चोगे वाले लोग अन्दर घुसकर गोश्त और शराब लाने का हुक्म देते, और आराम से बैठ कर खाते-पीते।

ग्यारह वर्ष की आयु से ही मैं गाँव के बाहर स्थित 'सदाबहार' धर्मशाला में नौकर था। मालिक का ख्याल था कि मैं मूर्ख हूँ और अन्दर बैठने वाले लम्बे चोगे वाले संभ्रान्त लोगों का हुकम बजा लाने के

अयोग्य हूँ। इसलिये उसने मुझे दुकान के बाहरी हिस्से में भाग-दौड़ के काम पर तैनात किया था। लेकिन ऊँची फतूही वाले ग्राहक अपने मित्रता-पूर्ण व्यवहार के बावजूद भी बाल की खाल निकालते और नाक में दम कर देते। वे हमेशा अपनी आँखों के सामने मिट्टी के घड़े में से शराब निकलवाते और काँसे के सर्तबान की जाँच करते कि कहीं उसमें पानी तो नहीं—फिर जब शराब के बर्तन को गर्म पानी में रख दिया जाता तो उन्हें तसल्ली होती कि उन्हें लूटा नहीं गया। उनकी कड़ी निगरानी के नीचे शराब में पानी मिलाना खेल नहीं था, इसलिये कुछ दिनों के बाद मालिक ने फैसला किया कि मैं इस काम के लायक नहीं हूँ। खुशकिस्मती से एक बड़े आदमी ने मेरी सिफारिश की थी, इसलिये मुझे नौकरी से बर्खास्त करने की बजाय सिर्फ शराब को गर्म करने का बेहूदा काम सौंपा गया।

इसके बाद मुझे दिन भर खिड़की पर खड़े रहकर एक ही काम करना पड़ता। हालाँकि मेरी नौकरी नहीं छूटी थी तो भी मैं ऊब गया था। मालिक के व्यवहार में धौंस थी और उसके चेहरे से बदमिजाजी टपकती थी। ग्राहकों के फूहड़पन से भी मैं तंग आ गया था। मेरी खुश होने की हिम्मत नहीं होती थी। दरअसल वहाँ के वातावरण में नीरसता थी। सिर्फ कुँग-किसलिये के आने से दुकान में हँसी की आवाज आती। इसीलिए मुझे वह अच्छी तरह से याद है।

कुँग-किसलिये ही एक ऐसा व्यक्ति था जो लम्बा चोग़ा पहनने के बावजूद भी खिड़की के बाहर खड़ा हो कर शराब पीता। वह दुबला, लम्बा आदमी था जिसके पीले चेहरे पर अनेकों झुर्रियों के बीचों-बीच पुराने दाग़ थे। उसकी गँगा-जमनी दाढ़ी उलझी सी रहती थी। ऐसा लगता था जैसे उसके गन्दे, चीथड़ेदार लम्बे चोग़े को धुले दस साल हो गये हों। मरम्मत न होने की वजह से वह तार-तार हो रहा था। बोलते समय वह एक प्राचीन पण्डित की तरह, बड़े-बड़े सर्वनामों और विशेषणों का प्रयोग करता—मुश्किल से उसकी आधी बात हमारे पल्ले

पड़ती। उसका जाति नाम तो कुँग था लेकिन उसका छेड़ का नाम 'किसलिये' बच्चों की पहली पुस्तक से लिया गया था। सुलेख की अभ्यासमाला के पृष्ठ पर "ऊपर, नीचे, आदमी, कुँग, किस, लिए" आदि शब्द थे। न जाने कैसे आख़िर के तीन शब्द उसके साथ जुड़ गये और लोग उसे "कुँग-किसलिये" पुकारने लगे।

जब भी कुँग-किसलिये दुकान में आता तो वहाँ पर इकट्ठे सब लोग उसकी ओर देख कर हँसते। एक चिल्ला कर कहता, "अरे कुँग-किसलिये तुम्हारे चेहरे पर एक निशान और बढ़ गया है।"

वह कोई उत्तर न देता, खिड़की के बाहर खड़ा होकर चिल्लाता, "ठर्रे का एक गिलास गर्म करो और एक तश्तरी सोयाबीन ले आओ।" और वह लकड़ी के तख्ते पर नौ सिक्के रख देता।

इस पर लोग कहते, "हम शर्तिया कहते हैं कि तुमने फिर चोरी की है।"

कुँग-किसलिये उनको घूर कर देखता और कहता, "तुम मेरे जैसे निष्कलंक व्यक्ति का क्यों अपमान करते हो?"

"निष्कलंक! हा हा! उस दिन तो तुम हो की किताबें चुराते हुए रंगे हाथ पकड़े गये थे—रस्सी से बाँध कर तुम्हारी खूब अच्छी पूजा की गई थी।"

यह बात सुनकर कुँग-किसलिये शर्म से पानी-पानी हो जाता और उसकी कनपटियाँ लाल हो जातीं, वह धीमी आवाज़ में बुदबुदाता "किताबों की चोरी, चोरी नहीं होती। किताबें चुराना यह तो विद्वानों का काम है। भला यह चोरी कैसे हो गई?" फिर इसके बाद वह हमारी समझ में न आने वाली पाण्डित्यपूर्ण चर्चा छेड़ देता, "संभ्रान्त व्यक्ति ग़रीबी को हँस-हँस कर झेलते हैं। कमीनों की तरह इधर-उधर मुँह नहीं मारते।" उसके भारी भरकम सिद्धान्तों की बातों पर सुनने वाले हँसी के मारे लोट-पोट हो जाते थे। ऐसे अवसरों पर दुकान ठहाकों से गूँजती रहती थी।

छिप कर लोगों की बातचीत सुनने पर मुझे मालूम हुआ कि कुंग-किसलिये थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा था, लेकिन वह किसी सरकारी परीक्षा में पास नहीं हो सका। न ही उसे किसी तरह की दस्तकारी या व्यापार का ज्ञान था; इसलिये वह दिन-प्रतिदिन कँगाल होता गया, यहाँ तक कि भीख माँगने की नौबत आ गई। सौभाग्य से उसका सुलेख इतना बढ़िया था, कि अगर वह चाहता तो आसानी से चीजें नक़ल करके निर्वाह कर सकता था। लेकिन वह इतना आलसी और आराम-तलब था, कि कुछ दिन टिक कर काम करने के बाद कागज़ क़लम और किताबों समेत चम्पत हो जाता। उसके यह रंग-ढंग देखकर लोग उसे काम देने में आनाकानी करने लगे। इसीलिये कुंग-किसलिये तँग आ कर कभी-कभी चोरी करने लगा। फिर भी हमारी दुकान पर वह भलमनसी से पेश आता। उधार ले कर बहुत कम खाता पीता। अगर कभी नक़द पैसे न चुकाने के कारण हम उसका हिसाब तख़्ती पर लटका भी देते तो महीना ख़त्म होने से पहले ही वह उधार चुका देता और उसका नाम तख़्ती पर से मिटा दिया जाता।

आधा गिलास उँडेलने के बाद उसका चेहरा फिर पहले का सा हो जाता। लोग पूछते, "कुंग-किसलिये, क्या तुम सचमुच पढ़े-लिखे हो?"

वह प्रश्नकर्ता के मुँह पर टकटकी बाँध कर देखता रहता, उसे जवाब देने की बिल्कुल इच्छा न होती। फिर वे पूछते, "भला यह तो बताओ कि तुम्हें आधी भी सरकारी डिग्री क्यों न मिल सकी?"

इस बात पर वह फ़ौरन उदास हो जाता। ऐसे लगता मानो किसी ने उसके उद्विग्न चेहरे पर चूना पोत दिया हो। वह मुँह में कुछ बुदबुदाता लेकिन उसमें न संज्ञा न क्रिया होती। केवल अव्ययों की भरमार रहती। इसलिये उसके मतलब को समझना एक पहेली थी। लोग हँसी से लोट-पोट हो जाते। हम तो खुश थे ही।

ऐसे अवसरों पर मुझे औरों के साथ मिल कर हो-हल्ला मचाने की पूरी छुट्टी थी। मालिक बिल्कुल नहीं डाँटता था। कुँग-किसलिये को

देखते ही वह लोगों के सवालों को दुहराता और लोगों को हँसाने से बाज़ न आता।

कुंग-किसलिए ताड़ लेता कि बड़ों के सामने दाल नहीं गलेगी। इसलिये वह हम बच्चों पर टूट पड़ता। एकबार मुझसे पूछने लगा, क्या तुमने अक्षरज्ञान सीखा है?" मैंने लापरवाही से सर हिला कर हामी भरी। मैं मन ही मन डर रहा था कि कहीं लोग मुझे उससे गम्भीर बातें करते हुए न देख लें।

फिर उसने कहा, "तुम कहते हो कि तुम्हें पढ़ना आता है। मैं तुम्हारा इम्तहान लूंगा। जरा देखूँ तो तुम 'सोयाबीन' में 'सोया' कैसे लिखते हो!"

मैंने सोचा इस भिखारी की इतनी मजाल कि मेरा इम्तहान ले? मैंने उपेक्षा से अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया।

काफ़ी देर चुप रहने के बाद कुँग-किसलिये ने आग्रह से कहा, "क्या तुम्हें लिखना नहीं आता? मैं तुम्हें सिखाऊँगा। इन शब्दों को अपने पल्ले बाँध लेना, जब तुम्हारी अपनी दुकान होगी तो ये शब्द हिसाब-किताब में बड़े काम आयेंगे।"

मैंने मन ही मन सोचा—अभी मेरी दुकान होने में बरसों बाकी हैं, इसके अलावा मालिक तो सोयाबीनों को कभी हिसाब में नहीं लिखता। उपेक्षा से मुस्कुरा कर, अनमने ढंग से मैंने कहा, "किसे ग़रज पड़ी है कि तुम्हारी शागिर्दी करे?" और मैंने वह शब्द लिखने का सही तरीक़ा बता दिया।

कुँग-किसलिये खुशी से झूम उठा। उँगलियों से खिड़की के तख्ते को बजाते हुए उसने सर हिलाकर शाबाशी दी, "बिल्कुल ठीक। बिल्कुल ठीक! एक ही उच्चारण को चार अलग-अलग ढंगों से लिखा जाता है। तुम्हें चारों तरीके आते हैं?" लेकिन मैं ऊब कर कमरे के दूसरे कोने में पहुँच चुका था। कुछ ठहर कर उसने तख्ते पर लिखने के इरादे से ठर्रे

में अपनी उँगली भिगोई और निराशा तथा खेद से भरी एक लम्बी साँस ली ।

कभी-कभी आस-पड़ोस के बच्चे हँसी की आवाज़ सुनकर दुकान की ओर भागे आते । ये कुँग-किसलिये को घेर लेते और वह हरेक बच्चे को सोयाबीन की एक-एक फली देता । वे फलियाँ खाकर भी जाने का नाम न लेते, और तश्तरी की ओर टुकुर-टुकुर देखते रहते । कुँग-किसलिये घबराकर अपनी पाँचों उँगलियों से तश्तरी को ढाँप लेता और उन नन्हें आततायियों को झुक कर समझाता, "देखो तश्तरी में थोड़ी सी फलियाँ बच रही हैं—आखिर मुझे भी तो कुछ खाना है।" फिर वह तन कर खड़ा हो जाता और फलियों की ओर देखकर प्राचीन गुरुओं की तरह सिर हिला कर कहता, "बहुत कम ! बहुत कम ! क्या तुम ढेर सी हो ? नहीं, बहुत कम।" इस बात पर बच्चे हँसते हुए वहाँ से चम्पत हो जाते ।

कुँग-किसलिये ऐसे लोगों में से था जो लोगों का मनोरंजन करते हैं; उसके बिना हमारी जिन्दगी नीरस थी ।

एक दिन, शायद पतझड़ के उत्सव से दो या तीन रोज़ पहले, मालिक ने हिसाब जोड़ते समय तख्ती को देखकर अचानक कहा, "कुँग-किसलिये बहुत दिनों से नहीं आया । उस पर अभी उन्नीस सिक्के उधार हैं ।"

मैं भी यही सोच रहा था कि इतने दिनों से वह दिखाई नहीं पड़ा । इतने में एक ग्राहक ने बताया, "वह अब नहीं आयेगा । उसकी टाँगें टूट गई हैं।"

"क्या कहा ?" मालिक चौंक उठा ।

"इस बार उसकी बुद्धि मारी गई थी, वह श्रीमान् तिंग के घर चोरी करने जा घुसा । भला बताइये तो, ऐसी जगह चोरी करना क्या खेल है ?"

"फिर क्या हुआ ?"

"उसकी टाँगें टूट गईं ।"

"उसके बाद ?"

"उसके बाद मैं क्या जानूँ ? शायद वह चल बसा।"

मालिक ने आगे कोई सवाल नहीं किया। वह चुपचाप अपने प्रति-दिन के काम में जुट गया।

पतझड़ के उत्सव के बाद हवा बर्फीली होती गई। शायद सर्दियाँ शुरू हो गई थीं, क्योंकि मैं हर समय अँगीठी के साथ चिपटा रहता था—यहाँ तक कि रुई वाले जोजे पहनने की जरूरत महसूस होने लगी थी। एक दिन दोपहर तक दुकान में सन्नाटा छाया रहा। अचानक ही बाहर से आवाज पड़ी, "एक गिलास ठर्रे का तो गरम करना। मैं अँगीठी के पास बैठा सुस्ता रहा था—लगा कि किसी परिचित की फुसफुसाहट हो, आस-पास झाँकने पर कोई नहीं दिखाई दिया। दुकान से बाहर नजर डाली तो कुँग-किसलिये दिखाई दिया। वह मुश्किल से खिड़की के सीखचों तक पहुँच सका था। उसके चेहरे पर मुर्दनी छाई थी, बाल अस्त-व्यस्त थे। वह जमीन पर पालथी मारे बैठा था और उसकी लकड़ी की टाँगें कन्धे से लटकती हुई चटाई से बँधी हुई थीं। बदन पर एक पतली चिथड़े-नुमा कमीज़ थी।

मुझे बाहर झाँकते देखकर उसने दुबारा कहा, "एक गिलास ठर्रा गरम कर दो।"

इस वक्त तक मालिक ने भी उसे देख लिया था। उसने जोर से आवाज दी, "कुँग-किसलिये अभी तुम पर उन्नीस सिक्के बाक़ी हैं।"

कुँग-किसलिये ने धीरे से सिर ऊपर उठाया और हिचकिचाते हुए जवाब दिया, "हाँ—वो—वो मैं अगली बार चुका दूँगा। यह लो इस बार के सिक्के। देखो ठर्रा अच्छा होना चाहिए।"

मालिक ने पहले की ही तरह ठिठोली शुरू की, जैसे वह जानता ही न हो कि उसकी टाँगें कट चुकी हैं। "कुँग-किसलिये, तुमने फिर चोरी की है न।"

लेकिन इस बार कुँग ने विशेष बहस नहीं की। वह केवल इतना ही बुदबुदाया, "मेरी हँसी मत उड़ाओ।"

"अगर तुमने चोरी नहीं की, तो तुम्हारी टाँगें कैसे टूट गईं ?"

कुँग-किसलिये ने धीमे स्वर में कहा, "मैं गिर-गिर-गिर गया था।" मानो मालिक से याचना कर रहा हो कि इस किस्से को मत छेड़ो।

इस समय तक और लोग भी इकट्ठे हो कर मालिक का साथ दे रहे थे।

जब ठर्रा गरम हुआ तो मैंने ले जाकर गिलास को खिड़की के सीखचों के पास रख दिया। कुँग-किसलिये ने चार सिक्के जेब से निकाले। मैंने देखा कि उसके हाथ मिट्टी में लथपथ हैं। जरूर ही वह हाथों के बल रेंग कर आया था।

कुछ देर बाद उसने अपना ठर्रा समाप्त किया और चल दिया। उसके पीछे हँसी-मजाक जारी रहा। उसने अपने मिट्टी से सने और घायल हाथों से चटाई को उठाया।

इसके बाद एक लम्बे समय तक कुँग-किसलिये का कुछ पता नहीं चला।

नये साल के दिन मालिक ने हिसाब जोड़ते समय फिर कहा, "कुँग-किसलिये पर उन्नीस सिक्के बाकी हैं।"

अगले वर्ष नागदेवताओं के नौकाविहार उत्सव के अवसर पर मालिक ने फिर दुहराया, "कुँग-किसलिये पर अब भी उन्नीस सिक्के बाकी हैं।"

लेकिन अगले पतझड़ के उत्सव पर उसने इस बात की कोई चर्चा नहीं छेड़ी। इस नव-वर्ष के दिन तक भी मैंने कुँग-किसलिये को नहीं देखा।

मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। शायद वह सचमुच चल बसा।

साबुन की टिकिया

श्रीमती सू-मिंग कमरे की उत्तर वाली खिड़की की ओर पीठ करके, सूरज की अन्तिम किरणों की रोशनी में पितर-पूजा में जलाने के लिए कागज के नोटों की तह कर रही थीं। उसकी आठ वर्ष की लड़की एलिगैंस (शोभा) भी उसका हाथ बँटा रही थी। इसी समय मोटे कपड़े के तले वाले जूतों की फदफद सुनाई दी। और वह जान गई कि सू-मिंग घर आ गया है। वह सर झुकाकर पूर्ववत् काम में जुटी रही। उसके पति के भद्दे जूतों की फदफद ऊँची होती गई और वह उसके सिरहाने आ खड़ा हुआ। जब उसने कनखियों से देखा कि वह पीछे की ओर झुका हुआ अपनी काली फतूही के नीचे पहने लम्बे चोगे की जेब में से कुछ निकालने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहा है, तो उसे विवश होकर अपना सर उठाना पड़ा।

भरसक कोशिश के बाद कहीं वह सफल हुआ। उसके हाथ में ताजे हरे रंग की एक तिरछी सी चीज़ थी, जो उसने पत्नी को थमा दी। उसे हाथ में लेने की देर थी कि मन्द और मधुर सुगन्ध से कमरा महक उठा। फीके पीले ढक्कन पर एक सुनहरी मोहर थी जिस पर विदेशी भाषा के अक्षरों में एक सुन्दर नमूना बना हुआ था।

एलिगैंस फ़ौरन बण्डल की ओर झपटी, लेकिन उसकी माँ ने उसे एक ओर धकेल दिया। "आज बाहर गये थे?" पार्सल को ध्यान से देखते हुए उसने पति से पूछा।

"देखो, देखो !" पति ने पार्सल पर अपनी आँखें गड़ाते हुए आग्रह किया।

कोंपल जैसे हरे रंग के कागज़ को ध्यान से खोलने पर भीतर की ओर एक पतला फीका हरा कागज दिखाई दिया, जो रोशनी में देखने से फीका पीला लगता था। इस कागज़ के भीतर वह चीज़ थी।—एक सख्त, नर्म, लचीला, टुकड़ा जिस पर हरे रंग की लकीरें थीं। इसी में से सुगन्धि आ रही थी।

"सचमुच ही यह अच्छा साबुन है" श्रीमती सू-मिंग ने उस कीमती उपहार को बच्चे की तरह उठा कर नाक से लगाते हुए कहा।

"सचमुच" पति ने हामी भरी, "तुम्हारे इस्तमाल के लिये अच्छा है।" उसने देखा कि बोलते समय पति की नज़रें उसकी गर्दन पर झुकी हुई थीं। शर्म के मारे उसके गाल तमतमा गये। कुछ रोज़ पहले उसे लगा था कि उसकी गर्दन और कानों के पीछे मैल की पपड़ी जम गई है, लेकिन इस ओर उसने विशेष ध्यान नहीं दिया। पीली सुगन्धित विदेशी साबुन की टिकिया पति की दृष्टि की गवाही दे रही थी। वह बरबस लज्जित हो गई। उसने रात को खाना खाने के बाद उस साबुन की टिकिया से रगड़-रगड़ कर नहाने का फैसला किया।

"कई स्थान तो रीठे[1] से बिल्कुल ही साफ़ नहीं होते।" उसने मन ही मन स्वीकार किया।

इसी समय एलिगेंस ने चिल्ला कर उसके विचारों में खलल डाल दिया, "माँ मुझे साबुन पर लिपटा कागज़ चाहिए।" अब वीकन (इंगित) जिसका नाम इसलिये चुना गया था कि उसके इशारे पर एक भाई भी उनके घर में आये, भी खेलकूद छोड़कर वहाँ आ धमकी। लेकिन माँ ने धक्का

१. एक विशेष प्रकार के वृक्ष पर उगने वाली काले रंग की फली, जिसे उबाल कर साबुन बनता है।—विदेशी साबुन के आने से पहले चीनी लोग इसी का प्रयोग करते थे।

देकर उन्हें दूर हटा दिया और साबुन को कागज़ में लपेट कर नल के ऊपर की अलमारी के सबसे ऊँचे खाने में रख दिया। यह सोचकर कि अब साबुन बच्चों की पहुँच से परे है, वह बेफ़िक्री से पुनः अपने काम में जुट गई।

उसके पति ने अचानक आवाज़ दी, "स्वे-चेंग !" और वह चौंक गई। वह ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर उसके सामने ही बैठा था।

उसे समझ में न आया कि इस समय पति को लड़के से क्या काम हो सकता है। लेकिन आज उसका मन कृतज्ञता से भरा था। उसने भी पति के स्वर में स्वर मिला कर आवाज़ दी, "स्वे-चिंग !"

यहाँ तक कि उसने अपना काम भी पटक दिया और लड़के की आहट की प्रतीक्षा करने लगी। पति की ओर क्षमाप्रार्थी की तरह देखते हुए उसने चीख़ना-चिल्लाना जारी रखा।

"चुआन-ऐर !" आख़िर तँग आकर आवाज़ दी, वह अक्सर ग़ुस्से के मौके पर बेटे को इस नाम से पुकारती थी। उसके तेज गले का फ़ौरन असर हुआ जूतों की तेज चरमराहट सुनाई दी और चुआन-ऐर भागता हुआ पहुँचा। वह एक छोटी वास्कट पहने था और उसका चेहरा पसीने में तर था।

"क्या कर रहे थे ? पिता के आवाज़ देने पर क्यों नहीं आये ?" उसने झिड़कते हुए पूछा।

"मैं कसरत कर रहा था" उसने सू-मिंग की कुर्सी के पास फुदकते हुए जवाब दिया। फिर सीधे खड़ा होकर वह प्रश्नसूचक दृष्टि से पिता का मुँह ताकने लगा।

"स्वे-चेंग" पिता ने गम्भीरता से कहा, "ज़रा बताओ कि 'एर-दू-फू' का क्या अर्थ है ?"

"एर-दू-फू ?" अर्थात् "लड़ाकी औरत ?"

"अक़्ल का कोल्हू ! बकवादी !" सू-मिंग का पारा चढ़ गया, "क्या मैं औरत हूँ ?"

स्वे-चेंग चौंक कर कुछ क़दम पीछे हट गया, लेकिन फिर बाहों को सीधा तान कर खड़ा हो गया। हालाँकि उसका ख्याल था कि उसके पिता की चाल थियेटर के नटों की-सी है, लेकिन वह औरतों से मिलता-जुलता है, इसकी उसने कल्पना भी न की थी। वह अपनी ग़लती मानने को तैयार था।

"क्या मुझे यह सीखने की ज़रूरत है कि 'एर-दू-फू' का अर्थ 'लड़ाकी औरत' है ? क्या मैं अपनी मातृ-भाषा नहीं जानता ? लेकिन यह शब्द चीनी भाषा का नहीं—विदेशी शैतानों का है। समझे ? अब बताओ इसका अर्थ क्या है ? मालूम है ?"

"मैं—मुझे नहीं मालूम", स्वे-चेंग ने घबरा कर कहा।

"वाह ! स्कूल जाकर इतना भी नहीं सीखा ? मेरा सारा पैसा बर्बाद हुआ। जिस लड़के से मैंने यह शब्द सुना था, वह तुमसे छोटा था, केवल चौदह या पन्द्रह वर्ष का। और तुम हो कि उसका अर्थ तक नहीं जानते। उस पर यह गुस्ताखी कि मेरे सामने कह रहे हो, "मुझे नहीं मालूम !" फ़ौरन किताब में से देखकर मुझे बताओ।"

स्वे-चेंग ने कहा, "जी अच्छा" और आदरपूर्वक वहाँ से चला गया।

"विद्यार्थियों की हालत देखकर दया आती है।" सू-मिंग ने सोचा। "सम्राट् कुआँग सी के ज़माने में मैं नये क़िस्म के स्कूल खोलने के पक्ष में था मुझे क्या पता था कि उसके परिणामं बुरे होंगे ? 'मुक्ति' और 'आज़ादी' आदि शब्दों का क्या अर्थ है ? ठोस शिक्षा के स्थान पर केवल विदेशी नक़ल का बोलबाला है। इस स्वे-चेंग को ही देखो ! मैंने व्यर्थ ही इस पर कितना पैसा बर्बाद किया है ? बड़ी आशाओं को लेकर विदेशी स्कूल में पढ़ाया—उसका क्या फल निकला ? पूरा साल झख मारने के बाद उसे 'एर-दू-फू' तक का अर्थ नहीं आता ! आखिर यह स्कूल हैं किस मर्ज़ की दवा ? इन्हें फ़ौरन बन्द कर देना चाहिए।"

"ठीक कहते हो—सब स्कूलों में ताला डाल देना चाहिये।" श्रीमती सू-मिंग ने काम जारी रखते हुए धैर्यपूर्वक पति का अनुमोदन किया।

"एलिगैंस और इंगित को भी स्कूल भेजना बेकार है। जब नवें ताऊ कहा करते थे, "तुम लड़कियों को किसलिए लिखाना-पढ़ाना चाहते हो?" तो मैं उनसे इस बात पर झगड़ता था—लेकिन अब ऐसा लगता है कि उनकी बात सही थी। आजकल की छोकरियाँ धूल के बादलों की तरह सड़कों पर मँडराती रहती हैं, कितनी शर्म की बात है? और अब बाल कटवाने की नौबत भी आ गई। मुझे बालकटी पढ़ने वाली लड़कियों से सख्त नफ़रत है। लोग तो लुटेरों और सैनिकों से नफ़रत करते हैं, लेकिन ये छोकरियाँ तो उन सब से गयी-बीती हैं। इनका इलाज होना जरूरी है।"

"ठीक कहते हो।" श्रीमती सू-मिंग ने हामी भरी। "जब मर्द ही भिक्षुओं की तरह सर मुँडवा कर घूमने लगे, तो औरतों ने भी भिक्षुणियों की तरह बाल कटवा कर रही-सही क़सर पूरी कर दी।"

यकायक पति को उस शब्द का ख्याल आया, जो इतनी देर से उसे सता रहा था। उसने फिर आवाज़ दी, "स्वे-चेंग।" स्वर में आदेश भरा था।

लड़का एक मोटा-सा अंग्रेजी-चीनी शब्दकोश हाथ में लिए जल्दी से कमरे में दाख़िल हुआ। उसकी जिल्द की पीठ पर सुनहरी अक्षरों में कुछ छपा हुआ था।

सू-मिंग को दिखाते हुए लड़के ने कहा, "शायद यही वह शब्द है। मुझे आश्चर्य......।"

सू-मिंग ने किताब हाथ में लेकर नजर दौड़ाई, लेकिन अक्षर बहुत बारीक थे और चीनी ढंग के स्थान पर विदेशी ढंग से बायीं ओर से दायीं ओर को लिखे हुए थे। पहले तो उसके पल्ले कुछ न पड़ा। फिर खिड़की की रोशनी में टकटकी लगाकर देखने से वह चीनी भाषा में दिया हुआ अर्थ पढ़ने में सफल हुआ। "अट्ठारहवीं शताब्दी में बनायी गयी एक गुप्त संस्था।"

"यह ग़लत है" उसने शिकायत की। "मगर इसका सही उच्चारण

कैसे करते हैं ?" उसने विदेशी शब्द को इशारे से दिखाते हुए पूछा।

बेटे ने नम्रता से उत्तर दिया, "औड फ़ैलोस" (विचित्र लोग) और चीनी उच्चारण को ठीक 'एर-दू-फू' जैसा बनाने की कोशिश की।

"नहीं, नहीं—यह ग़लत है।" सू-मिंग ने ग़ुस्से से कहा, "मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि इस शब्द का अर्थ बुरा है। यह एक गाली है, जो मेरे जैसे व्यक्ति को निकाली जा सकती है। समझे ? जाकर इसका ठीक अर्थ ढूँढ़ो।"

स्वे-चेंग ने परेशान होकर आँखें ऊपर उठाईं, लेकिन वहीं पर खड़ा रहा।

"यह सब क्या हंगामा है ?" माँ ने इस बार बेटे की तरफ़दारी की। "लड़के को व्यर्थ ही परेशान करते हो। ख़ुद ही सब कुछ बतादा न !" उसने पति की ओर असन्तोष-भरी दृष्टि से देखा। वह दोनों में किसी तरह सुलह कराना चाहती थी।

"बात यों हुई," सूमिंग कुछ नरमी से पत्नी की ओर झुका, "कि जब मैं साबुन की टिकिया ख़रीदने गया तो दुकान पर तीन विद्यार्थी भी खड़े थे। उनके विचार में शायद मैं बहुत मीनमेख निकाल रहा था। मैंने पहले चालीस सिक्कों के दाम वाली आधी दर्जन टिकियां देख डालीं। फिर ग्यारह सिक्कों वाली टिकियों को देखा। वे रद्दी क़िस्म की थीं। इसलिये मैंने बीच के मेल की टिकिया ख़रीदने का फ़ैसला किया और चौबीस सिक्कों वाली को पसन्द किया। तुम्हें मालूम है कि बड़ी दुकानों पर काम करने वाले छोकरे कितने अकड़बाज़ होते हैं ! उनकी आँखें तो आस्मान पर चढ़ी रहती हैं—ज़मीन पर टिकती ही नहीं। जिस छोकरे ने मुझे चीजें दिखाईं वह अपनी कुत्ते की सी थूथनी फुला कर अपनी उपेक्षा दिखा रहा था। और वे कमज़ात विद्यार्थी एक दूसरे की ओर कनखियों से देख कर शैतानी भाषा में मेरी हँसी उड़ा रहे थे। फिर जब मैंने काग़ज खोल कर अन्दर से टिकिया को देखने का आग्रह किया तो दुकान के छोकरे ने बड़ी ऊटपटाँग बातें

कीं और उन बन्दर जैसे विद्यार्थियों की खी-खी बन्द ही न होने में आती थी। भला सोचो तो, बिना जाँचे-देखे मैं कैसे मान लेता कि साबुन सचमुच बढ़िया है? सबसे छोटे विद्यार्थी ने मेरी ओर देख कर यह शब्द कहा था—और सब के सब दाँत निपोरने लगे। अब अनुमान लगाओ कि वह शब्द कितना बुरा होगा? स्वे-चेंग, तुम इस शब्द को गालियों की सूची में ढूँढो।"

स्वे-चेन "जी अच्छा।" कह कर वहाँ से चला गया।

उसके जाने के बाद सू-मिंग ने पत्नी से अपनी शिकायतें जारी रखीं। "यह नई तहज़ीब सब ढकोसला है। क्या कहने हैं नई तहज़ीब के!" उसने आँखें फाड़ कर छत की ओर देखते हुए कहा। "विद्यार्थी लोग बिगड़ गए हैं। समाज की धज्जियाँ उड़ गयी हैं। अगर उसका कोई इलाज न हुआ तो चीन का सत्यानाश हो जायेगा। तबाही आ जाएगी! कितने दु:ख की बात है!"

"इसमें दुख की क्या बात है?" पत्नी ने अन्यमनस्यकता से पूछा।

"जिस ओर नज़र डालो, कलेजा फटता है ख़ास तौर पर नयी पीढ़ी के रँग ढँग देख कर। माता-पिता का आज्ञापालन, जो चीनी जाति का महान गुण था, ग़ायब होता जा रहा है। ख़ुशकिस्मती से आज सवेरे मुझे एक आज्ञाकारिणी मालिन दीख पड़ी। सड़क पर दो भिखारिनें जा रहीं थीं। उनमें से एक क़रीब सत्रह-अट्ठारह वर्ष की होगी। इतनी सयानी लड़की को भीख माँगना उचित नहीं—पर बेचारी अपनी अन्धी दादी की सहायता कर रही थी। दोनों भीख माँगती-माँगती कपड़े की दुकान के नीचे की नाली तक जा पहुँचीं। हर कोई कहता था कि लड़की बड़ी सुशील है। जो भी मिलता, दादी को खिला देती और खुद भूखी रहती। लेकिन क्या इस सड़े-गले समाज में लोग उसकी सुशीलता पर तरस खाते हैं?" सू-मिंग ने पत्नी के चेहरे पर नज़र गड़ा कर सवाल पूछा, मानो वह उसकी समझदारी की परीक्षा ले रहा हो।

वह गुमसुम प्रश्नसूचक दृष्टि से पति की ओर देखने लगी मानो कह रही हो "तुम्हीं बतादो न !"

"बिल्कुल नहीं।" सू-मिंग आखिर अपने सवाल का जवाब देने पर विवश हुआ। " इतनी देर तक, मेरी आंखों के सामने सिर्फ़ एक आदमी ने उसकी झोली में ताँबे का एक सिक्का फेंका। दर्जनों लोग खड़े तमाशा देखते रहे। दो बेहया छोकरे लड़की के बारे में बातें कह रहे थे। एक ने कहा, 'इसकी मैल देख कर क्यों नाक-भौं सिकोड़ते हो ? अगर दो टिकिया साबुन से इसे रगड़ कर नहला दो तो यह बड़ी मज़ेदार निकल आएगी।' "मैं पूछता हूँ कि यह कैसी बातचीत है ?"

श्रीमती सू-मिंग का सर झुक गया था। काफ़ी देर सुस्ताने के बाद उसने पूछा, "क्या तुमने उसे कुछ दिया ?"

"मैंने ? नहीं। भला किस मुँह से उसे एक या दो सिक्के देता ? वह ऐसी-वैसी भिखारिन तो थी नहीं।"

उसकी बात अधूरी ही थी कि उसकी पत्नी नाक साफ़ करती हुई उठी और शाम का खाना पकाने के लिये रसोई की ओर चल दी। अन्धेरा बढ़ गया था और खाने का समय नज़दीक आ गया था।

सू-मिंग भी उठ कर आँगन में आ गया जहाँ कमरे की अपेक्षा अभी अधिक प्रकाश था। स्वे-चेंग दीवार के सहारे क़सरत करने में मग्न था। पिता की आज्ञा थी कि संध्या के समय ही वह अभ्यास करे। बेटे को देख कर सू-मिंग ने तेज़ी से सर हिलाया और दोनों हाथों को पीछे की ओर कर के इधर-उधर टहलने लगा। शीघ्र ही आँगन में पड़ा एकमात्र सदावहार के फूलों का गमला भी सांझ के झुट-पुटे में अदृष्य हो गया। रुई के फोहों की तरह छितरे बादलों में से तारे झिलमिलाने लगे और निशा का आगमन हुआ। सू-मिंग परेशानी से उत्तेजित हो उठा। उसे लगा कि जैसे वह कोई बड़ा काम करने जा रहा है। वह भ्रष्ट विद्यार्थियों और समूचे सड़े-गले समाज के विरुद्ध जिहाद करेगा। उसकी आकांक्षा, तमाम वीर तथा संकटग्रस्त आत्माओं को मुक्ति प्रदान करने की थी।

उसके क़दम तेज़ होते गये और पुराने ढँग के कपड़े के जूतों की कर्कश आवाज़ से वाड़े में बन्द मुर्गियां और चूज़ों में खलबली मच गई और वे चौंक कर चीखने चिल्लाने लगे।

खाना खाने का समय आ पहुँचा था। कमरे में जलता लैम्प पूरे परिवार को खाने के लिए आमन्त्रित कर रहा था। थोड़ी देर बाद ही सब लोग खाने की चौकोर मेज़ के गिर्द अपनी सलाईयों से कटोरियों को खटखटाने लगे। गर्म करमकल्ले के शोरबे में से भाप निकल रही थी और सू-मिंग मन्दिर की अधिष्ठात्री देवी की तरह सभापति के आसन पर बैठा था।

खाने के बीच में कोई न कोई दुर्घटना अवश्य हो जाती। आज इंगित ने अपनी कटोरी लुढ़का दी। सारा शोरबा मेज़ पर फैल गया। सू-मिंग ने उसे कठोर दृष्टि से देखा, लड़की सहम गई और रोने लगी। इस गड़बड़ में गोभी की डण्ठल जो सू-मिंग को बहुत पसन्द थी—कहीं गिर पड़ी थी। उसे ढूँढ़ने के लिए जब उसने तीलियाँ आगे बढ़ाईं, तो देखा कि स्वे-चिंग उसे अपने मुँह में ठूँस रहा है। जब उसे पुराना पत्ता खाकर ही सन्तोष करना पड़ा तो उसका गुस्सा और भी भड़क उठा।

"स्वे-चेंग", उसने लड़के की ओर कठोर मुद्रा से देखते हुए पूछा, "क्या तुमने उस शब्द का अर्थ ढूँढ़ लिया?"

"किस शब्द का?......जी, अभी नहीं।"

"देखा! न तो तुम कुछ सीख पाये, न तुम्हें रत्ती भर शऊर आया। सिर्फ़ भर-पेट खाना जानते हो। काश! तुम उस आज्ञाकारिणी लड़की का आदर्श सामने रख सकते। भिखारिन होते हुए भी वह अपनी दादी की आज्ञा का पालन करती थी—खुद भूखी रह कर भी दादी को खिलाती थी। तुम विद्यार्थी पितृ-भक्ति की महिमा को क्या जानो? बेहया, कमजातो! तुम भी उन छोकरों जैसे बनोगे, जिनकी बातें मैंने सुनी थीं।"

इसी समय स्वे-चेंग ने हिचकिचाते हुए पिता की बात काटी, "एक

शब्द है—पता नहीं शायद वही हो। मेरे ख्याल में उन्होंने 'ओल्ड फूल'......।"

"ठीक है। कुछ ऐसा ही शब्द था। इसका अर्थ क्या है ?"

"मैं—मैं ठीक नहीं जानता।"

"क्या बकते हो ? तुम जानबूझ कर नहीं बता रहे। तुम सब के सब विद्यार्थी हरामी हो।"

उसकी पत्नी ने आखिर प्रतिरोध किया। "तुम्हें आज क्या भूत सवार है ? चैन से खाना तो दूर रहा, इस तरह चिल्ला रहे हो जैसे पड़ौसियों के कुत्तों या मुर्गों का पीछा करते हैं। आखिर बच्चे, बच्चे ही हैं।"

"क्या ?" सू-मिंग और बिगड़ता, लेकिन जब उसने देखा कि पत्नी ने रूठ कर मुँह फुला लिया है और उसके माथे की त्यौरियाँ चढ़ी हुई हैं तो उसने चट अपनी आवाज बदल कर सुलह के स्वर में कहा, "मेरे ऊपर कोई भूत सवार नहीं। मैं तो सिर्फ़ स्वे-चेंग को अक्ल की बातें बता रहा था।"

"बेचारा लड़का क्या जाने कि तुम्हारे दिमाग़ में क्या भरा है ?" पत्नी ने तैश में आ कर कहा। "अगर वह समझदार होता तो कभी का उस आज्ञाकारिणी लड़की को यहाँ ले आता। सीधी-सादी बात है, एक टिकिया साबुन उसे दे आये हो। बस दूसरी टिकिया की कसर बाकी रह गई।"

"यह तुम क्या कह रही हो ?" उसने हैरानी से कहा। "वे तो उन छोकरों के शब्द थे।"

"मुझे इसमें शक है। बस झटपट दूसरी टिकिया खरीदकर उसे रगड़-रगड़ कर नहलवा दो। फिर वेदी पर सजाकर पूजा करना—चारों ओर सुख-शान्ति की वर्षा होने लगेगी।"

"आखिर तुम्हारी मन्शा क्या है ? इस बात से साबुन का क्या सम्बन्ध ? मुझे याद आया कि तुम्हें साबुन की जरूरत है और...... ।"

"वाह ! साबुन का बड़ा गहरा सम्बन्ध है । तुमने यह टिकिया उस आज्ञाकारिणी लड़की के लिये खरीदी थी । जाकर उसे नहलाओ-धुलाओ ! मुझे इसकी ज़रूरत नहीं । न मैं इस काबिल ही हूँ । इसके अलावा, मैं उस लड़की की एहसानमन्द नहीं होना चाहती ।"

"हाय री औरत-ज़ात !" सू-मिंग ने गुस्से में तंग आकर कहा । फिर वह चुप हो गया । उसकी समझ में न आया कि आगे क्या कहे । उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें चमक रहीं थीं, जैसी स्वे-चेंग के माथे पर क़सरत के बाद चमका करती थीं ।

"अभी औरतों के बारे में क्या कह रहे थे ? हम औरतें, तुम जैसे मर्दों से लाख दर्जे अच्छी हैं । तुम लोग जब पढ़ने वाली छोकरियों की निन्दा करते हो, तो अट्ठारह-उन्नीस वर्ष की जवान भिखारिनों की तारीफ़ करते समय तुम्हारी नीयत कभी साफ नहीं होती । मेरी तरफ से जा कर उसे रगड़-रगड़ कर नहलाओ । लानत है मर्दों की ज़ात पर ।"

यह बताना मुश्किल है कि श्रीमती सू-मिंग का यह प्रलाप और कितनी देर तक जारी रहता सौभाग्य से इसी समय एक मेहमान आ टपका और पतिदेव उससे मिलने के लिए दूसरे कमरे में चले गये ।

लौटने पर सू-मिंग ने देखा कि एलिगैंस और इंगित खाने की मेज के नीचे फ़र्श पर बैठी खेल रही थीं । स्वे-चेंग मेज़ पर बैठा शब्दकोश से माथापच्ची कर रहा था; उसकी पत्नी लैम्प से दूर एक कोने में ऊँची कुर्सी पर बैठी अनमने भाव से कुछ देख रही थी ।

उसके रंग-ढंग को देख कर सू-मिंग को कुछ बोलने का साहस न हुआ ।

बहुत आनाकानी करने के बाद भी दूसरे दिन तड़के-तड़के ही श्रीमती सू-मिंग ने साबुन का सदुपयोग किया । आँखें खोलते ही सू-मिंग को पत्नी के दर्शन हुए । वह नल के आगे झुकी हुई थी, और रगड़-रगड़ कर अपनी गर्दन धो रही थी । उसके कानों पर साबुन की झाग जमी थी

और असंख्य कंकड़ों जैसे बुदबदे उठ रहे थे।

उस दिन से श्रीमती सू-मिंग खुशबूदार साबुन की एक टिकिया हमेशा अपने पास रखतीं। साबुन ने अपना चमत्कार दिखा दिया था। काश ! सू-मिंग के मन में लगे कन्फ्यूशियस के नीति-दर्शन के जाल भी साबुन से साफ़ हो सकते !

यू-ता-फ़ू
(१८९६–१९४५)

यू-ता-फ़ू मुख्यतः कहानी-लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं, लेकिन वह उपन्यासकार, समालोचक और अनुवादक भी हैं। जन्म चेकियाँग प्रान्त के फ़ुयाँग स्थान पर हुआ। इनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास बाल्य-काल में ही हो गया था।

जापान में शिक्षा प्राप्त करते समय उनको विदेशी साहित्य के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उन्होंने रूसी, जर्मन, अंग्रेजी, जापानी और फ्रेंच भाषा के १००० उपन्यास पढ़ डाले। टोकियो के इम्पीरियल विश्व-विद्यालय में पढ़ते समय उनके साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश हुआ। इस समय की लिखी हुई कहानियों का संग्रह चेन-लून (गोता) शीर्षक से प्रकाशित हुआ था।

१९२२ में स्वदेश लौटने पर यू-ता-फ़ू सृजनकारी सभा के सक्रिय सदस्य हो गए, (जापान में वह इस संस्था के संस्थापकों में से थे।) कुओ-मो-जो, चाँग-त्सु-पिंग तथा चेंग-फ़ाँग-वू उनके साथियों में से थे। १९२३ में वह पेकिंग के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में साहित्य के अध्यापक नियुक्त हुए।

इसके बाद वे कैन्टन और शंघाई में भी अध्यापन कार्य करते रहे। अपने अन्य साथियों की प्रेरणा से सर्वहारा साहित्य के प्रति उनकी आस्था

हो गई और उन्होंने १६२८ में लू-सुन के साथ "पैनल्यू" नामक वामपक्षी पत्र का सम्पादन किया। १६३० में वह वामपक्षी लेखकों की संस्था के सदस्य बने।

कुछ काल तक साहित्यिक सरगर्मियों से दूर रहने के बाद यू-ता-फ़ू ने, जब जापान ने चीन पर आक्रमण किया, तो सिंगापुर में जाकर एक दैनिक-पत्र का सम्पादन-कार्य संभाला। १६४१ में पर्ल हारबर की बम-बारी के बाद वह छद्म नाम से चार वर्ष तक सुमात्रा में रहे। १६४५ में जापानी सैनिकों द्वारा किसी अज्ञात स्थान में लेजाये गए—इसके बाद से आपका कोई पता नहीं चला।

चीनी तरुण वर्ग परम्परागत सामाजिक रूढ़ियों से नाता तोड़ कर नये सामाजिक मूल्यों की खोज में प्रयत्नशील है। यू-ता-फ़ू अपनी रोमान्टिक शैली द्वारा तरुण वर्ग की इस विक्षिप्ति तथा मानसिक संघर्ष को व्यक्त करते हैं। इनकी दो प्रसिद्ध कहानियाँ, 'कुओ-चू' (अतीत) और 'ची-क्वी-हुआ' (दालचीनी के फूल) इस प्रवृत्ति के प्रतीक हैं। शैली तथा भाषा के सौन्दर्य की दृष्टि से ये दोनों कहानियाँ रोमाण्टिक विक्षिप्ति का उत्कृष्ट चित्रण हैं। यू-ता-फ़ू के पात्र आत्म-केन्द्रित होने के कारण सामाजिक प्रश्नों तथा हलचलों पर अधिक ध्यान नहीं दे पाते।

अतीत

खुले मैदान में ठँडी हवा चल रही थी। पेड़ों से सूखे पत्ते चरमरा कर ओलों की तरह गिर रहे थे। दक्षिणी प्रदेश की इस छोटी बन्दरगाह में समुद्र के किनारे मैं अपनी साथिन के साथ एक बड़े मकान में बैठा खाना खा रहा था। साल के आखिरी महीने की सर्द शाम की तरह, यह ठंडी हवा उदासी से भरी थी।

सुबह मौसम बड़ा सुहावना था। दोपहर तक भी सिर्फ़ हल्के ऊनी कपड़ों की ज़रूरत थी, लेकिन तीन-चार बजे के क़रीब उत्तर से सफ़ेद बादलों के एक दल ने आकर सूरज को ढँक लिया और बर्फ़ीली हवा चलने लगी।

तपेदिक का रोगी होने के कारण इन दिनों सेहत सुधारने के लिये मैं दक्षिणी चीन की बन्दरगाहों में भ्रमण कर रहा था। अक्तूबर के मध्य में मैं घर से निकल पड़ा था और नवम्बर के आरम्भ में मैं कैन्टन पहुँच गया (जो कि एक प्रान्त की राजधानी है।) लेकिन वहाँ सरकार पलट गई थी। पूर्व में लड़ाई छिड़ने से कैन्टन भी खतरे में था इसलिये मैंने कुछ दिन हांगकांग में गुजारे। वहां की मँहगाई से तँग आकर मैंने एक समुद्री बोट का टिकट कटाया और वर्ष के अन्त में मकाओ पहुँच गया।

मकाओ—जैसा सर्वविदित है, चीनी सरकार के सुलहनामे के अन्तर्गत यह बन्दरगाह विदेशी व्यापारियों के लिये खुली थी।

इसीलिये यहाँ के मकानों पर उस समय की विशेषताओं के चिह्न अब भी मौजूद हैं।

शहर के सामने एक झील है, जिसमें हरे रँग का पानी भरा रहता है। शहर के बीचों-बीच छोटी पहाड़ियों की एक शृंखला है और झील के किनारे की सड़क के दोनों ओर विदेशी ढँग की इमारतें खड़ी हैं। हालाँकि व्यापार पहले की सी अच्छी दशा में नहीं है तो भी इस शहर में शानदार मकानों और जूए के अड्डों की भरमार है। चारों ओर वाटिकाएँ और आमोद-गृह बने हुए हैं। समुद्र के किनारे मैदान में केले के वृक्षों की दोहरी क़तार है, जिसके नीचे पड़ी बेंचों पर हर समय चीनी और विदेशी लोग मज़े से चहलक़दमी करते या आराम करते दिखाई देते हैं। चूँकि व्यापार इतनी समृद्ध दशा में नहीं है इसलिये दक्षिणी युरोपियन व्यापारी विदेशियों के साथ मध्य-पूर्व के देशों में होने वाली निष्ठुरताओं से यहाँ मुक्त रहते हैं। इस स्थान के विगत सौन्दर्य की छाया में एक अपूर्व मानसिक शान्ति का अनुभव होता है। और लगता है कि यहाँ चैन से ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है। जिधर देखिये, मन पर यही प्रभाव पड़ता है। मैंने तो यहाँ पहुँचते ही फ़ैसला कर लिया था कि अब मैं यहीं रहूँगा। मुझे इस बात का स्वप्न में भी अनुमान न था कि मेरे भाग्य में इस लड़की से मिलना बदा है जो मेरे सब फ़ैसलों पर पानी फेर देगी।

यह मुठभेड़ आश्चर्यजनक ढँग से हुई। सँध्या का समय था। हल्की सी बूँदाबाँदी हो रही थी। मैं पहाड़ी के पश्चिमी हिस्से में स्थित अपने होटल से उतरा और खाना खाने के इरादे से शहर की ओर चल पड़ा। मैं एक दोमँज़िले मकान के सामने से गुज़र रहा था कि इतने में बाँस के फाटक में से निकल कर एक स्त्री बाहर आई। वह भूरे रँग की बरसाती पहने थी। ऊपर छाता होने के कारण मुझे उसकी शक्ल नहीं दिखाई पड़ी लेकिन उसने मुझे फाटक के अन्दर से ही देख लिया था। कुछ क़दम चलने के बाद उसने पीछे से आवाज़ दी "क्या सामने

ली महोदय जा रहे हैं ? श्रीमान् ली पाईशीह् ?"

आवाज़ परिचित सी मालूम हुई, लेकिन मुझे याद नहीं आया कि यह किसकी आवाज़ है। मुझे मानो बिजली की तार छू गई। मैंने पीछे मुड़ कर देखा। काली छतरी के बीच उसका छोटा पीला चेहरा दिखाई दिया, लेकिन चूँकि अन्धेरा था, मैं उसके नक़्श नहीं देख सका। केवल इतना लगा कि दो बड़ी-बड़ी चमकीली आँखें मेरी ओर देख रही हैं। और बर्फ़ीली हवा के अज्ञात झोंके की तरह अचानक मेरे सारे शरीर में सनसनाहट दौड़ गई।

"तुम ?" मैं हैरानी से बुदबुदाया।

"आपने मुझे पहचाना नहीं। क्या आपको शँघाई में मिन-ते-ली का नये वर्ष का उत्सव याद है ?"

"ओहो ! तुम लाओ सान हो ? यहाँ कैसे आईं ? कितनी ग़जब बात है।"

बोलते-बोलते मैं अचानक ही उसकी ओर मुड़ गया और उसके चमड़े के दस्ताने वाले हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

"आप किधर जा रहे हैं ? यहाँ कब आये ?" उसने पूछा।

"खाना खाने शहर की ओर। मुझे यहाँ आये काफ़ी दिन हो गये। लेकिन तुम ? तुम किधर जा रही हो ?"

मेरे प्रश्नों की बौछार के सामने वह चुप रही, सिर्फ़ होंठ भींच कर सर हिलाती रही। मुझे याद आया कि शंघाई में उसका स्वभाव कितना विचित्र था, इसलिये बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किये मैं चुपचाप उसके साथ हो लिया।

थोड़ी दूर चलने के बाद उसने गम्भीर स्वर में बताया, मैं एक सहेली के घर माह-जौंग खेलने जा रही थी, इतने में अचानक आपसे भेंट हो गई। मिस्टर ली, इन दो-तीन सालों में आप आगे से अधिक उम्र के लगने लगे हैं। मेरे बारे में आपका क्या ख्याल है ? क्या मैं बिल्कुल बदल नहीं गई ?"

"तुम विशेष नहीं बदलीं।" मैंने जवाब दिया। "लेकिन लाओ-सान, मेरी ओर देखो! कैसा लगता हूँ? इन दो-तीन वर्षों में......।"

"मुझे आपकी थोड़ी-बहुत ख़बर पहुँचती रहती थी। कभी-कभी अख़बारों में भी आपकी गतिविधि का ज़िक्र रहता था। लेकिन मिस्टर ली, आप यहाँ कैसे पहुँचे? कितनी अजब बात है!"

"लेकिन तुम—तम यहाँ कैसे आईं?"

"शायद पूर्व-जन्म[1] के पापों का फल भुगत रही हूँ। मैं हवा में उड़ते एक तिनके की तरह हूँ—जो इधर-उधर भटकता रहता है, और जिसकी जड़ें कहीं भी स्थिर नहीं हो पातीं; आप मेरा यहाँ आना विचित्र समझते हैं—शायद यह विचित्र है—लेकिन एक तरह से विचित्र भी क्योंकर है? क्या मेरे भाग्य में यही नहीं बदा? मिस्टर ली, क्या आपको मिन-ते-ली का वह मोटा व्यक्ति याद है?

"वह विदेशी व्यापारी?"

"तुम्हारी स्मरणशक्ति तो अच्छी है!"

"उसकी क्या बात बता रही थीं?"

"मैं उसके साथ यहाँ आई थी।"

"हे भगवान्! यह भी बड़ी विचित्र बात है।"

"क्या इससे भी विचित्र कि—"

१. पुनर्जन्म के सिद्धान्त की ओर संकेत। जब किसी भी कठिन बात को समझना होता है, तो चीनी लोग उसे पूर्व-जन्मों का फल कहकर टाल देते हैं। उदाहरणस्वरूप यदि कोई स्त्री अपने पति से बहुत तंग है, और इस बात के प्रति सचेत है तो वह कहेगी, "मैं पूर्व-जन्म का कोई कर्ज़ अदा कर रही हूँ।" यह कहना व्यर्थ है कि साम्यवादी समाज में इस प्रकार के अन्धविश्वास मिट रहे हैं, लेकिन भाषा में इन प्रयोगों को जड़ से मिटाना अभी कठिन है। अन्तर केवल यही है कि पहले यह बात गम्भीरता से कही जाती थी—अब मज़ाक की तरह से कही जाती है।

"कि—?"

"कि वह चल भी बसा !"

"यानी—इसका मतलब है कि तुम अब अकेली हो ?"

"हाँ—यही मतलब है ।"

"आह !"

हम चुपचाप चलते हुए एक चौराहे पर पहुँच गए । उसने पूछा कि मैं कहाँ ठहरा हुआ हूँ । शायद अगले दिन शाम को वह मुझसे मिलने आना चाहती थी । मैंने स्वयं पहले उसके घर आने का प्रस्ताव किया, लेकिन वह शीघ्र ही उलट कर चेतावनी के स्वर में बोली, "नहीं—ऐसा नहीं होगा । आप मेरे घर नहीं आ सकते ।"

मुख्य सड़क पर तेज रोशनी और लोगों के भीड़-भड़क्के में हम अधिक घनिष्ठता से बातें न कर सके और वह बिना हाथ मिलाए ही, सिर्फ सिर हिलाकर दक्षिण की ओर की एक गली में तेज़ी से घुस गई ।

इस अजब मुठभेड़ के बाद मेरे मन में खलबली सी मच गई । तीन वर्ष पहले जब मैं उससे मिला था तो उस समय उसकी अवस्था बीस से कुछ कम ही रही होगी । शंघाई में ये चारों बहनें भिन-ते-ली मुहल्ले में एक मकान के निचले हिस्से में रहती थीं । ऊपर की मंज़िल में कोई विदेशी परिवार था । मैं सामने ही एक विदेशी ढंग की इमारत में रहता था । वह मकान चारों बहिनों ने किराये पर लिया था या उस विदेशी परिवार ने, मैं नहीं जानता । उन लड़कियों की आय का साधन क्या था—यह भी अभी तक मेरे लिये एक पहेली है । केवल एक रोज़ जब मैं उनके घर बैठा माह-जौंग खेल रहा था, कि बढ़िया कपड़े पहने एक अधेड़ उम्र का आदमी प्रकट हुआ—दूसरे नम्बर की बहन लाओ-एर्र ने बताया कि वह सज्जन सबसे बड़ी बहन के पति हैं और उनसे मेरा परिचय कराया । उसी समय बड़ी बहन लाओ ता उठ कर दूसरे कमरे में चली गई और माह-जौंग की मेज पर उसका स्थान सबसे छोटी बहन लाओ-सू ने ले लिया । उनकी बातचीत से मालूम हुआ कि वे क्यांगसी की रहने वाली

थीं—और वह व्यक्ति हूपे का निवासी था। जिस समय बड़ी बहन से उसकी मुलाक़ात हुई, उन दिनों वह क्यू-क्यांग में एक बैंक का मैनेजर था।

मैं तब हाल ही में अपने गाँव से आया था और शंघाई के एक पत्र के सम्पादकीय-विभाग में काम कर रहा था। अजनबी होने के कारण मुझे असुविधा न हो, इस ख्याल से पत्र के मैनेजर ने मिन-ते-ली मुहल्ले में अपने एक दोस्त मिस्टर चेन के यहाँ मेरे रहने का प्रबन्ध कर दिया था। सामने के पड़ौसियों के साथ मिस्टर ली के सम्बन्ध घनिष्ट होने के कारण मुझे भी दूसरी बहिन लाओ-एर्र से, जो उन सब में अधिक फुर्तीली थी, दोस्ती करने का मौका मिला।

मिस्टर चेन के नौकरों की कानाफूँसी से पता लगा कि लोगों के ख्याल में सबसे बड़ी बहन उस बैंक के मैनेजर की "दूसरी पत्नी[२]" है। सारे परिवार का खर्च वही उठाता है यहाँ तक कि छोटे भाई की स्कूल की फीस भी।

वैसे तो चारों बहिनें सुन्दर थीं, लेकिन लाओ-एर्र सबसे अधिक चुस्त और प्यारी थी। लेकिन उनका साधारण सौन्दर्य व्यर्थ था—सबसे बड़ी के सिवा किसी की भी शादी नहीं हो पाई थी।

२. दूसरी पत्नी—चीनी शब्द इते-इते का अनुवाद। अर्थात् "रखैल"। एक पत्नी के रहते हुए भी यदि कोई पुरुष दूसरी स्त्री को पत्नी रूप में घर लाकर रखता है और उससे उत्पन्न बच्चों को कानूनी अधिकार प्राप्त हैं तो वह स्त्री 'रखेल' नहीं कहलाती। चीन की जनवादी सरकार द्वारा हाल ही में लागू किया गया विवाह-कानून केवल एक पत्नी प्रथा को वैध मानता है। इसके बावजूद, पत्नी के अतिरिक्त किसी और स्त्री से उत्पन्न हुए बच्चे भी वैध माने गये हैं। लड़कियों को भी जायदाद के उत्तराधिकार का समान रूप से अधिकार मिला है।

मन में जब इन स्मृतियों का बवण्डर उठ रहा था, उस समय मैंने चलते-चलते अपने को शहर की सबसे बड़ी दुकान के सामने पाया। चारों ओर चहल-पहल थी। बढ़ते हुए अन्धेरे और वर्षा की फुहारों के डर से लोग तितर-बितर नहीं हुए थे। मेरे सूनेपन के मुक़ाबिले में सड़क के दोनों ओर की बत्तियों का प्रकाश आँखों को और भी चकाचौंध कर रहा था। सड़क के छोर पर पहुँच कर मैं सीधे हाथ "बैलूव रेस्तराँ" की ओर मुड़ गया। इसकी ऊपरी मंज़िलें छोटे-छोटे अलग कमरों में बँटी थीं, जहाँ से समुद्र का दृश्य दिखाई देता था। इसी लिये सारे मकाओ में मुझे यही रेस्तराँ प्रिय था।

आहिस्ता से ज़ीना चढ़कर मैं एक छोटे कमरे में बैठ गया और खाने का आर्डर दिया। उसके बाद एक सिगरेट सुलगा कर मैं मेज़ पर लटकते बिजली के लैम्प की ओर गम्भीर दृष्टि से देखने लगा। मिन-ते-ली की घटनायें फिर मेरी आँखों के सामने घूम गईं।

मुझे सब बहिनों में से लाओ-एर्र प्रिय थी। लाओ-ता को पति मिल चुका था, इसलिये मेरा उससे कोई सरोकार न था। लाओ-सान गुम-सुम और रहस्यमयी थी, उसमें जवान लड़कियों की-सी कोई बात न थी। सबसे छोटी लाओ-सू सिर्फ़ सोलह साल की थी। उसकी और मेरी आयु में इतना भारी अन्तर था कि हमारे बीच किसी भी भावुक-सम्बन्ध का स्थापित होना असम्भव था। इसलिये मैं केवल लाओ-एर्र पर न्यौछावर था।

सब बहनों के चेहरे लम्बे, आँखें बड़ी-बड़ी और नक्शे तीखे थे। सब का रंग गोरा और मुलायम। चारों की चारों सुन्दर थीं—देखने में एक जैसी आकर्षक। लेकिन चारों के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर था। लाओ-ता मैत्री-पूर्ण और शिष्ट थी, लाओ-एर्र चंचल और शोख थी, लाओ-सान रहस्यमयी, और लाओ-सू ठीक याद नहीं, लाओ-सू कैसी थी, क्योंकि मैंने उस पर विशेष ध्यान ही नहीं दिया।

लाओ-एर्र की शोखी और सजीवता उसकी बोलचाल, हँसी और

अन्य सब हरकतों से टपकती थी। मिन-ते-ली में ऐसा कोई नवयुवक न था जो लाओ-एर्ह पर लट्टू न हो। उसे सिर्फ़ एक बार देखना या मिलना ही उस पर मुग्ध होने के लिये काफ़ी था।

उसका क़द लम्बा नहीं था, तो भी वह आसानी से मेरे कन्धों तक पहुँच जाती थी। ऊँची एड़ी के जूतों में भी बिजली की तरह तेज़ चलती। खुले दिल से बातचीत करती जैसे दो पुराने सहपाठी लम्बे अरसे के बाद मुलाक़ात होने पर करते हैं। किसी अजब चीज़ के देखने पर या मज़ाक सुनने पर उसकी सुन्दर दन्तावलि चमक उठती और वह हँसी के मारे लोट-पोट हो जाती। अजनबियों की उपस्थिति में भी बिना सोचे-समझे, चंचलता के प्रकोप से कभी-कभी वह धम्म से मेरी बाहों से लिपट जाती। मेरी किसी भी बेढंगी हरकत को वह मज़ाक का निशाना बनाने से कभी बाज़ न आती। गुस्सा होना तो एक ओर—मैं अपने को खुशक़िस्मत समझता था। उसके छोटे से छोटे स्नेह-प्रदर्शन के प्रति मैं आभारी था और दिलो-जान से प्यार करता था। मेरी पूजा की सीमा यहाँ तक पहुँच गई थी कि माह-जौंग को खेलते समय मैं अपनी जीत-हार को भूल कर सिर्फ़ उसके अनुकूल चालें चलता। यह जानते हुए कि आज्ञा-पालन में थोड़ा-सा हेर-फेर हुआ तो मेरे गाल पर उसकी कोमल हथेली की हल्की-सी चपत पड़ेगी मैं सदैव इस सुखद प्रसाद को पाने के लिये लालायित रहता, जिसमें कभी-कभी कोमल-पद-प्रहार भी शामिल था। इस सुख को और भी लम्बा करने के लिये मैं चिढ़ाता, "चोट तो लगी ही नहीं! एक बार फिर आजमाओ।" और देखते-देखते मेरे गाल और जाँघें लाल हो जाते। आख़िर वह तंग आकर छोड़ देती। कई बार लाओ-ता और लाओ-सान अपनी बहिन की इस निर्दयता-पूर्ण क्रीड़ा पर उसे डाँटती, लेकिन इस निर्दयता से पीड़ित होने वाला, मैं उन्हें हस्तक्षेप करने से रोक देता।

एक रोज़ वह दोपहर के भोजन के लिए बाहर जाने को तैयार थी—मैं भी वहीं था, उसने हुक्म दिया कि मैं बहिन के कमरे में से नये जूते लाकर उसे पहनाऊँ। जूते कुछ तंग थे, इसलिए मुझे उसके लटके हुए

पावों को काफ़ी झटकना-मरोड़ना पड़ा। अचानक ही उसे क्रोध आ गया और उसने अपने सामने घुटने टेक कर बैठे हुए पुजारी पर अपनी पूरी ताक़त से थप्पड़ों और ठोकरों की वर्षा करदी। दूसरा जूता पहनाते-पहनाते मेरी गर्दन पर ख़राशें पड़ गईं, लेकिन मैंने प्यार से पूछा, "क्या अब ठीक है ?" उसने कहा, "दायाँ जूता अब भी चुभता है।" मैं उसके सामने खड़ा हो गया, मैंने कहा, "मुझे एक ठोकर लगाओ ! जूता ठीक हो जाएगा।"

अब मैं उसके पैरों—पूजा के क़ाबिल पैरों का ज़िक्र करूँगा। उनके आकर्षण की कल्पना करना भी कठिन है। उस समय उसकी आयु बीस से अधिक थी, लेकिन उसके पैर किसी बारह-तेरह वर्ष की किसी बच्ची के समान छोटे थे। एक बार रेशमी मोज़े पहनाते समय मुझे उसके नाज़ुक सफ़ेद पैरों की एक झलक दिखाई दी थी। लम्बे लचीले अँगूठों और गुलाबी एड़ियों वाले उन सुन्दर अंगों को पैर कहना अनुचित होगा। उसी क्षण से वे युगल चरण मेरी कल्पनाओं का केन्द्र बन गए। इस केन्द्र से तरह-तरह की अद्भुत कल्पनाएँ निकल कर प्रणय के स्वप्निल संसार में नर्तन करतीं। नए सुवासित चावलों की तरह किसी भी कोमल सफ़ेद वस्तु को देखते ही उसके पैरों का स्मरण हो आता।

"काश !" मैं सोचता, "काश ! यदि इस कटोरी में उसके पाँव हों, तो ज़रूर मेरे चबाने से उसे अजब-सी गुदगुदी होगी। हाँ, अगर वह मेरे सामने लेटी हो और मैं उसके पाँवों को चूमूँ तो मेरी अद्भुत ध्वनियाँ, आहें और सम्बोधन आधे ही उस तक पहुँच पाएँगे। शायद वह उठकर मेरे सर पर एक-आध धौल जमा दे......!" इस कल्पना के जागते ही मैं चावल की एक कटोरी और अधिक खा डालता।

अब आप आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि छः महीनों में लाओ-एर्र जैसी शोख़ और स्वच्छन्द प्रकृति की लड़की और मेरे जैसे विनीत फूहड़ और मूर्ख व्यक्ति के बीच कैसे सम्बन्ध विकसित हुए होंगे। इसके अतिरिक्त मेरी आयु सत्ताईस से भी कम थी, मैं अविवाहित था

और अपनी आशाओं की सफलता के लिए विश्वासपूर्वक भविष्य की ओर देख रहा था।

एक रोज हम सब लोग अपने दोस्त के कमरे में बैठे थे। इतने में श्रीमती चेन ने लाओ-एर्र से कहा, "यदि तुम्हारी शादी मिस्टर ली से हो जाए तो जूते और मोजे पहनाने वाला एक व्यक्ति हमेशा तुम्हारे पास रहेगा। दिन-रात, चपतों और ठोकरों से तुम अपना क्रोध शान्त कर सकोगी। क्या यह ख़ुशी की बात नहीं है?" लाओ-एर्र ने कनखियों से मेरी ओर देखकर जवाब दिया, "वह इस क़ाबिल नहीं, महामूर्ख है और मेरी देखरेख नहीं कर पाएगा। इससे बेहतर तो यह होगा कि मैं किसी ऐसे आदमी के पल्ले पड़ूँ, जो मुझे पीटे; कम से कम मैं उसका हुक्म तो मान सकूँगी।" इस तरह के मज़ाक सुनकर मुझे काठ मार जाता और मैं घोर निराशा की अवस्था में घंटों तक लगातार सड़कों की ख़ाक छानता फिरता।

एक शनिवार की संध्या को हम एक संगीत-सभा के बाद शंघाई के टाऊन हॉल से बाहर निकले ही थे कि लाओ-ता और लाओ-सान हम दोनों को अकेला छोड़कर किसी सहेली के साथ सिनेमा देखने चल दीं। अचानक ही सर्द हवा के एक झोंके ने आकर हमें बर्फ़ की तरह सुन्न कर दिया। एक रेस्तराँ के सामने रुक कर मैंने डरते-डरते काँपती आवाज़ में लाओ-एर्र से कहा, "आओ, घर लौटने से पहले कोई गर्म चीज पी जाए।"

"अच्छा"—मेरी जान में जान आई। शराब और कमरे की गर्मी से मेरी झेंप छू-मन्तर हो गई। मैंने चारों तरफ़ नजर दौड़ाई—हम दोनों दो-मंजिले के भोजनालय में अकेले थे, इस बात से कुछ ढाढ़स हुआ, याचना-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखकर मैंने काँपती आवाज़ में अपनी उत्कट कामना को व्यक्त किया, "लाओ-एर्र! तुम---तुम मेरी भावनाओं को समझती हो? यदि—यदि तुम और मैं—यदि तुम और मैं एक हो जाएँ!"

उसने आँखें उठाकर मेरी ओर देखा, उसके होठों पर एक विनोद-

भरी मुस्कुराहट दौड़ गई, उसने वार रोक कर कहा, "तो फिर ?"

अन्धे जोश में आकर मैंने उसे चूम लिया।

अचानक ही तड़ाक से उसने मेरे मुँह पर एक तमाचा मारा—और सारा कमरा उस आवाज़ से गूँज उठा। नीचे खड़े वेटर भी आवाज़ सुनकर भागते हुये आए और पूछा कि हमें और किस चीज की ज़रूरत है ? मुझे अपने आँसू थाम कर बिल लाने का आर्डर देना पड़ा।

वेटर लोग बिल लेने के लिए नीचे चले गए। उसने मेरी ओर मुड़ कर अपने स्वाभाविक ढंग से कहा, "मिस्टर ली, ऐसी हरकत ठीक नहीं अगर आपने फिर ऐसा किया तो मैं और ज़ोर से मरम्मत करूँगी !"

और मुझे ज़बरदस्ती अपने ऊपर क़ाबू पाकर इस बात को हँसी में टालना पड़ा।

लेकिन बाकी लोगों से यह बात छिपी न रह सकी। मेरे व्यवहार से उन्हें मेरे दिल में सुलगती आग का कुछ अनुमान तो अवश्य हुआ होगा। इसीलिये लाओ-सानने, जिसके विचित्र स्वभाव के ज्वार-भाटों का कोई ओर-छोर न था, हम दोनों को और नज़दीक लाने का प्रयत्न किया। कई बार जब लाओ-एर्र मारपीट या मज़ाक में सीमा पार कर जाती तो लाओ-सान हमेशा मेरी तरफ़दारी करती। लेकिन जब वह मेरे स्वप्नों की सम्राज्ञी को हल्की सी झिड़की भी देती तो मैं मूढ़तावश उसे दाल-भात में मूसरचन्द समझता।

इस प्रकार छः महीने से अधिक समय तक मैं लगातार उन चारों बहिनों की संगति में रहा। सर्दियों में अचानक ही मालूम हुआ कि लाओ-एर्र की सगाई पेकिंग युनिवर्सिटी के किसी विद्यार्थी से पक्की हो गई है।

यह घटना नये साल से कुछ पहले हुई थी। नववर्षोत्सव के दिनों की अपनी मानसिक दशा का वर्णन करना मेरे बस के बाहर है। मैं स्वयं नहीं जानता कि वे असह्य यातना-पूर्ण दिन कैसे बीते। लाओ-एर्र ने मेरे मन का बोझ हल्का करने के भरसक प्रयत्न किये। वह अक्सर मुझे

रेस्तराँ, माह-जौंग पार्टियों और सिनेमा-घरों में घसीट कर ले जाती। इन दिनों लाओ-सान जो मुझे अत्यन्त अप्रिय लगती थी, और जिसे अपने घनिष्ट क्षणों में लाओ-एर और मैं "मनहूस चुड़ैल" कह कर पुकारा करते थे, मेरी सबसे अधिक शुभचिन्तक मित्र साबित हुई। यही वह लाओ-सान थी जो वर्ष के आखिर में, उस दिन दक्षिण प्रदेश की बन्दरगाह पर अचानक ही वर्षा की बूँदाबादी में मुझे मिली थी।

ये सब स्मृतियाँ उस समय मेरे मानस-पटल को छूती हुई निकल गई, जब मैं रेस्तराँ में बैठा शून्य की ओर ताक रहा था—तल्लीनता भंग होने पर मैंने देखा कि मेरा बिना पिया सिगरेट जल कर राख हो चुका है। और मेरे सामने रखी गर्म शराब भी बिल्कुल ठंडी हो गई है।

खाने का अभिनय-मात्र करने के बाद मैं बारिश में आहिस्ता-आहिस्ता टहलता हुआ अपने होटल में लौट आया। कपड़े बदल कर बिस्तर पर लेट गया, लेकिन सारी रात करवटें बदलते ही बीत गई। अतीत की स्मृतियाँ मुझे फिर सता रही थीं।

मुझे याद आया कैसे नववर्ष के दूसरे दिन लाओ-सान और मैं छुट्टी बिताने के लिये सूचो गये थे, कैसे शाम-भर हम चुपचाप एक दूसरे को निहारते रहे, अगले दिन तड़के ही जब मैं उठा तो कैसे उसने मुझे अपने बिस्तर पर बुलाया था। और कितने उत्तेजक ढंग से जमीन पर गिरे कपड़ों को उठाने के लिये कहा था। लेकिन लाओ-एर अभी तक मेरे हृदय में विराजमान थी। इसलिये मैं उसके नेक इरादों की तरफ़ कोई ध्यान न दे सका। इस यात्रा से हमारी घनिष्टता नहीं बढ़ी और हम दोनों पूर्ववत, भाई-बहिन की तरह शँघाई लौट आये।

फिर पूर्णमाशी के गुलगुलों के त्योहार के बाद, तीव्र मानसिक वेदना से पीड़ित होने के कारण, बिना उन बहिनों से विदा लिये, बिना बोरिया-बिस्तर समेटे मैंने शँघाई को छोड़ दिया और अतीत को भुलाने, दफ़नाने के लिये हिमाच्छादित पेकिंग की शरण ली।

पिछले तीन वर्षों से मैं इधर-उधर भटक रहा हूँ और किसी एक स्थान पर भी छै महीने से अधिक नहीं टिका। मैंने अपनी श्रान्त आत्मा को तूफ़ान के भरोसे छोड़ दिया और कहानियों द्वारा अपनी निराशा और असन्तोष को व्यक्त करने से शायद मुझे थोड़ी शान्ति भी मिली। अनजाने में ही मैं तपेदिक का शिकार हो गया—मैं चीन के इस दूरवर्ती दक्षिणी भाग में आया, तो अचानक ही सन्ध्या के झुटपुटे में लाओ-सान से मुठभेड़ हो गई। इतनी विशाल दिखाई देने वाली पृथ्वी वास्तव में बड़ी छोटी है—तभी तो हमारे जैसे दो भूले भटके राही आख़िर एक कोने में मिल ही गये।

अतीत को बार-बार दुहराते लम्बी रात चुटकियों में निकल गई। प्रातः होने पर भी मुझे नींद नहीं आई। लेकिन जब मजदूर लोग काम पर जाने के लिये मेरी खिड़की के नीचे से गुज़रे तो मुझे भी खुमारी सी आ गई।

मुझे कुछ याद नहीं कि मैं कितनी देर तक सोता रहा। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटा कर मेरे सपनों को छिन्न-भिन्न कर दिया। मैं फ़ौरन उठ बैठा और अस्त-व्यस्त बिस्तर को ठीक करते हुए देखा कि बारिश थम चुकी है। दक्षिण की खिड़की में से सूरज की पीली किरणें चमक रही थीं।

मैं "भीतर आ जाओ" कह कर प्रतीक्षा करने लगा लेकिन यह देख कर हैरानी हुई कि कोई अन्दर नहीं आया। कुछ देर और प्रतीक्षा करने के बाद मैं कपड़े सम्भालते हुए बिस्तर से उतरने को ही था कि दरवाजा धीरे से खुला और दरवाज़े के पीछे वही विचित्र और रहस्यमय ढँग से मुस्कुराती हुई लाओ-सान खड़ी थी !

"अरे, लाओ-सान" मैं खुशी से उछल पड़ा। "इतनी जल्दी कैसे आ पहुँचीं ?"

"जल्दी ?" उसने तुरन्त जवाब दिया। "जरा खिड़की की ओर देखो ! दिन कितना चढ़ आया है ?"

बोलते-बोलते उसने मुस्कुरा कर मेरी ओर सर से पाँव तक देखा और इधर-उधर चक्कर काटने लगी। फिर मानो उसे घबराहट सी महसूस हुई और वह खिड़की के पास खड़ी हो कर बाहर झाँकने लगी। झरोखे के नीचे हमारे सम्पन्न पड़ौसी का बाग़ था, वहाँ उगे बबूल के वृक्षों के झुरमट पर सूरज की किरणें चमक रही थीं।

उसे देख कर लगा कि पिछले तीन सालों में वह बहुत दुबली हो गई है। जब वह कमरे में दाख़िल हुई थी, तो उसके पीलेपन से लगता था कि वह रात देर तक माह-जौंग खेलती रही है। उसके नाक और मुँह पर पड़ी लकीरें भी पहले से अधिक गहरी दिखाई दे रही थीं। लेकिन उसके पीले चेहरे पर वही भौंरे-सी काली आँखें चमक रही थीं, जो मँडराती हुई देखने वाले का पीछा करती रहती थीं।

"लाओ-सान, वहां क्या कर रही हो?" मैंने पूछा और जल्दी से बटन बन्द करता हुआ उसकी ओर बढ़ा।

मैंने उसके कन्धे पर हल्की सी थपकी दे कर कोट उतारने में उसकी सहायता करनी चाही। मेरा हाथ बचाते हुए वह आगे खिसक आई और मुस्कुरा कर मेरी ओर मुड़ी,

"मैं अपना हिसाब जोड़ रही हूँ।"

"इतनी सवेरे कैसा हिसाब?"

"पिछली रात की जुए की आमदनी।"

"तो तुम जीतीं?"

"मैं हमेशा जीतती हूँ। सिर्फ़ एक बार हारी हूँ। जब तुम्हारे साथ खेली थी।"

"अच्छा! तुम्हें अभी तक याद है? भला बताओ तो तुम कितना हारी थीं?"

"मैं लगभग अपनी ज़िन्दगी हार चुकी थी!"

"लाओ-सान!" मैं कुछ ठहर कर बोला, "तुम ज़रा नहीं बदलीं—वही ज़िन्दगी और मौत की बेसिर-पैर की बातें!"

वह चुपके से मुस्कुरा दी। मैंने उसे बैठने के लिये कुर्सी दी और कमरे के कोने में रखी पानी की चिलमची के पास खड़ा होकर हाथ-मुँह धोने लगा।

थोड़ी देर बाद वह चिल्ला उठी, "तुम भी तो नहीं बदले ! अभी तक यह मनहूस सिगरटें फूँकते हो !"

कुछ क्षण चुप रहने के बाद मैंने प्रत्युत्तर दिया, "यह अच्छी बात है कि तुम नहीं बदलीं। इसीलिये तो यहाँ आ गई हो—अगर तुम्हारे स्थान पर कहीं लाओ-एर्र होती तो वह यहाँ आने की बात भी न सोचती।"

"मिस्टर ली—तो आप अभी तक लाओ-एर्र को नहीं भूले ?"

"ऐसा लगता है कि उसकी धुँधली सी स्मृति अब भी बाक़ी है।"

"यह तो आपकी सहृदयता है।"

"ख़ैर !"

"लाओ-एर्र का सितारा बड़ा तेज़ है।"

"आजकल कहाँ है वह ?"

मैं स्वयं नहीं जानती। दो-तीन महीने हुए, सुना था कि वह अभी तक शँघाई में है।"

"और लाओ-ता और लाओ-सू ?"

"वे अभी तक मिन-ते-ली में ही हैं। सिर्फ़ मैं ही इतना बदल गई हूँ।"

"यह तो ठीक है। लेकिन ज़रा सुनूँ तो तुम क्यों नहीं चाहती थीं कि मैं तुम्हारे घर आऊँ ?"

"यह बात नहीं थी ! आपका आना हमारे सर माथे पर ! लेकिन मैं निन्दा से डरती हूँ। आह-लू के परिवार के बहुत से लोग हैं।"

"हाँ, मुझे अब याद आया—उस विदेशी का नाम लू था। लेकिन लाओ-सान उस, मोटे आदमी पर तुम कैसे रीझ गईं ?"

"मुझ सरीखी लड़की के बारे में यह भला कैसे कहा जा सकता है

कि मैं "अमुक" व्यक्ति पर "रीझ" गई ? यह तो एक विचित्र सपना था !"

"सुखद सपना ?"

"सुखद था अथवा दुखद, मैं स्वयं नहीं समझ पाई।"

"बिना समझे-बूझे तुमने शादी कैसे करा ली ?"

"क्या वह शादी थी ? मैं तो लाओ-ता और उसके पति द्वारा उस व्यक्ति को दी गई भेंट मात्र थी।"

"लाओ-सान !"

उसे चुप देख कर मैंने एक और सवाल किया "इतनी छोटी उम्र में वह कैसे चल बसा ?"

"मैं क्या जानूं ? उसने मेरे साथ दुर्व्यवहार किया था।"

उसके रंग-ढंग देखकर मैं भाँप गया कि वह नहीं चाहती मैं और सवाल पूछूँ, इसलिए हाथ-मुँह धोकर मैं उसके सामने की कुर्सी पर बैठ कर चुपचाप सिगरेट पीता रहा। मेरी घड़ी में सवा दो बज चुके थे। मैंने कनखियों से उसकी ओर देखा। उसकी रहस्यमयी मुस्कान का कहीं नामोनिशान भी न था। नीचे झुकी आँखों, चेहरे की लकीरों और पीले गालों से वह वैधव्य की सजीव प्रतिमा दीख रही थी। यह सोचकर कि वह अतीत की स्मृतियों को दुहरा रही है, मैंने उसकी तल्लीनता को भंग करना उचित न समझा, और चुपचाप सिगरेट पीता रहा। एकाएक वह उछल कर खड़ी हो गई, "मैं जा रही हूँ" वह अपनी बात पूरी करने से पहले ही दरवाजे से बाहर थी। मैं उसे कुछ देर और ठहराने के इरादे से पीछे-पीछे भागा, लेकिन वह पीछे की ओर एक नजर डाले बिना ही चली गई। मैंने जीने पर झुककर उसे आवाज दी, लेकिन वह खटाखट सीढ़ियों से नीचे उतरती गई। कुछ रुककर अपनी विशाल काली आँखें मेरी ओर उठाकर देखा और धीमे, अस्पष्ट स्वर में बोली, "मैं कल फिर आऊँगी।"

इसके बाद वह समय निकाल कर रोज मुझे मिलने आती, और एक-दूसरे के प्रति हमारी भावनाएँ दिन-प्रति-दिन गहरी होती गईं। लेकिन

जब भी मैं उसके अधिक समीप जाने का प्रयत्न करता तो वह भाग कर या हमारे बीच सुरक्षा की दीवार खड़ी करके मेरे आग्रह को टाल देती। इसी तरह पन्द्रह दिन गुजर गए और मैं पूरी तरह से उस पर न्योछावर हो चुका था। कहा जाता है कि तपेदिक के मरीज की प्रणय-भावना बहुत आसानी से जागृत होती है, कम से कम मेरे विषय में तो यह सोलह आने सही थी। अब और बर्दाश्त करना मेरे क़ाबू के बाहर था, इसलिए एक दिन दोपहर को मैंने उसे ज़बरदस्ती रोक लिया और कहा कि वह रात का खाना खा कर ही जाए।

उस दिन सुबह बड़ी तेज़ धूप निकली थी और उसके होटल में आने के समय तक बड़ी गर्मी रही, लेकिन तीन-चार बजे के क़रीब आस्मान में बादल घिर आए और साँझ होते-होते सर्द हवा चलने लगी। मौसम बदलने का उस पर अवश्य कुछ प्रभाव पड़ा था, इसीलिए वह रह-रह कर गहरे सोच में डूब जाती। वह कई बार जाने के लिए उठी, लेकिन अपने हृदय की समस्त भावनाओं का जोर लगाकर मैंने उससे रुकने का आग्रह किया। वह रुक तो गई, लेकिन पहले की ही तरह सिर झुकाकर अपने विचारों में तल्लीन हो गई।

पहाड़ियों के पीछे सूर्य अस्त हो चुका था, और कमरे के कोनों में परछाइयाँ थिरकने लगीं। खिड़की में से दिखाई देने वाले आकाश के टुकड़े की आभा ज्यों की त्यों मोतियों के समान थी, यद्यपि एक घना सफेद बादल घूँघट की तरह पास सरकता आ रहा था। पृथ्वी से दूर स्थित तारों की झिलमिलाहट में हम दोनों विचारमग्न बैठे थे। सरसराती हुई हवा के झोंके बार-बार खिड़की के झरोखों से टकरा जाते थे। ऐसा लगता था, मानो समुद्र की लहरों के गम्भीर स्वर ने थपथपाकर हमें मृत्यु की गोद में सुला दिया हो। चारों ओर सन्नाटा छाया था। अचानक बिजली की बत्ती जल गई और हम दोनों चौंक उठे।

मैं जल्दी से उठा और लम्बा काला लबादा उसके कन्धों पर ओढ़ा दिया। कुर्सी के पीछे खड़े होकर धीरे-धीरे उसके गालों को सहलाने लगा,

लेकिन इससे पहले कि मेरे गाल उसके गालों को छू पाते, वह मानो किसी स्वप्न से जाग उठी—उसने मुझे एक ओर धकेल दिया। मुझे डर था कि वह अब फ़ौरन यहाँ से चल देगी, इसलिए मैं दरवाज़े की तरफ़ झपटा—मेरी इस तीव्र उद्विग्नता को देखकर उसे अवश्य गुदगुदी हुई होगी, वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह अब भी कमरे के बीचोंबीच बेरुख़ाई से खड़ी थी, और लैम्प की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। मैंने देखा कि उसकी आँखों में विनोदपूर्ण चमक थी और चेहरे की शिकनें ढीली पड़ गई थीं। मेरी खोयी हिम्मत लौट आई और मैंने उसको अपनी बाहों में भर लिया, और आहिस्ता से उसके कान में फुसफुसाया, "लाओ-सान, क्या तुम मुझसे—डरती हो ?—विश्वास रखो, आगे से ऐसा नहीं होगा। आओ चलकर इकट्ठे खाना खाएँ।"

उसने उत्तर में एक शब्द भी नहीं कहा। मैं उसे प्यार से सहारा देकर दरवाज़े तक ले आया, मैंने अपने हाथ उसकी कमर से हटा लिए और मैं उसके पीछे-पीछे ज़ीने से नीचे उतर आया।

गलियों में इधर-उधर चक्कर काटने के बाद हम बैलूव रेस्तराँ की ओर चल पड़े। तेज हवा के झोंकों से उड़-उड़ कर वृक्षों के पत्ते हमारे सरों पर गिर रहे थे। सड़क के लैम्पों की रोशनी फीकी और उदास थी। रेस्तराँ में पहुँच कर हम सबसे ऊपर की मंज़िल के एक छोटे, अलग कमरे में जा बैठे। सामने समुद्र था।

"मैं वर्ष के आख़री महीने में अपनी साथिन के साथ बैठा खाना खा रहा था।" यहीं से यह कहानी शुरू हुई थी, लेकिन अतीत ने बार-बार आकर रुकावट डाल दी। अतीत—जो उस वायु-मण्डल के करण-करण में समाया हुआ है, जिसमें हम साँस लेते हैं, जो धुएँ की तरह हमारे चारों ओर मँडराता रहता है, और जिसका अज्ञात अस्तित्व कभी-कभी एक सर्द हाथ की तरह हमारे हृदय को जकड़ लेता है। आराम से बैठ जाने पर मैंने देखा कि हवा ने उसके बाल बिखेर दिए हैं, और उसका पीला चेहरा और भी पीला पड़ गया है। वह अपना लबादा उतारना चाहती थी,

लेकिन मेरे आग्रह पर उसे ओढ़े रही। मैंने उसके लिए एक ग्लास ब्रांडी मँगवाई। चाय, ब्रांडी और लबादे की गर्मी और उत्तेजनाजनक प्रभाव से वह पुनः सजीव हो उठी—और उसकी आँखों में वही विचित्र और अप्राप्य ज्योति आ गई, जिसके रहस्य को पाने की मेरी तीव्र आकाँक्षा थी।

"आज ठंड हो गई है।" मैंने चुप्पी को तोड़ने में पहल की।

"तुम्हें भी ठंड लग रही है?"

"क्यों? भला मुझे क्यों न लगे?"

"मेरा विचार था कि तुम स्वयं ठंडे हो।"

"सचमुच, लाओ-सान!"

बड़ी देर तक दोनों चुप रहे। पहले की-सी निस्तब्धता ने दोबारा हमें घेर लिया। मैंने ऊँचे स्वर में बुदबुदाकर, जैसे अपने से ही सवाल पूछा, "क्या सूचों की वह रात इतनी ही ठंडी थी?"

"मैं भी तुम्हें यही पूछने वाली थी।"

"लाओ-सान, क़सूर मेरा था। सारा क़सूर मेरा था।"

वह चुप रही, इसलिए मैं बात को जारी न रख सका। खाना खाते समय मैंने उस पर अत्यधिक ध्यान दिया। मैंने उसे मिन-ते-ली के बीते ज़माने की याद दिलाई, जब हम इकट्ठे रहते थे। मैं सोचता था कि बीते दिनों की याद से उसके हृदय में सुलगती हुई चिनगारियाँ भड़क कर प्रचण्ड शोलों का रूप ले लेंगी, लेकिन उसकी कठोर मुद्रा से ऐसा लगता था कि मेरे दिये गए सब प्रलोभन बेकार हैं। अन्त में तीव्र निराशा से विक्षिप्त होकर मैं रेस्तराँ के पड़ौस में स्थित होटल के एक कमरे में उसे ज़बरदस्ती घसीटता हुआ ले गया।

आधी रात—बाहर आँधी और तूफ़ान की शाँय-शाँय। कमरे के अन्दर लैम्प की रोशनी अधिक तेज़ हो गई। मुझे लगा जैसे मेरी आत्मा का सूनापन बढ़ता जाता है—प्रतिक्षण यह शून्यता बढ़ती जाती थी।

वह मेरी बग़ल में अलग चादर ओढ़े, दीवार की ओर मुँह फेर कर लेटी हुई थी। मेरी प्रत्येक प्रणय-याचना के उत्तर में वह मुझे दूर धकेल

देती। मैं निराशा से उन्मत्त हो उठा। अन्त में मेरी याचना की तीव्रता से तंग आकर वह रोने लगी।

सिसकियों के बीच मुझे उसके अस्पष्ट शब्द सुनाई दिए, "हमारा—हमारा सम्बन्ध तो कभी का ख़त्म हो चुका—कभी का। उस वर्ष—यदि उस वर्ष तुम—तुम ऐसे हो सकते—जैसे आज हो—तो—तो मैं—मैं कभी इतने दुःख न झेलती। मैं—ओह, तुम्हें क्या पता—पिछले तीन वर्षों में मैंने क्या कुछ नहीं झेला ?"

अब सिसकियों के मारे उसका गला रुँध गया, और सर पर चद्दर ओढ़ कर वह शोक के अथाह समुद्र में डूब गई। मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा बिस्तर पर बैठ कर सोचने लगा—उसका अतीत, असफल विवाह, वर्तमान वैधव्य, मेरे प्रति उसकी पूर्व भावनाएँ और अपनी सूनी खानाबदोशी की जिन्दगी......ये सब क्या है ? न रोने के बावजूद भी मेरा हृदय एक अज्ञात पीड़ा से भर उठा। आधे घंटे तक वह सिसकियाँ भरती रही और मैं उसके सिरहाने बैठा सोचता रहा। ऐसा लगता था कि उसकी आँसुओं की बाढ़ में मेरी वासना बह चुकी थी।

आखिर जब उसकी सिसकियाँ बन्द हुईं तो मैं उसके ऊपर झुका।

"लाओ-रान", मैंने गम्भीरता से कहा, "मैं बड़ा मूर्ख हूँ—जो तुम्हारी असली भावनाओं को न समझ सका। मुझे माफ़ कर दो, मैं समझ गया हूँ कि हमारे संयोग का अवसर बीत चुका। मैं शाम से जो याचना करता आया हूँ, उसे भूल जाओ ! मैंने तुम्हें कष्ट देकर इतना पाप किया। आओ हम अतीत के साथ ही इस शाम को भी भूल जाएँ। मेहरबानी से मुझे माफ़ कर दो !"

बातें करते समय मेरा सिर उसके सिरहाने को छू रहा था, लेकिन वह बिना हिले-डुले, मेरी ओर पीठ करके चुपचाप लेटी रही। काफ़ी देर बाद उसने सिर घुमाकर मेरी ओर देखा। उसकी आँसू भरी आँखों में

घृणामिश्रित दया का भाव था, लेकिन मेरे लिए वह नजर कितनी बहुमूल्य थी, इसे बताना असम्भव है। फाँसी की सजा पाने वाले किसी क़ैदी को अचानक रिहाई की खबर मिलने से जो सन्तोष प्राप्त होता है, वही मुझे भी प्राप्त हुआ।

उसने फिर मेरी ओर पीठ फेर ली, और मैं उसके सिरहाने बैठकर भोर होने की राह देखने लगा। भला नींद कैसे आती? तो भी मुझे लगा जैसे दिल पर से मनों भार उतर गया हो।

सवेरा होते ही वह अपनी पहले की-सी हालत में आ गई। उसके ओठों पर वही चिर-परिचित मुस्कुराहट थिरक रही थी। निराशा का कड़ुवा घूँट पी कर मैंने भी मुस्कुराने की जी-तोड़ कोशिश की।

जब हम होटल से निकले तो पौ फट चुकी थी, रात के तूफ़ान के बाद आकाश उजला-धुला निकल आया था—समुद्र में से निकल कर सूर्योदय की किरणें सुनसान गलियों के पत्थरों पर चमक रही थीं।

जन-शून्य सड़कों पर सन्नाटा छाया था, सिर्फ गिरे हुए पत्ते और राख की छोटी-छोटी ढेरियाँ दिखाई पड़ती थीं।

मैं घर के फाटक तक उसे पहुँचाने गया। उसके बर्फ़ की तरह ठंडे हाथों को थामते हुए, हल्के स्वर में मैंने कहा, "लाओ-सान, अपनी देख-भाल ठीक से करना, अब हम शायद ही एक दूसरे से मिल सकें!" मेरा गला रुँध गया और आँखें धुँधली हो गईं। जहाँ तक मुझे याद है—उसने एक लम्बी अर्थपूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा था। फिर जल्दी से अपने हाथ छुड़ा कर वह घर के पिछवाड़े की ओर भाग गई।

उसी शाम मैं उद्वेलित सागर की छाती चीरती हुई एक स्टीम-बोट पर सवार था। किसी औरत की भौंहों की तरह पतला, धनुषाकार चन्द्रमा आसमान में चमक रहा था। मकाओ का शहर दूर क्षितिज पर एक बिन्दु की तरह दिखाई देने लगा और फिर आँखों से ओझल हो

गया। मैंने अपने को ऐसे अजनबी लोगों के बीच में पाया, जिनसे मेरा कोई वास्ता न था। यहाँ तक कि उनकी दक्षिणी बोली भी मेरे लिए दुर्बोध थी, हालाँकि मैं यह समझ रहा था कि वे लोग इस बात की शर्त बद रहे थे कि हमारी स्टीम-बोट कितने मील फ़ी घंटे की रफ़्तार से चल रही है। तो अब, जीवन-भर ऐसा ही होगा—ढेर की ढेर बकवाद सुननी पड़ेगी, और अजनबी चेहरे देखने को मिलेंगे।

चेन—शेंग

(१८९०—)

पेकिंग यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर यॉंग-चेन-शेंग, एक उद्भट विद्वान्, साहित्यालोचक, उपन्यासकार और कहानी-लेखक हैं। आप शान्तुंग प्रान्त के पेंगले नगर के निवासी हैं।

अपनी पीढ़ी के अनेक दूसरे लेखकों की तरह आप ने भी चीन के राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की और ४ मई के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। जब पेकिंग यूनिवर्सिटी से इस आन्दोलन का सूत्रपात हुआ उस समय आप चीनी भाषा और साहित्य विभाग में कार्य करते थे। इसके बाद कोलम्बिया और हारवर्ड के विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त करके आपने चीन लौट कर पुनः अध्यापन कार्य शुरू किया। आप सिंगुआ यूनिवर्सिटी के कला-विद्यालय के अधिपति तथा शान्तुंग यूनिवर्सिटी के चान्सलर जैसे प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित कर चुके हैं। इन दिनों आप पेकिंग यूनिवर्सिटी में चीनी भाषा और साहित्य विभाग के अध्यक्ष हैं।

१९१५ में आपका अत्यन्त सुन्दर उपन्यास 'यू-चुन' प्रकाशित हुआ। उसके बाद आपकी अनेक कहानियाँ और निबंध विभिन्न पत्रिकाओं में छपे।

आपने दो बार (१९३३–३४ और १९४५–४६) 'ता-कुंग-पाओ'

नामक पत्र के प्रसिद्ध 'साहित्य-संस्करण' का सम्पादन किया।

पिछली कई दशाब्दियों से सभी प्रमुख साहित्यकारों को व्यक्तिगत रूप से जानने के कारण आपको आधुनिक साहित्यिक आन्दोलन का प्रामाणिक ज्ञान है। क्रान्तिकारी न होते हुए भी आप सदा से सामयिक प्रगति के साथ रहे हैं, आजकल पेकिंग म्युनिसिपल लेखक तथा कलाकार संघ के खोज-विभाग के अध्यक्ष रूप में आप महत्वपूर्ण सेवा-कार्य कर रहे हैं।

प्रतिशोध

नन्हीं जेड भी द्वीप की अन्य लड़कियों जैसी ही थी। आयु में पन्द्रह वर्ष की होने पर भी उसका ज्ञान मछलियों के इने-गिने नामों तक ही सीमित था। उसकी बनाई हुई किश्तियों के अगले भाग पर 'चीते की आँखों' की तस्वीर रहती। उसे अड़ौस-पड़ौस में मटरगश्ती करने, और सहेलियों को जमा करके, बुढ़िया वाँग के आँगन के पथरीले फ़र्श पर कँकड़ों से "निशानेबाजी" खेलने में बड़ा मज़ा आता। और किसी अजनबी को देखने पर मुँह में उँगली डाल के टुकुर-टुकुर देखने के सिवा उसे और कुछ शऊर न था।

जब माँ ने उसकी सगाई काओ-एर्र से पक्की कर दी तो वह उसके सामने जाने में शरमाने लगी। इससे पहले वह किसी मर्द के सामने नहीं शरमाई थी। गली में काओ-एर्र से सामना होने पर उसकी पलकें भारी हो जातीं, और मुँह में उँगली डालकर वह वहाँ से भाग खड़ी होती, और घर आकर दरवाज़े की साँकल लगा लेती। अगर कोई सहेली छेड़ती तो वह "इन कमीनी बातों" से चिढ़ कर उसे जोर से काट लेती और मुँह में न जाने क्या-क्या बड़बड़ाती रहती।

कुछ समय बाद एक और पड़ौसी ल्यू-वू से कीमती उपहार पा कर उसकी माँ को यह विश्वास हो गया कि वही उसकी बेटी के उपयुक्त दामाद है। इसलिये नन्हीं जेड की सगाई ल्यू-वू से पक्की हो गई। अब वह सोच में पड़ गई। उसकी समझ में न आया कि अब काओ-एर्र को

देखकर उसे वहाँ से भागना चाहिए या नहीं।

ल्यू-व्रू से उसकी शादी होने में अभी तीन रातें बाकी थीं। वह अपनी माँ के साथ 'काँग'[1] में सोई पड़ी थी, अचानक काओ-एर्र कई मोटे-तगड़े जवानों समेत घर में घुसा और जेड को जबरन उठा ले गया। वह डर के मारे रोने लगी। काओ-एर्र ने उसे अपने घर ले जाकर दुलारा-पुचकारा। उसका रोना बन्द हो गया। कुछ दिनों बाद लोग समझने लगे कि अब वह काओ-एर्र की पत्नी बन चुकी है। अब जेड की समझ में न आया कि ल्यू-व्रू को देखकर भागना उचित है, अथवा नहीं।

एक रोज़ मछली पकड़ते समय काओ-एर्र और ल्यू-व्रू की किश्तियों की भिड़न्त हो गई। ल्यू-व्रू खड़ा होकर काओ-एर्र को घृणा से घूरने लगा। "हरामी लुटेरे" की उपाधि देते हुए उसने अपनी पूरी ताक़त से चप्पू को इधर-उधर पटका, लेकिन काओ-एर्र मछलियों का गीत गुन-गुनाता हुआ, जिसमें सुन्दर लड़कियों का वर्णन था, मज़े में अपनी नाव खेता रहा।

एक रोज़ जब नन्हीं जेड अपने घर के सामने धूप में बैठी, मछली फँसाने की जाली की मरम्मत कर रही थी, तो ल्यू-व्रू उधर से गुज़रा। वह ठिठक कर खड़ा हो गया और उसकी नज़रें जेड के मुँह पर टिक गईं। नन्हीं जेड सर झुका कर अपने काम में जुटी रही, लेकिन उसका चेहरा उबले हुए केंकड़े जैसा-सुर्ख हो उठा। डोरे में उलझनें पड़ने वाली ही थीं कि खुशकिस्मती से श्रीमती चाँग बच्चे को हवा खिलाने उस ओर आ निकलीं। नन्हीं जेड ने चैन की साँस ली और ल्यू-व्रू झपट कर एक कोने में जा खड़ा हुआ। चाँग के काले कुत्ते ने उसे दूर खड़ा देखा और अपने को सुरक्षित जान ज़ोर से भूँक-भूँक कर अपनी वीरता का प्रदर्शन करने लगा।

१. काँग—ईंटों से बना चबूतरा जिसके नीचे अंगीठी बनी होती है। सर्दियों में चीनी लोग इसी पर सोते हैं।

कभी-कभी ल्यू-व्रू समुद्रतट पर बनी शराब की दुकान में घुस कर एक कोने में धम्म से जा बैठता और 'पे-कान-एर्र' (तेज़ क़िस्म की ख़ुश्क, सफ़ेद शराब) लाने का आर्डर देता। आध पाव पे-कान-एर्र का गिलास वह मज़े में अकेला ही चढ़ा जाता। वह ठिगने क़द का मोटा व्यक्ति था। धूप में उसका चेहरा ताँबे जैसा लाल-सुर्ख हो जाता तो लगता जैसे कोई हिंस्र चीता झपटने के लिये तैयार हो। अपनी ओर देखने वालों को वह बुरी तरह घूरता, इसीलिये लोग उसकी नजर बचाने के लिये मुँह फेर लेते। सराय में काओ-एर्र से सामना होने पर ल्यू-व्रू की आँखों से चिंगारियाँ निकलतीं और वह शराब की सुराही और गिलास को ज़ोर से मेज़ पर पटक देता, जैसे उनसे ही कोई दुश्मनी हो। काओ-एर्र भी और लोगों से बात करते हुए जरूरत से ज्यादा हँसता लेकिन उसकी हँसी में व्यंग्य भरा होता—कभी-कभी क़हक़हों के बीच वह एक ठोड़ी पर हाथ रख कर—लोगों की गप्पें सुनता और दूसरे से मेज बजाता रहता। ल्यू-व्रू को तो वह कभी कनखियों से ओझल न होने देता, यही कारण था कि उसके मुँह पर सदैव एक दुष्टतापूर्ण मुस्कराहट खेलती रहती, मानो वह कह रहा हो, "अच्छा बच्चू, किस बूते पर अपने से तगड़ों का मुकाबला करने चले हो?" उसके लम्बे-तडंगे शरीर पर उद्दण्डता शोभा देती और उसके चेहरे पर पौरुष झलकने लगता था।

रात होते ही काओ-एर्र घर जाने के लिये उठ खड़ा होता। उसकी दूल्हे की सी आदतों पर लोग क़हक़हे लगाते। हँसी के फव्वारों के बीच वह भरी महफ़िल से बाहर निकलता। उसी समय ल्यू-व्रू अपना शराब का बर्तन मेज पर पटक कर भद्दे फूहड़ ढँग से चिल्लाता "आध पाव और लाओ।" महफ़िल में सन्नाटा छा जाता और लोग कनखियों से उसकी ओर देखते—आध पाव शराब एक घूँट में गटक कर वह अपने पौरुष का प्रदर्शन करने के लिये तन कर खड़ा हो जाता।

कोई आवाज़ कसता, "घर जाकर चैन से खुर्राटे भरो!"

"लुटेरा!" ल्यू-व्रू कड़क कर कहता। "मेरा सफेद चाकू लाल होकर

निकलेगा। देख लेना !" वह लड़खड़ाता हुआ धम्म से दरवाजा खोलकर बाहर निकल जाता।

एक दोपहर की बात है कि नन्हीं जेड जंगली सब्जियों की तलाश में पहाड़ की चोटी तक जा निकली—फ़ौरन ही वह तीर की तरह भागती हुई लौटी। उसके बाल बिखरे थे और उसके गालों पर खराशों के निशान थे, जिनमें से लहू बह रहा था। सबने पूछा, "क्या हुआ ?" लेकिन वह रोती हुई घर में घुस गई और गुमसुम होकर अन्दर बैठी रही।

काओ-एर्र को ख़बर मिली। उसने जैसे-तैसे करके नन्हीं जेड के मुँह से सच्ची बात निकलवा ली। (उन दोनों के सिवा किसी तीसरे आदमी को इस बात का पता नहीं चला) लेकिन पड़ोसी भाँप गये कि दाल में कुछ काला ज़रूर है। कई दिनों तक काओ-एर्र की त्यौरियाँ चढ़ी रहीं और वह अपने कुरते में एक छुरा छिपाये पागल कुत्ते की तरह ल्यू-वू की तलाश में इधर-उधर भागता रहा। वह बार-बार समुद्र-तट वाली सराय पर जाता और शराब के नशे में चूर हो जाता। उसकी नज़रें ल्यू-वू की राह में लगातार दरवाजे पर गड़ी रहतीं—लेकिन ल्यू-वू का कहीं नामोनिशान न था।

काओ-एर्र मुँहफट, बदमिजाज़ क़िस्म का आदमी था, जिसका दिल मक्खन की तरह मुलायम था। विरोध का सामना वह निधड़क होकर करता लेकिन प्यार भरे दो शब्द ही उसे मेमने की तरह निरीह बना देने के लिये पर्याप्त थे। लेकिन आपने उसका मिज़ाज बिगाड़ा नहीं कि आप की शामत आई। आप चाहे चट्टान हों तो भी वह आप को जड़ से उखाड़ कर चकनाचूर कर डालेगा—अगर चट्टान न मिली तो अपना गुस्सा दीवारों या पत्थरों पर निकाले बिना न रहेगा।

आजकल उसके रंग-ढंग देख कर लोग चौकन्ने रहते, खास कर वह शामत के मारे, जिनका नाम ल्यू होता। नशे में चूर होकर जब वह मरने-मारने को उतारू रहता तो सब लोग उसके सामने पड़ने से कतराते। वह बिना जाने-बूझे हर किसी मुसीबत के मारे और अन्याय-पीड़ित का रक्षक

बनकर उनके दुश्मनों का सफाया करता फिरता।

इन दिनों वह गुस्से से आगबबूला और पेट में तेज़ शराब की जलन लेकर घर लौटता। उसकी आहट सुनते ही नन्हीं जेड की टाँगों को काठ मार जाता। उसे इतनी देर से आने का कारण पूछते भी डर लगता। न मालूम कब बिगड़ उठे? पति के खाना खाते समय वह सहमी-सी मेज़ के सिरहाने खड़ी रहती—वह अक्सर उसकी ओर क्रोध से घूरता और कभी-कभी चिंघाड़ कर एक-दो गालियाँ भी सुना देता। लेकिन उसने नन्हीं जेड पर कभी हाथ नहीं उठाया।

एक-आध बार तो वह शराब के नशे में रो पड़ा। इतना जवाँमर्द आदमी नन्हीं-सी पत्नी के सामने रोया! लेकिन उसे चुप कराने का साहस जेड में न था। वह जानती थी कि ऐसा करने से उसका दुःख फौरन बारिश के बाद की कड़कती धूप की तरह क्रोध में बदल जायेगा। इसके विपरीत यदि वह उसे अपनी हालत पर छोड़ देगी तो वह बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोयेगा। वसन्त की हल्की फुहारें सावन की झड़ी में बदल जातीं, शायद आँधी-तूफ़ान की बारी भी आ जाती। बहुत कुछ अनुभव के बाद नन्हीं जेड इस नतीजे पर पहुँची कि ऐसे समय में सबसे उचित इलाज यही है कि वह भी पति के साथ रोना शुरू कर दे ताकि दो और आंखों के ज़रिये से उसके दिल का बोझ हल्का हो सके। ऐसा करने से वह रोना-धोना बन्द करके काँग पर चढ़ कर नन्हें मुन्ने की तरह सो जाता और नन्हीं जेड माँ की तरह उसके सिरहाने बैठी उसे निहारती—और इस डर से कि उसकी साँस की आहट से कहीं नन्हें मुन्ने की नींद न उचट जाये, वह बड़ी सतर्कता से ही हिलती-डुलती।

इस झगड़े की वजह से द्वीप के निवासी वातावरण में एक घुटन सी अनुभव करते, जैसे आँधी के आने से पहले होती है लेकिन खुशक़िस्मती से वसन्त में मछली के शिकार के मौसम से पहले कोई गड़बड़ नहीं हुई, क्योंकि सब लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे। किसी को सर उठाने की फ़ुर्सत नहीं थी।

वसन्त की सुहावनी धूप में औरतें और बच्चे समुद्रतट पर इकट्ठे हो कर जालों की मरम्मत करते, और मर्द लोग खुले समुद्र में लकड़ी के भारी बेड़ों पर घूमते रहते। दिन के समय समुद्र सफ़ेद पालों से पटा रहता और रात को अनगिनत बत्तियाँ चँचल लहरों पर थिरकती रहतीं। किनारे पर बैठ कर कुछ लोग गीले जालों को सुखाते, पकड़ी हुई मछलियों को नमक लगाते; कुछ लोग पालों और नावों की मरम्मत करते। आदमी, औरतों और बच्चों की ऐसी चहल-पहल रहती मानो किसी मन्दिर का मेला हो। समूचा द्वीप आनन्द से रंगीन हो उठता।

इसके बावजूद भी समुद्री हवा के झोंके काओ-एर्ह के क्रोध को शान्त न कर सके। रंगीन वातावरण नन्हीं जेड की व्याकुलता दूर न कर सका, न सूर्य की तेज़ किरणें ही छिपे हुए ल्यू-ह्व का सुराग़ लगा सकीं।

एक दिन सूर्यास्त के समय आकाश रक्तरंजित था। गर्मी के मारे बुरा हाल था। हरे समुद्र के विस्तृत वक्षस्थल पर एक भी लहर नहीं दिखाई देती थी। ऊपर हज़ारों मीलों तक फैले हुए स्वच्छ आकाश में एक भी बादल का टुकड़ा ऐसा नहीं दिखाई देता था जो उस नीली नीरसता को भँग कर सके। ढलते सूरज की किरणें मछली पकड़ने वाली नौकाओं के पालों पर चमक रही थीं। ज्यों ही अँन्धेरा बढ़ा, एक-एक करके लालटेनें जला दी गईं और असंख्य झिलमिलाती बत्तियाँ ऊपर टिमटिमाते हुए तारों के साथ मिल कर नर्तन करने लगीं। हर जगह मछलियाँ अपनी पूँछें पटक-पटक कर उछल-कूद करती फिर रही थीं। उनकी छप-छप का स्वर मछुओं के लिये सँगीत के समान था।

आधी रात के लगभग उत्तर-पश्चिमी दिशा में अचानक ही एक काला बादल प्रकट हुआ—लोग समझ गये कि तूफ़ान आने वाला है। देखते-देखते उन्होंने पालें खोल दीं और जालों को ऊपर घसीटने लगे, लेकिन मछलियों का बोझ अधिक होने के कारण काम जल्दी न निबट सका। काले बादल का टुकड़ा आधे आस्मान को ढँक चुका था—आँधी चलनी शुरू हुई और नौकाओं की लालटेनें बुझ गईं। तारे भी अदृश्य हो

गये। अचानक घटाटोप अँधकार छा गया और कुछ मिनटों के भीतर ही समुद्र की लहरें आकाश को छूने लगीं। पतीली में उबलती सोयाबीन की फलियों की तरह समुद्र के तूफ़ान में नौकाएँ डगमगाने लगीं। समुद्र के भीषण गर्जन के बीच तेज़ हवा का विषादपूर्ण स्वर तथा आपद्ग्रस्त लोगों का क्रन्दन सुनाई देने लगा।

द्वीप भर में कुहराम-सा मच गया। औरतें और बच्चे हाथ में लालटेनें उठाकर तूफ़ान में चिल्लाते हुए समुद्र तट की ओर भागे। ज़मीन पर भी हाय-तोबा मच गई।

इसी गड़बड़ के बीच कई नौकायें डूब गईं, और अनेकों व्यक्ति इस विशाल जल-समाधि में समा गये—उनके बीवी-बच्चे किनारे पर खड़े व्यर्थ ही उनकी प्रतीक्षा करते रहे।

दो नौकायें समुद्र तट की ओर तेज़ी से बढ़ी आ रही थीं—किनारे से एक हाथ भर की दूरी पर ही एक नाव चट्टान से टकरा कर उलट गई। लोग भागते हुए रक्षा करने पहुँचे, लेकिन नौका टुकड़े-टुकड़े हो चुकी थी—लालटेन के प्रकाश में केवल एक शरीर दिखाई दिया। इतने में लहरें फिर ऊँची उठीं और किनारे पर खड़ी औरतें भय से चीखने लगीं—उन्होंने देखा कि सफेद झाग पर तैरता हुआ वह शरीर दूसरी नौका के पास जा पहुँचा था—"इसे बचाओ! बचाओ" की आवाज़ें चारों ओर से गूँज उठीं। कई लोगों ने "अब कोई फ़ायदा नहीं" कहकर आशा छोड़ दी। अचानक ही दूसरी नौका में से एक लम्बे क़द का व्यक्ति उस तैरते हुए शरीर को पकड़ने के लिए धप्प से झाग भरे समुद्र में कूद पड़ा। उसने सहारा लेने के लिए अपना एक हाथ बढ़ाया, लेकिन नौका तब तक दस फुट दूर जा चुकी थी। कुछ मिनटों तक वह अपनी पूरी ताक़त लगा कर तूफ़ानी लहरों से संघर्ष करता रहा। नौका दूर जा चुकी थी। कुछ ही देर बाद पानी की सतह पर दो निर्जीव शरीर तैरते हुए दिखाई पड़े।

इन शरीरों और समुद्र तट पर खड़ी भीड़ के बीच केवल तीस फुट

का फ़ासला था। स्त्रियों की चिरौरी-मनौती पर कुछ लोगों ने रस्सी द्वारा पानी में उतर कर उन दोनों शरीरों को ला कर रेत में लिटा दिया।

मृत्युपथ के साथी ये दो व्यक्ति कौन थे ? यह जानने के लिये लोगों ने उत्सुकतापूर्वक लालटेनें उठाईं, तो देखा कि नाव पर से कूदने वाला लम्बा आदमी काओ-एर्र था और डूबने वाला ल्यू-वू। दोनों के शरीर निर्जीव और ठँडे थे।

शोकग्रस्त लोगों का जलूस दोनों शरीरों को उठा कर काओ-एर्र के घर की तरफ़ चल पड़ा, क्योंकि वही नजदीक था। नन्हीं जेड भी रोती-पीटती भीड़ के पीछे-पीछे चल दी।

जल्द ही उसके कमरे में आग जला कर दोनों शरीरों को काँग पर लिटा दिया गया। उनके चिपके, गीले कपड़ों को खेंच कर उतारा गया और सूखे तौलिये से उनके बदन रगड़े गये।

सेंक की गर्मी में कुछ देर पड़े रहने पर पहले-पहल काओ-एर्र को होश आया। उसने आँखें खोलीं और चकित-दृष्टि से कमरे के चारों ओर देखा। यह पहचान कर कि वह अपने ही घर में है उसने सर हिला कर मानों अपनी जान बचाने वालों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उसकी आँखें फिर बँद हो गईं।

आध घंटे बाद ल्यू-वू में भी जीवन के लक्षण प्रकट हुए। मुँह से चुल्लू भर पानी उगलने के बाद उसने भी आँखें खोलीं। उसने बैठने के लिये हाथ-पाँव पटके, जब लोगों ने उसे यह कह कर कि तुम्हें आराम की ज़रूरत है, बलपूर्वक लिटाना चाहा तो उसने उत्तर दिया, "मैं अब भला-चँगा हूँ, और घर तक पहुँच सकता हूँ।" शायद वह भाँप गया था कि वह कहाँ है।

काओ-एर्र ने जब उसकी आवाज़ सुनी तो उसे अपने कानों पर विश्वास न आया। उसने आँखें खोलीं और उस ओर सर घुमाया, जहाँ से आवाज़ आई थी। खिड़की के काग़ज़ों में से छन कर आ रहे दिन के

प्रकाश में उसने देखा कि उसके साथ, एक ही काँग पर लेटने वाला व्यक्ति लाओ-एर्र था, उसका जानी दुश्मन ! क्षण भर में ही उसकी आँखों के सामने उस घटना का चित्र घूम गया, उसने सोचा, "यही वह व्यक्ति है, जिसकी मृत्यु के लिए मैं दुआएँ माँगता रहा हूँ। और मैं इसे स्वयँ अपने हाथों से मौत के मुँह से निकाल कर लाया हूँ ? अपनी जान खतरे में डाल कर !" उसे स्वयं अपनी बुद्धि पर विश्वास नहीं हुआ। काओ-एर्र, एक ओर सरका और सर उठाकर ध्यान से अपने दुश्मन की ओर देखने लगा, जिसकी उसने जान बचाई थी। अगर उस समय पास में कोई कुल्हाड़ी होती तो वह पूरी ताक़त से अपने वैरी का काम तमाम कर डालता।

दोनों को पुनः जीवित देखकर उन्हें अकेला छोड़ने की हिम्मत लोगों को नहीं हुई। उन्होंने काओ-एर्र को जबरदस्ती पकड़ कर लिटा दिया। लेकिन वह बेचैनी से इधर-उधर हाथ-पाँव पटकने लगा, मानो उसके दिल में कोई आग सुलग रही हो।

ल्यू-ब्रू भी स्थिति को भाँप गया था और बिना काओ-एर्र की ओर आँख उठाए घर जाने के लिए आग्रह कर रहा था।

नन्हीं जेड डर के मारे, चुहिया की तरह एक कोने में दुबकी रही—ल्यू-ब्रू के घर से बाहर निकल जाने के बाद वह पति का हाल-चाल देखने के लिए कमरे में दाखिल हुई।

लम्बी नींद के बाद जब काओ-एर्र की आँख खुली तो दुपहर चढ़ आई थी। तूफ़ान जितनी जल्दी आया था, उतनी ही जल्दी थम चुका था। खिड़की में से छन कर आती सूरज की तिरछी किरणों में धूल के लाखों अणु तैर रहे थे। कमरे में सन्नाटा छाया था। सिर्फ सुई-धागे की आवाज़ आ रही थी—नन्हीं जेड एक स्टूल पर सिर झुकाए पुराने कपड़ों की मरम्मत करने में व्यस्त थी। काओ-एर्र को जगा देख यह पूछने के लिए कि उसे भूख तो नहीं लगी, उसने सर उठाकर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। फिर बिना कुछ कहे, चुपचाप सिलाई में जुट गई। उसके गालों

पर रोशनी की एक किरण पड़ी, जिसमें उसकी लम्बी पलकों की सलज्जता और भी स्पष्ट हो गई। अब वह किसी भी अजनबी को देखकर मुँह में उँगली डालने वाली नन्हीं लड़की नहीं रही थी। जीवन के कठोर अनुभवों के साँचे में ढल कर वह औरत बन गई थी।

काँग पर से काओ-एर्ह के करवट बदलने की आवाज़ आई। उसकी आँखें खुली थीं। बहुत देर तक वह पहले छत की ओर फिर नन्हीं जेड की ओर ताकता रहा। आहिस्ता-आहिस्ता उसके आवेशपूर्ण चेहरे में कुछ परिवर्तन हुआ। उसकी आत्मा में भी एक परिवर्तन हो रहा था।

जब उसने नन्हीं जेड से एक प्याला खिचड़ी लाने के लिए कहा, तो उसके स्वर में कोमलता थी। नन्हीं जेड फ़ौरन काम छोड़ कर उठ खड़ी हुई। जब वह खिचड़ी लेकर लौटी, तो काओ-एर्ह दीवार का सहारा लेकर बैठा हुआ था। खाना खाते समय उसने नन्हीं जेड को अपरिचित लगने वाले, स्नेहपूर्ण लहजे में पूछा, "क्या तुम रात भर मेरी देखभाल करते हुए थकी नहीं ? आओ ! मेरे पास आकर थोड़ा आराम कर लो !"

नन्हीं जेड इस प्रेम-प्रदर्शन से सहम-सी गई। सब्जियों की खोज में, पहाड़ी पर घटी उस मनहूस घटना के बाद उसके पति ने कभी इतने प्यार से उसे नहीं पुकारा था, न ही उसके चेहरे पर कभी ऐसा मधुर भाव आया था। वह आश्चर्य करने लगी, "यह इतनी जल्दी कैसे बदल गया ?"

उसका अनुमान सही था, काओ-एर्ह बदल गया था। इतना ही नहीं, बल्कि ल्यू-वू में भी एक विचित्र प्रकार का परिवर्तन हुआ था। वह नन्हीं जेड को भगाने वाला ल्यू-वू नहीं रहा था, क्योंकि उसका लड़ाकापन जाता रहा था। न ही वह उस पहाड़ी की दुर्घटना वाला ल्यू-वू था। क्योंकि अब वह इतना खतरनाक नहीं रहा था; यहाँ तक कि उसकी ग़ैर-ज़िम्मेदारी और आचरणहीनता भी काफ़ूर हो गई थी। उसे क्या हो गया था ? वह अब किसी दुत्कारे गए कुत्ते की तरह दुम दबाकर भागा फिरता। कोल्हू के बैल की तरह दिन भर सर झुकाकर मेहनत करता—उसकी कायापलट हो गई थी।

ल्यू-व्रू ऐसे व्यवहार करता मानो वह काम्रो-एर्र से डरते हुए भी उससे मिलने का उत्सुक हो। उधर इस व्यक्ति को बचाने के बाद काम्रो एर्र का चरित्र भी सुधर गया था। न तो वह समुद्रतट वाली सराय में जाकर शराब पीता, और न ही किसी ने उसे ल्यू-व्रू को गाली देते हुए सुना।

एक रोज़ सड़क पर उनका साक्षात्कार हुआ। काम्रो-एर्र को दूर से देख कर ल्यू-व्रू के पाँव भारी हो गये और बड़ी मनहूसियत के साथ उसकी गर्दन नीचे झुक गई। लेकिन फिर भी काम्रो एर्र के पास आने पर उसने किसी अज्ञात शक्ति द्वारा प्रेरित होकर आँखें ऊपर उठाईं, कुछ कहने का यत्न किया, लेकिन उसकी ज़बान को काठ मार गया। उधर काम्रो-एर्र ने भी ल्यू-व्रू को आते देख लिया था, लेकिन उसकी चाल में कोई अन्तर न आया। न तो उसका सर शर्म के मारे नीचे झुका, न ही अकड़ कर ऊपर हुआ—वह पहले की तरह चलता गया। दोनों की आँखें चार हुईं। काम्रो-एर्र ने ल्यू-व्रू की आँखों का भाव पढ़ा और हल्का-सा सर हिलाकर उसका उत्तर देना चाहा, लेकिन अचानक ही उसने कुछ सोचा और उसकी आँखों की शून्यता लौट आई, उसकी चाल में तेजी आ गई। ल्यू-व्रू ने पीछे मुड़ कर काम्रो-एर्र की ओर देखा, फिर सर झुका कर चलने लगा। और काम्रो एर्र ? उसने एक बार भी पीछे की ओर मुड़कर नहीं देखा।

और नन्हीं जेड—वह घर में क्या कर रही थी ? वह आहिस्ता-आहिस्ता उसी दशा में वापिस आ रही थी जैसी कि वह काम्रो-एर्र द्वारा भगाई जाने के समय थी, और जैसी वह पहाड़ी वाली दुर्घटना से पहले थी—फ़र्क़ केवल इतना ही था कि उसका अल्हड़पन कम हो गया था। अब भी कभी-कभी काम्रो-एर्र के चेहरे पर काले बादल घिर आते, लेकिन अब पहले के से तूफ़ान कम आते—सामान्यतः वसन्त ऋतु का ही बोलबाला रहता—और नन्हीं जेड दिन-प्रति-दिन सुन्दर होती जा रही थी।

समुद्रतट वाली सराय में रात के समय जब मट्टी के तेल के लैम्प की रोशनी रसिक व्यक्तियों के हाथों पर पड़ती, और "पे-कान-एर्र" की तरावट से ज़बान कैंची की तरह चलने लगती—तो वे काओ-एर्र और ल्यू-वू की चर्चा करते। बहस इस बात पर नहीं होती थी कि ल्यू-वू कैसे बदल गया है, बल्कि वे काओ-एर्र के व्यवहार से चकित थे। कुछ का ख़्याल था कि समुद्र के खारे पानी से उसकी हवा पिचक गई है। औरों ने कहा कि नन्हीं जेड ने मन्त्र फूँक कर उस पर कोई जादू किया है। लेकिन पीली दाढ़ी वाले ली-ता ने कुछ और ही कारण सुझाया। वह बुज़ुर्ग होने के कारण अधिक अनुभवी था। उसने अपना बायाँ कान खुजलाया—सब समझ गये कि अब वह अपनी बहुमूल्य राय की घोषणा करेगा। वह खीसें निकाल कर ज़ोर से हँसा, "हा-हा। तुम सब अन्धे हो! क्या कभी चेहरे से भी दिल की बात का पता लगा है? क्या तुमने काओ-एर्र और उस कलूटे छोकरे लो की लड़ाई नहीं देखी थी? जब लो भांप गया कि उसके पिटने में कोई देरी नहीं, तो वह कमीना कितने तैश में आ गया था? जैसे किसी कुत्ते की पूँछ में आग लग गई हो! तुम्हें याद है? उसने काओ-एर्र को काट खाया था। काओ-एर्र ग़ुस्से में चीते की तरह उस पर झपटा और उसे चारों खानें चित्त कर दिया—बस अब उसकी चटनी बनने में क्या कसर बाक़ी थी! जानते हो उस हरामी कलूटे ने क्या किया? तुरन्त गिड़गिड़ाने लगा—'बढ़ते जाओ उस्ताद! मैं तो पिट गया—अब चाहे जान ले लो तो भी मैं चूँ नहीं करने का।' अम्मा का घोड़ा, प्लेग उसे उठा ले! काओ-एर्र का घूँसा हवा में ही तना रह गया। उसे मानो काठ मार गया हो!"

जली-भुनी आवाज़ में किसी ने शिकायत की, "उस कलूटे लो ने मेरी मछली चुराई थी। उसकी और पिटाई होनी चाहिये।"

"कौन कहता है, नहीं होनी चाहिये?" पीली दाढ़ी वाले ली-ता ने उत्तर दिया। "लेकिन इस बार कम्बख़्त का पाला काओ-एर्र से पड़ा था। लेडी वाँग के जूतों के तले की तरह वह आदमी कोमलता से डरता

है, सख्ती से नहीं।" अपने शब्दों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये बूढ़ा कुछ ठहरा। फिर अपनी छोटी-छोटी पीली भूरी आँखों को पूरा खोलते हुए उसने घोषणा की, "ल्यू-वू भी कलूटे लो की तरह पिट गया है। मरे को मारे शाह मदार! काओ-एर्र इतना नीच नहीं है।"

"तो क्या उसने ल्यू-वू को माफ़ कर दिया?" किसी ने सवाल किया।

"और चारा भी क्या है? ल्यू-वू तो फूटे-अंडे की तरह मुलायम हो गया है। काओ-एर्र उसे अपनी सलाइयों से भी नहीं उठा सकता!"

"उसकी माँ को......, हरामी कहीं का! बचाया भी तो उस आदमी को जिससे उसे सख्त नफ़रत थी।"

"यही तो मुसीबत की जड़ है!" पीली दाढ़ी वाले ने कहा, "अपने बचाये हुए आदमी की जान भला कौन ले सकता है? अपने अंडों को तो साँपिन भी नहीं हड़पती।"

सराय में लोग इस प्रकार इस घटना पर बहसें करते रहते।

नागराज का नौका-उत्सव क़रीब था। बसन्त में मछलियाँ पकड़ने के मौसम के बाद मछुओं की जेबें डालरों से ठसाठस भरी हुई थीं और वे फ़सल कटने के बाद किसानों की तरह आनन्द से फूले न समाते थे। अब उनके पास आमोद-प्रमोद के लिये फ़ुर्सत ही फ़ुर्सत थी।

एक रोज शाम को काओ-एर्र अपने देनदारों से कर्ज वसूल करके वाँपिस घर लौट रहा था। उसके सब पैसे वसूल हो गये थे और उसकी थैली सिक्कों के भार से फटी जाती थी। रास्ते में वह सराय पड़ती थी जिसका लाल मुँह वाला मालिक चेन-लाओ सिंग अपनी दहलीज पर बैठा मजे में चिलम फूँक रहा था। सूर्योदय की किरणों के प्रकाश से सारा कमरा आलोकित हो उठा था। चूज़ों का एक झुण्ड उसके पाँव के आस-पास फुदक रहा था। एक रंग-बिरंगे मुर्ग ने अभी-अभी एक कीड़ा खोज लिया था, और वह चिल्ला-चिल्ला कर अपनी पत्नियों को उसे चखने की दावत दे रहा था। लेकिन दरअसल वह केवल पत्नियों को आकर्षित करना

चाहता था, क्योंकि उनके आने की देर थी कि उसने चट से उस रस-भरे मकौड़े को निगल लिया और अपनी गर्दन तानकर, पँख झटका कर मटकने लगा —मुर्गियाँ बेचारी मुँह ताकती रह गई।

"हमने ताज़ी-ताजी 'यिंग-कुओ' मँगवाई है।" चेन-लाओ-सिंग ने काओ-एर्र को देखकर कहा। "तुम्हें देखे तो एक जमाना गुजर गया। आओ, इसे चखकर बताओ कि कैसी तेज़ है।" लेकिन काओ-एर्र का मन डाँवाडोल नहीं हुआ। उसने सर हिलाकर मना कर दिया, हालाँकि वह सराय के दरवाज़े पर रुक गया था।

"अन्दर आ भी जाओ!" बूढ़े चेन ने अत्यन्त चिकने-चुपड़े स्वर में कहा, "पैसों को सन्दूक में दाबने से पेंदे में छेद हो जायेगा। आओ आज तुम्हारी खातिरदारी की जाये।" उसने नौकर को आवाज़ दी, "काओ चचा के लिये आध पाव ले आओ।"

काओ-एर्र वहीं जम गया, तीन प्याले पीने के बाद उसे तीन और प्याले पीने में कोई झिझक न रही। पेट में शराब उँडेलने से उसकी दबी हुई प्रवृत्तियां भड़क उठीं और वह अन्धाधुन्ध पीता गया। रात के पहले पहर तक वह नशे की झोंक में रहा। फिर अपनी थैली कन्धे पर डालकर लड़खड़ाते कदमों से घर जाने के लिये उठ खड़ा हुआ।

सराय के दरवाजे पर कलूटे लो से मुठभेड़ हुई जो अपनी छोटी-छोटी ललचाई आंखों से उसे ताड़ रहा था। काओ-एर्र बिना किसी ओर ध्यान दिये बाहर निकल गया। पैसे वाली थैली काफ़ी भारी थी, और पेट में खालिस शराब ने आग-सी लगा दी थी, जैसे किसी ने आग पर तेल छिड़क दिया हो। उसकी तेज़ लपटें टांगों से उठ कर सर की ओर बढ़ रहीं थीं। उसका सर घूम गया और एक बत्ती की जगह सैकड़ों-हज़ारों बत्तियां उसकी आंखों के आगे नाचने लगीं। उसे लगा कि उस दिन की तरह तूफ़ानी समुद्र में बहा जा रहा है। अचानक ही उसे किसी व्यक्ति की अस्पष्ट आकृति दीख पड़ी। "यह वही हरामी ल्यू-वू है, अब की बार मैं इसकी जान नहीं बचाने का।" उसने सोचा। उसकी सोई

हुई भावना अचानक ही प्रचण्ड हो उठी, जिसने भरे हुए बारूद में दियासलाई का काम किया। काओ-एर्र ने अपने पूरे ज़ोर से थैली घुमाकर अपने सामने की परछाईं पर दे मारी। फिर थैली उठाने के लिये वह नागराज [२] के मन्दिर के झण्डे के मस्तूल तक गया, लेकिन वह परछाईं न जाने किधर ग़ायब हो गई थी। घुटनों के बल रेंग-रेंग कर उसने थैली टटोली—जो कि सपाट मैदान में तकिये की तरह पड़ी हुई थी। वह उस पर सर रख कर गहरी निद्रा में तल्लीन हो गया।

जब उसकी आंखें खुली तो सूरज मस्तूल तक चढ़ आया था। उसका सारा शरीर अकड़ गया था और इतने सख्त सिरहाने पर बहुत देर आराम करने से उसका सर भी दुखने लगा था। वह उठ बैठा और चारों तरफ़ नजर दौड़ाई—उसे मालूम हुआ कि वह अपनी थैली पर सोता रहा है। फिर उसे पिछली शाम की घटनाएँ याद आईं। वह कर्ज़दारों से पैसे वसूल करने निकला था, और सराय में बैठकर शराब पी थी। लेकिन थैली पर लहू कैसा ? उसने बड़े ध्यान से अपना सर टटोला और उंगली से नाक साफ़ की। वहाँ किसी जख्म का नामोनिशान नहीं था। न ही नाक में से खून बह रहा था। उसने थैली खोलकर पैसे गिने। सब कुछ ज्यों का त्यों।

"अजब बात है।" उसने सोचा "यह लहू कहाँ से आया ?" उसने पिछली घटनाओं को याद करने की कोशिश की, लेकिन सराय से निकलने के बाद की सब बातें धुंधली थीं। हैरानी से मुँह में कुछ बुदबुदाता हुआ वह लड़खड़ाते हुए क़दमों से घर की ओर चल पड़ा।

बाद में उसे पता चला कि किसी ने उस रात कलूटे लो की खूब मरम्मत की थी, हालाँकि लो स्वयं इस विषय में बिल्कुल चुप था। लेकिन काओ-एर्र ने लो के सूजे हुए सर का अपनी थैली पर लगे लहू के धब्बे से कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा। रहे द्वीप के निवासी—वे सब नागदेवता के

२. नागराज वर्षा का देवता माना जाता है। उसी की आज्ञा से मौसम बदलता है। इसीलिए मछुए नागराज की पूजा करते हैं।

नौका-उत्सव[३] की तैयारियों में ज़ोरशोरसे लगे थे—किसी को कलूटे लो पर ध्यान देने की फ़ुरसत न थी ।

सब की जेबों में पैसे थे सो उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया । सब दरवाजों पर अमलतास की सुगन्धित टहनियां लटकाई गई । दीवारों और खिड़कियों पर कागज़ के बने चीते, बिच्छू, छिपकलियां और कानखजूरे सजाये गये । सब लड़कियों ने लाल पाजामे के ऊपर हल्के हरे रंग की कुर्तियां पहनीं और बालों में अमलतास के गुच्छे खोंसे । भयानक कीड़ों और गर्मी के ताप से बचने के लिये कानों पर संखिया का लेप किया हुआ था । और जब नये "चीते" की कढ़ाई वाले जूते पहन कर सब लोग सीपियां बीनने के लिये समुद्र-तट पर जमा हुए, तो उनका उत्साह देखते ही बनता था ।

नौका-उत्सव के दिन तड़के-तड़के ही पीली दाढ़ी वाला ली-ता जिसका पेट कोई खबर सुनाने के लिये फूला जा रहा था, भागा-भागा काओ एरें के यहां आया । उसने देखा कि नन्हीं जेड बढ़िया कपड़े पहने, गालों पर सुर्खी लगाये त्यौहार के चावल रांध रही है । ली-ता ने भी नीले रंग की नई सूती वास्कट पहनी थी और वह काओ-एरें द्वारा पेश किये गये हुक्के को मज़े से गुड़गुड़ा रहा था । फिर कुछ संजीदगी से उसने अपनी खुरदरी

३. नौका-उत्सव—पांचवें चन्द्रमास की शुक्ला पंचमी को (पश्चिमी केलेन्डर के अनुसार जून में) पड़ता है । यह अति प्राचीन उत्सव ग्रीष्म-ऋत के आरम्भ में चीन के सबसे पहले तथा महान् कवि चू-युआन (३३२ २९६ ई० पू) की स्मृति में मनाया जाता है । चू-युआन ने मी-लो नदी में कूदकर आत्महत्य, कर ली थी । उसकी आत्मा की शान्ति के लिये विशेष प्रकार के गाढ़े चावल (सुँग-तू) बड़े-बड़े पत्तों में परसे जाते हैं और नौकाओं की दौड़-प्रतियोगिता होती है । आजकल नौका-उत्सव के अवसर पर छुट्टी नहीं होती । तो भी इसका पारिवारिक महत्व बाक़ी है । इस रोज़ लोग अपने पुराने कर्ज़ों को चुका देते हैं ।

दाढ़ी को सहलाते हुए पूछा, "क्या उस रात तुम्हारी थैली पर लहू । कोई दाग़ था ? मुझे बताओ। और तुम्हें पता है कि वह दाग़ कहां से आया ?"

काम्रो-एर्र ने सर हिलाया।

"मैं जानता था कि तुम्हें इसका अनुमान भी नहीं।" बूढ़े ने सन्तोष-पूर्ण स्वर में कहा। "क्या उस रोज़ सराय से बाहर आते समय तुम्हें कलूटा लो नहीं मिला था ?"

काम्रो-एर्र ने कहा, "हाँ, मुझे याद है—मिला था।"

फिर एक न्यायाधीश की तरह अपने सवालों को जारी रखते हुए ली-ता ने पूछा—

"क्या नागराज के मन्दिर के पास तुम्हें कोई दिखाई दिया था ?"

"मुझे ठीक याद नहीं।" काम्रो-एर्र ने कहा।

"तुमने ल्यू-वू को देखा था।" ली-ता ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

नन्हीं जेड सारी बातें सुन रही थी। उसके हाथ से चावल गिर कर फ़र्श पर बिखर गये। काम्रो-एर्र ग़ुस्से से उछल पड़ा, उसकी त्योरियाँ आसमान पर चढ़ी हुई थीं। उसने पूछा, "क्या ? वह हरामी ?"

"इतने तैश में मत आम्रो।" बूढ़े ने उसके ग़ुस्से को ठंडा करने के लिये कहा। "क्या तूफ़ान में नौका खेते समय भी कोई ग़ुस्से से उछलता है ? देखो, जब ल्यू-वू ने तुम्हें शराब के नशे में चूर देखा तो वह तुम्हें थामने के लिये आगे बढ़ा। तुम्हें शायद नहीं पता कि उस आदमी के आत्मा पैदा हो गई है। लेकिन तुमने अपनी थैली उसके सर पर दे मारी, और वह मन्दिर के दरवाज़े के पीछे छिप गया। फिर जब तुम सो गये तो, वह बैठ कर तुम्हारी चौकसी करता रहा। अरे ! तुम्हें यकीन नहीं होता ? अपना सर क्यों हिला रहे हो। अच्छा, आगे सुनो, असली बात तो अब शुरू होती है। इतने में ही वह कबूतर का अंडा* कलूटा लो

४. कबूतर का अंडा—हरामी (वाँग-बा)।

वहाँ पहुँच गया। उस चोट्टे ने तुम्हें वहाँ सोते हुए देख लिया था। वह तुम्हारी थैली लेकर चम्पत होने को ही था, कि इतने में—जानते हो क्या हुआ? ल्यू-व्रू ने पीछे से आकर उसे दबोच लिया और दोनों गोबर की गेंद की तरह जमीन पर लुढ़कने लगे। कलूटा लो पैसों की थैली को छोड़ता ही न था। ल्यू-व्रू ने उसके सर पर एक घूँसा मारा और उसकी आँखें नोचने ही वाला था कि कलूटा लो वहाँ से भाग खड़ा हुआ। किसी हलाल किये हुए सूअर की तरह वह लहूलुहान हो रहा था, चोट्टा कहीं का, हा! हा! हा! ल्यू-व्रू ने पैसों की थैली तुम्हारे सिरहाने रख दी और वहीं बैठा रहा—भोर होने तक वह तुम्हारी देख-भाल करता रहा। आखिर इतना बुरा आदमी नहीं—क्यों?" ली-त्ता चस्के ले ले कर लगातार कहानी सुना रहा था और उसकी दाढ़ी उत्तेजना के मारे सीधी खड़ी हो गई थी। उसने अपनी छोटी-छोटी भूरी आँखों से काम्रो-एर्र को विजेता की दृष्टि से देखा, "अब तुम्हें विश्वास हुआ?"

काम्रो-एर्र सर झुकाकर कमरे में टहलता रहा, ली-त्ता उल्लू की तरह उसे घूरता रहा। अचानक काम्रो-एर्र ठिठक कर नन्हीं जेड की ओर मुड़ा, "आओ हम ल्यू-व्रू को उत्सव के लिये दावत दें।"

नन्हीं जेड शर्म के मारे लाल हो गई। उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला।

लेकिन बूढ़ा ली-त्ता प्रसन्नता से उछल पड़ा, "वाह! खूब!"

काम्रो-एर्र ने बूढ़े से कहा, "जाकर मेरी ओर से उसे न्योता दे आओ।"

बूढ़ा तीर की तरह वहाँ से चला गया और नन्हीं जेड चावल बीनती रही, अब भी उसके हाथ काँप रहे थे—और चावल फ़र्श पर बिखेर रही थी।

आखिर जैसे-तैसे करके उसने चावल बीन डाले और उबलने के लिये चूल्हे पर धर दिए। वह अभी ईंधन बटोर रही थी कि बाहर काम्रो-एर्र के हँसने की आवाज सुनाई दी—मेहमान आ गये थे। नन्हीं जेड घबरा

कर अन्दर के कमरे में भाग गई—मानो कोई भारी आफ़त आ गई हो।

काओ-एर्र दोनों मेहमानों को लेकर अन्दर दाखिल हुआ और उसने नन्हीं जेड को आवाज़ दी, लेकिन वह बाहर निकलने का नाम ही न लेती थी। आखिर बड़ी चिरौरी-मनौती के बाद जब वह बाहर निकली तो उसका चेहरा लाल-सुर्ख था। उसकी घबराहट देखकर ल्यू-वू भी झेंप-सा गया, लेकिन उसने नम्रतापूर्वक नन्हीं जेड का अभिवादन किया। नन्हीं जेड की जबान को मानो काठ मार गया। वह बिना कुछ बोले, चूल्हे की ओर भाग गई और खाने की तैयारी में जुट गई।

खाना परसते समय भी नन्हीं जेड अपने मन पर काबू न पा सकी। ट्रे में रखी तश्तरियाँ और कटोरियाँ थिरक उठीं, और आधे से ज़्यादा शोरबा मेज पर गिर गया।

खाने के बाद 'पे-कान-एर्र' की बारी आई। कुछ ही प्याले उड़ेलने के बाद सबके मुँह सुर्ख हो गये। ली-ता की गर्दन की नसें तन गईं और तेज़ नशे के असर से ल्यू-वू और काओ-एर्र की घबराहट भी जाती रही। सबसे पहले ल्यू-वू की जबान खुली और वह अस्पष्ट स्वर में बुदबुदाने लगा। उसने काओ-एर्र से कहा, "भैया, अब मेरी तौबा, आख़िर पेट ही तो है—शराब की नाँद तो नहीं—हा! हा!" फिर कुछ गम्भीर होकर उसने कहा, "जब से तुमने मेरी जान बचाई है, मुझे समझ नहीं आता तुम्हारा अहसान कैसे चुकाऊँ—तुमने मुझे नया जन्म दिया—ऐसा लगता है कि तुम मेरे सगे भाई हो!" इतने शब्दों के साथ ही उसके मन का बोझ हल्का हो गया, जैसे किसी ने मन भर का पत्थर उठा लिया हो।

यह सुनकर काओ-एर्र ने खुशी के मारे शराब का एक और प्याला पेट में उँडेल लिया। फिर नशे में बेसुध होकर वह दोनों बाहें फैलाकर मेज़ पर लुढ़क गया और ल्यू-वू की ओर सन्तोषपूर्ण दृष्टि से देखने लगा। "ओहो! यह लो! भाई तुम्हारे चेहरे पर एक निशान और पड़ गया, यह मेरी करतूत है। हा! हा! हा!"

उन दोनों के हँसी-मजाक से बूढ़ा ली-ता इतना प्रभावित हुआ कि

उसका चेहरा जो पहले सूखी खजूर की तरह था—मुस्कुराती हुई झुर्रियों से खिल गया। उसने खुशी के मारे गाना शुरू कर दिया—

'दुश्मन भी हो जाते हैं अपने,
यदि दया में बदले प्रतिशोध का गुस्सा।'

कोने में दुबकी हुई नन्हीं जेड भी खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह चूसने के लिये अँगूठा मुँह में डालने वाली ही थी कि अचानक उसे अपनी मर्यादा का ख़्याल आ गया। उसका हाथ फ़ौरन सँभल गया। यह इस बात का सबूत था कि अब वह स्त्री बन गई है।

शू-वेन

(१६०६—)

शू-वेन प्रसिद्ध उपन्यासकार शेंङ्ग-सुंग-वेन की पत्नी का साहित्यिक नाम है।

शू-वेन, अनवी प्रान्त के होफ़ाई नगर की रहने वाली हैं। १६३२ में आपने वू-सुंङ्ग के चीनी इन्सटीच्यूट से डिग्री प्राप्त की। लड़ाई के दिनों में जब उत्तरी चीन की शिक्षा-संस्थाएँ कुनयिङ्ग में चली गईं, तो आप एक मिडल स्कूल में अध्यापिका थीं। १६४६ में मुक्ति के बाद आपने उत्तरी चीन के साम्यवादी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित मार्क्सवादी सिद्धान्तों का कोर्स पूरा किया और पेकिंग नार्मल विश्वविद्यालय के अभ्यास केन्द्र में अध्यापन कार्य के लिये नियुक्त हो गईं।

शू-वेन की मुख्य साहित्यिक कृति 'झील के किनारे' नाम से प्रकाशित एक कहानी-संग्रह है।

आपके अनुवाद भी विभिन्न पत्रिकाओं में समय-समय पर छपते रहते हैं।

नन्हें हुश्रान की व्यथा

जब नन्हा हुश्रान चिल्ल-पों के बीच, क्लास-रूम से बाहर निकला तो उसका समूचा शरीर एक अपूर्व आवेश में कांप रहा था। जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसे लगा कि उसके सहपाठियों की बीसियों आँखें मकड़ी के जाले की तरह महीन धागों से उसे जकड़ रही हैं, और वह उन्हें तोड़ने में असमर्थ है। उसे लगा जैसे कोई उसकी पीठ को गर्म सलाखों से दाग रहा है। बदहवासी के मारे उसके क़दम बोझिल हो गये, और वह पसीने में तर हो गया। उसका खिला हुआ चेहरा मुर्झा कर पीला पड़ गया था, और आवेश के मारे उसकी नसें तन गई थीं।

शायद आप सोचते होंगे कि शरारत करने या स्कूल का अनुशासन भंग करने के अपराध में नन्हे हुश्रान को घन्टे भर तक कोने में खड़े रहने की सजा मिली होगी। आखिर प्राइमरी स्कूल के छोकरों की कमबख्ती क्यों आती है? या तो वे अपना पाठ नहीं याद करते या गाली-गलौच, मारपीट करते पकड़े जाते हैं और अध्यापक की झिड़कियाँ खाते हैं। क्या नन्हें हुश्रान ने भी ऐसी कोई हरक़त की थी? जी नहीं! आप को भ्रम हुआ है।

फिर माजरा क्या है? यह लड़का तो विचित्र दशा में है। अन्धाधुन्ध चलता जा रहा है। देखा! स्कूल के फाटक से बाहर निकलते ही वह दो रिक्शों से टकरा गया, और फिर खजूर वाले का खोमचा भी

उलटा दिया। वह बेचारा धूल में बिखरी अपनी खजूरों को समेट रहा है।

खोमचे वाला क्रोध से चिल्लाया, "बदमाश कहीं का! अन्धा है क्या! अपना सर कटवाने के लिए सरपट भागा फिरता है। दीखता नहीं!"

नन्हें हुआन को खोमचे की दुर्गति देखकर अफ़सोस हुआ, उसने बिखरी खजूरों को इकट्ठा करने का फैसला किया लेकिन उस लम्बे-तड़ंगे आदमी की जल्लाद की-सी आवाज सुनते ही उसकी रूह काँप गई और वह सर पर पैर रखकर वहाँ से भागा। कई बार सड़क के लोगों से टकराता हुआ बचा। बस्ते से टकरा-टकरा कर उसकी जाँघें छलनी हो गई थीं। उसका सर चकरा गया और वह गली की नुक्कड़ पर जाकर रुक गया। उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई थी और चेहरा लाल-सुर्ख़।

उसके सामने से एक ट्राम निकली। ड्राइवर ने आग बुझाने वाले इंजन की तरह घँटी बजाई। बड़ी सड़क पर गाड़ियों का ताँता बँधा था। और लोगों की भीड़ थी। सड़क के दोनों ओर दुकानों की कतारें थीं, जिनमें मेवे, फूल, बर्तनों से लेकर पक्षियों के पंखों और नारंगी रंग के फानूसों तक दुनिया की हर चीज़ बिकती थी। चिकना लबादा पहने एक छोकरा, जो उम्र में नन्हें हुआन जितना था, एक बड़ी परात के सामने खड़ा चिल्ला रहा था। "गरमा गरम टिकिया—तीन सिक्कों की एक!" इतने में एक रिक्शा वाला, मानो उसकी आवाज़ से आकर्षित होकर वहाँ रुका। अपनी कमर टटोल कर उसने छः सिक्के निकाले और दो टिकियाँ खरीदीं। दोनों टिकियाँ मुँह में ठूँस कर उसने दोबारा रिक्शा उठाई और मस्त चाल से आगे बढ़ा।

नन्हा हुआन अभी तक बदहवास था। सवारियों का ताँता जारी था, और शोरगुल के मारे उसका सर फटा जाता था। कई मोटरें धूल के बादल उड़ाती हुई निकल गईं। कुर्ते की बाँह से माथे का पसीना पोंछते हुए उसने सोचा, "सब कुछ एक सपना था।"

लेकिन उसे अच्छी तरह मालूम था कि वह सपना नहीं था। खुश्की के मारे उसका गला सूख गया था। "कितना बुरा मौसम है! काश कि आज पानी बरसता!"

उसने कन्धे को झटका दे कर अपने खिसकते हुए बस्ते को सँभाला। फिर सड़क पार करके वह एक तँग 'हुतुंग'[1] की ओर बढ़ा।

'हुतुँग' के सिरे पर एक विशाल लाख का फाटक बना था, जिसके दोनों चौखटे कभी गहरे लाल रंग के रहे होंगे, लेकिन धूप और वर्षा के कारण उनका रंग मटयैला पड़ गया था और कई जगह पर बड़ी-बड़ी दरारें हो गई थीं। यही नन्हें हुआन के घर का प्रवेश-द्वार था। दहलीज़ पर पहुँच कर शर्म और ग्लानि के मारे उसके क़दम ठिठक गये। उसे अन्दर जाने में हिचकिचाहट अनुभव हुई। उसी क्षण, उसका हृदय इस भद्दे विशाल फाटक के प्रति घृणा से भर गया। उसे किसी व्यक्ति से, किसी चीज़ से नफ़रत थी—लेकिन किससे? वह स्वयं नहीं जानता था।

इन भयानक विचारों का जन्म उसी रोज़ सुबह हुआ था। ठीक-ठीक पूछिए तो आखिरी क्लास में। अध्यापक वू ने, जिसका सर कद्दू की तरह बड़ा था, आज उन्हें अफ़ीम के युद्ध के विषय में पढ़ाया था, जिसमें विदेशी साम्राज्यवादी देशों ने जबरन हमारे देश पर अफ़ीम थोपनी चाही थी। पाठ के बाद, अपनी आदत के अनुसार वू ने बची हुई खड़िया का टुकड़ा पीकदान में फेंक दिया। उसके थूकने और खड़िया फेंकने के तरीके में विशेष अन्तर नहीं था। पाठ समाप्त होते ही, लड़के किताबें बन्द करके सीधे बैठ गये। अब अध्यापक जी गुर्रायेंगे। उन्हें गुर्राने की आदत थी। देश की दुर्दशा का वर्णन करते समय उनका भारी भरकम सर घोघेपन से हिल रहा था, उनका यह बुद्धूपन लड़कों को बड़ा अच्छा लगता था। उनका सर तेज़ी से झूलता रहता, फिर कहानी की चरम-सीमा आने पर वह अचानक रुक जाते और अपनी

[1] हुतुंग—पेकिंग की तँग गलियों का स्थानीय नाम।

छोटी-छोटी आँखों को घुमा कर कनखियों से चारों ओर देखते—जैसे किसी छिपे दुश्मन को ताड़ रहे हों। फिर आध मिनट तक टकटकी लगा कर देखने के बाद उनका सर दुगुनी तेज़ी से हिलता और वे अपने व्याख्यान का उपसंहार सुनाते।

"संक्षेप में बात यह है कि चीन की हालत बुरी है। सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि देश तथा जाति को शक्तिशाली बनाया जाये। इसका बुनियादी तरीक़ा यही है कि सरकार पर निर्भर करने की बजाय प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर हो!"

छात्र इस उपसंहार से उतना ही परिचित थे, जितना कि सुन-यात-सेन के वसीयतनामे से। उन्हें इस व्याख्यान का एक-एक शब्द कण्ठस्थ था। इसी वजह से वे उसके अर्थ पर ध्यान नहीं दे पाते थे। लेकिन इससे आप यह न समझें कि वे अपने अध्यापक के कद्दूनुमा सर को हिलते देखकर प्रसन्न न होते थे। उसके औसत आकार के शरीर पर उनका गुम्बद जैसा सर ठीक मेले में बिकने वाले पादरी के मट्टी के बने चेहरे जैसा था—वही मूर्खतापूर्ण भाव!

अक्सर जब कद्दू के सर वाला वू अपने असन्तोष को उँडेलता, तो लड़के फुसफुसा कर हँसते, और अपनी कापियों पर अध्यापक के चित्र बनाते। उसकी आकृति बनाने का तरीका सीधा-सादा था। चौड़े नक़्श, गुम्बदाकार सर, और आँखों की जगह दो टेढ़ी रेखाएँ। और उसके दरवाजे से बाहर क़दम रखते ही सारे लड़के एक स्वर में गाते।

"कद्दू-मास्टर है हमारा गोल मटोल
खाता लम्बी फलियाँ और पकौड़ी गोल"

लेकिन आज की बात "फ़रक" थी। "फ़रक" से मतलब लड़कों के व्यवहार से है। अध्यापक वू तो पहले जैसा ही था। हमेशा की तरह उसने गुर्राकर अपना व्याख्यान "संक्षेप में बात यह है—" कहकर शुरू किया था। लेकिन आज सबकी फुसफुसाहट और हँसी बन्द थी। व्याख्यान की समाप्ति के बाद भी सबकी आँखें उसकी ओर लगी रहीं। लड़कों के

गले रुँधे से थे और उन्होंने रोजमर्रा का गीत भी नहीं गाया। स्कूल में छुट्टी होने पर वे अपनी आदत भी भूल गये—रोज़ तो अध्यापक के कमरे से बाहर निकलते ही ऐसी धमाचौकड़ी और उछल-कूद मचती कि तौबा! ऐसा लगता जैसे किसी ने चिड़िया घर के बन्दरों का पिंजरा खोल दिया हो। लेकिन आज सब ख़ामोश थे, हरेक के दिल पर एक बोझ था।

यहाँ तक कि सबका गुरुघंटाल वाँग-चुन-लियाँग भी चुप था। वह अपनी नई कापी पर पेन्सिल से बार-बार "अफ़ीम देश का सत्यानाश करती है।", "अफ़ीम के राक्षस", "देशद्रोही" इत्यादि शब्द लिख रहा था। उसके हाथ मशीन की तरह अपने आप चल रहे थे—जैसे किसी ने कोई मन्त्र फेंका हो। ली-वेन-हुई ने जो हर शरारत में चुन-लियाँग का दाहिना हाथ रहता था, दाँत निपोरने की कोशिश की, लेकिन अपने दोस्त की गम्भीर मुद्रा को देखकर वह मन मसोस कर रह गया।

यह चुप्पी का वातावरण बहुत देर तक न क़ायम रह सका। किसी लड़के ने चिल्ला कर कहा, "तुमने अभी अध्यापक त्रू की बातें सुनी। अफ़ीमचियों का सत्यानाश हो!"

चाऊ-लीन-ती अध्यापक की मेज़ पर चढ़ कर ब्लैकबोर्ड पर लिख रहा था, "अफ़ीमचियों का सत्यानाश हो!"

देखते-देखते सब चिल्लाने लगे, "अफ़ीमचियों का सत्यानाश हो!" चारों ओर हाय-तौबा मच गई। कोई बस्ते में किताबें डाल रहा है तो कोई फ़र्श पर गिरे पेन्सिल और रबड़ के टुकड़े बटोर रहा है। कुछ लड़के कूद कर अध्यापक की मेज पर चढ़कर धमाधम करने लगे, जैसे कोई बढ़ई मचान बना रहा हो। बीच-बीच में अफ़ीमचियों को गालियों देने की आवाजें भी सुनाई पड़ रही थीं।

वी-चिन-पाओ ने बिना संकोच के स्वीकार किया, "मेरे दादा भी अफ़ीम पीते हैं—लेकिन उन्हें रोकना मेरी हिम्मत से बाहर है।"

"मैं एक तरकीब जानती हूँ!" उसकी चचेरी बहिन ल्यू-चिया युँग

ने कहा। उसका चेहरा जोश से तमतमा रहा था, और वह भाई के कान में फुसफुसा कर कुछ कहने लगी।

नन्हा-हुआन चुपके से उनकी बातें सुन रहा था। अचानक उसकी टाँगें लड़खड़ा गईं और वह ल्यू-चिया-युँग की कुर्सी पर गिर पड़ा। फिर अपने आगे खड़े हुए बड़े से लड़के की बास्कट खेंच कर याचना भरे स्वर में बोला, "चाओ-मिन-ती, मैं तुमसे कोई बात पूछना चाहता हूँ।" उसका पीला चेहरा घबराहट के मारे लाल हो रहा था।

"क्या बात है ?" चाओ-मिन-ती ने चमकीली धातु की बनी पेन्सिल को कुर्ते की जेब में खोंसते हुए पूछा।

"मैं जानना चाहता हूँ कि अगर कोई बीमारी की वजह से अफ़ीम खाये, तो क्या वह देशद्रोही है ?" संकोच के मारे नन्हें हुआन के मुँह से साफ़ शब्द नहीं निकल रहे थे।

चाओ-मिन को कोई जवाब न सूझा। लेकिन वह सब लड़कों का उस्ताद होने के कारण अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति सचेत था।

लेकिन ल्यू-चिया-युँग ने जो अपने दादा के भ्रष्टाचार को रोकने की साजिश में व्यस्त थी, नन्हें हुआन की बात सुन ली थी, और वह पूरे विश्वास के साथ बोली, "क्यों नहीं ? वह जरूर देशद्रोही है ! सब अफ़ीमची देशद्रोही हैं, राक्षस हैं। मान लो एक आदमी बीमार है, क्या वह डाक्टर के पास नहीं जा सकता ? अगर किसी को अफ़ीम खाने का चस्का है, तो उसे अपनी आदत सुधारनी चाहिए—अगर वह नहीं सुधारता, तो देशद्रोही है !"

ल्यू-चिया-युँग जोश के मारे यह न देख सकी, कि उसकी बात का क्या प्रभाव पड़ा है। लेकिन ज्यों ही उसने नन्हें हुआन की कठोर मुख-मुद्रा देखी, वह दुबककर अपने भाई की कुर्सी पर जा बैठी।

क्लास का एक और लड़का, वाँग-सिंग-आन सब बातों को ध्यान से सुन रहा था, निष्पक्ष होने के कारण उसकी उत्सुकता जगी।

"नन्हें-हुआन", उसने पूछा, "क्या तुम्हारे दादा भी अफ़ीमची हैं ?"

"मेरे दादा नहीं हैं।" नन्हा हुआन बुदबुदाया।

"तो फिर तुम्हारे पिता ?"

नन्हें हुआन ने सर हिलाया।

"तुम्हरी माँ ?"

नन्हें हुआन ने सर झुका कर स्वीकृति दी।

नन्हें हुआन की परिस्थिति देखकर किसी बच्चे की जबान से अफ़ीमचियों के विरुद्ध एक शब्द न निकला। सिर्फ़ ल्यू-चिया-युँग ने अपनी ढिठाई से स्थिति को खराब कर दिया।

"नन्हें हुआन ! परेशान मत होओ।" वह उसे सान्त्वना देने के लिए बोली। "तुम तो अफीमची नहीं हो ! हम तुम्हारे विरुद्ध नहीं। फिर काहे की चिन्ता !"

"बको मत !" वी-चिया-पाओ ने अपनी चौधरानी बहिन को एक ओर घसीटते हुए, चिल्लाकर कहा।

और एक-एक करके सब वहाँ से खिसक गये। अपने घायल साथियों को पीछे छोड़ जाने की परम्परा तो आदिकाल से चली आती है।

नन्हा-हुआन खिन्न मन से अलग बैठा था। वे अब भी फुसफुसा रहे थे।

"तभी तो यह इतना दुबला है ! इसकी नसों में अफ़ीम का ज़हर समा गया है।"

"ठीक है !—इसकी नसों में जहर है !"

अचानक ही नन्हा हुआन उठ खड़ा हुआ। काश ! वह एक बाज़ की तरह छत तोड़ कर नीले आसमान में उड़ जाता ! वह बहुत दूर चला जाता और कभी न लौटता। लेकिन उसके बोझिल क़दम बार-बार उसे चेतावनी दे रहे थे कि उसे इस धरती पर ही रहना है। जब वह एक क्लासरूम के सामने से ग़ुज़रा तो छोटे बच्चों के गाने की आवाज़ आई। उनके स्वर में कोमलता भरी थी—

'पढ़ाई लिखाई खत्म हुई
सूरज जाने को हुआ तैयार
मेरे अम्मा-बापू दोनों
करते मुझ से कोमल प्यार'

उसे लगा जैसे वे उसे ताने दे रहे हैं। उन्हें अपने स्नेहशील माँ-बाप पर गर्व है—केवल उसी की नसों में जहर भरा है !

इन्हीं तानेभरी आवाजों से तँग आकर वह सड़कों पर भाग निकला था, लेकिन अपने घर के फाटक पर पहुँचते ही उसके पाँव शिथिल हो गये। उसे मालूम था कि अन्दर पैर रखते ही उस पर क्या बीतेगी।

निश्चय ही उसने अपनी माँ को दोषी नहीं ठहराया था। जब उसकी माँ मैले-कुचैले कपड़े पहने दिन-रात अफ़ीम के नशे में बेसुध रहती तो नन्हें हुआन के मन में इच्छा होती कि और माँओं की तरह उसकी माँ भी साफ़-सुथरे कपड़े पहने और उसे पार्क में घुमाने ले जाये। एक बार नन्हें हुआन ने पूछा भी था, "मां, तुम अफ़ीम क्यों पीती हो ?"

जवाब में माँ हमेशा एक ठंडी साँस लेकर कहती, "बेटा हुआन, तुम्हारी माँ बीमार है—बड़ी लाचारी है।"

माँ की ठंडी साँस को सुनकर नन्हें हुआन का दिल दया से पसीज उठा था, और सहानुभूति प्रकट करने के लिये वह चुपचाप टकटकी लगा कर माँ के मुर्झाये चेहरे की ओर देखने लगा था। वह जानता था कि अफ़ीम की तरावट पहुँचते ही उसमें दोबारा ताक़त आ जायेगी और वह पिता को फिर गालियाँ बकना शुरू करेगी। नन्हें हुआन को माँ की झिड़कियाँ सुनना क़तई पसन्द न था। उसे अपनी माँ से सहानुभूति थी, और वह अपने अज्ञात पिता से तीव्र घृणा करता था जो फ़ौज में अफ़सर था और उसकी माँ को छोड़कर तीन रखैलों के साथ किसी दूसरे प्रान्त में रहता था।

बहुत देर तक दहलीज़ पर पैर पटकने के बाद नन्हें हुआन को एक

तरकीब सूझी। क्यों न वह अन्दर जाकर साफ़-साफ़ शब्दों में माँ से अफ़ीम छोड़ने के लिये कहे!

इस नये निश्चय से प्रेरित हो कर वह भागा-भागा अन्दर गया और माँ के कमरे का पर्दा उठाया।

"माँ!"

अन्दर अन्धेरा था और अफ़ीम की तेज़ नशीली गन्ध उसकी नाक में चढ़ गई, लेकिन वह इसका आदी हो चुका था। बिस्तर के सिरहाने एक छोटी-सी रोशनी टिमटिमा रही थी। नन्हें हुग्रान ने सदा उस रोशनी को जलते ही देखा था।

उसने बिस्तर के पास जाकर फिर माँ को आवाज़ दी लेकिन इस पवित्र नाम वाली स्त्री अफ़ीम का धुआँ अन्दर ले रही थी। ज्यों ही आग पर पड़ी अफ़ीम की टिकिया पिघली, माँ के गले से फुफकारों की आवाज़ आई। बेटे के पुकारने पर उसने हाथी-दाँत की बनी हुक्के की नली को मुँह से हटाये बग़ैर, थोड़ा सर भर हिला कर जवाब दिया।

नन्हा हुग्रान बिस्तर के सामने पड़े लकड़ी के पायदान पर घुटने टेक कर माँ की ओर देखने लगा। माँ ने अफ़ीम की पाँच टिकियाँ पीने के बाद चैन लिया, अधखुली आँखों से पीनक में बेसुध होने से पहले, उसने बेटे की ओर देखकर जम्हाई ली, और काले नोकदार दाँतों की दो पंक्तियाँ चमक उठीं।

"नन्हे हुग्रान! मेरी ओर इस तरह क्यों घूर रहे हो? जाकर अमा-चाओ के साथ खेलो।" और उसने अपनी आँखें मूँद लीं।

"नहीं, मैं नहीं जाना चाहता।" हुग्रान ने अस्वीकृति प्रकट की और बिस्तर पर चढ़ कर माँ के सामने बैठ गया। वह सोच रहा था कि किस तरह बात शुरू की जाय। उसे विश्वास था कि अगर माँ सचमुच ही उसे प्यार करती है तो ज़रूर उसकी बात सुनेगी। इसलिये वह धैर्यपूर्वक बैठा माँ के जगने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने माँ के बिखरे बालों और

झुर्रियों से भरे जर्द चेहरे की ओर टकटकी बाँध कर उसके लबादे के खुले बटनों को गिना। एक-दो-तीन, उसकी ठोड़ी के नीचे के तीन बटन हमेशा खुले रहते थे। वह अब खुर्राटे भर रही थी और उसकी सूखी उँगलियाँ, जो अफ़ीम पीने से काली स्याह पड़ चुकी थीं, रह-रह कर हिल रही थीं।

उसने आकुल होकर पुकारा, "माँ !"

कोई उत्तर नहीं।

उसने फिर आवाज़ दी।

बुढ़िया ने अनमने ढंग से आँखें खोलीं, उसके ज़र्द होंठ कुछ हिले, लेकिन फिर वह नशे में बेसुध हो गई।

नन्हे हुआन के कानों में कोई कह रहा था, "अफ़ीमची राक्षस ! पशु ! देशद्रोही !" उसने माँ की बाँह झकझोरी, "माँ ! उठो !"

"अरे सत्यानाशी, किसी को चैन की नींद नहीं सोने देता !" माँ ने, फटी, कर्कश आवाज़ में कहा। उठकर उसने अफ़ीम गर्म करने वाली सलाख को टटोला।

नन्हे हुआन ने फ़ौरन लपक कर बुढ़िया के दोनों हाथ थाम लिये और याचना भरे स्वर में कहा, "माँ, मत पीओ, तुम हमेशा अफ़ीम क्यों पीती हो ?"

माँ ने ठंडी साँस लेकर कहा, "मे-यु-फ़ा-ज़ू" (और कोई चारा नहीं)।

लेकिन आज नन्हे हुआन का दिल कठोर हो गया था। उसने सोचा, "अफ़ीम पीकर तुम सो जाती हो, आँख खुलने पर और अफ़ीम पीती हो, फिर शरीर में थोड़ी ताक़त आते ही पिता को गालियाँ बकती हो—रोज़ का यही क़ायदा है।" लेकिन उसने नम्रता से कहा, "चारा कैसे नहीं ? कई लोगों ने यह आदत छोड़ दी है।"

"क्या बकता है बच्चे ! तुम्हारी माँ को अफ़ीम पीते बीस साल होने को आये। अब उसे छोड़ दे ? तुम्हारी नानी को छोड़ दे ?" उसके सधे हुए हाथ फिर अफ़ीम की टिकिया को सलाख में लगाने में जुट गये।

कुछ देर तक तो जलती हुई अफ़ीम के फुफकारों के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया। अपनी तृष्णा को शान्त करने के बाद बुढ़िया ने अपने मुर्झाए चेहरे को बेटे की ओर घुमाया, अपनी पीली उँगलियों से उसका मुँह और गर्दन सहलाने लगी। फिर भारी गले से टर्राई, "अमा-चाओ! अरी कहाँ मर गई! आज नन्हें बाबू को ठीक से कपड़े क्यों नहीं पहनाये! उसे फिर सर्दी लग गई है!"

अमा-चाओ भागती हुई अन्दर आई। उसके हाथ आटे में सने थे। बनावटी क्रोध दिखाते हुए माँ ने आज्ञा दी, "इसे और कपड़े पहना कर रसोई में लेजाओ—वहाँ यह खेलेगा।"

नौकरानी समझ गई कि मालकिन बेटे से छुटकारा पाना चाहती है। वह नन्हें हुआन को धकेलती हुई बाहर ले गई, "चलो, रसोई में चल कर टिकिया बनाने में मेरा हाथ बटाओ।"

नौकरानी के बलप्रयोग के सामने नन्हें हुआन को झुकना पड़ा, लेकिन दहलीज़ से बाहर निकलते ही उसने अमा-चाओ का हाथ छोड़ दिया और दरवाज़े से लिपट कर खड़ा हो गया। उसकी आँखों के सामने पिछले दृष्य घूम गये। अध्यापक वू के अफ़ीम के युद्ध का पाठ, लड़कों की चिल्लाहट, "अफ़ीमची देशद्रोही हैं!—क्या बीमार डाक्टर के पास नहीं जा सकता?—बीमारी तो एक बहाना है।" उसके कानों में यह शब्द धमाके की तरह गूँज रहे थे, "राक्षस! पशु! देशद्रोही!"

नौकरानी ने उसे दोबारा झकझोरा, गर्म आसुओं की एक लड़ी उसके हाथ पर चू पड़ी।

"हुआन, तुम्हें क्या हो गया है!" उसने बेसब्री से कहा। उस बेचारी को क्या पता कि नन्हें हुआन के दिल में कितनी व्यथा भरी है!

लाओ-शे

(१८९७—)

लाओ-शे, शू-चिङ्ग-चुन का साहित्यिक नाम है।

आप उपन्यासकार के रूप में विख्यात हैं, लेकिन कहानियाँ, नाटक तथा कविता भी लिखते हैं। आपका जन्मस्थान पेकिङ्ग है, आपके पूर्वज मंचू थे।

कई वर्ष तक पढ़ाने के बाद आप लन्दन युनिवर्सिटी के पूर्वी भाषाओं के विभाग में चीनी भाषा के अध्यापक नियुक्त हुए। वहाँ आपका परिचय उपन्यासकार लो-हुआ-शेङ्ग से हुआ, जिनकी प्रेरणा से आपने अपना पहला उपन्यास "बूढ़े चाँग का जीवनदर्शन" लिखा, जो "कहानी पत्रिका" में छपा था।

स्वदेश लौटने पर लाओ-शे ने अनेक युनिवर्सिटियों में पढ़ाया, और थोड़े ही समय में अपने उपन्यासों के कारण प्रसिद्ध हो गये, जिनमें से "दो मा", "चाओ-सू-च्वे" और "बिल्लियों की नगरी" उल्लेखनीय हैं। यह उपन्यास व्यंगात्मक शैली में लिखे गये हैं और इनसे लेखक का पेकिङ्ग के स्थानीय मुहावरों का असाधारण ज्ञान प्रकट होता है।

जापान-विरोधी युद्ध के दौरान लाओ-शे ने 'आक्रमणविरोधी राष्ट्रीय लेखक संघ' का संगठन किया और उसके पहले प्रधान चुने गये। युद्ध की संकटकालीन परिस्थितियों से मजबूर होकर आपने नाटक का माध्यम

अपनाया। "सरकार का स्थान पहला है" नामक नाटक आपने सुङ्ग-चौ-ली के सहयोग से लिखा। आपकी लम्बी वर्णनात्मक कविता "चिनमेन दर्रे के उत्तर में" में सियान से लानचाओ तक की यात्रा के संस्मरण हैं।

आपका सबसे अधिक प्रसिद्ध उपन्यास लो-तो सियाङ्ग-जू (रिक्शा-वाला) है, जिसका अनुवाद अंग्रेजी में भी हो चुका है। हाल ही में आपने "मेरा जीवन" नामक एक छोटा उपन्यास लिखा है, जिसका नायक एक पुलिसमैन है। इसके अतिरिक्त सर्वहारा दृष्टिकोण से लिखे दो नाटक "फ़ाङ्ग्-चुङ्ग-चू" और "साँप देवता की मूँछें" भी प्रकाशित हुए हैं।

सींगवाला चाँद

[१]

हाँ ! मैंने फिर सींगवाला चाँद देखा है, पीले, सुनहले काँटे की तरह आसमान से लटकता हुआ। मैं कितनी बार सींगवाला चाँद देख चुका हूँ। मेरे मन में कितने विचार उठे हैं, इसे देखकर मेरी स्मृति के बादलों को चीर कर कितनी रेखाएँ उभरी हैं ! मेरी पुरानी स्मृतियाँ ठीक वैसे ही खिल उठती हैं, जैसे तेज हवा के झोंके से सोया हुआ फूल !

[२]

पहली बार सींगवाले चाँद में से ठंडा कुहासा उठ रहा था, कडुवा और ज़हरीला। इसकी पीली मंद रौशनी में मेरे आँसू चमक उठे, उस समय मैं केवल सात वर्ष की थी। मेरी माँ ने मुझे गाढ़े लाल रंग की मिर्ज़ई और फूलों वाली नीली टोपी पहनाई थी। मुझे याद है, छोटे कमरे की ऊँची दहलीज़ पर खड़े होकर मैंने नीचे झाँका, कमरा दवाइयों की गन्ध, पिता की बीमारी और माँ के आँसुओं से भरा था। मैं अकेली खड़ी सींगवाला चाँद देख रही थी। किसी को मेरीदे खभाल करने या खाना खिलाने की फ़ुर्सत न थी। मैं घर की उदासी को जानती थी। राब पिता की बीमारी के विषय में बातें कर रहे थे—लेकिन मेरी उदासी अधिक गहरी थी—मुझे भूख लग रही थी—ठंड सता रही थी। किसी ने मेरी ओर ध्यान न दिया। मैं वहीं पर खड़ी रही जब तक सींगवाला

चाँद अस्त नहीं हो गया। अब कुछ भी बाकी नहीं रहा था। मेरे आँसू बहने लगे, लेकिन माँ की सिसकियों की आवाज में मेरी सिसकियाँ दब गईं। पिता—शान्त पड़े थे और उनका मुँह सफ़ेद कपड़े से ढँका था। मेरा जी चाहा कि सफ़ेद कपड़े को उठाकर पिता का मुँह देखूँ, लेकिन हिम्मत नहीं पड़ी। छोटा सा कमरा पिताजी के शरीर से घिर गया था। माँ ने झटपट सफ़ेद लबादा[1] पहना और मेरी लाल कुर्ती के ऊपर भी एक सफ़ेद अध-सिला लबादा पहना दिया। मुझे याद है, मैं बाहर निकले हुए धागों को खींच रही थी। सब लोग रोने-पीटने में लगे हुए थे—समझ में न आया कि आख़िर इतना चिल्लाने से क्या फ़ायदा ? पिता जी को चार छेदों वाले तख़्तों के बक्स में लिटाया गया। और छै आदमी उन्हें उठाकर ले गये। माँ, और मैं रोते हुए पीछे चले। मुझे वह लकड़ी का सन्दूक अच्छी तरह याद है, क्योंकि उसी ने मेरे पिता को ख़त्म कर डाला था। पिता की याद आने पर उस सन्दूक को खोलने की इच्छा होती, लेकिन वह तो ज़मीन में दबा पड़ा था। मुझे पता था कि पिता शहर से बाहर की ज़मीन में दबे हुए हैं, लेकिन अब ज़मीन पर गिरी ओस की बूँद के समान—उन्हें पाना असम्भव था।

[२]

अभी हमने सफ़ेद लबादे उतारे भी नहीं थे कि सींगवाला चाँद फिर दिखाई दिया। सर्दियों का मौसम था; माँ मुझे कब्रिस्तान में ले गई, और वह पिता की कब्र पर काग़ज़ के हार[2] लेकर खड़ी रही। माँ ने उस दिन मुझे बड़ा प्यार किया। जब मैं चलते चलते थक गई तो उसने मुझे अपनी पीठ पर उठा लिया और ढेर से चीनियाँ बादाम ख़रीद

१ सफ़ेद लबादा—चीन में सफ़ेद रंग शोक का चिह्न है।

२ कागज के हार—चाँदी के रंग के काग़ज़ों को पिरो कर मृत व्यक्तियों की स्मृति में जलाया जाता है।

दिये। सब चीज़ें ठंडी थीं, सिर्फ चीनियाँ बादाम गरम थे। मैंने खाने की बजाय, उन पर अपने हाथ गर्म किये। मुझे ठीक याद नहीं कि हम कितनी दूर गये थे—लेकिन जगह बहुत दूर थी। पिता की अन्त्येष्टि के दिन तो दूरी कम लगी थी—शायद उस रोज लोगों की भीड़ थी—इसलिये। लेकिन आज हम दोनों अकेले थे, दोनों चुपचाप थे। चारों ओर उजाड़ बियाबान था, और पीली मिट्टी वाली सड़क तो खत्म होने में ही न आती थी। मुझे कब्र की याद है—मिट्टी का एक छोटा-सा टीला, और दूर, आसमान के छोर के पास एक पुल था, जहाँ सूरज छिप रहा था। माँ ने मुझे पीठ से उतार कर एक ओर खड़ा कर दिया और मिट्टी के टीले से लिपट कर रोने लगी। मैं क़ब्र के पास बैठकर चीनियाँ बादामों से खेलती रही, कुछ देर बाद माँ ने कागज के हार जलाये। हालाँकि हवा बन्द थी, तो भी बड़ी ठंड थी। माँ फिर सिसकियाँ भर रही थी। मेरा दिल भी पिता के लिये उदास था पर मुझे रोना नहीं आया, लेकिन माँ की सिसकियों ने मेरा दिल हिला दिया, और मेरी आँखों से आँसू टपकने लगे। मैंने माँ का हाथ पकड़ कर कहा, "माँ, मत रोओ!" माँ मुझे छाती से चिपटा कर और जोर से रोने लगी। अन्धेरा तेज़ी से बढ़ रहा था। सारे कब्रिस्तान में हम दोनों अकेले थे—अचानक ही मां को डर लगा और उसने मेरा हाथ खींच कर मुझे उठाया, हम दोनों चल पड़े। कुछ दूर जाकर मां ने पीछे मुड़ कर देखा, पुल के चारों ओर मिट्टी के टीले ही टीले थे। माँ ने एक ठंढी साँस भरी। अभी हम शहर के फाटक तक भी न पहुँचे थे कि सींगवाला चांद फिर दिखाई दिया। चारों ओर अन्धेरा, सुनसान था। सिर्फ़ सींगवाले चाँद की मन्द रौशनी ज़मीन पर पड़ रही थी। मैं थक चुकी थी, माँ मुझे गोद में उठा कर चलने लगी। मुझे ठीक याद नहीं कि हम शहर में कब दाखिल हुए—हाँ, इतना ज़रूर याद है कि आसमान में सींगवाला चाँद उगा था।

[४]

मैं आठ बरस की ही थी, जब मुझे चीज़ें गिरवी रखना आ गया। मैं जानती थी कि गिरवी के पैसों से ही माँ और मैं—ज़िन्दा रह सकते हैं। अगर कोई और चारा होता तो माँ मुझे बाजार क्यों भेजती? जब भी माँ मेरे हाथों में कोई पोटली थमाती, तो मैं फ़ौरन ताड़ जाती कि आज हँडिया औंधी पड़ी होगी। कभी-कभी तो हमारे बर्तन किसी सदा-चारिणी विधवा की भाँति सफ़ाचट और रीते रहते। उस रोज़ माँ ने मुझे गिरवी रखने के लिये आईना दिया था, हमारे गर्म कपड़े तो जिस्म से उतरते ही गिरवी की दुकान पर पहुँच चुके थे। आईने को होशियारी से सम्भाल कर मैं दुकान की ओर भागी, क्योंकि दुकान जल्दी ही बन्द हो जाती थी। मुझे दुकान के बड़े-बड़े लाल फाटकों से बड़ा डर लगता था, मेरा दिल धक-धक करने लगा। बड़ी मुश्किल से कूद कर मैंने ऊँची दहलीज़ पार की और अपनी पूरी ताक़त से हाथ ऊपर उठा कर, चिल्लाई 'गिरवी रखने के लिये' लेकिन उस रोज़ दुकान वालों को आईने की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने मुझे कोई और 'नम्बर' लाने को कहा। मैं फ़ौरन इसका मतलब समझ गई और सर पर पाँव रख कर घर की ओर भागी। माँ ने आईने को देखकर रोना शुरू कर दिया। मैं पहले समझती थी कि उस छोटे कमरे में बहुत-सी चीज़ें होंगी, लेकिन जब मैंने माँ के साथ कमरे का एक-एक कोना छान मारा, तो मुझे मालूम हुआ कि सचमुच हमारे घर में बहुत थोड़ी चीज़ें हैं। माँ मुझे दोबारा दुकान पर भेजने के लिये राज़ी न थी। "लेकिन माँ, हम खायेंगे क्या?" माँ ने रोते हुए अपने बालों से चाँदी की सूई निकाली—सिर्फ़ यही एक चाँदी की चीज़ थी। पहले भी माँ ने इसे कई बार गिरवी रखने के लिये निकाला था, लेकिन हर बार उसके हाथ रुक गये थे, क्योंकि यह सूई मेरी दादी ने माँ की शादी में भेंट दी थी। इस बार माँ ने दिल कड़ा किया और सूई मेरे हाथों में थमा दी। मैं भागती हुई दुकान पर पहुँची, लेकिन वह डरावना फाटक बन्द हो

चुका था। मैं दुकान की सीढ़ियों पर बैठ गई। मेरी ज़ोर से सिसकियाँ भरने की हिम्मत नहीं हुई, मैंने आकाश की ओर देखा—आह! सींग वाला चाँद फिर मेरे आँसुओं को देख रहा था। मैं बड़ी देर तक बैठी रोती रही। अन्धेरा होने पर माँ मुझे ढूँढ़ने आई। उसने आकर मेरा हाथ दबाया। ओह!—कितना गर्म, सुखद स्पर्श था! मुझे अपना सारा दुख-दर्द, यहाँ तक कि भूख भी भूल गई। मैंने सिसकियाँ भरते हुए कहा, "माँ चलो, घर चलकर सोयें। कल सुबह फिर यहाँ आयेंगे।" माँ चुप रही। थोड़ी दूर चलने के बाद मैंने कहा, "माँ, इस सींग वाले चाँद की तरफ देखो! जिस रात पिता की मृत्यु हुई थी, उस रात भी यह ऐसा ही टेढ़ा था, माँ, यह टेढ़ा क्यों है?" माँ अब भी चुप थी, लेकिन उसका हाथ काँप रहा था।

[५]

माँ हमेशा लोगों के कपड़े धोने में लगी रहती थी। मैं भी काम में उसका हाथ बँटाना चाहती थी, लेकिन समझ में नहीं आता था कि कैसे बटाऊँ? इसलिये मैं माँ के काम खत्म होने की प्रतीक्षा में जागती रहती। कभी-कभी तो चाँद निकलने के बाद भी माँ के कपड़े ख़त्म न होते। दुकानदारों के छोकरे चमड़े की तरह सख्त, बदबूदार मोज़ों का ढेर लगा देते, और इन्हें धोते-धोते माँ की भूख ग़ायब हो जाती। मैं माँ के पास बैठकर सींग वाले चाँद को देखती। चाँद की किरणों में इधर-उधर उड़ते चिमगादड़ों को देखकर ऐसा लगता, जैसे सफेद धागे में लेस बुनने की फिरकी पिरोई हो। माँ पर जितनी दया आती, सींग वाले चाँद पर उतना ही प्यार आता। क्योंकि उसे देखकर मुझे खुशी होती थी। विशेषकर गर्मियों में तो वह बर्फ़ की सिल की तरह ठंडा होता—मुझे उसकी धुँधली पीली परछाईं बहुत पसन्द थी। जिस रोज परछाईं न होती, उस रोज़ ज़मीन पर अन्धेरा रहता, तारे और भी चमकदार हो जाते और फूलों की महक दुगनी हो जाती। हमारे पड़ोसियों के बाग़ में

लगे गोंद के पेड़ से झड़े फूलों से हमारा आँगन वर्फ़ के गालों की तरह ढँक जाता ।

[६]

माँ के हाथ मछली की तरह छीछलेदार हो गये हैं । अब मैं बार-बार उसे अपनी पीठ खुजलाने के लिये भी नहीं कहती । कपड़े धोने से उसकी हथेलियाँ सख्त हो गई हैं । माँ बहुत दुबली होती जा रही है । बदबूदार मोजे धोने से उसका जी मिचला उठता है और वह खाना नहीं खाती । इसका कोई इलाज होना चाहिये । कभी-कभी मैले कपड़ों की ढेरी एक ओर फेंक कर माँ कुछ सोचती रहती है । वह क्या सोचती है ? मुझे नहीं पता ।

[७]

माँ ने कहा है कि मुझे ज़िद छोड़ कर अच्छी लड़की की तरह 'पिता' का कहना मानना चाहिये । माँ मेरे लिये एक और 'पिता' ढूँढ़ लाई थी । एक पिता तो क़ब्र में सोया पड़ा है । माँ ने झिड़कियाँ देते समय मुह दूसरी ओर फेर लिया, उसकी आँखों में आँसू भर आये, "मैं तुम्हें भूख से नहीं मरने देना चाहती !" ओह ! मुझे भूख से बचाने के लिये ही माँ मेरे लिये दूसरा 'पिता' ढूँढ़ लाई थी । मैं नासमझ और डरपोक थी; लेकिन मुझे इस बात का भरोसा हो गया कि अब मुझे भूखा न रहना पड़ेगा । कितना विचित्र संयोग था !—जब हम अपना पुराना घर छोड़ कर आये थे, तब भी आकाश में सींग वाला चाँद था, और आज भी वैसा ही चाँद निकला है ! माँ दुलहिन बनी लाल कुर्सी पर बैठी थी । ढोल और शहनाई बजाने वालों ने शोर मचा रखा था । माँ की डोली के पीछे-पीछे मैं एक आदमी की उँगली पकड़ कर चल रही थी । सींग वाले चाँद की मन्द रोशनी ठंडी हवा के झोंकों से काँप रही थी । सड़क पर बहुत थोड़े लोग थे, सिर्फ़ कुछ आवारा कुत्ते शहनाई वालों को देखकर भूँक रहे थे । डोली बड़ी तेज़ी से जा रही थी । क्या माँ को शहर के

बाहर क़ब्रिस्तान में ले जाया जा रहा था ? वह आदमी बार-बार मुझे धकेल रहा था। चलते-चलते मेरी साँस फूल गई थी। उस आदमी की हथेली से पसीना चू रहा था। मैंने माँ को पुकारना चाहा, लेकिन गले से आवाज़ नहीं निकली। देखते-देखते सींग वाले चाँद की शक्ल मुँदी आँख जैसी हो गई। माँ की डोली एक तंग मौहल्ले में दाख़िल हुई।

[८]

ऐसा लगता है कि पिछले तीन-चार बरसों से मैंने सींगवाला चाँद नहीं देखा। नया पिता हम दोनों के साथ अच्छा व्यवहार करता था। उसके पास दो कमरे थे। वह और माँ भीतर के कमरे में रहते थे और मैं बाहर वाले कमरे में लकड़ी के तख़्तों पर सोता थी। पहले मैंने माँ के साथ सोने की ज़िद की, बाद में मुझे 'अपना' कमरा अच्छा लगने लगा। इसकी दीवारें सफ़ेद थीं, और एक लम्बी मेज़ और कुर्सी पड़ी हुई थी। यह सब चीज़ें 'मेरी' थीं। मेरा बिस्तर भी पहले से अधिक मुलायम और गर्म था। धीरे-धीरे माँ के शरीर पर चर्बी चढ़ने लगी, गालों में सुर्खी आ गई और हाथों के छीछले झड़ गये। अब मुझे चीज़ें गिरवी रखे एक ज़माना बीत गया था। नये पिता ने मुझे स्कूल में भर्ती करा दिया, वह बड़ा प्यारा आदमी था, कभी-कभी मेरे साथ खेलता भी था। तो भी न जाने क्यों मुझे उसे 'पिता' पुकारने में संकोच-सा होता। वह मेरे इस संकोच को समझता था और अक्सर इसका मज़ाक उड़ाता था। अब वह हँसता तो उसकी आँखें बड़ी लुभावनी लगतीं। माँ ने मुझे अकेले में समझाया कि मुझे उसे 'पिता' पुकारना चाहिये। मैं मन ही मन समझ गई। इसी 'पिता' के कारण अब हमें खाने-पाने की तंगी नहीं थी। लेकिन इन तीन-चार बरसों में मुझे सींगवाला चाँद नहीं दिखाई दिया। हाँ, मुझे पिता की मृत्यु तथा माँ की शादी के दिन का सींगवाला चाँद भुलाये नहीं भूलता। उसकी मन्द रौशनी, और ठँडे कुहासे की स्मृति अभी तक ताज़ा है।

[९]

मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता था, मैं सोचा करती थी कि स्कूल में ढेर से फूल होते हैं लेकिन वहाँ फूलों का नाम-निशान न था—मैं स्कूल का विचार आते ही पिता की क़ब्र की कल्पना करने लगती थी। माँ को भी फूल पसन्द थे, लेकिन वह उन्हें ख़रीद नहीं सकती थी; अगर कोई उसे अधखिली कली भेंट करता तो वह बहुत प्रसन्न होकर उसे बालों में खोंस लेती। मैं भी एक-आध बार माँ के लिये फूल तोड़ कर लाई थी। बालों में फूल लगा कर माँ पीछे से युवती-सी जान पड़ती थी। माँ के खुश होने पर मेरा दिल भी खुशी से भर जाता। अब मैं स्कूल में खुश थी।

[१०]

पिछले साल मैंने प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई ख़तम की। एक दिन माँ ने मुझे फिर गिरवी की दुकान पर भेजा। पता नहीं, नया पिता कहाँ चला गया था, शायद माँ को भी नहीं मालूम था। माँ ने मेरी पढ़ाई जारी रखी, उसका ख्याल था कि पिता जल्द लौट आयेगा। कई दिन बीत गये, लेकिन वह न लौटा, न ही उसका कोई ख़त आया। मैं डरती थी कि कहीं माँ को फिर बदबूदार मोज़े न धोने पड़ें। लेकिन माँ का ऐसा कोई इरादा न था; वह अब भी बढ़िया कपड़े पहनती थी, और बालों में फूल भी लगाती थी।—कितनी अजब बात है! रोना तो दूर रहा, वह हर समय मुस्कुराती रहती थी! मेरी समझ में कुछ न आता था। कई बार स्कूल से लौटने पर मैंने माँ को दरवाजे में खड़े देखा। थोड़े दिन बाद सड़क पर से एक आदमी ने मुझे आवाज़ दी, "अरी छोकरी! अपनी माँ के पास सन्देसा ले जा!" और फिर, "हाय री कली क्या तू भी बिकाऊ है?"

शर्म और ग्लानि से मेरा मुँह सुर्ख़ हो गया, और गर्दन नीचे झुक गई। मैं सब कुछ समझ गई थी लेकिन मजबूर थी। आख़िर माँ से भी

क्या पूछती ? वह मुझे प्यार करती थी और पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करती थी। स्वयं अनपढ़ होते हुए भी वह क्यों चाहती थी कि मैं पढ़ूँ-लिखूँ ? मुझे अक्सर सन्देह होता था कि मेरी वजह से ही माँ को यह सब कुछ करना पड़ता है। कभी जी में आता कि माँ का अपमान करूँ लेकिन फिर सोचने पर दिल पसीज उठता—जी करता कि उसके गले में बाँहें डाल कर समझाऊँ। मुझे अपने आप से नफ़रत थी, कि मैं माँ की मुसीबत को क्यों नहीं हल कर सकती। प्राइमरी पास करने के बाद भी मैं किस काम की हूँ ? मेरी सहेलियों ने मुझे बताया कि पिछले साल इम्तहान पास करने वाली लड़कियों में से कई रखेलें बन गई थीं। और एक तो बाक़ायदा अपने घर में लोगों को निमन्त्रित करती थी ! मेरा मन खिन्न हो उठा। आखिर यह लोग एक बात को मन ही मन घृणित समझते हुए भी उसके विषय में चटख़ारे ले-लेकर क्यों बातें करती हैं। ऐसी चर्चा करते समय उनके चेहरे किसी अज्ञात तृप्ति से भर जाते थे। मेरे मन में माँ के प्रति सन्देह हुआ, "क्या माँ मुझे इसीलिये पढ़ाना लिखाना चाहती है ताकि मैं भी—?" ऐसी बातें सोचते ही मुझे घर जाने से विरक्ति होती। मुझे माँ की सूरत से डर लगता। माँ मुझे नाश्ते के लिये पैसे देती, लेकिन मैं उन पैसों को एक ओर रख देती। भूखे पेट क्लास में जाने से कई बार मैं बेहोश होते-होते बच गई। जब लोगों को खाते देखती तो मुँह में पानी भर आता। लेकिन मुझे तो एक-एक पाई जमा करनी थी। मान लो, माँ ने मुझे मजबूर किया—, तो मैं घर से भाग जाऊँगी। इस वक़्त मेरे पास बीस सिक्के थे। मैं दिन में भी आकाश की ओर देखती रहती, शायद मेरे दिल की व्यथा सींगवाले चाँद के आकार में दिखाई दे। चाँद मटमैले रँग के आकाश में बिना किसी सहारे के लटक रहा था—रह-रह कर काले बादल का टुकड़ा पीली मन्द किरणों को ढाँप लेता था।

[११]

सबसे बुरी बात तो यह थी कि धीरे-धीरे मुझे माँ से नफ़रत होती

गई, लेकिन उस समय भी मुझे वह दृश्य याद आ जाता जब माँ मुझे पीठ पर लाद कर कब्रिस्तान ले गई थी यह सोचते ही मेरी नफ़रत ख़तम हो जाती, लेकिन नफ़रत तो मुझे करनी ही थी। मेरा दिल सींगवाले चाँद की तरह थोड़ी देर के लिये प्रकाशमान रहता था, और फिर चारों ओर गहरा अंधेरा छा जाता था। अक्सर माँ के कमरे में आदमी जमा होते; अब वह मुझसे कुछ भी नहीं छिपाती थी। मुझे देखते ही लालची कुत्तों की तरह उनकी जीभ लप-लपाने लगती और मुँह में पानी भर आता। मै जानती थी कि उनकी नजरों में मैं एक स्वादिष्ट कौर थी। जल्द ही मैं बहुत सी बातों के प्रति सचेत हो गई। मुझे अपने शरीर की रक्षा करना आ गया। मेरे शरीर का बल मेरी रक्षा और तबाही दोनों का कारण बन सकता था। मेरा दिल कभी सख़्त तो कभी नर्म हो जाता। समझ में न आता था,क्या करूँ। मैं माँ को प्यार करना चाहती थी और बहुत-सी बातें पूछना चाहती थी, लेकिन मुझे उससे सतर्क रहकर नफ़रत पड़ती थी, वरना मेरा सत्यानाश हो जाता। नींद न आने पर मैं ठंडे दिल से सोचती, क्यों न माँ को क्षमा कर दिया जाय। वह हम दोनों के लिये कमाती है, लेकिन यह सोचते ही मेरा मन सामने परोसे हुए खाने से फिर जाता। इस प्रकार मेरे मन में ज्वार-भाटे उठते रहे। बीच-बीच में मै शान्त हो जाती लेकिन गुस्से का पारा चढ़ते ही अपने पर काबू पाना असम्भव हो उठता।

[१२]

कुछ घटनाएँ ऐसी घटीं, कि मैं मुसीबत आने से पहले कोई रास्ता न निकाल पाई। माँ ने पूछा, "क्या तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो, नहीं तो मैं तुम्हारी देखभाल नहीं कर सकती।" मुझे माँ से इस बात की आशा न थी, लेकिन उसने सचमुच यही कहा था, बल्कि इससे भी साफ़ शब्दों में—"मैं जल्द ही बूढ़ी हो जाऊँगी। दो बरस बाद तो कोई मुफ़्त में भी मेरे पास नहीं आना चाहेगा।" बात सच थी, पिछले कुछ

दिनों से ढेर सा पाऊडर लगाने पर भी माँ की झुर्रियाँ छिपाये न छिपती थीं। माँ अब एक क़दम और आगे बढ़ना चाहती थी। बहुत से लोगों को सन्तुष्ट करना उसके बस के बाहर था, इसलिये अब वह एक ही आदमी के पास रहना चाहती थी। दुनिया में सिर्फ़ एक ही ऐसा आदमी था जो माँ को सिर्फ़ उसी की ख़ातिर चाहता था—वह था एक डबल रोटी की दुकान का मालिक। माँ को फ़ौरन वहाँ चले जाना चाहिये था। लेकिन मैं अब सयानी हो गई थी—हर दफ़ा माँ की डोली का पिछलगुआ बन के जाना अब सम्भव न था, बचपन की बात और थी। अब मुझे अपने भविष्य का कार्यक्रम सोचना था। अगर मैं माँ का "हाथ बँटाने" को तैयार हो जाऊँ तो माँ को कहीं न जाना पड़े। मुझे माँ की जगह पैसा कमाने में कोई ऐतराज न था, लेकिन पैसा कमाने के इस ढँग से मेरी रूह काँपती थी! मुझे क्या पता था कि मैं भी एक अधेड़ स्त्री की तरह पैसे कमा सकती हूँ? माँ का दिल सख़्त था, लेकिन सिक्के तो उससे भी सख़्त थे। माँ ने मुझे किसी बात के लिये मजबूर नहीं किया। उसने सिर्फ़ मुझे अपना रास्ता चुनने के लिये कहा—या तो मैं उसका हाथ बटाऊँ या मां-बेटी को अलग होना पड़ेगा। माँ की आँखों में आँसू नहीं थे, वे तो कभी के सूख चुके थे। मैं क्या करूँ?

[१३]

मैंने स्कूल की प्रिन्सिपल से बात की थी। वह अधेड़ उम्र की औरत है, मोटी-ताज़ी, बुद्दू लेकिन दिल की अच्छी। मेरे सामने और कोई रास्ता नहीं था, नहीं तो मैं उसे माँ की बात कैसे बताती? मैंने इससे पहले कभी उसे दिल की बात नहीं बताई थी। हर शब्द गर्म अँगार की तरह मेरे गले को जला रहा था; मेरा गला रुँध गया, और आवाज धीमी पड़ गई। प्रिन्सिपल मेरी मदद करने को राज़ी हो गई। उसने कहा तनख्वाह की बजाय दोनों समय का खाना और सोने के लिये एक कोठरी मिल सकती है, लेकिन दो महीने के बाद। तब तक मुझे

अपनी लिखावट सुधारनी चाहिये, ताकि मैं स्कूल के क्लर्क का हाथ बँटा सकूँ। दोनों समय खाना और कोठरी—अन्धा क्या माँगे, दो आँखें ! अब मुझे माँ पर बोझ डालने की कोई जरूरत नहीं। इस बार तो माँ को दुलहिन की डोली भी नहीं नसीब हुई, वह रात को रिक्शे पर सवार होकर चल दा। मेरा बिस्तर मुझको सौंप गई। विदा होते समय उसकी हर कोशिश के बावजूद भी आँसुओं का सोता फूट निकला। वह जानती थी कि मैं उसकी सगी बेटी भी—उसे वहाँ न मिल पाऊँगी। मुझे तो रोने का शऊर भी भूल गया था। मेरा मुँह खुल गया और गालों पर आँसू ढुलकने लगे। मैं उसकी बेटी, सहेली और एकमात्र सहारा होते हुए भी बिना अपनी आत्मा को बेचे उसकी मदद नहीं कर सकती।

माँ के चले जाने के बाद मैंने सोचा कि हम माँ-बेटी की दशा दो बेघर वाले कुत्तों जैसी है। पेट की खातिर हमें सब-कुछ सहना पड़ता है, मानो मुँह और पेट के अलावा हमारे शरीर में कुछ और है ही नहीं। पेट के लिये हमें हर चीज की कुर्बानी करनी पड़ती है। मैं अब माँ से नफ़रत नहीं करती। मैं सब-कुछ समझ गई हूँ। दोष माँ का नहीं—न ही हमारे मुँह और पेट का। दोष है रोटी का—हमें भर पेट रोटी क्यों नहीं नसीब होती ? माँ की जुदाई से मेरी सारी नफ़रत दूर होगई थी। मेरे आँसुओं के कारण को समझने वाला सींग वाला चाँद इस बार नहीं निकला। इस बार सिर्फ़ अँधेरा था, जुगनूँ की रौशनी तक न थी। माँ भी अँधेरे में एक जिन्दा प्रेत की तरह गुम होगई थी, बिना अपनी परछाईं छोड़े। मुझे डर है कि मरने पर भी माँ को पिता के साथ नहीं दफ़नाया जा सकेगा। अब मुझे यह पता भी न चलेगा कि उसकी क़ब्र कहाँ है। वही मेरी इकलौती माँ और सहेली है। अब मैं इतनी बड़ी दुनिया में अकेली रह गई हूँ।

[१४]

अब मैं माँ को कभी नहीं देख पाऊँगी; मैं मरना चाहती हूँ। मैं

बसन्त के उस फूल की तरह हूँ जो पाले से मुरझा गया है। मैं बड़ी मेहनत से सुलेख का अभ्यास करती हूँ ताकि मैं व्यर्थ की चीजें नकल करने में प्रिंसिपल का हाथ बँटा सकूँ। चूँकि मैं औरों के सहारे जीती हूँ, इसलिए मुझे भी उनकी नजरों में उपयोगी सिद्ध होना चाहिए। मैं स्कूल की और लड़कियों की तरह नहीं हूँ। उनका ध्यान हर समय और लोगों पर लगा रहता है—वे क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, क्या बातें करते हैं। मुझे सिर्फ़ अपना ध्यान रहता है। मेरी परछाईं ही मेरी इकलौती सहेली है। मेरे मन में 'मैं' के सिवा कोई और नहीं आता, क्योंकि मुझे कोई भी प्यार नहीं करता। मैं खुद ही अपने से प्यार और हमदर्दी करती हूँ, खुद ही अपने को झिड़क कर ढाँढस बँधाती हूँ। मैं अपने आपको इस तरह देखती हूँ जैसे कोई किसी अजनबी को देखता है। अपने शरीर के किसी भी विकास या परिवर्तन से मुझे डर-सा लगता है। मैं हैरान हो जाती हूँ। मैं अपने आपको फूल की कोमल पंखुड़ियों की तरह सँभाल कर रखती हूँ। मुझे केवल आज का ही ख्याल है, क्योंकि मेरा कोई भविष्य नहीं, मुझमें भविष्य की कल्पना करने का हिम्मत भी नहीं। केवल खाने के समय ही मुझे पता चलता है कि दोपहर है या शाम, मेरे लिये समय और आशा का कोई अर्थ नहीं, न ही मेरी दुनिया में सूरज और चाँद की रौशनी है। सिर्फ़ माँ का ख्याल आने पर कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि मुझे इस दुनिया में आये एक दर्जन वर्ष गुजर गये हैं। मैं स्कूल की और लड़कियों की तरह छुट्टियों या त्यौहारों की राह नहीं देखती, मुझे नये साल से, या तीज-त्यौहारों से लेना भी क्या है? तो भी मैं महसूस करती हूँ कि मेरा शरीर भर रहा है। समय बीतने के साथ-साथ मैं अपने को पहले से अधिक सुन्दर पाती हूँ। सिर्फ़ इसी ख्याल से मन को शान्ति मिलती है। सौन्दर्य मेरी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, लेकिन सच देखा जाय तो मेरी प्रतिष्ठा है कहाँ? प्रत्येक सुखद कल्पना पहले मधुर होती है, लेकिन बाद में उसकी कटु स्मृति मात्र रह जाती है। मैं ग़रीब होते हुए भी

सुन्दर हूँ। मेरे अहं को सन्तुष्टि मिलती है, फिर मुझे यह सोच कर डर लगता है। माँ भी देखने में बुरी नहीं थी।

[१५]

बहुत समय बीत गया, लेकिन सींगवाला चाँद नहीं दिखाई दिया, क्योंकि इच्छा होते हुए भी मेरी हिम्मत नहीं होती कि मैं आकाश की ओर नज़र उठा कर भी देख सकूँ, मैंने इम्तहान पास कर लिया है, लेकिन अभी तक स्कूल में ही रहती हूँ। रात के समय स्कूल में सिर्फ़ एक बुड्ढा नौकर और नौकरानी रह जाते हैं। उन्हें समझ नहीं आता कि मेरे साथ कैसा सलूक करें—मैं न तो विद्यार्थिनी हूँ न अध्यापिका, और न ही नौकरानी—हालाँकि मेरी हैसियत एक नौकरानी की सी है। कई बार शाम को दालान में टहलते समय सींगवाले चाँद से मुलाक़ात हो जाती है, लेकिन मेरी आँख उठा कर देखने की हिम्मत नहीं होती—मैं डर कर कमरे में भाग जाती हूँ। लेकिन अन्दर जा कर भी उससे पीछा नहीं छूटता, मैं कल्पना करने लगती हूँ कि मन्द हवा के झोंकों में सींगवाला चाँद कैसा लगता है। मेरा विश्वास है कि हवा के झोंके चाँद की मन्द किरणों को मेरे दिल में बिखेर सकते हैं, और मैं बीते दिनों की बातें सोच सकती हूँ। लेकिन इससे मेरे वर्त्तमान जीवन की उदासी और भी गहरी हो जाती है। मेरा दिल उस चिमगादड़ की तरह है जिसका रंग चाँदनी में उड़ते हुए भी काला है। काली चीज़ काली ही रहेगी, भले ही उसके पर निकल आयें। निराश होते हुए भी मैं रोती नहीं, कभी-कभी मेरे माथे पर चिन्ता की रेखायें पड़ जाती हैं।

[१६]

अब मेरे पास कुछ पैसे भी आने लगे हैं। मैं स्कूल की लड़कियों के स्वेटर बुनती हूँ, उसी से कुछ आमदनी हो जाती है। प्रिन्सिपल ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दे रखी है। लेकिन अधिकतर लड़कियों को स्वेटर बुनना आता है; कभी-कभी जब उन्हें अपने किसी रिश्तेदार के

लिए जल्दी में दस्ताने या मोज़े बनाने की ज़रूरत पड़ती है तो वे मेरे पास आती हैं। खैर जो भी हो मेरे दिल में नई जान-सी आ गई है। मैं तो सोचती हूँ कि अगर माँ वह पेशा न अख्तियार करती तो मैं आसानी से उसका हाथ बँटा सकती थी। जब मैं अपनी इस छोटी-सी कमाई के सिक्कों को गिनती हूँ तो लगता है कि माँ का हाथ बँटाना मुश्किल था। लेकिन माँ का हाथ बँटाने की कल्पना-मात्र से ही मुझे सुख मिलता। मेरा दिल माँ को देखने के लिए तड़पता। मेरा पक्का विश्वास है कि मुझे देखते ही वह अपना रास्ता छोड़कर मेरे पास आ जायेगी और हम किसी न किसी तरह गुजारा चला लेंगे। मैं ऐसा सोचती तो हूँ लेकिन मुझे स्वयं इस पर भरोसा नहीं होता—तो भी मुझे हर समय माँ का ख्याल आता। वह अक्सर सपने में भी दिखाई देती। एक रोज मैं लड़कियों के साथ घूमने के लिए शहर से बाहर गई। जब हम लौटे तो शाम के चार बजे थे। जल्दी होने के कारण हम तंग गलियों के रास्ते हो लिये, और वहाँ मैंने माँ को देखा। एक तंग 'हुतुंग'[1] में रोटी की दुकान के आगे एक लकड़ी का तख्त पड़ा था, माँ दीवार के सहारे बैठी, भट्टी की धौंकनी चला रही थी। ऊपर-नीचे उठने में उसका शरीर हिल रहा था। मैं दूर से ही पीठ देखकर माँ को पहचान गई—मेरे दिल में आया कि भाग कर उससे लिपट जाऊँ, लेकिन ऐसा करने की हिम्मत न हुई। मुझे डर था कि कहीं लड़कियाँ मेरा मजाक न उड़ाएँ, आखिर उन्हें कैसे बर्दाश्त होगा कि मेरी माँ ऐसी हो! उसके पास पहुँचते-पहुँचते मेरा सर झुक गया। मैंने आँसू-भरी आँखों से उसकी ओर देखा, लेकिन उसकी नजर कहीं और थी। हम सब उसके पास से गुज़रे, पर उसे धौंकनी चलाने से दम भर की फ़ुर्सत न थी। काफ़ी दूर जाने के बाद मैंने पीछे लौटकर देखा। वह अभी तक धौंकनी चला रही थी। उसका चेहरा तो साफ़ नहीं दिखा, लेकिन

१. 'हुतुङ्ग' पेकिंग में घनी आबादी वाली बस्ती की सँकरी गली है।

उसके बाल बिखरे थे। मैंने उस मोहल्ले का नाम नोट कर लिया।

[१७]

चिन्ता का घुन दिन-रात मेरे दिल को खाये जाता है। मैं माँ से मिलना चाहती हूँ। उसे देखने भर से ही मेरा कलेजा ठंडा हो जायेगा। और इधर स्कूल की प्रिन्सिपल का तबादिला होने जा रहा है। उसने मुझे साफ़-साफ़ कह दिया है कि मैं अपने लिए कोई और ठिकाना ढूँढलूँ। उसने कहा कि उसके यहाँ रहते तो मुझे खाने और रहने की कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए, लेकिन हो सकता है कि नई प्रिन्सिपल इसे पसन्द न करे। मैंने अपने पैसे गिने। कुल मिलाकर दो डालर और सत्तर सेन्ट थे। इन पैसों से कुछ रोज़ तो निकल जायेंगे। उसके बाद क्या होगा? हाथ पर हाथ रखकर चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। मुझे कोई रास्ता ढूँढ निकालना चाहिए। पहले ख्याल आया कि माँ के पास चली जाऊँ। लेकिन क्या वह मुझे अपने पास रख सकती है? अगर नहीं, तो क्या मेरे जाने से वह डबल रोटी वाला माँ से नहीं झगड़ेगा? फिर माँ निश्चय ही दुःखी होगी। मुझे उसकी स्थिति समझनी चाहिए। वह मेरी माँ है। और हम मां-बेटी के बीच ग़रीबी की एक दीवार खड़ी है। बार-बार सोचने पर मैंने माँ के पास जाने का विचार छोड़ दिया। मुझे अपनी मुसीबतों का सामना आप करना चाहिए। लेकिन कैसे? मेरा दिमाग़ काम नहीं करता। मुझे लगता है कि इस छोटी दुनिया में कोई भी कोना ऐसा नहीं जहाँ मैं अपना बिस्तर रख सकूँ। मेरी हालत तो कुत्ते से भी गई-बीती है। कुत्ता तो कहीं भी सो सकता है, लेकिन मुझे सड़क पर कौन सोने देगा? हाँ, मैं एक इन्सान हूँ और एक इन्सान की दशा कुत्ते से भी बदतर हो सकती है। मान लो मैं ढिठाई करके जाने से इन्कार कर दूँ, तो भी नई प्रिन्सिपल मुझे धक्का देकर बाहर नहीं निकाल देगी, इस बात का क्या भरोसा है? बेहतर यही होगा कि धक्के मिलने से पहले ही मैं यहाँ से चल दूँ। बसन्त आगया है। फूल खिल रहे

हैं और पत्तियाँ हरी हो रही हैं। लेकिन मेरे दिल में कोई उमंग नहीं। मेरे लिए लाल फूल केवल फूल हैं। हरी पत्तियाँ, केवल पत्तियाँ हैं। भाँति-भाँति के रंगों से अधिक कुछ नहीं। मेरे लिए ये चीज़ें अर्थ-हीन हैं। वसन्त एक बर्फ़ की सिल है। मैं रोना नहीं चाहती, लेकिन आँसू अपने आप बह निकलते हैं।

[१८]

मैं नौकरी की तलाश में हूँ। मैं माँ के पास नहीं जाऊँगी, न ही किसी और पर बोझ बनूँगी। अपनी रोटी स्वयं कमाऊँगी। पिछले दो दिनों से मैं तड़के ही नौकरी मिलने की आशा से घर से निकलती हूँ, और जब शाम को घर लौटती हूँ तो मेरे कपड़े मिट्टी से लथपथ होते हैं और आँखें आँसुओं से भीगी होती हैं। मुझे कोई भी काम नहीं मिला, अब मैं माँ की स्थिति को पूरी तौर से समझ पाई हूँ, और मेरा दिल पश्चाताप से भारी होगया है। माँ ने सब चीजों के बावजूद भी गन्दे मोजे तक धोए हैं। मुझे तो वे भी नसीब नहीं हुए। माँ ने आखिर वही रास्ता अख्तियार किया जो बच रहा था। स्कूल में सिखाई गई योग्यता और सच्चरित्र की बातें झूठी हैं। सिर्फ़ पेटभरो और निठल्लो के मन-बहलाव के लिये। स्कूल की लड़कियाँ मेरी माँ को भी नहीं बर्दाश्त कर सकती थीं; वे वेश्याओं को देखते ही नाक-भौं सिकोड़ने लगती हैं। खैर, यह तो उनका अपना सोचने का ढंग है—उन्हें खाने को जो मिलता है! मैंने भी एक तरह से यही तय किया है कि अगर मुझे दोनों समय भरपेट खाना मिले तो मैं कुछ भी करने को तैय्यार हूँ। माँ सचमुच तारीफ़ के योग्य है। मैं मरूँगी नहीं, हालाँकि कई वार ऐसा सोच चुकी हूँ। नहीं! मैं जीना चाहती हूँ! मैं जवान हूँ, सुन्दर हूँ, मैं जीना चाहती हूँ। वेश्यावृति के शर्मनाक पेशे के लिये मैं ज़िम्मेदार नहीं।

[१९]

इस तरह सोचने से ऐसा लगता है मानो मुझे नौकरी मिल गई है।

अब मैं बिना किसी डर के दालान में चक्कर काटती हूँ। वसन्त ऋतु का सींगवाला चाँद आकाश में निकला है। गहरे नीले आकाश पर बादल का एक भी टुकड़ा नहीं दिखाई देता। सींगवाला चाँद उजला और प्यारा है, इसकी मन्द रोशनी वेदवृक्ष की टहनियों पर छिटक रही थी, दालान में हवा के झोंकों के साथ फूलों की महक फैल रही थी। वृक्ष की सरसराती हुई टहनियों की परछाई दीवार के कोने से टकरा उठती है, चाँदनी छिटकी हुई है, हवा में थोड़ी-सी गर्माहट है, सब चीजें अलसाई हुई हैं, लेकिन कभी-कभी एक हूक-सी उठती है। वेदवृक्ष के शिखर पर सींगवाला चाँद है, जिसके आस-पास दो तारिकायें अप्सरा की चंचल आँखों की तरह झिलमिला रही हैं। ऐसा लगता है कि वे शोख़-भरी अदा से वृक्ष की टहनियाँ हिला-हिला कर सींगवाले चाँद के साथ छेड़खानी कर रही हैं। दीवार से सटा हुआ वृक्ष फूलों से लद गया है। इसका आधा हिस्सा चाँदनी में बर्फ़ के टुकड़े की तरह चमक रहा है दूसरा हिस्सा अन्धेरे में होने के कारण ठीक से नहीं दिखाई देता। यह सींगवाला चाँद मेरे लिये आशा का संदेश लेकर उदय हुआ है—मेरा दिल तो यही कहता है।

[२०]

मैंने फिर प्रिन्सिपल से मिलने की कोशिश की लेकिन वह घर पर नहीं थी। एक जवान आदमी मुझे अन्दर लिवा गया, वह बड़ा खूबसूरत और नेकदिल था। अक्सर मैं आदमियों से कुछ घबराती हूँ, लेकिन इस आदमी के सामने किसी प्रकार का डर महसूस नहीं हुआ। उसने जब पूछा कि मैं किस लिए प्रिन्सिपल से मिलने आई थी तो मैं कुछ भी न छिपा सकी—वह मुस्कुराया, और मेरा दिल धक् से रह गया। उसने मेरी सहायता करने की उत्सुकता प्रकट की, उसी शाम को उसने मुझे दो डालर भेजे मैंने लेने में आनाकानी की; उसने कहा कि प्रिन्सिपल ने, जो उसकी मौसी लगती है, यह डालर मेरे लिये भेजे हैं; उसने यह भी कहा कि प्रिन्सिपल ने मेरे रहने का प्रबन्ध कर दिया है और मैं कल ही वहाँ

जा सकती हूँ। मैं उसकी बातों पर सन्देह करना चाहती हूँ लेकिन कर नहीं पाती—उसका मुस्कुराता हुआ चेहरा सीधा मेरे दिल में समा गया है। मैं उसकी नेकी का बदला भला सन्देह से कैसे चुका सकती हूँ? वह इतना लुभावना और नेक है।

[२१]

उसके खिले हुए ओंठ मेरे मुख पर झुके हैं; उसके बालों के बीच से मुझे मुस्कुराता हुआ सींगवाला चाँद भी दिखाई दे रहा है। हवा में वसन्त की मादकता है, बादलों के छितराने पर वसन्त ऋतु के तारे दिखाई देते हैं। नदी के किनारे पर वृक्षों के झुरमुट में हल्की सरसराहट हो रही है। मेंढ़क प्यार के गीत गा रहे हैं, साँझ के समय, वसन्त की बयार नई झाड़ियों की महक से भारी हो रही है। मैं झरने की कलकल आवाज़ सुन रही हूँ, जो नई हरी झाड़ियों को नया जीवन प्रदान कर रही है। मैं कल्पना में देखती हूँ कि वे जल्दी से फल-फूल रही हैं। हवा की सीली गर्माहट से झाड़ियों के अँकुर फूट रहे हैं; सब चीजें वसन्त की शक्ति से आन्दोलित हो उठी हैं। हर फूल, हर पौधा अपने शरीर की रहस्यमयी गहराइयों में वसन्त का आलिंगन करता है, और फिर रात की सुवासित वायु में सांस लेता है। फूल आगे बढ़कर कलियों के ओंठों को चूम रहे हैं, मैं अपने को भूल गई हूँ, फूलों और घास की तरह मैंने भी वसन्त को अपने अन्दर समा जाने दिया है; मैं खो गई हूँ, हवा के झोंकों और चाँदनी की हल्की किरणों में घुल गई हूँ। सहसा आकाश बादलों से ढँक गया—मेरी खोई चेतना लौट आई। मुझे अपने ऊपर किसी का गर्म दबाव महसूस हो रहा है। सींगवाला चाँद कहीं खो गया—मैं भी अपने को खो बैठी हूँ—मेरी वही हालत है जो माँ की थी!

[२२]

मैं पछताती हूँ, अपने को तसल्ली देती हूँ, मैं रोना चाहती हूँ—

शायद मन ही मन खुश भी हूँ, समझ में नहीं आता—कभी मन में आता है कि कहीं भाग जाऊँ और उसकी सूरत न देखूँ; तो भी मैं उसे मिलने के लिये तड़पती हूँ, और उसके बिना उदास हो जाती हूँ। मै दो छोटे-छोटे कमरों में अकेली रहती हूँ। वह हर शाम को मेरे पास आता है। वह हमेशा खूबसूरत और भला लगता है। वह मेरा खर्च उठाता है और उसने मेरे लिए नये कपड़े भीं बनवाये हैं। उन्हें पहन कर मेरी सुन्दरता निखर उठती है, मुझे मन ही मन इन कपड़ों से नफ़रत भी है, लेकिन मैं उन्हें उतारना नही चाहती। मेरे दिमाग़ ने सोचना बन्द कर दिया है। मैं बड़ी आलसी हो गई हूँ। मैं हमेशा गालों पर सुर्खी लगाए बनी-सँवरी रहती हूँ। इच्छा न होते हुए भी मुझे बनना-सँवरना पड़ता है; इस तरह निठल्ला बैठे रहना ठीक नहीं, समय बिताने के लिये कुछ न कुछ जरूर करना चाहिये। शृंगार करते समय मै अपने आप पर मुग्ध हो जाती हूँ, लेकिन बाद में अपने से नफ़रत हो जाती है। मेरे आँसू बड़ी आसानी से वह निकलते हैं—मैं उन्हें थामने की भरसक कोशिश करती हूँ, मेरी आँखें सजल और चमकीली रहती हैं—देखने के योग्य ! कभी-कभी तो मैं बिल्कुल पागलों के से आवेश में उसे चूमती हूँ—फिर तिस्कार भरे ढंग से एक ओर धकेल देती हूँ—वह हमेशा मुस्कुराता रहता है।

[२३]

मैं शुरू से ही जानती थी कि मेरे जीवन में गहरी निराशा होगी। भला बादल का छोटा-सा टुकड़ा कहाँ तक सींगवाले चाँद को ढँक सकता है ! मेरा भविष्य अन्धकारमय है। इसलिए, कुछ दिनों बाद ही वसन्त पतझड़ में बदल गया; मेरे सपने छिन्न-भिन्न हो गये। एक रोज दोपहर का समय था, एक जवान लड़की मेरे कमरे में दाखिल हुई। वह अत्यन्त सुन्दर थी, लेकिन कपड़े पहनने का शऊर उसे न था। वह देखने में बाजारी गुड़िया लगती थी। उसने आते ही रोना शुरू कर दिया। मैं समझ गई कि वह मुझ से झगड़ा मोल लेने के लिए तैयार नहीं; मुझे

उससे झगड़ने की भला क्या ग़रज़ पड़ी थी ? वह बड़ी स्पष्टवादी थी, मेरे दोनों हाथ थाम कर उसने रोते हुए कहा, "उसने हम दोनों को धोखा दिया है !" मैंने तो सोचा था कि यह लड़की उसकी प्रेमिका होगी, लेकिन नहीं, वह उसकी पत्नी थी । लड़ने की बजाय वह बार-बार यही कह रही थी, "उसे दफ़ा हो जाने दो !" मैं घबरा गई, मुझे इस नन्हीं पत्नी पर दया आ रही थी । मैंने उससे वादा किया कि मैं उसकी मर्जी से ही सब काम करूँगी । वह मुस्कुराई, उसका हुलिया देखने पर ऐसा लगता था कि वह बावली है । उसके समझ में कुछ भी नहीं आता था, उसका उद्देश्य तो केवल अपने पति को पाना था ।

[२४]

मैं बहुत देर तक गलियों में घूमती रही । उस लड़की की याचना के सामने कोई भी झुक सकता है, लेकिन मैं क्या करूँ ? मुझे उसके आसरे रहना पसन्द नहीं । अगर हमें जुदा होना ही है, तो क्यों न सुलह-सफ़ाई से ऐसा किया जाये ? लेकिन उसे छोड़ देने पर मेरे पास क्या रह जायेगा ? मैं कहाँ जाऊँगी ? भरपेट खाना जुटाने की समस्या फ़ौरन सामने आयेगी । रोटी-कपड़े के लिये तो यह सब सहना ही पड़ेगा । ख़ैर, और कोई चारा भी नहीं ।

मैं चुपचाप वहाँ से खिसक आई । मुझे इस बात का कोई अफ़सोस नहीं, लेकिन मेरे अन्दर इतना सूनापन भरा हुआ है, कि मैं अपने आप को उस बादल की तरह महसूस करती हूँ, जो आकाश में बिना किसी सहारे के भटक रहा हो । मैंने एक छोटा-सा कमरा किराये पर ले लिया और दिन भर बिस्तर में लेटी रही ।

[२५]

मुझे थोड़े पैसों में गुज़ारा करना आ गया है । जिन्दगी भर मुझे तंगी देखनी पड़ी है । इसलिये मैंने सोचा कि फ़ौरन ही काम तलाश करूँ शायद ऐसा करने से मुसीबत टल जाये । लेकिन फ़ौरन किसी काम का

मिलना मुश्किल था, क्योंकि अब मैं आगे से बड़ी भी तो हो गई थी। मेरे दृढ़ निश्चय का भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ, सिवा इसके कि मैं अपने को सही समझने लगी। आखिर औरत के लिये अपनी आजीविका कमाना इतना कठिन क्यों है ? माँ ने ठीक ही कहा था कि औरत के सामने एक ही रास्ता है, वही जो माँ ने पकड़ा है, मैं तत्काल इस रास्ते पर जाने के लिए तैयार नहीं, लेकिन मैं जानती हूँ कि वह रास्ता मुँह बाये मेरी इन्तज़ार कर रहा है। जितना ही संघर्ष करती हूँ, उतना ही डर बढ़ता जाता है। मेरी आशा दूज के चाँद की तरह छोटी और फीकी है।

दो दिन गुज़र गये हैं। मेरी उम्मीद दिन-प्रतिदिन कम होती जाती है। आख़िरकार मैंने भी और लड़कियों के साथ अपने आपको एक छोटे से रेस्तराँ में पाया, जहाँ एक वेटरेस की ज़रूरत थी। इतना छोटा रेस्तराँ ! और इतना बड़ा मालिक ! हम में से कोई भी लड़की बदसूरत नहीं थी, और सब की सब ने प्राइमरी पास की थी। वहाँ हम सब क़तार बाँध कर किसी जीर्ण-शीर्ण मन्दिर की तरह खूसट दिखाई देने वाले रेस्तराँ के मालिक के फ़ैसले की राह देख रही थीं—मानो कोई बादशाह हमारी परीक्षा लेने आ रहा हो। मैं पसन्द कर ली गई, मैंने उसे धन्यवाद भी नहीं दिया, लेकिन मन ही मन फूल कर कुप्पा हो गई। सब लड़कियों की ईर्ष्याभरी आँखें मेरी ओर लगी थीं; कइयों की आँखों में तो आँसू आ गये, कुछ मुझे कोसने लगीं। कितनी सस्ती होती हैं यह लड़कियाँ !

[२६]

मैं उस छोटे से रेस्तराँ में दूसरे नम्बर की वेटरेस नियुक्त हो गई। मेज़ सजाना, तश्तरियाँ लाना, हिसाब जोड़ना और ग्राहकों को खाने की चीज़ों के नाम सुनाना—ये सभी काम मेरे लिये नये थे। मैं कुछ घबरा गई। नम्बर एक ने मुझे दिलासा दिया और कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। वह खुद इन सब चीज़ों से अपरिचित थी। उसने कहा कि वेटर घुन सब कुछ सम्भाल लेगा। हमारा काम सिर्फ़ मेहमानों के प्यालों

में चाय उँडेलना, उन्हें गर्म तौलिये पकड़ाना और बिल पेश करना है। इन चीजों के अलावा हमें और कोई मग़ज़पच्ची करने की ज़रूरत नहीं। कितनी अजब बात है! नम्बर एक के कोट की आस्तीन ऊपर चढ़ी हुई थी, जिसके नीचे से उसका दूध-सा उजला अस्तर दीख रहा था। कलाई पर एक सफेद रेशमी रूमाल बँधा था, जिस पर कढ़ा हुआ था, "प्रियतम! मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।" वह सारा दिन मुँह पर पाउडर पोतती रहती थी, और उसके ओंठ किसी कटे हुए सुर्ख़ तरबूज की तरह लाल रहते थे। किसी ग्राहक की सिगरेट सुलगाते समय वह अपने घुटने से उनके अंगों को छुआ देती; कभी किसी के गिलास में शराब उँडेलते समय पहला घूँट खुद चख लेती। कई ग्राहकों पर जी-जान से ध्यान देती, बाक़ियों को फूटी नज़रों से भी न देखती। वह एक विशेष अदा से अपनी पलकों को झुका लेती, मानो किसी को देखा ही न हो। और मुझे उन्हीं ग्राहकों की आवभगत करनी पड़ती थी, जो नम्बर एक को पसन्द नहीं आते थे। मुझे आदमियों से डर लगता है। अपने थोड़े-बहुत अनुभव से मैं यही सीख पाई हूँ। प्यार चाहे हो या न हो—आदमी भयंकर होते हैं, विशेष-कर रेस्तराँ में आने वाले आदमी। बाहर से शिष्टता की साक्षात् मूर्त्तियाँ दिखाई देने वाले ये लोग अपने दोस्तों का बिल चुकाने के लिये लालायित रहते हैं; लेकिन एक-दूसरे को नशे में झोंकने के लिये उँगलियों की बुझारत[५] का खेल खेलते हैं, इतनी शराब पीते हैं मानो उनकी ज़िन्दगी उसी पर निर्भर करती हो, भूखे भेड़ियों की तरह पेट ठूँस-ठूँस कर खाते हैं और बिना बात के गाली-गलौज और मारपीट पर उतर आते हैं। मेरा चेहरा शर्म से लाल हो जाता और मैं सर झुकाये ग्राहकों के हाथों में चाय के

५. उँगलियों की बुझारत—दो आदमी एक साथ हाथ की उँगलियों को फैलाकर ज़ोर से एक दूसरे की उँगलियों की संख्या बूझते हैं। सही संख्या बताने वाला विजेता माना जाता है और हारे हुए व्यक्ति को पहले से शर्त लगाई गई मात्रा में शराब पीनी पड़ती है।

प्याले और गर्म तौलिये थमा देती। वे लोग ऊटपटाँग बातें करके मुझे हँसाना चाहते, लेकिन मुझे हँसी नहीं आती थी। रात को नौ बजे जाकर जब काम कहीं खत्म होता तो मैं थकान से चूर हो जाती। फिर अपने कमरे में जाकर बिना कपड़े उतारे धड़ाम से बिस्तर में धँस जाती और सुबह तक सोई रहती। सुबह नींद खुलने पर मुझे खुशी होती कि मैं अपनी कमाई पर जी रही हूँ। मैं समय से कुछ पहले ही काम पर पहुँच जाती।

[२७]

नम्बर एक—नौ बजने तक भी नहीं पहुँची। मुझे वहाँ आये दो घण्टे से ज्यादा हो गये थे। आते ही उसने मेरी ओर देखकर नाक-भौं सिकोड़ी, लेकिन उसकी सलाह में दुर्भावना नहीं थी, "इतनी जल्दी आने की क्या ज़रूरत है? आठ बजे कौन कमबख्त यहाँ खाना खाने आता है? मैं तुमसे कहती हूँ—तुम्हारी मनहूस नज़रें ज़मीन पर क्यों गड़ी रहती हैं? ऐसी रोनी शक्ल मत बनाया करो। आखिर तुम एक वेटरेस हो, किसी की मातमपुर्सी करने तो नहीं आई। इन नीची नज़रों से लोगों से उम्दा बख्शीश पाने की आशा छोड़ दो। आखिर तुम यहाँ किस लिये आई हो? क्या कुछ सिक्कों की खातिर नहीं? देखो, तुम्हारा कालर कितना नीचा है! इस पेशे में सबको ऊँचे कालर और रेशमी रूमाल रखने पड़ते हैं। लोग तो यही चीज़ें देखते हैं न!" मैं जानती थी कि वह नेक सलाह दे रही है। यह बात भी सही थी कि अगर मैं ग्राहकों के सामने मुस्कुराऊँगी नहीं तो उसकी आमदनी भी कम हो जायेगी—क्योंकि बख्शीश हम दोनों में बराबर बाँटी जाती थी। उससे घृणा करना तो दूर रहा, मैं कुछ सीमा तक मन ही मन उसकी सराहना भी करती थी, क्योंकि वह पैसे कमाने के लिये ही यह सलाह दे रही थी; इसके सिवा और कोई चारा भी नहीं। तो भी मैं उसके चरण-चिह्नों पर नहीं चलना चाहती थी, लेकिन मुझे साफ़ दिखाई दे रहा था कि एक दिन मुझे पेट की खातिर

नम्बर एक से भी ज़्यादा निर्लज्ज होना पड़ेगा। वह नौबत आख़िर में आयेगी ही। हम औरतों के लिये—एक ही भविष्य रहता है; अधिक से अधिक मैं इसे कुछ समय तक और टाल सकती हूँ—इस बात का विचार आते ही ग़ुस्से से मेरे दाँत किटकिटाने लगते हैं—मेरे दिल में आग-सी लग जाती है—तो भी मैं इस सच्चाई को नहीं बदल सकती कि हम औरतों की क़िस्मत हमारे अपने हाथों में नहीं होती। अभी रेस्तराँ में काम करते मुझे तीन रोज़ ही हुए थे कि मुझे चेतावनी दी गयी। दैत्याकार मालिक ने मुझे साफ़-साफ़ कहा कि वह मुझे दो दिनों की मोहलत और देगा, और अगर मैं नौकरी पर पक्का होना चाहती हूँ तो मुझे इस बीच नम्बर एक की तरह होना पड़ेगा। कुछ व्यंग्य-भरे स्वर में, एक मित्र की तरह सलाह देते हुए नम्बर एक ने बताया, "लोग तो तुम्हारे बारे में अभी से सवाल पूछ रहे हैं, तुम बेवक़ूफ़ों की तरह अपनी सुन्दरता छिपाकर गुमसुम क्यों रहती हो? कौन जानता है, हमारी क़िस्मत किस दिन पलटा खा जाये? कितनी ही वेटरेसों की शादी बैंक के मैनेजरों से हो चुकी है। तुम सोचती हो हमारा पेशा नीचा है! ज़रा अपने जौहर दिखाओ तो हम भी किसी रोज़ मोटर में घूमती दिखाई देंगी!" मेरी उत्सुकता जगी, "क्या तुम कभी मोटर में घूमने गई हो?" उसने इतना मुँह बिचकाया कि उसके सूजे हुए ओंठ लगभग चौड़े हो गये। उसने तुनक कर जवाब दिया, "तुमसे मतलब! सच्चाई से कतराना नहीं चाहिये, आख़िर सुगन्धित पीठ वाली कोमलांगियाँ तो इस पेशे में नहीं आतीं।" अब और बातें सुनना मेरी बर्दाश्त से बाहर था, मैंने चुपचाप उनके दिये हुए पाँच सिक्के ले लिये और घर की ओर चल पड़ी।

[२८]

एक काली छाया मेरी ओर बढ़ती चली आ रही है। इससे बचने की कोशिश में मैं एक क़दम और आगे बढ़ आई हूँ। मुझे नौकरी छूटने का अफ़सोस नहीं, लेकिन इस काली छाया से मेरी रूह काँपती है।

एक आदमी के हाथ अपने को बेचने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। थोड़े-बहुत अनुभव के बाद अब मैं जान गई हूँ कि मर्द-औरत का रिश्ता कैसा होता है। अगर कोई औरत ज़रा-सा भी खुलती है तो मर्द मक्खियों की तरह उसके इर्द-गिर्द जमा हो जाते हैं। वे माँस के भूखे है, अगर उन्हें भूखे भेड़ियों की तरह नोंचने-खसोटने की खुली छुट्टी दे दी जाये तो औरत की खाने-कपड़े की समस्या तुरन्त हल हो जाती है। उसके बाद जब उनका पेट भर जाता है तो वे मारपीट और गालीगलौज के बाद धक्का देकर औरत को घर से बाहर निकाल देते हैं। औरतें अपने आपको इस तरह बेचने पर भी खुश रहती हैं—मैं भी खुश थी। जब तक खुशी रहती है—सब चीज़ें रंगीन दिखाई देती हैं; उदासी और निराशा का अनुभव तो बाद में ही होता है। एक आदमी के हाथ बिकने पर तो खुशी के क़ायम रहने की सम्भावना अधिक है, लेकिन एक से अधिक के सम्पर्क में आने से सिवा ख़्वारी के और कुछ नहीं हासिल होता। माँ कभी खुश नहीं थी। डर की भी अलग-अलग क़िस्में होती हैं, इसीलिये तो मैंने नम्बर एक की सलाह नहीं मानी, एक आदमी के हाथ बिकने पर मुझे कम डर लगता है, लेकिन मैं अपने आपको बेचूँ ही क्यों? मुझे किसी आदमी की जरूरत नहीं। अभी तो मैं बीस साल की भी नहीं हुई। पहले मैं सोचा करती थी कि आदमियों के साथ रहने में बड़ा आनन्द आता होगा, मुझे क्या मालूम था कि एकान्त मिलते ही हर आदमी वही चाहता है, जिस बात से मैं डरती हूँ? खैर, पहली दफ़ा तो शायद वसन्त-ऋतु की बयार के नशे में आकर मैंने अपने आपको खो दिया था; उसने मेरे साथ मनमानी की। लेकिन अब मैं जान गई हूँ कि मेरे कच्चेपन का फ़ायदा उठाकर उसने अपनी वासना की सन्तुष्टि की। उसकी मीठी-मीठी बातों ने मुझे एक सपनों की दुनिया में पहुँचा दिया; नींद खुलने पर मुझे मालूम हुआ कि सब सपनों की तरह वह सपना भी झूठा था—उसमें कोई सच्चाई नहीं थी। चन्द रोटी के टुकड़ों और कपड़ों के सिवा मुझे कुछ नहीं मिला। मैं अब दोबारा उस रास्ते पर नहीं

जाना चाहती । रोटी एक ठोस चीज़ है—मैं इसे ठोस तरीक़े से ही हासिल करूँगी—लेकिन कैसे ? यह तो मानना ही पड़ेगा कि आखिर औरत, एक औरत ही है । उसके पास बेचने के लिये शरीर है। एक महीना गुज़र गया, अभी तक मुझे कोई नौकरी नहीं मिली ।

[२९]

कई पुरानी सहपाठिनियों से मुलाक़ात हुई, उनमें से कई मिडल स्कूल में दाखिल होने जा रही है और कुछ एक घर में ही रह रही हैं। मैं उनकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं देती, क्योंकि मेरा अनुभव उनसे कहीं अधिक है । पहले की बात और थी, स्कूल में तो में बिल्कुल बुद्धू थी, अब मुझे अक्ल आ गई है और अपने सामने सब लड़कियाँ बेवक़ूफ़ नजर आती हैं। वे अभी तक रंगीन सपनों में बेसुध हैं, दुकान की गुड़ियों की तरह बनी-सँवरी रहती हे, उनका ख्याल है कि सब जवान लड़के उन्हीं पर लट्टू हो कर प्रेम की कविताएँ लिखते हैं। मुझे कभी-कभी इन ना-समझ लड़कियों पर दया आती है—उन्हें भरपेट खाना नसीब होता है—फिर उन्हें इश्क-मुहब्बत की बातों के सिवा और सूझ भी क्या सकता है ? औरत और मर्द दोनों ही एक-दूसरे को फाँसने के लिये जाल बुनते रहते हैं; जिनके पास पैसा है उनके जाल भी बड़े हैं, जिनमें कई लोग एक साथ फँसाये जा सकते है—फिर बड़े इत्मीनान से उनमें से कुछ एक को छाँटा जा सकता है । मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं—नन्हा-सा ताना-बाना बुनने के लिये भी कोई खूंटी नहीं । या तो मै शिकारी की तरह किसी को दबोच लूंगी या खुद किसी का शिकार बनना पड़ेगा । मैं उन लड़कियों से ज्यादा इस बात को समझती हूँ, इसीलिये अक्लमन्द हूँ ।

[३०]

एक रोज़ उसी चीनी की गुड़िया पत्नी से मुलाकात हो गई। वह इस तरह मुझसे लिपट कर मिली जैसे कोई सगे-सम्बन्धियों से मिलता है । वह कुछ खोई-खोई सी लग रही थी, "तुम कितनी भली हो ! ईश्वर

देनी पड़ी थी। आज तो ऑफिस से लौट कर वे बहुत थक जाते हैं। कभी कभी तो यह कहते हैं कि उनका शरीर निर्जीव हो गया है। एक बार तो वे तीन घंटे तक बेहोश रहे थे। डाक्टर ने आकर बताया था उनको कोई टौनिक लेना पड़ेगा। यह भी सुझाया था कि उनको ज्यादा मेहनत नहीं करनी चाहिए। लेकिन आराम का सवाल कहाँ है। जब तक साँस चल रही है, नौकरी करनी है। नौकरी से पैसा मिलता है और आगे पेन्शन के हकदार भी वे होंगे। फिर सरकारी नौकरी है, जिससे कि मोहल्ले में कुछ इज्जत बनी है। लेकिन इस सब सन्तोष से पेट नहीं भरता है।

फिर उन्होंने भेद की बात बताई कि महीने भर में सात व्यक्तियों के उस परिवार में एक प्राणी और आने वाला है। जिसके स्वागत के लिए कम से कम सौ रुपए की थैली चाहिए। यह रुपया कहीं न कहीं से लाना ही पड़ेगा अन्यथा परिवार पर भारी मुसीबत आने वाली है जो कि टल नहीं सकती है। यह सच है कि एक लड़की की शादी के बाद पाँच बच्चे बचे और नए अतिथि के बाद फिर छै बच्चे हो जावेंगे। बच्चों की इस पैदावार को वे ईश्वर की देन मानते हैं। यदि कोई सलाह देता है कि अब उनको संयत से रहना चाहिए तो वे हँस कर कहते हैं कि यह उनके हाथ की बात नहीं है। बात यहीं पर निपट नहीं जाती है। उनका दामाद अलग नाखुश है कि वे उस ओर उदासीन रहते हैं। दो बार वह पत्र भेज कर माँग कर चुका है कि पचास रुपया भेज दिया जाय। अपने पत्र का उत्तर न पाकर वह उलूल जलूल बातें लिखकर भेजता है। सास भी सुना बहू को ताना मारती है कि बाप की हैसियत नहीं थी तो शादी क्यों की, लड़की को घर पर ही रख कर तिजारत चलाते। यह बात तीर की तरह उनके दिल पर चुभती है। यह भी सच बात है कि आज तक दो साल में वे उसे एक बार भी नहीं बुला पाए हैं। और सच पूछा जाय तो एक तरह उससे उनका सम्पर्क टूट सा चुका है।

बात यहीं पर निपट नहीं जाती है। दूसरी लड़की चौदह की हो गई

दिमाग़ साफ़ हो चुका है। भूख से सीधा तर्क भला दुनियाँ में कौनसा है ? बात यह है कि मैंने अपने आपको बिक्री के लिये तैयार कर लिया है; अपनी सारी चीजें बेचकर एक बढ़िया जोड़ा सिलवाया है। मेरी शक्ल भी बुरी नहीं। मैं औरतों की मंडी में भर्ती हो गई हूँ।

[३२]

मेरा इरादा तो भोग-विलास की जिन्दगी बसर करके अपना मनोरंजन करना था, लेकिन आह ! एक भारी ग़लती हो गई। मुझे तब तक भी दुनियादारी का कुछ पता न था। आदमियों को फंसाना इतना आसान नहीं जितना मैं सोचती थी। मैं तो थोड़े से चुम्बनों द्वारा ही अधिक सुसभ्य पुरुषों को अपने वश में करना चाहती थी। हा, हा ! लेकिन वह मेरे फन्दे में नहीं फँसे। वह तो पहली नजर में ही मुझे गिरवी रखने को उतारू हो जाते। अधिक से अधिक सिनेमा दिखाने ले जाते, गलियों में सैर कराते और कभी-कभी 'आइस-क्रीम खाने का निमन्त्रण देते। मुझे इसके बाद भी भूखे पेट ही घर लौटना पड़ता। वे 'सभ्य' और 'सुसंस्कृत' कहलाने वाले लोग अधिक से अधिक यही सवाल पूछते कि मैंने कौन से स्कूल में शिक्षा पाई है या मेरे माँ-बाप क्या करते हैं। उनके व्यवहार से मैं समझ गई कि उनसे कुछ पाने से पहले उन्हें कुछ देना जरूरी है। अगर आपके पास देने के लिये कुछ नहीं तो वे भी सिर्फ़ 'आइसक्रीम' की एक तश्तरी से आपके चुम्बन की कीमत चुका देंगे। बिक्री में यह सब बातें नहीं चलतीं। वहाँ तो दिल खोलकर सब कुछ करना पड़ता है। किसी बात की कसर नहीं रह जाती। "अच्छी बात है, पैसे लाइये और मैं आपके साथ सोऊँगी"—मैं इस बात को समझ गई हूँ। उस चीनी गुड़िया की क़िस्म की औरतें इस बात को नहीं समझतीं। माँ और मैं, दोनों ही इसे समझते हैं। काश माँ भी यहाँ होती।

[३३]

कहते हैं कि कई औरतें सिर्फ प्रेम का अभिनय करके ही अपना गुज़ारा चला लेती हैं। लेकिन मेरे पास इसके लिए पूँजी नहीं है। इस लिए मैंने ऐसा करने का विचार ही छोड़ दिया। मकान मालिक मुझे कमरे देने के लिए राजी नहीं है। वह भी दुनिया के सामने भला बनना चाहता है। मैंने उसकी ओर बिना थूके ही फ़ौरन कमरे खाली कर दिये और अपने पुराने घर में चली आई जहाँ मैं पहले माँ और नये पिता के साथ रहती थी। यहाँ के लोगों को समाज के दिखावे की इतनी परवाह नहीं थी। इसी कारण वे लोग अधिक ईमानदार हैं, और मैं उन्हें पसन्द करती हूँ। मकान बदलते ही मेरा धन्धा चल निकला। अब तो सभ्य लोग भी यहाँ आने लगे हैं। यह जानकर कि मैं बिक्री के लिए तैय्यार हूँ, वे खुशी-खुशी भागे। ऐसा करने से उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी कोई बट्टा न लगता था। शुरू-शुरू में मैं डरपोक थी, क्योंकि अभी मैंने बीसवाँ पार नहीं किया था। लेकिन कुछ ही दिनों में मेरा डर जाता रहा। इस धन्धे में अब कई महीने गुज़र जाने से मैं काफ़ी समझदार होगई हूँ। किसी गाहक को देखते ही उसकी हैसियत ताड़ जाती हूँ। कई गाहक मालदार होते हैं, यह दिखाने के लिए कि उनकी जेब भारी है, वे छूटते ही मेरे दाम पूछने लगते हैं। ये लोग ईर्ष्यालु भी खूब होते हैं। हरेक मुझ पर क़ब्जा जमाना चाहता है। वह एक वेश्या पर भी अपना एकाधिपत्य स्थापित करना चाहता है क्योंकि उसके पास पैसा है। मैं ऐसे लोगों की विशेष परवाह नहीं करती। उनके लाल-पीले होने का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता; मैं उनके घर जाकर उनकी बीवियों को सब कुछ बता देने की साफ़-साफ़ धमकी देती हूँ। आखिर मेरी पढ़ाई-लिखाई का इतना फ़ायदा तो हुआ—वे लोग मुझे आसानी से डरा नहीं सकते। अब मैं स्कूल की शिक्षा की क़ीमत समझने लगी हूँ। जब कभी कोई आदमी मुट्ठी में सिर्फ़ एक डालर दबाये डरता झिझकता अन्दर दाखिल होता है तो मैं उसे साफ़-साफ़ अपने दाम बता देती हूँ और वह भले मानस की

तरह और पैसा लाने के लिए उल्टे पाँव भागा-भागा घर जाता है। सचमुच कितनी अजब बात है! कई लोग तो बेहद ओछे और घृणित होते हैं। रुपये-पैसे के मामले में तो कमीने होते ही हैं, साथ ही बचे-खुचे सिगरेटों या क्रीम की शीशी को जेब में रखकर वापस लेजाना उनके लिए मामूली बात है। उन्हें कहीं छोटा-सा तिनका भी दिखाई दे जाय तो झट उसे जेब के हवाले कर लेते हैं। मैं ऐसों को भी नाराज़ नहीं करना चाहती। वे जो न कर बैठें सो थोड़ा है; नाराज होते ही वे मुझे दिक़ करने के लिये फ़ौरन पुलिस बुलायेंगे, इसलिए मै उन्हें नाराज़ करने की बजाय उस दिन का इन्तज़ार कर रही हूँ, जब पुलिस के किसी अफ़सर से मेरी दोस्ती हो जायगी और मैं एक-एक करके इन कमीनों से निपट लूँगी। दुनियाँ में खूँखारी और पशुबल का बोलबाला है; जो सबसे अधिक दुष्ट और नीच होता है, उसी की जीत होती है। सबसे अधिक दयनीय दशा ऐसे लोगों की होती है जो मिडिल स्कूल के विद्यार्थियों की तरह जेब में सिर्फ़ एक डॉलर और ताँबे के कुछ सिक्के खनखनाते हुए कमरे में दाखिल होते हैं और घबराहट के मारे उनके माथे से पसीने की धारें छूटती हैं। मुझे उन पर दया आती है, लेकिन मैं उन्हें भी अपना शरीर बेचती हूँ। आखिर मैं उनकी और क्या मदद कर सकती हूँ? इसके अलावा ऐसे बुजुर्ग लोग भी आते हैं जिनका एक पाँव क़ब्र में होता है और घर में नाती-पोते होते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि उनके साथ कैसा व्यवहार करूँ। लेकिन मैं जानती हूँ कि वे पैसे वाले हैं और मरने से पहले जिन्दगी का थोड़ा सुख और पा लेना चाहते हैं। इसलिए मैं उनकी यह इच्छा पूरी कर देती हूँ। इस सारे तजुर्बे ने मुझे 'आदमी और पैसों' को उनके सही रूप में देखना सिखा दिया हैं। इन दोनों में पैसा अधिक शक्तिशाली और भयंकर है। आदमी पशु के समान है और पैसा इस पशुता का साहस है जो उसे और भी उच्छृंखल बना देता है।

[३४]

मुझे पता चला है कि मैं बीमार हूँ। मैं इस बात से बेहद डर

गई हूँ—मुझे लगता है कि अब जीने से कोई लाभ नहीं। मैंने कुछ दिन आराम किया – निरुद्देश्य गलियों में इधर-उधर घूमती रही। मैं जाकर माँ से मिलना चाहती थी। वह तो मुझे ज़रूर ढाढस बँधायेगी। मुझे ऐसा लगा कि अब मौत आने में थोड़ी ही कसर बाकी है। भूल-भुलैयों जैसी तंग गलियों का चक्कर काटती हुई मैं उस हुतुंग में पहुंची जहाँ माँ दिखाई दी थी। मुझे उस रोज़ माँ का धौंकनी चलाना आज भी अच्छी तरह याद है। डबल रोटी वाली दुकान बन्द थी। किसी को मालूम न था कि वह लोग कहाँ चले गये हैं। मेरा निश्चय और भी पक्का हो गया; मैं ज़रूर माँ का पता लगाऊँगी। कई रोज़ तक शहर का कोना-कोना छान मारा, लेकिन सब कोशिशें बेकार हुईं। मन में सन्देह हुआ कि शायद माँ मर गई हो या वह उस डबल रोटी वाले के साथ हज़ारों कोस दूर कहीं चली गई है। मेरे आँसू बह चले। मैंने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने, मुँह पर पाउडर लगाया और बिस्तर में लेटकर मौत की राह देखने लगी। मुझे अपने मरने का पूरा भरोसा था। लेकिन मौत नहीं आयी। कोई आदमी मेरी तलाश में दरवाज़ा खटखटा रहा था। मैंने उसे अपनी बीमारी की छूत देने के लिए जान-बूझ कर उसकी इच्छा पूरी करदी। ऐसा करते समय मुझे एक क्षण के लिए भी यह ख्याल नहीं आया कि मैं ग़लत काम कर रही हूँ। बल्कि मेरा जी कुछ हल्का होगया। मैंने एक सिगरेट सुलगायी और एक प्याला शराब पी। मैं एक अधेड़ औरत-सी होगई हूँ; मेरी आखों के नीचे काले गड्ढे पड़ गये हैं, मेरी हथेलियाँ अँगारों-सी जलती रहती हैं, लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं। इन्सान बिना पैसे के जिन्दा नहीं रह सकता। सबसे पहले मुझे भरपेट भोजन चाहिए, बाक़ी बहसें बाद में उठती हैं। मैं खूब खाती हूँ! अपने आप को बना-सँवार के रखना मेरा फ़र्ज़ है। मुझे अपनी पूरी देख-भाल करनी चाहिए।

[३५]

एक रोज़ क़रीब दस बजे मैं कन्धों पर ढीला-ढाला लबादा ओढ़े

घर में बैठी थी कि अचानक दालान में पैरों की हल्की-सी चाप सुनाई दी। मैं अक्सर सुबह दस बजे उठती हूँ। कभी-कभी तो बारह बजे तक बिना कपड़े बदले बैठी रहती हूँ। पिछले कुछ दिनों से कुछ अधिक सुस्त होगई हूँ और दो-दो घन्टे तक बिना हिले-डुले या कुछ सोचे बैठी सामने की ओर ताकती रहती हूँ। पैरों की आहट मेरे दरवाज़े के पास आकर कुछ धीमी होगई। फिर दरवाज़े के शीशे में से दो आँखें अन्दर झाँकने लगीं। कुछ क्षरण तक मेरी ओर देखने के बाद वे फिर गायब होगईं। सुस्ती के मारे मैं वहीं बैठी रही। कुछ देर बाद वही आँखें फिर दिखाई दीं। मुझे मजबूर होकर उठना पड़ा। मैंने आहिस्ता से दरवाजा खोला—माँ!

[३६]

मुझे ठीक से याद नहीं कि हम माँ-बेटी दोनों कब और कैसे कमरे में लौटे और कितनी देर तक एक-दूसरे से लिपट कर रोते रहे। माँ का चेहरा झुर्रियों से भर गया था और वह बुढ़िया-सी दिखाई देती थी। वह डबल रोटी वाला माँ को छोड़कर अपने गाँव चला गया था, माँ के पास बिना एक दमड़ी छोड़े वह चोरों की तरह चुपचाप वहाँ से खिसक गया। बेचारी माँ ने अपनी बची-खुची चीज़ें बेच डालीं और कुलियों के मुहल्ले में रहने लगी। वह एक महीने से मेरी तलाश में थी। अन्त में उसे इस जगह का ध्यान आया, हालाँकि उसे इस बात की उम्मीद कम ही थी कि मैं यहाँ हो सकती हूँ। लेकिन उसने मुझे ढूँढ निकाला। उसने मुझे देखकर भी बुलाने की कोई कोशिश नहीं की। अगर मैं उसे न बुलाती तो संभव था कि वह चुपचाप वहाँ से लौट जाती। मैंने अपने आँसू पोंछे और पागलों की तरह हँसने लगी। उसे अपनी बेटी मिल गई थी—वह बेटी जो वेश्या बन गई थी! पहले तो मेरे कारण उसे यह काम करना पड़ा; अब मुझे भी वही काम करके माँ का पेट पालना होगा। बेटी ने भी आखिर अपनी माँ का पेशा ही अपनाया।

[३७]

मेरा ख्याल था कि माँ के आने से मुझे शान्ति मिलेगी। मैं जानती हूँ कि सान्त्वना भरे कुछ शब्दों के अतिरिक्त शान्ति में और कुछ नहीं धरा, लेकिन माँ के मुँह से निकले वही शब्द मुझे धीरज बँधाते हैं। दुनिया भर की माँएँ धोखेबाज हैं और हम उनकी कपट भरी चिकनी-चुपड़ी बातों को 'सान्त्वना' समझते हैं। लेकिन मेरी मां तो धोखा देना भी भूल चुकी है। भूख ने उसकी आत्मा को निरीह बना दिया है। उसका कोई क़सूर नहीं है। उसने आते ही मेरी सब चीजों की फ़हरिस्त बना डाली, और मुझसे आमदनी और खर्च के बारे में पाई-पाई का हिसाब पूछने लगी। मैं जो पेशा कर रही हूं, उसके बारे में उसने कभी हैरानी जाहिर नहीं की। मैंने उसे अपनी बीमारी का हाल सुनाया और सोचा कि जरूर ही वह मुझे आराम करने की सलाह देगी। लेकिन नहीं, उसने सिर्फ़ कोई दवाई लाकर देने का वादा ही किया। "क्या हमें उम्र भर यही पेशा करना होगा ?" मैंने पूछा। उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह मेरी देखभाल करती है। मेरे लिए खाना बनाती है और सेहत का हालचाल पूछती है। कभी-कभी वह कनखियों से मेरी ओर इस तरह झाँकती है, जिस तरह कोई माँ सोये हुए बच्चे को देखती है। लेकिन वही एक शब्द उसके मुँह से नहीं निकलता। वह कभी भी मुझसे यह पेशा छोड़ने के लिए नहीं कहेगी। मैं इस बात को अच्छी तरह समझती हूँ, हालाँकि उसके साथ रहने से मैं पूरी तरह खुश नहीं हूँ। पर इसके अलावा मेरे सामने कोई दूसरा रास्ता भी नहीं। आखिर हम दोनों को रोटी-कपड़ा चाहिए, और इसी समस्या पर आकर सब बहसें खत्म हो जाती हैं। चूल्हे में जाए माँ-बेटी का सम्बन्ध, भाड़ में जाए सामाजिक दिखावा। पसा बड़ा बलवान है, उसके चाबुक की मार खाकर हम निर्भय आगे बढ़ते जाते हैं।

[३८]

माँ मेरी शुभचिंतक है, लेकिन उसकी आँखों के सामने ही मेरा

कचूमर निकाला जा रहा है, और उसे यह चुपचाप बर्दाश्त करना पड़ता है। मैं भी माँ के साथ प्यार से पेश आना चाहती हूँ, लेकिन कभी-कभी तो वह एक मुसीबत बन जाती है। वह हरएक चीज पर प्रतिबन्ध लगाना चाहती है, विशेषकर रुपये-पैसों पर। उसकी आँखों में से यौवन की दीप्ति ग़ायब हो चुकी है, अब सिर्फ़ पैसा दिखाई देने पर ही उसकी आँखें चमक उठती हैं। ग्राहकों के सामने यह जताने पर भी कि वह मेरी नौकरानी है, अगर कोई ग्राहक कम पैसे देता है तो माँ के मुँह से गंदी गालियों का फ़व्वारा छूट पड़ता है। कभी-कभी मुझे इस बात से बड़ी परेशानी उठानी होती है। यह सच है कि मैं सब कुछ पैसे की ख़ातिर ही कर रही हूँ, लेकिन इसका ढोल पीटने की क्या जरूरत है? मैं भी लोगों से निपटना जानती हूँ, लेकिन ऐसे ढंग से कि वे नाराज़ न हो जायें। माँ के तरीक़े बड़े ही फूहड़ और भद्दे हैं। वह तू-तू, मैं-मैं पर उतर आती है। मैं भी ऐसा करने लग जाऊँ तो पैसा आना बन्द हो जाय। शायद जवान होने के कारण मेरा स्वभाव अभी नरम है। माँ को सिर्फ़ पैसे से मतलब है। शायद इसलिए कि वह उमर में मुझसे बड़ी है। कौन जाने कुछ बरस बाद मैं भी ऐसी हो जाऊँ। उम्र बढ़ने के साथ-साथ लोगों के दिल भी पक कर कठोर होते जाते हैं और आख़िर में पैसे की तरह सख़्त हो जाते हैं। माँ तो जो न कर बैठे, वही थोड़ा है। वह अक्सर ग्राहकों के हाथ से बटुआ झपट लेती है, कभी उनकी टोपी, दस्ताने और छड़ी को छिपाकर रख लेती है। मुझे लड़ाई-झगड़े से डर लगता है, लेकिन माँ का कहना है कि जो हाथ लग सके ले लेना चाहिए। दस साल की ज़िन्दगी हम एक साल में गुज़ारते हैं। खूसट बुढ़िया हो जाने पर तुम्हारे नजदीक कौन फटकेगा। जब कोई ग्राहक नशे में चूर हो जाता है तो वह उसे एक कोने में लेजाकर उसकी सब चीज़ें हथिया लेती है, यहाँ तक कि जूते भी। और मजे की बात यह है कि वे लोग कभी लड़ाई-झगड़ा करने नहीं आते। शायद इस अनुभव के बाद वे सख़्त बीमार पड़ जाते हैं या अपनी इज्ज़त के डर से चुप रहना

ही बेहतर समझते हैं। हमारी आबरू है ही कहाँ, जिसके उतरने का हमें डर हो, लेकिन उनकी आबरू तो है।

[३६]

माँ की बात सही है कि हम दस सालों की ज़िन्दगी एक ही साल में निचोड़ रहे हैं। दो-तीन साल के अन्दर ही, मुझे लगता है, मैं काफ़ी बदल गई हूँ। मेरी खाल कठोर हो गई है, ओंठ हमेशा सूजे रहते हैं, मेरी आँखों की चमक फीकी पड़ गई है और अंगारे-सी जलती रहती हैं। सुबह उठने पर थकान महसूस होती है और लगता है, अंगों में दम बाक़ी नहीं रहा। मैं खुद इस बात को जानती हूँ और ग्राहकों से भी यह बात छिपी नहीं। धीरे-धीरे उनकी संख्या कम होती जा रही है। नये ग्राहकों को पूरा सन्तोष देने के लिए मैं जी-जान से मेहनत करती हूँ। लेकिन मुझे उनसे नफ़रत है। कभी-कभी तो तंग आकर मुझे भद्दी गालियों का प्रयोग भी करना पड़ता है। मेरे क्रोध का पारा चढ़ जाता है और मैं ऊलजलूल बकने लगती हूँ। ऐसे समय मैं आपे से बाहर होती हूँ। मेरी ज़बान भी क़ाबू में नहीं रहती, मानो गन्दे अपशब्द बकना मेरी आदत में शुमार हो! अब सभ्य लोग बहुत कम आते हैं, क्योंकि मुझमें 'नन्ही चिड़िया' सा आकर्षण, जिसे वे पसन्द करते थे, नहीं रहा। यह सब स्वाभाविक ही है। मुझे अब राह चलते ऐरों-गैरों को फँसाना होता है। मेरा कपड़े पहनने का तरीक़ा भी पहले जैसा नहीं रहा, क्योंकि अब मुझे 'जंगलियों' को लुभाना होता है। मेरे सुर्ख़ी लगे होंठ सूजे हुए फोड़े की तरह हैं। मैं अपनी मौत की राह देख रही हूँ। मेरा कमाई का हर डॉलर मौत को और भी नज़दीक खींच लाता है। पैसे से अधिकांश लोगों की आयु लम्बी हो जाती है, लेकिन मेरी बात ठीक इससे उल्टी है। मैं अपने आपको तिल-तिल करके सड़ता देख रही हूँ। मैं खुद अपनी मौत की प्रतीक्षा कर रही हूँ। यह विचार कितना भयंकर है, लेकिन इसके बारे में सोचने से क्या फ़ायदा? अच्छा तो यही है कि एक-एक

करके दिन गुज़र जायें। मेरी माँ मेरी परछाई है। बहुत हुआ तो मैं भी उसी की तरह हो जाऊँगी। जिन्दगी भर शरीर का व्यापार करने के बाद आखिर चन्द हड्डियों, कुछ सफ़ेद बालों और ढेर की ढेर झुर्रियों से भरी बदरंग चमड़ी के सिवा रह भी क्या जाता है। जिन्दगी ऐसी ही है।

[४०]

मैं ज़बर्दस्ती हँसती हूँ। अपने आप को किसी पागल औरत की तरह व्यवहार करने के लिए मजबूर करती हूँ। मेरी जिन्दगी की कड़वाहट आँसुओं की कुछ बूँदों से नहीं धुल सकती। मेरी जिन्दगी इस लायक़ नहीं कि उस पर अफ़सोस किया जाय। तो भी यही मेरी इकलौती जिन्दगी है और इसे मैं खोना नहीं चाहती। इसके अलावा मैंने जो कुछ भी किया है उसके लिए क़सूरवार मैं नहीं। अगर मौत भयानक लगती है तो इसी लिए कि जिन्दगी इतनी मधुर है। मुझे मौत की पीड़ा से डर नहीं लगता, क्यों कि मैं जिस पीड़ा को जानती हूँ उसके सामने मौत कभी की मर चुकी है। मैं जीना चाहती हूँ लेकिन इस तरह नहीं। मैं एक आदर्श ज़िन्दगी की कल्पना करती हूँ, लेकिन वह कल्पना एक सपने की तरह जल्दी गुज़र जाती है। जिन्दगी की हक़ीक़त के थपेड़े मुझे आगे से भी गहरे गर्त्त में गिराते जाते हैं। यह दुनिया एक रंगीन सपना नहीं, सचमुच एक जिन्दा नरक है। मां मेरे माथे पर पड़ी चिन्ता की रेखाओं को देखकर मेरे अन्तर की कड़वाहट को भाँप गयी। उसने मुझे शादी करने की सलाह दी। अगर मैं शादी करलूँ तो पेट भरने के साथ ही साथ माँ को भी बुढ़ापे में कुछ सहारा मिल जायगा। मैं ही उसकी एकमात्र आशा हूँ। शादी, लेकिन किससे ?

[४१]

मैं इतने पुरुषों के सम्पर्क में आई हूँ कि मुझे अब याद ही नहीं रहा कि प्यार कैसा होता है। मैं सिर्फ़ अपने से प्यार करती हूँ। चूँकि अब

मुझे अपने से भी प्यार नहीं रहा, तो फिर मैं किसी और को प्यार क्यों करूँ ? लेकिन अगर मुझे शादी करना है तो प्रेम का अभिनय करना ही होगा। उस आदमी को कहना ही पड़ेगा कि मैं ज़िन्दगी भर उसके साथ रहना चाहती हूँ। मै न जाने कितने लोगों के शब्द दुहरा चुकी हूँ, यहाँ तक कि क़समें भी खायी हैं—किसी ने इन पर रत्ती भर भी ध्यान नहीं दिया। पैसा का मामला बीच में आते ही लोग सतर्क हो जाते हैं। किसी लड़की को धोखा देने की बजाय उसके प्यार को ख़रीदने में अधिक फ़ायदा है, क्योंकि यह सौदा सस्ता पड़ता है। अगर मैं पैसे के पीछे न होती तो मेरे सम्पर्क में आने वाला हर पुरुष यही कहता कि वह मुझ से प्रेम करता है।

[४२]

इन्हीं दिनों पुलिस ने आकर मुझे घेर लिया। शहर के नये हाकिम हद के शरीफ़ हैं। वे बिना लैसंस वाली वेश्याओं को नही रखना चाहते। जिनके पास लैसंस है, वे पहले की तरह अपना धन्धा जारी रख सकती हैं, क्योंकि वे टेक्स देती हैं। टेक्स देने से उनकी सब मुसीबतें टल जाती हैं, यहाँ तक कि वे पुण्यात्मा बन जाती हैं। गिरफ़्तारी के बाद मुझे एक सुधार-गृह में रखा गया और मुझे काम करने की शिक्षा दी गई। लेकिन मैं सीना-पिरोना और कपड़े धोना पहले भी जानती थी। अगर मैं इन्हीं गुणों से अपना पेट पाल सकती तो इस घृणित पेशे को अपनाने की क्या ज़रूरत थी। मैंने उनसे भी यही बात कही। पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि मैं लम्पट और भ्रष्ट हूँ, साथ ही उन्होंने यह उपदेश भी दिया कि मुझे अपने काम के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। अगर मैं ईमानदारी से काम करूँगी तो एक दिन ज़रूर अपनी रोजी कमा सकूँगी या मुझे कोई पति मिल जायगा। वे बड़े आशावादी मालूम देते थे। लेकिन मेरे अन्दर उन लोगों जैसा विश्वास नहीं था। उनकी सुधार-चेष्टाओं का शानदार रिकार्ड यह था कि उन्होंने एक दर्जन

से ऊपर भ्रष्ट औरतों का सुधार करके शादी करादी थी। उनके दफ़्तर से कोई भी पुरुष सिर्फ़ दो डॉलर देकर और अपनी ठोस आर्थिक स्थिति का प्रमाण पेश करके अपनी मन पसन्द लड़की को लेजा सकता है। जहाँ तक पुरुष का संबंध है, उसके लिए यह लाभ का सौदा है। लेकिन मेरे लिए यह एक भद्दे माज़ाक से अधिक कुछ नहीं। मै इस क़िस्म के सुधारों से कोई वास्ता नही रखना चाहती। जब एक बड़ा अफ़सर हमारा निरीक्षण करने आया तो मैंने उसके मुँह पर थूक दिया। उन लोगों ने मुझे खतरनाक समझ कर मुझे रिहा करने में आनाकानी की, साथ ही मुझे सुधारने की तमाम उम्मीदें भी छोड़ दीं। इस लिए अब मैं यहाँ जेलखाने में बन्द हूँ।

[४२]

जेलखाना अच्छी जगह है। यहाँ आकर कोई भी व्यक्ति यह सोच सकता है कि मानवता का भविष्य अंधकार में है। पर मैंने तो सपने में भी ऐसी भयानक चीज़ नहीं सोची। जब से मैं यहाँ आई हूँ, मैंने बाहर जाने की इच्छा को तिलाँजलि दे दी! अनुभव के बाद मैं इसी नतीजे पर पहुँची हूँ कि बाहर की दुनिया जेलखाने से विशेष अच्छी नहीं। अगर मुझे इससे अच्छी कोई जगह मिल सकती तो मेरे मन में मरने का ख्याल भी न आता। लेकिन जब सब जगहें एक समान हैं तो मैं कहीं भी मर सकती हूँ। इसमें क्या फ़रक़ पड़ता है। यहाँ मैंने अपना चिरपरिचित मित्र—सींगवाला चाँद देखा। कितना लम्बा समय बीत गया जब से सींगवाला चाँद मेरे मन के आकाश में उदित नहीं हुआ। इस समय माँ क्या कर रही होगी। चिन्ताओं और स्मृतियों की बाढ़ सी आगई है।

माओ-तुन

(१८९६—)

चीन के वर्तमान संस्कृति-मन्त्री शेन-येन पिङ्ग का साहित्यिक नाम।

प्रसिद्ध उपन्यासकार होने के साथ ही साथ आप कहानी-लेखक नाटककार, समालोचक और अनुवादक भी हैं।

माओ-तुन का जन्म चेकियाङ्ग प्रान्त के तुंगसियाङ्ग शहर में एक विद्वान् के घर हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भी साहित्यिक वातावरण में हुई। अट्ठारह वर्ष की आयु में मिडिल पास करने के बाद आप पेकिङ्ग विश्वविद्यालय की प्रारम्भिक श्रेणी में भर्ती हो गये, लेकिन आर्थिक कठिनाइयों के कारण डिग्री प्राप्त करने से पूर्व ही आपको पढ़ाई-लिखाई छोड़कर कमर्शियल प्रेस में प्रूफ़-रीडर की नौकरी करनी पड़ी।

१९२१ में चेङ्ग चेन-चो (पुरातत्व विभाग के वर्तमान डाइरेक्टर), चू-सो-जेन (लू-सुन के भाई), सू, ती-शान, (लो हुआ-शेङ्ग का साहित्यिक नाम) तथा ये-शाओ-चुन (केन्द्रीय मुद्रण संस्था के उपाध्यक्ष) के साथ आपने 'साहित्य की खोज-परिषद' की स्थापना में हिस्सा लिया। चीन की आधुनिक भाषा के विकास में इस संस्था का बहुत बड़ा हाथ है। आपने संस्था की पत्रिका "कथा-कहानी मासिक" का सम्पादन भी किया, जिसमें नये साहित्यिक आन्दोलन की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

१९२४ में सम्पादन कार्य से इस्तीफ़ा देकर माओ-तुन शँघाई में क्रान्तिकारी कार्यों में लग गये। १९२६ के उत्तरी प्रस्थान के दिनों में आप राजनैतिक शिक्षण विभाग के सहायक प्रचारमंत्री और वुहान के 'मिन-कुओ, जी-पाओ' के प्रधान सम्पादक भी थे।

आपके प्रसिद्ध उपन्यास 'मोह-भंग', 'आन्दोलन' और 'खोज' १९२७-२८ में छपे। बाद में 'चन्द्र ग्रहण' नाम से इनकी कहानियों का संकलन भी प्रकाशित हुआ। संघर्षकालीन युग में चीनी तरुणवर्ग की मानसिक उथल-पुथल के मार्मिक चित्रण के कारण आप देश के प्रमुख उपन्यासकारों में गिने जाने लगे। १९३० में वामपक्षी लेखकों के संगठन की स्थापना में आपका बहुत बड़ा हाथ था।

माओ-तुन प्रगल्भ लेखक हैं। अनगिनत आलोचनात्मक लेखों, अनुवादों, कहानियों और रेखाचित्रों के अतिरिक्त, १९२९ से लेकर १९३२ के बीच में, आपके तीन उपन्यास, 'इन्द्रधनुष', 'तीन की क़तार', और 'सड़क' भी प्रकाशित हुए। १९३३ में 'आधी रात' पाठकों के सामने आया, जिसमें साम्राज्यवादी शोषण के परिणामस्वरूप चीन के उद्योग-धंधों की दुर्दशा का वर्णन था। विशद पृष्ठभूमि तथा यथार्थ चित्रण के कारण 'आधी रात' को आधुनिक चीनी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। बाद के लिखे 'ऊसर' की कहानी चीन-जापान युद्ध की प्रारम्भिक अवस्था के शँघाई की परिस्थितियों पर आधारित है।

माओ-तुन ने सतत साहित्यिक साधना के साथ-साथ अपनी राजनैतिक सरगर्मियों को भी जारी रखा। राजनैतिक शिक्षण-विभाग की संस्कृति-कमेटी के सदस्य की हैसियत से आप हांग-कांग, कुएलिन, सिनकियाङ्ग तथा चुङ्गकिङ्ग में रहे।

चीनी-रूसी सांस्कृतिक मैत्री को प्रोत्साहन देने में आप सर्वाधिक कार्यशील रहे हैं। १९४६ में आपने सोवियत यूनियन में चीनी साहित्य पर अनेकों भाषण दिये।

लिन का स्टोर

नन्हीं लिन स्कूल से लौटते ही मुँह बिचकाने लगी। शृंगार की मेज़ में लगे शीशे के सामने खड़ी होकर न तो उसने अपने बाल सँवारे, न ही नाक पर पाउडर लगाया—जैसा कि वह अक्सर करती थी। वह आते ही धम्म से बिस्तर में लेट गई और मसहरी की ओर ताकने लगी। उसकी कुतिया सियाओ-हुआ भी लपक कर चारपाई पर आ गई और गुर्रा कर मालकिन से प्यार जताने लगी। नन्हीं लिन ने यन्त्रवत् हाथ फैलाकर कुतिया के झबरे बालों को सहलाया, लेकिन अगले क्षण ही वह तकिये में मुँह छिपाकर दबे स्वर में चिल्लाई, "माँ!"

कोई जवाब नहीं आया। माँ का कमरा बग़ल में था और अपनी लाड़ली बेटी के आने की आहट पाते ही माँ हमेशा भागी-भागी आती थी और पूछती थी, "तुम्हें भूख तो नहीं लगी!" वह उसके खाने के लिये तरह-तरह की स्वादिष्ट चीजें बनाकर रखती। अगर घर में उस समय कुछ न होता तो फ़ौरन ही नौकरानी वू को एक दोना बढ़िया हुन-तुन[1] लेने के लिये दौड़ाया जाता। लेकिन आज क्या माजरा था। माँ दिखाई ही नहीं दी। उसके कमरे में से हिचकियाँ लेने की आवाजें आ रही थीं; लेकिन जवाब देने वाला कोई नहीं था।

नन्हीं लिन जलभुन कर बिस्तर पर लोटने लगी। हालाँकि साथ के

१. हुन-तुन—विशेष प्रकार की छोटी टिकिया।

कमरे के लोग सतर्कता से धीमे स्वर में फुसफुसा रहे थे, तो भी कान लगाकर वह उनकी आवाज़ सुन सकती थी। उसकी समझ में कुछ नहीं आया, इतने में माँ का उत्तेजित स्वर सुनाई दिया—

"इस ओर भी जापानी माल, उस ओर भी जापानी माल, जिधर देखो जापानी माल!"

नन्हीं लिन चौंक उठी, उसे लगा, सर के कुछ बाल झड़कर गर्दन पर आ गये हों। इन्हीं जापानी चीज़ों के कारण ही तो स्कूल में लड़कियों ने उसे गालियाँ निकाली थीं, और अपमानित किया था। अब घर आने पर भी वही चर्चा। उसने चिढ़कर सियाओ-हुआ को एक ओर धकेल दिया। वह उछल कर खड़ी हो गई और झट से अपने हरे रेशमी गाउन को उतार कर उसने हाथों में ले लिया और फिर एक ठण्डी आह भर कर उसे ज़मीन पर फेंक दिया। लड़कियों ने ताना देकर कहा था कि यह सुन्दर रेशमी कपड़ा जापान में तैयार हुआ है। फिर झुककर उसने पलंग के नीचे से अपना सूटकेस निकाला और कपड़ों को उलट-पलट कर देखने लगी। देखते-देखते उसके बिस्तर पर इन्द्र-धनुष की भाँति के रंग-बिरंगे कपड़ों का ढेर लग गया—नन्हीं लिन को इन सब चीज़ों से मोह था।

उसने बारी-बारी से सब चीज़ों पर हाथ फेरा। जितना ही वह उनकी ओर देखती थी, वे उतनी ही क़ीमती मालूम देती थीं—इसके साथ ही उसका यह विश्वास पक्का होता जाता था कि ये सब जापान की बनी हुई हैं। तो क्या अब वह इन सुन्दर कपड़ों से वंचित रह जायेगी? और अगर पिता ने और कपड़े सिलाने से मना कर दिया तो? नन्हीं लिन की आँखें लाल हो रही थीं। उसे ये जापानी चीज़ें बहुत भाती थीं, लेकिन उन्हें बनाने वाले जापानी लोगों से नफ़रत थी। उन्होंने क्यों मंचूरिया पर हमला किया? अगर वे लड़ाई-झगड़ा न करते तो फिर नन्हीं लिन को सुन्दर रेशमी कपड़े पहनने के लिये भला कौन मना करता?

"हिक् !"

माँ लिन कमरे में दाखिल हुई और उसने अपनी बेटी को सिर्फ़ बनियाइन पहने बिस्तर के पास खड़ा देखा। नन्हीं लिन रुआँसी होकर माँ से लिपट गई। "माँ ! ये सब जापानी चीज़ें हैं। मैं कल क्या पहनूँगी ?"

बच्ची की इस बात पर माँ को हिचकियाँ आने लगीं, एक हाथ से बेटी के कन्धे का सहारा लेकर वह दूसरे हाथ से अपना कलेजा सहलाने लगी।

माँ ने बोलने की कोशिश की, लेकिन मारे हिचकियों के उसका गला रुँधा जाता था, "आह, तुआन, तू क्या कर रही है, हिक्—यह कम्बख़्त आदत—हिक्—तेरे जन्म के बाद शुरू हुई—हिक्—अब हालत—हिक्—बिगड़ रही है—हिक्।"

"माँ, मैं कल क्या पहनूँगी ? मुझे घर पर ही रहना पड़ेगा। अगर यही कपड़े पहने तो सब मेरी भद्द उड़ायेंगे।"

माँ लिन ने बिना कोई उत्तर दिये पलंग पर से हरा गाउन उठाया और बेटी को पहना दिया। फिर बिस्तर पर बैठकर अपनी हिचकी रोकने की कोशिश करने लगी। उसने हाथ से बेटी को बैठने का इशारा किया।

सियाओ-हुआ ने भी उछल-कूद मचाई, लेकिन प्यार के बदले उसे केवल धक्का मिला। उसकी मालकिन बिस्तर में धँस कर माँ की पीठ से लिपट गई थी।

"आह-तुआन ! हिक्—तुम्हें भूख लगी है ?"

थोड़ी देर आराम करने के बाद माँ लिन पहले की अपेक्षा स्वस्थ हो गई।

बेटी ने चिढ़ कर जवाब दिया, "माँ, तुम्हें मेरी भूख की चिन्ता क्यों

सता रही है ? सबसे ज़रूरी सवाल तो यह है कि मैं कल स्कूल क्या पहन कर जाऊँगी ?"

माँ लिन को जैसे किसी ने सोते से जगा दिया। उसे अभी तक पता ही नहीं था कि उसकी बेटी बार-बार कपड़ों की शिकायत किस लिये कर रही है। इतने में मिस्टर लिन कमरे में दाखिल हुए। उनके हाथ में एक कागज़ था और गुस्से से आग-बबूला होकर उन्होंने कहा—

"मिंग-सू !" बेटी का पूरा नाम यही था। "तुम्हारे स्कूल की यह जापान-विरोधी सभा क्या बला है ? उन्होंने मुझे खत लिखा है कि अगर तुम जापानी कपड़े पहन कर कल स्कूल गईं, तो वे उन्हें जला डालेंगे—कैसी वाहियात धमकी है !"

माँ लिन की हिचकी फिर शुरू हो गईं।

"सारी दुनिया जापानी कपड़े पहनती है, इसमें हमारा क्या दोष ? सब स्टोर जापानी माल से भरे पड़े हैं, फिर अकेले हमारे स्टोर की शामत क्यों आई है ? अब वे हमारी दुकान को बन्द करके मोहर लगा देना चाहते है।" वह पलंग के सिरहाने पड़ी हुई कुर्सी पर धम्म से बैठ गया।

"हिक्—हिक्—हे परमात्मा ! दया करो !"

"पिताजी, मेरे पास एक सादी सूती कुर्ती है जो जापानी कपड़े की नहीं हो सकती, लेकिन वह इतनी भद्दी और पुराने फैशन की है, कि सब मेरी हँसी उड़ायेंगे। नन्हीं लिन यह सोच कर, कि वह नये कपड़े बनवाने के लिये कहेगी, उछल कर बिस्तर पर बैठ गई थी, लेकिन पिता की मुख-मुद्रा से वह भाँप गई कि यह उपयुक्त अवसर नहीं, आख़िरकार उसे वही दकियानूसी गाऊन पहनना पड़ेगा। उसे पहन कर वह कितनी भद्दी लगेगी, यह सोचते ही उसकी आँखों में आँसू छलछला उठे।

लेकिन तसल्ली देने की बजाये, पिता ने घुड़क कर कहा—

"तुम्हें स्कूल जाने की कोई ज़रूरत नहीं। जल्द ही हमें दाने-दाने के लिये मोहताज होना पड़ेगा, फिर स्कूल जाने से क्या फ़ायदा।"

मिस्टर लिन ने चिट्ठी के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और एक सर्द आह भरी। वह कमरे से बाहर चले गये, लेकिन थोड़ी ही देर में लौट आये।

"ज़रा मुझे अलमारी की चाबी तो देना।"

माँ लिन का मुँह फक हो गया, वह चुपचाप पति का मुँह ताकने लगी, डर के मारे उसकी हिचकी तक बन्द हो गई थी।

"क्या करूँ, बड़ी लाचारी है।" उसने कहा। "उन कमीने कुत्तों के सामने रोटी के टुकड़े फेंकने ही पड़ेंगे। चार सौ डालर देकर शायद मेरा पिण्ड छूट जाये। अगर कुओमिनतांग इससे भी अधिक लालची है तो मैं दुकान में ताला लगा दूँगा, वे शौक से मोहर लगायें। दूसरे दुकानदार यू-चांग-सियाँग के पास मेरे से कहीं अधिक जापानी माल है। गोदाम में कम से कम दस हज़ार डालर का माल होगा—उसने सिर्फ़ पाँच सौ डालर से ही उनका मुँह बन्द कर दिया। जल्दी चाबी लाओ। तुम्हारा सोने का हार कम से कम तीन सौ——"

"लुटेरे!" माँ लिन क्रोध से बड़बड़ाई और काँपते हुए हाथों से उसने चाबी थमा दी।

नन्हीं लिन ने रोना-धोना बन्द कर दिया था, लेकिन उसकी आँखें सूज गई थीं। उसे कुओमिनताङ्ग कमेटी के उस मैम्बर का ख्याल आया, जिसके मुँह पर चेचक के दाग़ थे, और जो उनका स्कूल देखने आया था। लिन ने कल्पना में देखा कि वही आदमी उसकी माँ का हार हिला-हिला कर एक भयानक हँसी हँस रहा है और वह आदमी उसके पिता के साथ भी झगड़ रहा था।

"ओह!" उसकी आँखों से फिर आँसू बहने लगे।

"आह नुआन, रोते नहीं", माँ ने उसे ढाढ़स बन्धाया। हिक्—नये वर्ष के बाद जब तुम्हारे पिताजी के पास पैसे होंगे, तो वे तुम्हें जरूर नये कपड़े बनवा देंगे।—हिक्—लुटेरे—भेड़िये! हिक्—उनका ख्याल है कि हम पैसे वाले हैं—हिक्—लेकिन तुम्हारे पिता को तो हमेशा घाटा

ही सहना पड़ा है। हिक्—ये कम्बख़्त हिचकियाँ तो मेरी जान लेकर ही हटेंगी। तुम उन्नीसवां पार कर लो तो हम कोई अच्छा सा आदमी ढूंढ कर तुम्हें उसके सपुर्द करें—हिक्—फिर मैं शान्ति से मर सकूँगी हिक्—हे दयानिधान !

अगले रोज लिन का स्टोर बड़ी धूमधाम से सजा था। सारा जापानी माल जो पिछले सप्ताह छिपा दिया गया था, आज फिर बाहर निकल आया था। मिस्टर लिन ने शंघाई की सब मशहूर दुकानों की नक़ल करके खिड़की पर लाल और हरे रँग की बड़ी-बड़ी तख़्तियाँ लटकाई थीं, "सुनहरी अवसर ! दामों में १०% कमी !" दिसम्बर की तेईस तारीख थी, नया वर्ष शुरू होने वाला था, मिस्टर लिन को आशा थी कि अगले कुछ दिनों के कारोबार पर ही सब कुछ निर्भर करता है—हो सकता है कि उससे छीने गये ४०० डालर वापिस मिल जायें और उसकी बेटी के लिये नये कपड़ों का प्रबन्ध भी हो जाये।

क़रीब दस बजे थे। ग्रामीणों के झुण्ड के झुण्ड बाज़ार से लौट रहे थे। उनके पीछे बच्चों का लम्बा जलूस था और सबके हाथों में टोकरे पकड़े हुए थे। लिन के स्टोर की भड़कीली-चटकीली खिड़की पर लगे रंगबिरंगे सस्ती बिक्री के विज्ञापनों को देख कर वे मुग्ध हो गये और वहीं रुक गये। हर किसी को नये वर्ष के लिये किसी न किसी चीज की जरूरत थी। किसी को नये मोज़ों की, कोई टूटी-फूटी चिलमची से तँग आकर नई चिलमची ख़रीदना चाहता था, किसी को नये तौलिये की, क्योंकि पिछले छैं महीनों से सारा परिवार एक ही चिथड़े से बदन पोंछता रहा था। किसी के साबुन को ख़त्म हुए एक महीना ग़ुज़र गया था और वह नये साल के अवसर पर इस विलास-सामग्री से वंचित नहीं रहना चाहता था।

मिस्टर लिन खिड़की के पीछे खड़ा उत्सुकता से उन लोगों के भीतर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी और वह सड़क के किनारे खड़े ग्रामीणों के झुण्ड को देख रहा था, साथ ही

साथ उसकी आँखें दुकान में काम करने वाले नौकरों पर भी लगी थीं, उसे उम्मीद थी कि सब चीजें हाथों-हाथ बिक जायेंगी और पैसा दौड़ा आयेगा।

लेकिन वे गँवार लोग सिर्फ़ उँगलियों से इशारा करते हुए चीजों की प्रशंसा कर रहे थे। कुछ देर बाद झुण्ड का झुण्ड सड़क पार करके यू-चांग-सियांग की दुकान के सामने जा खड़ा हुआ और वहाँ भी वही ताँक-झाँक और इशारेबाजी दोहराई गई।

मिस्टर लिन की आँखों में खून उतर आया था। वह गर्दन घुमा कर सम्भावित ग्राहकों की प्रतीक्षा में खड़ा था, लेकिन लोग बेखबर चाल से अपने रास्ते चल रहे थे।

"हिक्!" श्रीमती लिन की हिचकी का परिचित स्वर, जिसे वे इतनी देर से दबाये थीं, उनके मानसिक उद्वेग के कारण मुँह से निकल ही गया। नन्हीं लिन भी माँ का सहारा लेकर लकड़ी के पर्दे की ओट में खड़ी निराशा भरी दृष्टि से ग्रामीणों के झुण्ड को देख रही थी जो धीरे-धीरे तितर बितर हो रहा था, उसे ऐसा लग रहा था, मानो उसके नये कपड़े भी दूर हटते जा रहे हैं।

मिस्टर लिन ने एक क़दम आगे बढ़कर ईर्ष्याभरी आँखों से सामने की दुकान के अन्दर झाँका। लेकिन यू-चाँग-सियाँग की दुकान के भीतर भी सन्नाटा छाया था। देहाती लोग इधर-उधर की बकवास के बाद चहलक़दमी करते हुए दोबारा इधर ही लौट रहे थे।

इतने में एक और झुण्ड आ पहुँचा। झुण्ड में से एक छोकरा टकटकी बाँधे खिड़की में लटकते हुए छाते की ओर देख रहा था।

मिस्टर लिन ने उसे जा दबोचा। "अरे भाई, एक छाता खरीद डालो। सस्ती—सिर्फ़ ९० सैंट में!"

दुकान के छोकरे ने तो छाता खोल कर उसकी सुन्दरता का बखान भी शुरू कर दिया था।

"जनाबे वाला," उसने लुभावने स्वर में कहा, "देखिये, विदेशी काली

साटन और मजबूत ढाँचा। यह छाता गर्मियों में धूप को और बरसात में पानी को कोसों दूर रखेगा। सिर्फ़ ९० सैन्ट में। सामने की दुकान वाले इसी को पूरे डालर में बेच रहे हैं!"

देहाती छोकरे ने छाता ले लिया और मुँह बाए उसे देखता रहा। कुछ देर ठहर कर उसने अपने साथ के एक बुजुर्ग की ओर, जिसकी उम्र पचास से ऊपर थी, प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा, मानो पूछ रहा हो, "क्या इसे खरीद लूँ?"

बूढ़े ने चिल्ला कर कहा, "बेटा, तुम्हें भी क्या सनक सवार हुई है! ईंधन की पूरी नाव से हमें कुलजमा तीन डालर मिले हैं, उधर माँ चूल्हे पर हँडिया धरे चावलों की इन्तज़ार में बैठी होगी। भला छाते के लिये पैसे कहाँ हैं?"

लड़का शर्म के मारे लाल हो गया। उसने अनमने भाव से छाता लौटा दिया, "सस्ता ज़रूर है, लेकिन मेरे पास पैसे नहीं" वह धीमे स्वर में बुदबुदाया।

"अरे भलेमानस, ज़रा इसे देखो तो सही! अच्छा तुम इसका क्या दोगे?"

बूढ़ा जल्दी-जल्दी अपने लड़के को घसीट कर वहाँ से चलता बना, और मिस्टर लिन भौंचक्के से देखते ही रह गये। उनकी तमाम आशाओं और उत्साह पर ठंडा पानी पड़ गया था। उन्होंने सोचा, इसका यह मतलब नहीं कि मैं असफल दुकानदार हूँ, बल्कि यह कि वह देहाती लोग ग़रीब हैं। फ़सल कटते ही ज़मींदार और बनिये उन्हें आ दबोचते हैं, और उनकी हड्डियाँ तक चूस डालते हैं। इस विचार के आते ही मिस्टर लिन का रोम-रोम ज़मींदारों और बनियों के प्रति घृणा से भर उठा। उसे लगा कि वही लोग उसकी कम बिक्री के लिए जिम्मेवार हैं।

दोपहर होने तक लिन स्टोर वाले सिर्फ़ एक डालर भर का माल बेच पाये—इनसे तो विज्ञापन की तख्तियों का खर्च भी मुश्किल से निकल सकता था।

मिस्टर लिन का चेहरा उतर गया और वह मुँह लटका कर घर लौट आये, उन्होंने आँख उठा कर अपनी बेटी को भी न देखा, जो रुआँसी-सी एक कोने में दुबकी बैठी थी। और न ही अपनी बीवी को, जो बडबड़ा रही थी, "चार सौ डालर वैसे गँवाये, और रात भर जग कर दुकान को सजाया! जापानी माल बेचने की छुट्टी तो मिल गई, लेकिन खरीदने वाले कहाँ हैं? हिक्—आह नुआन के पिता, नौकरानी अपनी तनख्वाह मांग रही है।"

"शायद शाम तक हालत सुधर जायेगी" मिस्टर लीन ने बीवी को तसल्ली देने के लिये अनमने मन से कहा, लेकिन उनके दिल में टीसें उठ रही थीं, जैसे किसी ने छुरी भोंक दी हो; उन्हें कोई रास्ता न सूझता था, व्यापार का तो चारों ओर मन्दा था। तो भी उन्हें शाम तक हालत सुधरने की उम्मीद थी, क्योंकि शहरी लोग शाम के समय ही खरीद-फ़रोख्त के लिये निकलते हैं। आखिर वे भी तो नये साल के लिये कुछ न कुछ खरीदेंगे ही!

इसी आशा से वह दिल पर काबू करके, दोपहर के खाने के बाद ग्राहकों की राह देखने लगा। उसका विचार सही निकला क्योंकि शाम के समय की हालत दोपहर से भिन्न थी। वैसे तो इने-गिने लोग ही दिखाई पड़ते थे, लेकिन मिस्टर लिन लगभग सब के नामों से परिचित था, यहाँ तक कि उनके बाप, दादा के नामों से भी। वह दुकान के दरवाज़े से ही आवाज देकर कहने लगा, "अखवाह!—तो आप 'कूल ब्रीज टी हाउस' (चायघर का नाम) से आ रहे हैं! हमारी दुकान में चीज़ें सस्ते दामों में बिक रही हैं, जरा अन्दर आकर देखिये!"

किसी के अन्दर आने पर सारे के सारे नौकर क़तार बाँध कर खड़े हो जाते और ग्राहक की आवश्यकता का ज्योतिष लगाने में एक दूसरे से होड़ लगाते, अक्सर इन 'चचाजान' से मिलने के लिये नन्हीं लिन

को भी पर्दे के भीतर से बुलाया जाता—एक नौकर लपक कर चाय का प्याला और 'रूबी क्वीन' की सिगरेट ले आता।

अन्धेरा होने पर बत्ती की रोशनी में जब मिस्टर लिन ने दिनभर की आमदनी का हिसाब जोड़ा तो शाम की बिक्री आशा से कहीं अधिक थी। उनके ओठों पर मुस्कुराहट की एक रेखा दौड़ गई लेकिन अगले क्षण ही उन्हें याद आया कि आखिर चीजों को ख़रीद से थोड़े दामों पर ही तो बेचा गया है। कुछ देर तक शून्य आँखों से सामने देखने के बाद उन्होंने सन्दूक से बही-खाते निकाले—हिसाब जोड़ने की तख़्ती के मनके झनझना उठे। मिस्टर लिन की उँगलियाँ तेज़ गति से ऊपर-नीचे चल रही थीं।

हिसाब ख़त्म होने पर पता चला कि कर्ज़ की बड़ी मदों को चुकाने के लिये भी उसके पास पर्याप्त पैसा नहीं। अब की बार नये साल के मौके पर हाथ बहुत तँग रहेगा।

अभी तक वह इसी सोच में डूबा था कि किस तरह चीज़ों को कम दामों में बेचा जाये, और ग्रहकों के खिंचते ही फ़ौरन दाम बढ़ा दिये जायें। इतने में किसी के पैरों की आहट से उसकी विचार तंद्रा टूटी। हाथ में नीले रँग का थैला पकड़े एक बूढ़ी औरत उसके सिरहाने खड़ी थी। मिस्टर लिन ने सर उठा कर देखा। अब कन्नी काटने का भी मौका न था।

"श्रीमती चू," उसने फिर भी सीधी मुठभेड़ से कतराते हुए कहा, "क्या नये साल की चीज़ें ख़रीदने गई थीं? अरे आप घर नहीं जायेंगी? मेरी बीवी और लड़की आपसे मिलकर बहुत खुश होंगी।"

लेकिन श्रीमती चू ने जल्दी से हाथ हिला कर अपनी असम्मति प्रकट की और दुकान के बीचों-बीच पड़ी एक कुर्सी पर धम्म से बैठ कर अपनी नीली पोटली खोलने लगी। उसमें एक रसीद की कापी थी, जिसे

बुढ़िया अपने दोनों हाथों से इस तरह पकड़े थी मानो कोई बेश-कीमती चीज़ हो।

कुछ कहने की तैयारी में वह अपने मसूड़ों को भींच ही रही थी कि मिस्टर लिन ने बीच में ही टोक दिया। "अरे हाँ, मुझे याद है, मैं कल आपको भिजवा दूँगा।"

"दसवाँ महीना, ग्यारहवाँ महीना और अब बारहवाँ महीना", बुढ़िया ने कड़क कर कहा' "कुल तीन महीने हुए, तीन गुणा तीन=नौ डॉलर ! नहीं, आप मुझे अभी दे दीजिए।"

बुढ़िया के पोपले मुँह और पिचके गालों वाले ज़िद्दी चेहरे को देख कर मिस्टर लिन ने भाँप लिया कि बुढ़िया के दुकान में लगाये हुए तीन सौ डॉलरों का सूद चुकाये बिना इस बार पिण्ड छुड़ाना नामुमकिन है।

"अच्छी बात है, अभी दे देता हूँ", झगड़े-तमाशे से बचने के लिए उसने फूहड़ ढंग से कहा।

मन में कुढ़ते-कुढ़ते उसने तिजोरी में से आठ डॉलर और कुछ टूटे सिक्के निकाले और सूद की रक़म को पूरा करने के लिए बीस सेन्ट की तलाश में अपनी जेब टटोली। बुढ़िया ने एक-एक सिक्के को ध्यान से गिना और पूरी तसल्ली करने के बाद काँपते हुए हाथों से पोटली बाँध ली। यह देखकर मिस्टर लिन ने चैन की सांस ली। लेकिन आदमी दुकानदार था, चट से बोला 'श्रीमती चू, आपकी नीली पोटली तार-तार हो चुकी है। हमारे पास कुछ बढ़िया रूमाल हैं।—आप एक रूमाल या नये साल के लिये कोई तौलिया या साबुन की टिकिया नहीं ख़रीदेंगी ?"

"जी नहीं, मैं बूढ़ी ठहरी; मुझे इन चीज़ों से क्या वास्ता ?" और श्रीमती चू अपनी नीले रंग की पोटली को समेटती हुई दुकान से बाहर चली गईं।

मिस्टर लिन को याद आया कि अभी और दो लोगों का सूद चुकाना

हैं। बूढ़े चेन सातवें[२] ने दुकान में दो सौ डॉलर और चांग की विधवा ने डेढ़ सौ डॉलर लगाये थे। दोनों का कुल जमा सूद दस डॉलर के क़रीब बैठेगा। मिस्टर लिन ने घर जाते समय अपनी उँगलियों पर हिसाब लगाया। उसका विश्वस्त नौकर शू-शैंग पैसे उगाहने के लिए गाँव गया हुआ था। उसे २६ तारीख़ तक लौट आना चाहिए था। स्थानीय लेन-देन तो नये साल तक भी चल सकता है, लेकिन शंघाई के व्यापारी का आदमी तो उससे पहले ही आ धमकेगा। उसे झक मार कर फिर हेङ्ग-युआन नेटिव बैंक से क़र्ज़ लेना पड़ेगा।

वह कमरे में इधर-उधर टहल कर मन ही मन हिसाब लगा रहा था कि उसकी लड़की खुशी से चिल्लाती हुई आई। "पिता जी यह साटन का टुकड़ा देखा! सात गज़ सिर्फ़ चार डॉलर बीस सेन्ट में। कितना सस्ता है?"

मिस्टर लिन चौंक उठे, जैसे किसी ने मुँह पर तमाचा मार दिया हो। उनकी लड़की साटन का टुकड़ा हाथ में लेकर आडम्बर-पूर्ण ढंग से हँस रही थी।

पिता ने एक क्षण के लिये उसे घूरा, फिर अपनी पूरी ताक़त लगा कर पूछा, "इसके लिये पैसे कहाँ से आये थे?"

"उधार पर।"

मिस्टर लिन का दिल जलभुन कर खाक हो गया, लेकिन वे जानते थे कि बेटी के शौक पर टीका-टिप्पणी करने से पत्नी के क्रोध को भी भुगतना पड़ेगा, उन्होंने केवल इतना ही कहा, "कम से कम नये साल तक तो रुक जातीं!"

अगले कुछ रोज, लिन-स्टोर में ग्राहकों का काफ़ी बड़ा ताँता बँधा रहा। माँ लिन की हिचकियाँ भी थम गई थीं और नन्हीं लिन मधुमक्खी

२. चेन सातवां—चीन में यह बताने के लिए कि अपने चचेरे भाइयों में उसका कौन-सा स्थान है, जाति-नाम के पीछे संख्या भी जोड़ दी जाती है।

की तरह दुकान के भीतर और बाहर चहकती नजर आती थी। उसका चेहरा चैरी की तरह सुर्ख था और वह अपनी मुस्कुराहट की किरणें चारों ओर बिखेरती जाती थी।

माँ ने कहा, "इतनी उछल-कूद मत मचाओ, वरना थक जाओगी।" उसने जवाब दिया, "माँ, तुम फिर क्यों मुझे दिक़ कर रही हो?—मैं थकी नहीं। पिताजी पसीने में लथपथ हैं। चिल्लाते-चिल्लाते उनकी आवाज़ भारी हो गई है। हमें आज दुकान में सिर खुजलाने की भी फ़ुर्सत नहीं,—मुझे अभी वापिस लौटना है।"

देखने को तो मिस्टर लिन के चेहरे पर भी मुस्कुराहट थी, लेकिन अन्दर ही अन्दर उनका दिल बैठा जा रहा था। तिजोरी में डॉलर डालते समय उन्हें बरबस ही इस बात का ख्याल आ जाता कि कम दामों की वजह से एक डॉलर के पीछे पाँच सैन्ट का घाटा सहना पड़ेगा। जब सन्तोषजनक ख़रीद-फ़रोख्त के बाद, ग्राहक खुशी-खुशी दुकान से निकलते तो मिस्टर लिन को ऐसा लगता मानो वे उनके दुश्मन हैं। जितनी अधिक बिक्री होती थी, उससे दुगना घाटा पड़ता था। बीच-बीच में वह कनखियों से यू-चाङ्ग-सियाङ्ग की दुकान में भी झाँक लेता, उसकी आँखों के सामने शरारत से मुस्कुराते हुए नौकरों के चेहरे घूम गये, ये जरूर कह रहे होंगे, "बुड्ढ़ा लिन! सचमुच ही खरीद से कम दाम में चीजें बेच रहा है! जितना अधिक बेचेगा, उतनी जल्दी अपना दिवाला पिटवायेगा।"

लिन ने अपने होंठ चबाते हुए सोचा, कि उसे भी अपने दाम बढ़ा देने चाहियें; क्यों न घटिया चीजों के दाम भी बढ़िया चीजों के बराबर कर दिये जाएँ?"

इस गड़बड़ के बीच ही स्थानीय व्यापारी मण्डल का प्रधान, जिसने जापानी माल की बिक्री पर पाबन्दी दूर करवाने में मदद की थी, उसकी परेशानियों को बढ़ाने के लिये आ टपका। शाबासी से लिन की पीठ ठोंकते हुए उसने कहा "कैसे हाल-चाल हैं? पाँचों घी में—क्यों?" फिर आवाज़ को थोड़ा धीमा करके फुसफुसाया," आखिर ४०० डालर

बेकार नहीं गये ! लेकिन देखो, ज़रा ब्यूरो के अफ़सर पू को खुश रखना, वरना वह समझेगा कि तुम बहुत गहरे हाथ मार रहे हो ! छोटे-मोटे उपहार देकर उसी को थाम लेना, ताकि ऐरे-ग़ैरे की हिम्मत न खुले।"

इस सलाह से मिस्टर लिन को गहरा धक्का लगा, जिसके परिणाम-स्वरूप बाद की बिक्री में उनकी रही सही दिलचस्पी भी ख़त्म हो गई।

उन्हें सबसे अधिक चिन्ता तो इस बात की थी, कि उनका नौकर, शू-शेङ्ग अभी तक नहीं लौटा था। शँघाई की तुंग-शेन-थोक कम्पनी का कारिन्दा आ पहुँचा था, और पैसे का तकाज़ा कर रहा था। उसे टालना एकदम असम्भव था। अगर शू-शेंग ने पैसे उगराहने में देरी की, तो फिर मजबूर हो कर मिस्टर लिन को हेंग-युआन नेटिव बैंक से चौगुने सूद पर कर्ज़ लेना पड़ेगा।

एक रोज़ की बात है, शाम के चार बजे थे, अचानक ही सड़क पर का शोरोगुल सुन कर मिस्टर लिन को ऐसा लगा मानो कोई उनके शरीर में सूईयाँ चुभो रहा हो। लोग उत्तेजित स्वर में चिल्ला रहे थे। मिस्टर लिन के दिमाग़ में शू-शेंग के विचार चक्कर काट रहे थे। उन्होंने सोचा, हो न हो, लीशी से आने वाली नौका किसी दुर्घटना का शिकार हो गई है। या तो नदी में उलट गई होगी या डाकुओं ने उसे लूट लिया होगा।

वे भागे-भागे जब सड़क पर आये तो कलेजा धक्-धक् कर रहा था, "क्या हुआ ! क्या लीशी से आने वाली नौका को डाकुओं ने लूट लिया ?" उन्होंने चिल्लाकर राहगीरों से पूछा।

"डाकू ? सड़कों पर घूमना ख़तरे से ख़ाली नहीं—आज अपहरण की वारदातें भी हो रही हैं।" शहर के मशहूर गुण्डे ने लिन-स्टोर की खिड़की पर लगे बिक्री के रँग-बिरँगे विज्ञापनों को ललचाई आँखों से देखते हुए जवाब दिया।

इस जवाब से मिस्टर लिन के दिल को तसल्ली न हुई। उन्होंने एक और परिचित को जा घेरा, "क्या आपने सुना कि लीशी वाली नौका को

डाकुओं ने लूट लिया ? क्या यह सच है ?"

"ज़रूर हज़रते आह-शु के गिरोह की करतूत होगी !" उस आदमी ने एक मशहूर डाकू का नाम लेकर कहा। "हालाँकि उसे गोली से उड़ा दिया गया था—तो भी उसके गिरोह की सरगर्मियाँ जारी हैं।"

यह सुनते ही मिस्टर लिन को ठण्डे पसीने की तरेलियाँ छूटने लगीं। उन्हें विश्वास हो गया कि शू-शेंग लीशीवाली नौका पर सवार था—उन्हें इस बात का रत्तीभर भी ख्याल न आया कि नौका-दुर्घटना सिर्फ़ उनकी कल्पना की उपज थी।

घर पहुँचने की जल्दी में उनके पाँव ऊँची दहलीज़ से टकरा गये, इतने में उनकी लड़की भागा हुई आई। "पिता जी ! शँघाई में लड़ाई छिड़ गई ! जापानियों ने चेपी पर बम गिराये हैं।"

मिस्टर लिन भौंचके से लड़की के मुँह की ओर ताकने लगे।

शंघाई में लड़ाई छिड़ने से उनका क्या वास्ता ? लेकिन 'जापान' के ज़िक्र से उन्हें जापानी माल के कष्टदायक प्रसंग का ख्याल आ गया। उन्होंने दिलचस्पी दिखाते हुए पूछा, "तुमने किससे सुना ?"

"सड़क के सब लोग यही चर्चा कर रहे हैं। कहते हैं कि जापानियों ने चेपी पर गोले-बारूद बरसाये हैं। चारों ओर आग लग गई है।"

"क्या किसी ने यह भी बताया कि लीशी वाली नौका को डाकुओं ने लूट लिया है ?"

नन्हीं लिन ने सिर हिलाकर असम्मति प्रकट की और तीर की तरह वहाँ से भाग गई, जैसे प्रकाश को देखकर पतंगा भागता है।

मिस्टर लिन बदहवासी की हालत में पर्दे के पास खड़े रहे। उन्होंने अपना सर खुजलाया। कमरे के भीतर से उनकी पत्नी के प्रार्थना करने की आवाज़ सुनाई पड़ी, "हे बुद्ध और बोधिसत्वो ! हमारी रक्षा करो ! इन गोलों को रोको।" दूसरी ओर उनकी लड़की उत्तेजित झुण्ड के बीचोंबीच खड़ी लोगों की बातें सुन रही थी। सामने वाले स्टोर का मालिक चिन बार-बार अपनी जाँघों को थपकियाँ दे रहा था। चेपी पर

बमवर्षा हुई, शंघाई का सारा कारोबार बन्द हो गया है। क्या लीशी वाली नौका को डाकुओं ने लूट लिया ? नहीं, उसे यह खबर नहीं सुनाई पड़ी। तो इसका मतलब यह कि लीशी वाली नौका एक घण्टा पहले सुरक्षित पहुँच गई। मिस्टर लिन को पक्का विश्वास हो गया।

उन्हें लगा कि शू-शेंग कदापि उस नौका में नहीं हो सकता।

लोग सड़कों पर चिल्ला रहे थे, "जापान के पिट्ठू।" और "जापानी माल खरीदने वाले गद्दार हैं !"

यह सुनकर नन्हीं लिन शर्म से लाल हो गई, लेकिन मिस्टर लिन पर कोई विशेष असर नहीं हुआ। ४०० डालर देते समय उन्हें समझा दिया गया था कि जापानी लेबल फाड देने से मामला साफ़ हो जायेगा। देखते-देखते दुकान की सब चीज़ें "स्वदेशी माल" में बदल गई। ग्राहक लोग "स्वदेशी माल" की ही रट लगा रहे थे।

लेकिन मिस्टर लिन की तात्कालिक समस्या कुछ और ही थी। उन्हें फ़िक्र इस बात की थी कि शंघाई वाले आदमी से कैसे पिण्ड छुड़ाया जाये। अगर वह दो दिन और रुके, तो शू-शेंग पैसे लेकर लौट आयेगा।

मिस्टर लिन अनमने मन से उस ओर चल दिये, जहाँ वह आदमी बैठा इन्तज़ार कर रहा था। उसे एक कोने में लेजाकर उन्होंने संजीदा स्वर में बातचीत शुरू की।

उसका जवाब एक ही था, "मिस्टर लिन, आप व्यापारी होकर भी कैसी बातें करते हैं ? शंघाई में लड़ाई छिड़ गई है, हो सकता है किसी क्षण भी रेलगाड़ियों का आना-जाना बन्द हो जाये। मेरे बस में हो तो मैं आज शाम को ही वापस चला जाऊँ, भला दो दिन और कैसे रुक सकता हूं ? कृपया आज बिल अदा कर दीजिये, ताकि मैं कल तड़के ही रवाना हो सकूँ। मैं खुद नौकर आदमी हूँ, जरा मेरी मुश्किलों पर भी ध्यान दीजिये।"

इस करारे जवाब से हार कर आखिर मिस्टर लिन को हेंग-युआन नेटिव बैंक की शरण लेनी ही पड़ी। वे इस डर से कि कहीं बैंक के

मैनेजर बन्दर चेन को इस बात की गंध भी आ गई कि उसे कर्ज की कितनी सख्त जरूरत है, तो वह झट से ब्याज की दर चौगुनी बतायेगा, मिस्टर लिन सड़क के किनारे-किनारे भीगी बिल्ली बने जा रहे थे। लेकिन बैंक पहुँचने पर कुछ और ही माजरा देखने में आया। उन्हें उम्मीद थी कि मैनेजर सौदेबाजी करेगा, लेकिन सौदेबाजी तो एक ओर रही, वह बड़ी देर तक चुपचाप हुक्का गुड़गुड़ाता रहा।

फिर आनाकानी करते हुए वह बुदबुदाया, "मेरा मग़ज़ चाटने से कोई लाभ नहीं, जापान ने लड़ाई छेड़ दी है। शंघाई का कारोबार तो पहले से बन्द है। सब बैंकों पर ताले लग गये हैं। इसी कारण हमारे जैसे छोटे सहायक बैंकों की टाँगें भी टूट गई हैं। मुझे खेद है, मैं आपकी मदद अवश्य करता, लेकिन क्या करूँ, लाचारी है।"

मिस्टर लिन ने मैनेजर पर एक निराश दृष्टि फेंकी। उन्हें अब भी विश्वास था कि यह सब टालमटोल, मुँहमाँगा ब्याज माँगने की भूमिका मात्र है। उन्हें सपने में भी इस बात की आशा न थी कि बैंक का मैनेजर जो देखने में किसी मरणासन्न तपेदिक के रोगी की तरह लगता था, अपनी आवाज़ को रहस्यभरे ढंग से धीमी करके फुसफुसायेगा, "हमारे तुच्छ बैंक के डायरेक्टरों को समाचार मिला है कि गड़बड़ के बढ़ने की पूरी आशंका है। इसलिये मुझे बड़ी रक़मों के सूद को वसूल करने की आज्ञा मिली है। श्रीमान् की दुकान पर हमारे ६०० डालर निकलते हैं, पारस्परिक विश्वास पैदा करने के लिये और बाद की परेशानियों से बचने के लिये यही अच्छा होगा कि आप यह हिसाब नये साल से पहले ही साफ़ कर दें।"

मिस्टर लिन अवाक् रह गये। कुछ देर बाद रुँधे गले से केवल यही शब्द निकल पाये, "मेरी—मेरी छोटी-सी दुकान आगे ही मुश्किल से चल रही है—यह—यह तो हमारी नये साल की आमदनी पर निर्भर करता है।"

"इतने नम्र मत बनो।" मैनेजर ने निर्ममता से फटकारते हुए कहा, "पिछले कुछ दिनों से तो तुम्हारी खूब बन आई है! सिर्फ़ ६०० डालर! तुम्हारे सामने बड़ी चीज़ तो नहीं। मैं तुम्हें दिल की बात बताना चाहता हूँ, तुम्हें हिसाब तो चुकाना ही पड़ेगा, वर्ना मैं डायरेक्टरों को मुँह दिखाने लायक न रहूँगा।"

इतना कहकर रोगी लगने वाला मैनेजर दिखावटी हँसी हँसने लगा, मिस्टर लिन को काटो तो लहू का नाम नहीं। मैनेजर अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ था। मिस्टर लिन मन मसोस कर रह गये।

अब उनकी समझ में आने लगा कि शंघाई में छिड़ी लड़ाई का उनकी छोटी-सी दुकान से क्या सम्बन्ध है। वे अब क्या करें? दिवाला निकलने में क्या क़सर बाकी थी? अगर सारी दुकान नीलाम भी कर दी जाये, तो भी उसके पल्ले कुछ नहीं रहेगा, क्योंकि लगभग सारी की सारी चीज़ें और लोगों के लगाये हुए पैसे से खरीदी गई थीं—उनका हिसाब भी तो साफ़ करना होगा।

घर लौटते समय मिस्टर लिन को 'फ़ेयरी व्यू' पुल पर से गुज़रना पड़ा, नदी में बहते नीले पानी को लालसा-भरी दृष्टि से देखा। काश! कि उनमें नीचे कूदकर प्राण देने की हिम्मत होती—तो सारे कष्टों से मुक्ति मिल जाती।

उसी समय पीछे से किसी ने आवाज़ दी, "मिस्टर लिन, क्या यह ठीक है कि शंघाई में लड़ाई छिड़ गई है? सुना है कि सिपाहियों की एक रेजिमेंट यहाँ भी आ पहुँची है। वे लोग अभी तक पूर्वी हिस्से में हैं। यह भी सुना है कि उन्होंने जाकर व्यापार-मंडल से २०००० डालर की माँग की, इस पर विचार करने के लिये एक मीटिंग बुलाई गई है।"

मिस्टर लिन ने मुड़कर देखा तो सामने चेन सातवाँ खड़ा था—जिसने दुकान में २०० डालर लगाये थे—वह भी लेनदारों में से था।

"ओह!" मिस्टर लिन काँप उठे और जवाब में एक भी शब्द कहे

बिना, सहमे खरगोश की तरह घर की ओर खिसक दिये।

रात को खाने के समय उनका चित्त कुछ ठिकाने पर आया। श्रीमती लिन ने आज पति को स्वादिष्ट लगने वाला सूअर का गोश्त सोया की फलियों में मिलाकर पकाया था। उसकी सुगन्ध की लपटों से दिमाग़ को तरावट मिली। साथ में पीली शाओसिंग शराब भी थी। नन्हीं लिन की खुशी का ठिकाना न था, क्योंकि आज दुकान की बिक्री बहुत बढ़िया रही थी, और उससे भी बड़ी बात यह कि नये साल के लिये लाल साटन का गाउन भी सिलकर तैयार हो गया था। श्रीमती लिन भी खुश थीं, और उनकी हिचकियाँ ग़ायब हो गई थीं, सिर्फ़ मिस्टर लिन की छाती पर एक बोझ लदा था। गिलास में शराब उँडेलते समय उनकी आँखें बारी-बारी से पत्नी और लड़की पर टिकी थीं, जी में आया कि उन्हें आर्थिक स्थिति के विषय में स्पष्ट कह दे, लेकिन बात ज़बान पर आते-आते रुक गई। सच बोलने की हिम्मत न थी। पारिवारिक शान्ति को भंग करने की अपेक्षा आखिरी क्षण तक चुप रहना बेहतर था। अगर बिक्री इसी तरह जारी रही, तो शायद दिवाला निकलने की नौबत न आये।

इस आशा से और शराब की खुमारी से मिस्टर लिन की रात चैन से कट गई। बिस्तर पर लेटते ही उन्हें गहरी नींद आ गई, और सारी रात घोड़े बेचकर सोने के बाद सुबह छः बजे उनकी आँखें खुलीं।

मौसम में ठंडक और फीकापन था। जब नींद खुली तो मिस्टर लिन की तबियत कुछ भारी-सी थी। झटपट नाश्ता करने के बाद वे दुकान पर पहुँचे। अन्दर घुसते ही शंघाई वाले कारिन्दे का मनहूस चेहरा दिखाई पड़ा—वह जवाब की इन्तज़ार में सुबह से वहीं डटा था।

मिस्टर लिन उसे देखकर ठिठक गये, उन्हें इस बात का सपने में भी ख्याल न था कि वह इतनी सुबह वहाँ पहुँच सकता है। उन्होंने झाँक कर चू-चाँग-सियाँग की दुकान में देखा। एक अज्ञात आशंका से उनका रोम-

रोम काँप उठा । प्रतिद्वन्द्वी दूकान में भी रंग-बिरंगे विज्ञापनों द्वारा सस्ती बिक्री की घोषणा कर दी थी । यह विज्ञापन रातों-रात मिस्टर लिन के सपनों को छिन्न-भिन्न करने के लिये निकल आये थे, उनकी सब आशाओं पर पानी फिर गया ।

"मिस्टर लिन, क्या आप मुझसे मजाक कर रहे हैं ?" कारिन्दे ने बिगड़ कर शिकायत भरे स्वर में कहा, "आपने कल भी बिल चुकाने का नाम नहीं लिया । मुझे आठ बजे की नौका से आज अवश्य जाना है— समय थोड़ा है—कृपया जल्दी ही—"

कारिन्दे ने जोर देने के लिये मेज़ पर मुट्ठी दे मारी । मिस्टर लिन ने बहुतेरा समझाया, लेकिन उसके कानों पर जूँ तक न रेंगी ।

"तो फिर मैं खाली हाथ लौट जाऊँ ?"

"जी नहीं, यह कौन कहता है ?" मिस्टर लिन ने ईमानदारी के स्वर में जवाब दिया, "हमारा आदमी शू-शेंग अभी तक नहीं लौटा । उसके आने की देर है कि मैं आपकी पाई-पाई चुका दूँगा । यक़ीन मानिये, क़सम खाकर कहता हूँ !"

मिस्टर लिन रुआँसे से हो गये थे । कारिन्दे ने रहस्यमयी चुप्पी अख़्तियार कर ली । उसके तकाज़े तो बन्द हो गये, लेकिन वह अपनी जगह से हिला नहीं । मिस्टर लिन को इस बात का डर था कि अगर कहीं लोगों को मालूम हो गया कि दुकान में कारिन्दा डटा है, तो उनकी साख मारी जायेगी ।

बाहर हल्की-हल्की बूँदाबाँदी हो रही थी । सड़क सुनसान पड़ी थी । पहले तो नये साल से पहले बिक्री के दिनों में ऐसा कभी नहीं हुआ था । न ही मौसम में इतनी खुश्की और नीरवता थी ।

मिस्टर लिन ने निराशा भरी दृष्टि से खिड़की के बाहर देखा । वे सोच रहे थे कि उनके जीवन में इतनी नीरसता क्यों है ? और उसके लिये कौन जिम्मेदार है ?

इतने में कारिन्दे के बोलने की आवाज़ आई। शायद वह सहानुभूति-पूर्ण शब्दों में मिस्टर लिन के हृदय की शंका का समाधान कर रहा था, उसने अप्रत्याशित भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, "मिस्टर लिन, आप एक भलेमानस हैं; आप में धैर्य और साहस की भी कमी नहीं। आज से बीस वर्ष पहले आप मालदार हो सकते थे, लेकिन अब ज़माना बदल चुका है। टैक्स दुगुने हो गये हैं—ग्राहकों की संख्या में कमी हो गई है। मैं तो हैरान हूँ कि आप अभी तक भी कारोबार को कैसे ज़िन्दा रख पाये हैं। निश्चय ही आपके साहस और योग्यता की दाद देनी पड़ेगी।"

मिस्टर लिन के ओठों पर एक नम्र, फीकी मुस्कान फैल गई।

कुछ देर बाद कारिन्दे ने अपनी बात जारी रखते हुए फिर कहा, "आपके शहर में भी इस साल कारोबार मन्दा है क्यों? बिक्री तो बहुत हद तक देहातियों पर निर्भर करती है—लेकिन देहाती ग़रीब हैं,—अरे नौ बज गये? क्या कारण है कि आपका आदमी अभी तक नहीं लौटा। विश्वस्त तो है न?"

आख़िरी सवाल से मिस्टर लिन चौंक उठे। वैसे तो शू-शेंग पिछले सात वर्ष से उनके यहाँ नौकरी कर रहा था, और कभी एक पाई की भी गड़बड़ नहीं हुई, फिर भी क्या पता—मिस्टर लिन की घबराहट को देख कर कारिन्दा खी-खी करके हँसने लगा।

मिस्टर लिन ने कारिन्दे की हँसी पर विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि इसी समय नन्हीं लिन जो लगातार सड़क पर झाँक रही थी, चिल्लाती हुई आई—"शू-शेंग आ गया!—वह बुरी तरह कीचड़ में लथपथ है!"

मिस्टर लिन के शरीर में सिहरन दौड़ गई, जिसमें सन्तोष की अपेक्षा आशंका की मात्रा अधिक थी। वह भाग कर दरवाज़े तक जाना चाहते थे, लेकिन कलेजा इतनी ज़ोर से धड़क रहा था, जैसे टाँगों को लकवा मार गया हो।

इसी समय शू-शेंग सर से पाँव तक कीचड़ में सना, अन्दर दाखिल हुआ। आते ही वह धम्म से एक कुर्सी पर बैठ गया—उसकी साँस फूल रही थी।

कई मिनिट गुज़र गये, मिस्टर लिन अवाक् खड़े शू-शेंग का मुँह ताकते रहे। आखिर उसकी जबान खुली, "बापरे! मुश्किल से जान छूटी! मैं तो लुट गया था!"

"आखिर एक्सप्रेस नौका को डाकुओं ने घेर ही लिया!"

"डाकूओं ने नहीं, सिपाहियों ने, वे शहर से बाहर ऊधम मचाये हुए हैं और लोगों को तंग कर रहे हैं, मैं तो सर पर पैर रख के भागा। ्नकी माँ......वहाँ तो ज़िन्दगी और मौत का सवाल था।"

शू-शेंग बातें करते समय अपनी कमीज़ के भीतर हाथ डालकर कुछ टटोल रहा था। उसने एक पोटली निकाल कर मिस्टर लिन के हाथों में थमा दी। "सब कुछ इसी में है। मैं जरा हाथ-मुँह धो आऊँ, अभी लौटा।"

मिस्टर लिन ने पोटली की रक़म गिनी और अनमने भाव से शंघाई वाले कारिन्दे के हाथों में सौंप दी। उसने नक़दी तो रख ली लेकिन दो हुण्डियां लौटा दीं, "मेहरबानी करके इन्हें भुनाने की तकलीफ़ और कीजिये, ताकि मैं पूरी रक़म नक़दी में ले जा सकूँ।"

"ज़रूर—अभी लीजिये!" मिस्टर लिन ने हामी भरी।

दुकान के एक छोकरे को हेंग-चुआन नेटिव बैंक में दौड़ाया गया।

कुछ देर बाद वह ख़ाली हाथ लौटा। उसने बताया कि बैंक वालों ने दोनों हुण्डियाँ मिस्टर लिन के कर्ज़ के एवज़ में रख ली हैं।

घबराहट में मिस्टर लिन को स्वयं बैंक की ओर भागना पड़ा। बूँदाबांदी की जगह बर्फ पड़नी शुरू हो गई थी, और मिस्टर लिन उत्तेजना में अपनी टोपी और छाता साथ ले जाना भूल गये थे। उनकी दौड़धूप भी बेकार साबित हुई और वे खाली हाथ लौट आये।

अब सिवा इस बात के और क्या चारा था कि कुछ दिनों के भीतर

ही बाक़ी की रक़म पूरी करने का वचन दे कर कारिन्दे से जान छुड़ाई जाये ?

उसके जाने के बाद ही शू-शेंग ने फुसफुसा कर मिस्टर लिन को बताया, "हमारी दुकान के बारे में अनेकों अफ़वाहें उड़ रही हैं, लोग कहते हैं कि हमारा दिवाला पिटने वाला है। मुमकिन है, हेंग-चुआन नेटिव बैंक वालों के कानों तक भी यह ख़बर पहुंची हो, इसी लिये वे इस ढंग से पेश आ रहे हैं। आख़िर ऐसी झूठमूठ ख़बरें उड़ाने वाला कौन है ? कहीं उन लोगों की करतूत तो नहीं ?" शू-शेंग ने ओंठ भींच कर यू-चाँग-सियाँग की दुकान की तरफ़ इशारा किया।

यह देखकर कि उसकी बात से मिस्टर लिन के हृदय को गहरा आघात पहुँचा है और वे चिन्ता के समुद्र में ग़ोते लगा रहे हैं, शू-शेंग ने फ़ौरन तसल्ली देने के लिए कहा, "हमें ऐसी झूठी अफ़वाहों की परवाह नहीं करनी चाहिये, मन्दी के दिन हैं शहर की नव्वे फ़ी सदी दुकानों के सामने यही समस्या है कि किस तरह नये साल से पहले घाटे को पूरा किया जाय। व्यापार मण्डल को कोई न कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा।

बर्फ़ तेज़ी से गिरने लगी थी और सारी सड़क एक सफ़ेद चादर से ढंक गई थी। हालाँकि सुबह का समय था और ढेर सी बिक्री होनी चाहिये थी, तो भी सड़क सुनसान थी। सिर्फ़ एक आवारा कुत्ता दुम दबाये हाँफता हुआ सामने से निकल गया। नये साल के मौके पर पहले कभी भी सड़क पर इतना मातम और मनहूसी नहीं होती थी। और यहाँ से दूर शँघाई में बैठकर जापानी देश के सबसे बड़े व्यापार केन्द्र को तबाह कर रहे थे।

नये वर्ष की चार छुट्टियों में मिस्टर लिन के घर में तहखाने की सी नीरसता छाई थी। इस ख़ामोशी के बीच रह रहकर मिस्टर लिन की ठंडी आहें, तथा श्रीमती लिन की हिचकियाँ सुनाई देती थीं। नन्हीं लिन ने न तो सर्द आहें भरीं, न ही उसे हिचकियाँ आईं—वह एक कोने में

बुत बनकर शून्य आँखों से सामने की ओर देख रही थी, मानो शरीर को काठ मार गया हो।

हर साल नये साल के मौके पर मिस्टर लिन दुकान के नौकरों-चाकरों को दावत देते थे। इस साल भी उन्हें इस परम्परा को निभाना ही पड़ा। सोचा चलो सबको स्थिति की गम्भीरता से परिचित कराके, इस बारे में कोई सलाह-मशविरा लेना ठीक होगा।

वे ख़ामोशी से शराब पी रहे थे, कुछ देर के बाद एक कर्मचारी ने कहा, "मैंने सुना है कि चेपी जल कर राख हो चुका है। लोग घर-बार छोड़कर सिर्फ़ तीनों कपड़ों से भाग रहे हैं; हाँक्यू की भी यही हालत है। शँघाई की अन्तर्राष्ट्रीय बस्ती में किरायों के दाम बहुत बढ़ गये हैं, इसीलिये शरणार्थी लोग धड़ाधड़ देहातों में आने लगे हैं। कल जो झुण्ड आया था उसमें कितने ही प्रतिष्ठित लोग भी थे। अब बेचारे दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं!"

शू-शेंग, जो हर बात को ध्यानपूर्वक सुन रहा था, आखिरी वाक्य से चौंक उठा। उसे एक तरकीब सूझ पड़ी। सारा प्याला एक घूँट में अन्दर उँड़ेल कर उसने मिस्टर लिन से आशापूर्ण स्वर में कहा "आपने कुछ सुना? चिलमचियाँ, तौलिये, मोज़े और दाँत साफ़ करने वाले ब्रशों के स्टाक से पिण्ड छुड़ाने का अच्छा मौका है।"

मिस्टर लिन पर इस बात का विशेष असर नहीं पड़ा। वे टुकुर-टुकुर ताकने लगे। इन सब चिन्ताओं से उनका दिमाग़ बर्फ़ की तरह सुन्न हो गया था।

"सचमुच ईश्वर ने कितना सुन्दर मौका भेजा है! शरणार्थी लोग इन चीजों के लिये तरसते होंगे।" शू-शेंग ने अपनी बात का स्पष्टीकरण करते हुए कहा।

"लेकिन और दुकानदारों के पास भी तो ये सब माल हैं!" मिस्टर लिन ने आपत्ति की। उनका मस्तिष्क सचमुच बहुत शिथिल पड़ गया था।

पर शू-शेंग अपनी बात पर अड़ा रहा, "आप इस बात को भूल रहे

हैं कि सिर्फ़ हमारी दुकान में ही इन चीज़ों का भारी स्टाक जमा है। सामने वाले यू-चाङ्ग-सियाङ्ग के पास तो मुश्किल से दस चिलमचियाँ निकलेंगी, वे भी पुरानी और टूटी-फूटी। जिस जगह शरणार्थी लोग टिके हुए हैं; हम उसी के आस-पास इश्तिहार चिपका देंगे। भला फिर हमारी बिक्री को कौन रोक सकता है ?"

मिस्टर लिन मन ही मन अविश्वास करते हुए भी और लोगों को आगामी बिक्री का ढाढ़स बँधाने लगे। अगर थोड़ा सा पैसा भी हाथ में आ जाये तो कुछ दिनों के लिये मुसीबत टल सकती है।

सब लोग रात भर जाग कर दुकान सजाने में जुटे रहे। दूसरे दिन तड़के ही पटाखों की आवाज के साथ नये वर्ष का उद्‌घाटन किया गया। निराली सजधज के साथ दुकान शरणार्थियों के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। अधिकांश शरणार्थी रेशम के कारखानों के पास ठहरे थे। शू-शेंग खुद वहाँ जाकर इश्तिहार चिपका आया था।

श्रीमती लिन भी तड़के से जगी हुई थीं। उन्होंने दया की देवी की मूर्ति के सामने अगरबत्ती जलाकर कई बार साष्टांग प्रणाम किया था। आज की प्रार्थना में उन्होंने दुनिया भर की मिन्नतें मनाली थीं। सिर्फ इस बात की विनती करना भूल गई थीं, कि शंघाई की लड़ाई और भी अधिक लम्बी और भयंकर हो जाय जिससे उनकी दुकान पर शरणार्थी खरीदारों की संख्या बढ़ती जाय !

शू-शेंग की योजना खूब चल निकली। नये साल के बाद कुछ दिन तक तो सारे शहर की दुकानों की अपेक्षा लिन स्टोर में ही सबसे अधिक ग्राहकों की भीड़ रही। एक दिन में इतनी बिक्री पिछले दस सालों में कभी न हुई थी। उनके एक डॉलर वाले बण्डल जिनमें रोजमर्रा की जरूरत की छोटी-मोटी चीज़ें थीं हाथों-हाथ बिक गये, बर्फ़ में चलने के रबर के बड़े जूते और छाते भी लोगों को बहुत पसन्द आये। उस पर मजा यह कि शंघाई से आये शरणार्थी स्थानीय लोगों की तरह मोल-तोल के झगड़े में पड़े बिना ही चीजें ख़रीद लेते और चले जाते।

श्रीमती लिन दुबारा दया की देवी के आगे घुटने टेके बैठी थीं। लेकिन इस बार प्रार्थना की जगह उनका हृदय कृतज्ञता से भरा था। शू-शेंग की सफल तरकीब और होशियारी की बात सोच कर श्रीमती लिन ने सोचा कि कितने खेद की बात है कि वह उनकी बेटी से आयु में इतना अधिक बड़ा है, नहीं तो ऐसा दामाद पाना कम सौभाग्य की बात नहीं।

लेकिन मिस्टर लिन के सन्तोष में इतनी सम्पूर्णता न थी। जब हेंग-युआन नेटिव बैंक वालों ने इस शानदार बिक्री की ख़बर सुनी तो फ़ौरन ही पुराने कर्ज़ का तक़ाज़ा लेकर उनका कारिन्दा आ-धमका और तिजोरी में रखी रक़म का अस्सी प्रतिशत हिस्सा लेकर ही टला। उसके जाने के बाद छोटे लेनदारों की बारी आयी। श्रीमती चू, चेन सातवें और चाँग की विधवा ने इस बात की माँग की कि सूद के साथ ही साथ उनका मूलधन भी चुका दिया जाय। मिस्टर लिन को यह भाँपते देर न लगी कि किसी ने उनके कान भर दिये हैं। अवश्य ही दुकान के बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही होंगी, यह सोचकर उनका दिल बैठ गया।

रात को खाना खाते समय उन्होंने अपने सन्देह को प्रगट किया।

शू-शेंग का भी यही ख्याल था, "हो न हो किसी ने उनके कान भर दिये हैं। आख़िर इन तीनों की अक्ल है ही कितनी ?" यह कह कर शू-शेंग ने यू चियाँग-सियाँग की दुकान की ओर देखकर मुँह बिचका लिया।

लेकिन इन तीनों से टक्कर लेना मुश्किल था क्योंकि वे मूर्ख थे। लड़ने झगड़ने और बहस में पड़ने से कोई लाभ न था। इसलिये मिस्टर लिन ने अन्त में यही फ़ैसला किया कि उन्हें तंग आकर व्यापार-मण्डल के प्रधान को हस्तक्षेप करने के लिये कहना पड़ेगा।

मिस्टर लिन व्यापार-मण्डल के प्रधान के शिष्ट तथा सज्जनता-

पूर्ण व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित हुए। मालूम होता था कि लिन स्टोर की शानदार बिक्री का समाचार प्रधान के कानों तक भी पहुँच चुका था। इसीलिये वह मिस्टर लिन की योग्यता की भूरि-भूरि प्रशँसा करने के साथ ही सहायता करने का भी इच्छुक था। दुकान के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्होंने आशा प्रकट की कि लिन स्टोर वर्तमान आर्थिक मन्दे का मुकाबिला सफलतापूर्वक कर सकेगा।

फिर मिस्टर लिन की ओर एक भेदभरी मुस्कान से देख कर उसने धीमे स्वर में कहा, "मैं बहुत दिनों से आपको एक बात बताना चाहता था। ब्यूरो के अध्यक्ष ने न जाने कहाँ आपकी बेटी को देखा था, तभी से वह उस पर मोहित है। अफ़सर पू की आयु चालीस के करीब है, लेकिन अभी तक उसे बेटे का मुँह देखना नसीब नहीं हुआ। कहने को तो घर में दो बीवियाँ हैं लेकिन किसी के भी बच्चा नहीं हुआ। अगर आपकी बेटी उसे पुत्र प्रदान करे तो वह तत्काल घर की मालकिन बन सकती है। और तो और, मुझे भी उसकी जी-हज़ूरी करनी पड़ेगी।"

मिस्टर लिन ने सपने में भी कभी ऐसी बात नहीं सोची थी। कैसी विचित्र स्थिति थी? वे किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होकर प्रधान का मुँह ताकने लगे।

प्रधान ने बात जारी रखते हुए संजीदगी से कहा, "तुम्हारा पुराना दोस्त होने के नाते से मैं अपने दिल की बात बता रहा हूँ। देखने में यह बात शायद न जँचे, लेकिन सारी बात को और ढंग से सोचना पड़ेगा। आजकल ऐसा अक्सर देखने में आता है, और तुम्हारी बेटी की विधिपूर्वक शादी होने में किसी को सपने में भी सन्देह न होगा। फिर ब्यूरो के सर्वेसर्वा यू की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जाना कैसे सम्भव है? पानी में रहकर मगर से बैर! दूसरी ओर अगर वह प्रसन्न हो गया तो तुम्हारा सौभाग्य होगा। तुम स्वयं अपनी भलाई की दृष्टि से सोच लो।"

मिस्टर लिन की बदहवासी अभी दूर नहीं हुई थी। कुछ देर चुप रहने के बाद आख़िर वे भर्राई आवाज़ में बोले' "कृपया आप यह न सोचें

कि मैं आपकी शुभकामनाओं की कद्र नहीं करता, लेकिन बात यह है कि आजकल मेरी पारिवारिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं, न ही मेरी लड़की को इतना शऊर है कि वह ब्यूरो के मालिक की हैसियत के अनुकूल समाज में उठ-बैठ सके।" यह कहते समय मिस्टर लिन का दिल जोर से धड़क रहा था।

"हा ! हा !" प्रधान ठहाका मार कर हँस पड़ा। "अगर पू की इच्छा ऐसी ही है, तो इसमें तुम्हारा क्या क़सूर। तुम जाकर अपनी पत्नी से इस बारे में सलाह-मशविरा करो, इस बीच अगर पू आया तो मैं उसे यह कह कर टाल दूँगा कि अभी मुझे तुमसे इस बारे में बात करने का मौका नहीं मिला। लेकिन हाँ, मुझे अपने फ़ैसले से जल्द ही सूचित कर देना !"

"हूँ !" मिस्टर लिन ने रुँधे गले से जवाब दिया।

घर आते ही उन्होंने तत्काल अपनी पत्नी को सारा किस्सा बताया। अभी उनकी बात पूरी भी न हुई थी कि श्रीमती लिन की हिचकियों का ताँता बँध गया।

"भला हम कैसे इस बात को मान सकते हैं ?" श्रीमती लिन ने आपत्ति-जनक ढंग से कहा, "अगर वह आह-चुआन से शादी करने के लिये तैयार हो जाये, तो भी मैं अपनी लड़की उसके हाथों में नहीं सौपूंगी।"

"यही तो मैंने भी कहा था—लेकिन—"

आखिर हम भी इस शहर के प्रतिष्ठित नागरिक हैं; इन्कार करने से वह लड़की को जबरदस्ती घसीट कर तो ले जाने से रहा !"

"हमें तो कानो-कान खबर भी नहीं पहुँचेगी ! वह आदमी तो डाकुओं को भी मात करता है।"

अपने जीते जी तो मैं ऐसा नहीं होने दूँगी !" श्रीमती लिन ने आवेशपूर्ण स्वर में कहा "हे दयानिधान ! हमारे ऊपर दया करो !"

वह उठ कर दरवाज़े की ओर चल दी।

"तुम किधर जा रही हो ?" मिस्टर लिन ने चौंक कर पूछा।

इतने में ही नन्हीं लिन अचानक आकर कमरे की दहलीज़ में खड़ी हो गई। उसका चेहरा पीला जर्द पड़ गया था। शायद उसने पर्दे की ओट से छिपकर सारी बातें सुन ली थीं।

श्रीमती लिन ने बेटी को कसकर छाती से चिपटा लिया और सिसकियाँ भरने लगीं। "आह नुआन, मेरे जीते जी तुम्हें कोई छीनकर नहीं लेजा सकता। कितनी मुश्किल से पालपोस कर तुम्हें इतना बड़ा किया है। अगर मरना ही है, तो एक साथ ही क्यों न मरें ? हाय ! मैंने पहले ही तुम्हें शू-शेंग के हाथों क्यों नहीं सौंप दिया ?"

मिस्टर लिन भी ठँडी साँस भर कर यह दृश्य देखते रहे। वे बार-बार शोक से अपने हाथ मल रहे थे। माँ-बेटी के क्रन्दन ने विकट रूप धारण कर लिया था। उनके चीख-चहाड़े से पड़ौसियों के आशंकित होने की सम्भावना थी। इसलिये मिस्टर लिन ने मन मसोस कर दोनों को शान्त करने का प्रयत्न किया।

तीनों की रात परेशानी में गुजरी। मिस्टर लिन की मानसिक अवस्था अत्यन्त चिन्ताजनक थी। वे बार-बार अपने मन को समझाते की अगर पू की प्रार्थना को ठुकरा भी दिया जाये तो वह उन्हें हानि पहुँचाने में असमर्थ है। लेकिन उन्हें स्वयं इस बात का भरोसा नहीं था। उनकी बेटी अपनी सुन्दरता के कारण एक समस्या बन गई थी। देश की विषम परिस्थितियों ने कैसी उथल-पुथल मचा दी थी।

क्षितिज पर आशा की एक ही रेखा थी—वह थी इन दिनों की शानदार बिक्री। मिस्टर लिन इसी आशा को लेकर तड़के ही उठ खड़े हुए। रातभर जागने के कारण उनका सर दर्द से फटा जा रहा था और आँखें सूज गई थीं तो भी ग्राहकों के स्वागत के लिये इन्हें तैयारी करनी ही थी।

भीड़ में कई विचित्र से चेहरे दिखाई पड़े। मिस्टर लिन का कलेजा काँपने लगा। उन्हें सन्देह था कि अवश्य भीड़ में ब्यूरो के अध्यक्ष पू का

कोई आदमी शामिल है जो मौका पाते ही आफ़त खड़ी करेगा। लेकिन मिस्टर लिन के पास सोचने का वक्त नहीं था। दुकान में बेतहाशा भीड़ थी। शहर के परिचित लोग और बाहर से आये शरणार्थी, सभी शामिल थे। वे लोग चारों ओर घेरा डाले चीजें खरीदने के लिये धक्कामुक्की कर रहे थे। सारी की सारी दुकान देखते-देखते खाली हो गई थी। मिस्टर लिन को एक क्षण के लिये लगा, मानो उनकी दुकान की नीलामी हो रही है।

दोपहर के खाने के समय शू-शेंग ने फुसफुसा कर उनके कान में कहा, "एक और अफ़वाह उड़ाई गई है। लोग कहते हैं कि आपने चीजों के दाम इसलिये सस्ते कर दिये हैं, ताकि कुछ नक़दी हाथ में आने के बाद आप दिवाला निकाल सकें।"

मिस्टर लिन पर मानो वज्रपात हो गया। वे इस बात का क्या उत्तर देने वाले थे, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। आश्चर्य और चिन्ता से वे अभी अप्रतिभ से ही बैठे थे कि इतने में वर्दी पहने दो आदमी दुकान के अन्दर दाखिल हुए।

"दूकान के मालिक मिस्टर लिन किधर हैं ?" उन्होंने पूछा।

कोई जवाब मिलने से पहले ही उन्होंने मिस्टर लिन को जा दबोचा और उन्हें दुकान से बाहर ले गये।

शू-शेंग यह सोचकर कि कम से कम इस आकस्मिक घटना के कारण का तो पता लगाया जाये, लपक कर उनके पीछे हो लिया। लेकिन सिपाहियों ने उसे एक ओर धकेल दिया।

"तुम कौन हो! निकल जाओ यहाँ से! कुओमिन्तांग पार्टी के केन्द्रीय दफ़्तर वालों ने इन्हें पूछताछ के लिये बुलाया है।"

साँझ होने तक मिस्टर लिन लौट कर नहीं आये। दुकान के सारे कर्मचारियों की सलाह से यह फ़ैसला हुआ था कि जहाँ तक हो सके, श्रीमती लिन से यह समाचार गुप्त रखना चाहिये। लेकिन सब से छोटे छोकरे ने जाकर उन्हें सब कुछ बता दिया। यह समाचार सुनकर श्रीमती

लिन तत्काल पछाड़ खाकर गिर पड़ीं—होश में आते ही उनके दिमाग़ पर एक विचित्र सनक सवार हुई। वह यह कि नन्हीं लिन को कड़े पहरे में रखा जाये। उसका घर से बाहर आना-जाना बिल्कुल बन्द कर दिया गया।

"वे लोग तुम्हारे पिता को तो पहले से पकड़ ले गये हैं।" श्रीमती लिन ने कहा, "अब तुम्हारी बारी है।"

उन्होंने शू-शेंग को बुला कर पूछ-ताछ की, शू-शेंग ने सान्त्वना भरे कुछ शब्दों से श्रीमती लिन को टाल दिया। लेकिन नन्हीं लिन को स्पष्ट रूप से सारी स्थिति समझादी।

उसका इरादा था कि पार्टी के केन्द्रीय दफ़्तर में स्वयं जाकर सारे मामले की पूछताछ कर आये, लेकिन दोपहर भर दुकान में ग्राहकों का ताँता बँधा रहा।

आखिर साँझ के समय, व्यापार-मण्डल के प्रधान ने आकर समाचार दिया कि मिस्टर लिन गिरफ़्तार हो गये हैं। क्योंकि पार्टी के अधिकारियों ने उन पर लेनदारों से धोखेधड़ी करने का इलजाम लगाया है। पार्टी का मत है कि श्रीमती चू, चेन सातवें, और चाँग की विधवा जैसे ग़रीब लेनदारों के साथ घोर अन्याय हुआ है और उन "बेचारों" की रक्षा करना पार्टी का फ़र्ज़ है।

प्रधान की गोलमोल बातों को सुन कर शू-शेंग का चेहरा उतर गया। उसे यह उम्मीद न थी कि मामला इतना गम्भीर हो जायेगा। और बेचारे मालिक के ऊपर इतनी बड़ी आफ़त आयेगी।

"क्या मिस्टर लिन जमानत पर नहीं छूट सकते ?" शू-शेंग ने पूछा। बिना छूटे भला वे कर्ज़ के लिये पैसा कहाँ से जुटायेंगे ? उन्होंने कौनसा क़ानून भंग किया है ?"

"इससे क्या बनता बिगड़ता है ?" प्रधान ने खीज कर कहा। "जिस के पास ताक़त हो, क़ानून उसी की मुट्ठी में होता है, अगर लिन को छुड़ाना चाहते हो तो जाकर उन लोगों की मुट्ठी गरम करो।" इतना कह

कर प्रधान ने दो उँगलियों से ऊपर की ओर इशारा किया और वहाँ से खिसक गया।

शू-शेंग ताड़ गया कि रिश्वत देने के लिये दो सौ डालरों की जरूरत पड़ेगी।

घर के भीतर से उन्हें बार-बार आवाजें पड़ रही थीं। वे अभी किसी सोच में ही थे कि श्रीमती लिन अपनी बेटी के कन्धों का सहारा लेकर वहाँ आ पहुँचीं।

घबराहट से उनकी साँस फूली हुई थी। उन्होंने पूछा, "अभी—अभी व्यापार-मण्डल का प्रधान—वह क्या कह गया है ?"

शू-शेंग श्रीमती लिन को देखकर भौंचक सा रह गया। उसने सफ़ेद झूठ बोल दिया, "यहाँ कोई नहीं आया था।"

"मुझे धोखे में मत रखो !" श्रीमती लिन ने आपत्ति की। "मुझे सब बातें मालूम हैं—हिक्—शायद तुम उसकी बातों से चौंक गये हो—मिंग स्यू ने खुद अपनी आँखों से तुम दोनों को बातचीत करते देखा है।"

"उसने सिर्फ़ इतना ही बताया है कि घबराने की कोई जरूरत नहीं।" शू-शेंग ने दोबारा उसे तसल्ली देने के लिये झूठ बोला, "ब्यूरो का अध्यक्ष पू अब भी सहायता देने के लिये तैयार है।"

"कौन ! ब्यूरो का अध्यक्ष पू !" श्रीमती लिन ने क्रोध से पूछा। "हमें उसकी सहायता नहीं चाहिये। तुम्हारे मालिक अब जीते-जी बाहर नहीं आयेंगे—हिक्—हिक्—मैं भी जिन्दगी से तँग आ गई हूँ। मुझे सिर्फ़ मिंग-स्यू की चिन्ता है। शू-शेंग, अब तुम उसे सम्भालो। उसे तुम्हारे हाथों सौंपकर ही मैं बेफ़िक्री से मर सकूँगी। ले जाओ—ऐसी जगह जहाँ उन लोगों की पहुँच न हो।"

शू-शेंग आंखें फाड़ कर श्रीमती लिन की ओर देखने लगा। पहले उसने सोचा कि शायद बुढ़िया पागल हो गई है, लेकिन वह इस तजवीज़ के बारे में गम्भीर जान पड़ती थी।

इतने में एक नौकर बदहवासी की हालत में भागा हुआ वहाँ आया,

"भाई शू-शेंग, भाई शू-शेंग ! कोई आदमी आपसे मिलना चाहता है।"

शू-शेंग नौकर के पीछे हो लिया। उसका ख्याल था कि व्यापार-मण्डल का प्रधान लौट कर आया है, लेकिन दुकान पर पहुँच कर देखा तो सामने की दुकान के मालिक मिस्टर वू का गुस्ताखी भरा चेहरा दिखाई दिया।

"इसके यहाँ आने का क्या मतलब हो सकता है?" शू-शेंग ने मन ही मन सोचा। वह चुपचाप मिस्टर वू के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

'मिस्टर लिन की कोई खबर मिली या नहीं" आदि बातें पूछने के बाद यू चाँग सियाँग स्टोर का मालिक ललचाई आँखों से चारों ओर देख कर कुछ नजदीक सरक आया।

"मैं थोड़ा सा माल लेने आया हूँ।"

शू-शेंग ने मन में सोचा चलो अच्छा है, पुराने माल से छुटकारा मिल जायेगा। यू-चाँग-सियाँग को दोबारा आने के लिये कह कर वह श्रीमती लिन से मिलने अन्दर गया। उसने उन्हें समझाया कि इस तरह मिस्टर लिन को छुड़ाने के लिये पर्याप्त पैसों का प्रबन्ध हो सकता है।

इस नये खर्चे की बात सुनते ही श्रीमती लिन की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली, उनकी हिचकियों से आकाश फटा जाता था। आवेश के कारण उनका गला रुँध गया और मुँह से एक भी शब्द न निकला। वह एक मेज के सहारे झुकी हुई थीं और बार-बार अपना हाथ हिलाकर और जोर से मेज पर मुट्ठी पटक कर रोषपूर्वक अपनी असहमति प्रकट कर रही थीं।

शू-शेंग को समझते देर न लगी कि श्रीमती लिन इस समय अपने आपे में नहीं हैं और उनसे किसी विवेक-संगत उत्तर की आशा करना व्यर्थ है। वह बिना कुछ कहे-सुने वहाँ से चला आया। अभी वह लकड़ी के परदे को लांघ कर दुकान की चौखट तक ही पहुँचा था कि नन्हीं मिस लिन से साक्षात हो गया।

उसका चेहरा डर से पीला पड़ा हुआ था, काँपते हुए हाथों से शू-शेंग की बाँह थाम कर वह बोली, "मेहरबानी करके यू चियाँग-सियाँग

को माल दे दीजिए ।" उसने भारी गले से चीत्कार-सा किया । "माँ की दशा तो पागलों जैसी हो गई है, जल्दी से पैसे का प्रबन्ध करके पिता जी को बचाइए, तुम्हारे निहोरे करती हूँ, भैया शू-शेंग ।"

फिर अचानक ही उसके गालों पर लाली दौड़ गई और वहाँ से खिसक गई ।

शू-शेंग उसकी ओर ताकता रहा । उसने फैसला किया कि वह अवश्य उसके पिता को बचाने का भरसक प्रयत्न करेगा ।

और फौरन ही यू-चियाँग-सियाँग से सौदा तै हो गया ।

हाथ में पैसा आते ही, शू-शेंग सीधा पार्टी के दफ़्तर में पहुँचा और आधे घण्टे बाद जब वह लौटा तो मिस्टर लिन उसके साथ थे ।

श्रीमती लिन को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ । लेकिन जब उन्हें इस बात का पूरा भरोसा हो गया कि उसके पति सचमुच सही सलामत घर लौट आये हैं तो उन्होंने अपने कांपते हुए घुटने दया की देवी के आगे टेक दिये और अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिए मूर्ति को नतमस्तक होकर साष्टाँग प्रणाम किया । नन्ही लिन पास खड़ी सब कुछ देख रही थी । उसकी समझ में न आता था कि ऐसे अवसर पर वह रोये या हँसे ।

शू-शेंग ने हिसाब से बचे हुए पैसे मिस्टर लिन के सामने मेज़ पर रख दिये ।

सिक्कों की छोटी-सी ढेरी को देखकर मिस्टर लिन ने एक ठंडी साँस ली । "जैसे-तैसे मैं छूट तो आया लेकिन पैसों के बिना अब कैसे गुज़ारा होगा ?" उन्होंने निराशापूर्ण स्वर में कहा ।

उनकी पत्नी और बेटी दोनों घबरा उठीं । श्रीमती लिन कुछ बोलने को ही थीं कि सोचकर चुप रह गयीं ।

मिस्टर लिन ने पहले जैसे निराशा पूर्ण स्वर में कहा, "सारा माल खत्म हो गया है । ज़रा-सा भी स्टाक बाकी नहीं रहा और उधर ढेरों के ढेर कर्ज़ चुकाने हैं ।"

"मालिक !" मिस्टर लिन का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए शू-शेंग ने चाय के प्याले में अपनी उँगली डुबोकर मेज़ पर लिखा, "यहाँ से चले जाइये।"

मिस्टर लिन ने सिर हिलाकर असहमति प्रकट की। उन्होंने बारी-बारी से अपनी पत्नी और बेटी की ओर देखा और फिर एक ठंडी साँस ली।

"अब यही एक रास्ता बाक़ी रहा है," शू-शेंग ने आग्रहपूर्वक कहा। "सारी नकदी साथ ले जाइये। कम से कम दो महीने तो कट ही जायेंगे। मैं पीछे सब चीज़ों की देखभाल करता रहूँगा।"

अचानक ही श्रीमती लिन में जान आ गई, "जाओ, तुम सब के सब यहाँ से चले जाओ," उन्होंने चिल्लाकर कहा। "मैं अकेली यहाँ रहकर सब से निबट लूँगी। इन बूढ़ी हड्डियों में अभी इतना दम तो बाकी है।"

न जाने हठात् कहाँ से उनकी देह में यौवन की स्फूर्ति का संचार हो गया। बिना कुछ कहे वह खटाखट सीढ़ियों पर चढ़ गईं। नन्ही लिन भी माँ के पीछे-पीछे ऊपर गई।

कुछ देर बाद श्रीमती लिन ने पुकार कर कहा, "ऊपर आओ, मैं तुम्हें एक तरकीब बताती हूँ।"

सब लोग सोने वाले कमरे में जमा हो गये। श्रीमती लिन ने मेज़ पर रखे एक बण्डल की ओर इशारा किया। "यह पूँजी मैंने बचा-बचा कर जोड़ी है," उन्होंने घोषणा की। "मैं यहीं रहूँगी। शू-शेंग भी कुछ दिन यहाँ ठहर कर आपके पास पहुँच जायगा। आओ मेरे बच्चो, मेरे सामने झुक कर अपनी सगाई की शपथ लो! और इस बूढ़े दिल को शान्ति दो।"

इतना कहकर श्रीमती लिन ने एक हाथ से अपनी बेटी को पकड़ा और दूसरे हाथ से शू-शेंग को और दोनों को झुकने के लिए आदेश दिया। दोनों ने सकुचाते हुए आदेश का पालन किया। और जब वे घुटने टेकने के बाद उठे तो शू-शेंग ने कनखियों से नन्ही लिन की ओर देखा।

उसे ऐसा लगा मानो आँसुओं के भीतर से वह मुस्करा रही हो ।

और लिन के स्टोर का क्या हुआ ? उसका दिवाला निकल गया. और लेनदारों का झुण्ड सूखे कंकाल को चिचोरने के लिए झगड़ते हुए कुत्तों की तरह दुकान पर टूट पड़ा ।

सबसे ज़्यादा अड़ियल तो हेंग-युआन नेटिव बैंक वाले निकले । मिस्टर लिन के भाग जाने की ख़बर सुनते ही उन्होंने फ़ौरन एक आदमी दौड़ाया कि जाकर बचे हुए स्टॉक पर मुहर लगा दे और बहीखातों पर कड़ी निगरानी रखे । लेकिन सब बहीखाते ग़ायब थे । उन्होंने पूछा शू-शेंग कहाँ है तो मालूम हुआ कि वह बीमार है । फिर वे श्रीमती लिन के पास गये तो सिवा आँसुओं और हिचकियों की बौछार के उनके पल्ले कुछ न पड़ा ।

एक रोज़ सुबह ग्यारह बजे दुकान में लेनदारों की भीड़ जमा थी । वे ऊँचे स्वर से चिल्ला-चिल्लाकर कुछ बहस कर रहे थे । बचा हुआ स्टॉक लापता था । लेकिन फिर भी दुकान के फर्नीचर को बेचकर इतना पैसा अब भी वसूल किया जा सकता था कि सारे लेनदारों को हर डालर के पीछे सत्तर सेन्ट मिल सकें । लेकिन वे जानते थे कि थोड़ा शोर गुल मचाने से पूरा पैसा मिल सकता है । भला फिर कौन सत्तर सेन्ट वाले सौदे पर सन्तोष करना चाहता ? इस लिये वह चिल्ल-पौं और हाय-तोबा मची कि क्या कहना !

दो पुलिस के आदमी दुकान के फाटक पर तैनात कर दिये गये ।

एक बुढ़िया ने उन्हें धकेल कर अन्दर आने की कोशिश की । "तुम लोग मुझे अन्दर क्यों नहीं घुसने देते ? मैं भी तो लेनदार हूँ ! मेरी ज़िंदगी भर की पूँजी इसी दुकान में लगी हुई है ।"

यह थी श्रीमती चू, जो अपनी पतली काँपती हुई आवाज़ में आवेश से चिल्ला रही थी । वह बार-बार अपने पतले, रुखे ओठों से मसूड़े भींच रही थी । उसके माथे की नसें क्रोध के मारे फटी पड़ती थीं ।

वह चांग की विधवा से टकराते-टकराते बची । वह बेचारी भी एक

बच्चे का हाथ थामे इसी उद्देश्य से भीड़ में शामिल थीं।

अभी ये दोनों औरतें हकूमत के प्रतिनिधियों से जूझने में ही व्यस्त थीं, कि दूसरी ओर से एक आदमी पुलिस के घेरे को तोड़ कर दुकान में घुस आया। यह था चेन सातवाँ, जिसका मुँह अँगारे की तरह दहक रहा था और मुँह से गालियों की वर्षा हो रही थी।

"लुटेरे-डाकू! कहीं के, सब के सब! किसी दिन ज़मीन और आसमान दोनों में आग लग जायेगी। और उसी आग में ये लुटेरे जल कर ख़ाक हो जायेंगे! देख लेना, उस रोज़ मैं, चेन सातवाँ, दिल खोल कर हँसूँगा। अगर कुछ बाकी बचा है तो उसका बँटवारा ठीक-ठीक होना चाहिये—लेकिन ये लुटेरे!"

बुढ़िया श्रीमती चू और चाँग की विधवा को देखते ही उसके क्रोध का पारा और भी चढ़ गया, "तुम भी यहीं मौजूद हो! तब तो सारे माल का बँटवारा हो चुका होगा—फ़र्नीचर का भी! वे लोग कहते थे कि मेरे हिसाब में गड़बड़ है। आओ! इस बात की तसल्ली करने के लिये पार्टी के दफ़्तर में चलें। आओ तो सही, पार्टी हमेशा ग़रीबों की रक्षा का दम भरती है।"

भीड़ में खलबली मच गई और लोगों ने इस बात का समर्थन किया। लोगों ने उन्हें धकेल कर पार्टी के दफ़्तर की ओर सड़क पर डाल दिया।

दफ़्तर के बाहर तो पुलिस का पहरा दुकान से भी अधिक सख़्त था।

चेन सातवाँ बार-बार मुट्ठी बाँधे चिल्ला-चिल्ला कर इन्साफ़ की दुहाई दे रहा था। चांग की विधवा विलाप कर रही थी कि पति के मरने के बाद उसने अपने खून-पसीने की कमाई की कौड़ी-कौड़ी इस दुकान में लगादी थी। श्रीमती चू भी क्षीण स्वर से अपना दुखड़ा रो रही थी।

भीड़ चिल्ला उठी, "इन्साफ़—ग़रीबों के साथ इन्साफ़ होना चाहिए।"

पुलिस वाले भीड़ को एक ओर धकेल रहे थे। इस आपाधापी में कितनों के सर फूटे, कितनों के पैर रोंदे गये और कितनों की कुहनियाँ जाकर दूसरों की आँखों से टकराईं।

चेचक के दागों वाला एक काला कलूटा पार्टी के दफ़्तर का कर्मचारी पुलिस को भीड़ के साथ सख़्ती से पेश आने का आदेश दे रहा था। उसने गोली चलाने की भी धमकी दी।

इस धक्कम-धक्का में श्रीमती चू अचेत होकर ज़मीन पर गिर पड़ीं। चांग की विधवा अपने बच्चे से बिछुड़ गयी। वह खुद भी भीड़ में कुचली गई। उसके हाथ-पाँव को रोंदते हुए और अगल-बग़ल से ठोकरें मारते हुए सैकड़ों पाँव उसके ऊपर से गुज़र गये। दोनों औरतें कीचड़ में लथपथ होगईं, और यह बताना मुश्किल है कि वे उसमें से जिन्दा निकल भी सकीं या नहीं। लेकिन उन्होंने दुबारा अपने पैसों का तक़ाजा नहीं किया, इतना तो निश्चित मालूम है।

तिंग-लिंग

(१६०७—)

चीन की साम्यवादी महिला-लेखकों में सबसे प्रसिद्ध लेखिका का साहित्यिक नाम।

तिंग-लिंग का जन्म हुनान प्रान्त में हुआ। अनेक साम्यवादी नेताओं को जन्म देने का श्रेय इस प्रान्त को है। जनवादी चीन के राष्ट्रपति माओत्सेतुंग का जन्म भी इसी प्रान्त में हुआ था।

एक सम्पन्न जमींदार परिवार में जन्म लेने के बाद तिंग-लिंग ने छोटी अवस्था में ही अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। साहित्य के मार्क्सवादी दृष्टिकोण को अपनाने से पहले उन्हें एक लम्बा मार्ग तय करना पड़ा।

सन् १६२३ में ही तिंग-लिंग का सम्पर्क चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के तत्कालीन मंत्री चू चियू पाई से अपनी एक घनिष्ट सखी वांग चुन हुङ्ग द्वारा हो गया था। इस सहेली की मृत्यु से तिंग-लिंग को गहरा मानसिक आघात पहुँचा जिसके फलस्वरूप उन्होंने 'एक औरत' और 'सौफ़ी की डायरी' की रचना की जिनमें किशोरावस्था के मानसिक उद्वेगों तथा दोनों सखियों के पारस्परिक स्नेह का वर्णन है।

पेकिंग में आपकी भेंट हू ये पिंग से हुई। बाद में दोनों का विवाह हो गया। इसी बीच आपका सम्पर्क उपन्यासकार शेंग-सुंग वेन से हुआ

और पति-पत्नी दोनों ने वामपक्षी पत्रिका 'श्वेत और श्याम' निकालने में सहयोग दिया।

कोमिन्तांग के प्रतिक्रियावादियों द्वारा तेईस वर्ष की छोटी अवस्था में ही हू ये पिंग मौत के घाट उतार दिये गये। तिंग-लिंग के रोष का वारापार न रहा। वे जी जान से कोमिन्तांग-विरोधी प्रचार-कार्य में जुट गई और साम्यवादी पत्रिका 'ध्रुवतारा' की सम्पादिका बन गईं। प्रकाशन के एक वर्ष बाद ही इस पत्रिका को दमन का शिकार होना पड़ा।

इसी समय से तिंग-लिंग के विचारों पर कम्युनिस्ट दृष्टिकोण का पूरा प्रभाव दिखाई देने लगता है। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में पाई जाने वाली बुर्जुआ भावुकता का स्थान वर्ग-संघर्ष में सर्वहारा वर्ग के प्रति उनके स्पष्ट समर्थन ने ले लिया। उनकी सबसे अधिक उल्लेखनीय कहानी 'पानी' जो सन् १९३१ में छपी थी, उनके इस दृष्टिकोण-परिवर्तन का प्रतीक है। इस कहानी में बाढ़-पीड़ित किसानों के महान प्रयत्नों का सजीव चित्रण हुआ है।

सन् १९३३ में कोमिन्तांग के नीली वर्दी वाले सिपाहियों ने तिंग-लिंग को अपहरण करके नान्किंग में क़ैद कर दिया, जहाँ से तीन वर्ष बाद वे भाग निकलीं और आकर येनान के एक साम्यवादी केन्द्र में उन्होंने आश्रय लिया। चीन की जन-स्वातंत्र्य सेना की शिक्षा तथा अनुशासन के फलस्वरूप तिंग-लिंग की साहित्यिक चेतना और भी गहरी हो गई। जापान-विरोधी युद्ध में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको समूचे संघर्ष का प्रत्यक्ष अनुभव रहा है जैसा कि उनकी बाद में अत्यन्त लोक-प्रिय कहानी 'जब मैं लाल आकाश वाले गाँव में थी' से स्पष्ट है।

तिंग-लिंग की अन्य उल्लेखनीय कृतियों में सन् १९५० में प्रकाशित 'उत्तरी शेन्सी की हवा और सूरज' तथा उनका उपन्यास 'सांगकन नदी के किनारे' सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं।

जब मैं लाल आकाश वाले गाँव में थी

जापान-विरोधी युद्ध के दौरान मुझे आठवीं जनवादी सेना के साथ मोर्चे पर रहने का अवसर मिला। एक बार पतझर के मौसम में हम सुदूर उत्तर के किसी प्रान्त में थे। दुर्भाग्य से मैं बीमार पड़ गई और अभी पूरी तरह स्वस्थ भी न हो पाई थी कि जिले के राजनीतिक विभाग के अध्यक्ष कामरेड मो यू ने मुझे पास ही के किसी गाँव में जाकर आराम करने का आदेश दिया। वैसे तो मेरी सेहत काफ़ी सुधर चुकी थी, लेकिन एक लेखिका की दृष्टि से मैं यह अवसर नहीं खोना चाहती थी, क्योंकि इतने सुरम्य स्थान में जाकर मैं आसानी से अपने पिछले तीन महीनों की डायरी को दुबारा ठीक ढंग से लिख सकती थी। इस लिए मैं लाल आकाश वाले गांव में जाने के लिए खुशी-खुशी राजी हो गई। यह गांव वहाँ से करीब तीस ली[1] की दूरी पर था। मुझे वहाँ पन्द्रह दिन गुज़ारने थे।

चूँकि हमारे पास घोड़े नहीं थे, इसलिए वहाँ पहुँचने में पूरा दिन लग गया। मेरे साथ प्रचार-विभाग की एक महिला साथी भी थी। मेरा विचार है कि वह किसी विशेष काम के लिए वहाँ जा रही थी। लेकिन वह मितभाषी थी, इसलिए रास्ते में हमारी विशेष बातचीत नहीं हुई। इसके अलावा उसकी चाल भी कुछ बेढब थी, क्योंकि उसके पाँव बचपन

१ ली—लगभग एक तिहाई मील।

में बाँधे जा चुके थे। मेरा शरीर भी बीमारी के कारण अभी शिथिल था। हम लोग तड़के ही चल पड़े थे, लेकिन उस गाँव तक पहुँचते-पहुँचते सूरज पहाड़ियों के पीछे छिपने लगा था।

दूर से देखने पर तो यह गाँव भी और गाँवों की तरह ही दिखाई देता था। पर मैं जानती थी कि इस गाँव में एक सुन्दर रोमन कैथोलिक गिरजे की इमारत और चीड़ का एक छोटा-सा वन अभी तक मौजूद है, और मुझे ऐसी जगह ठहराया जायगा, जहाँ से गिरजे का दृश्य समग्ररूप से दिखाई देगा। गिरजे के चिन्ह तो अभी देखने में नहीं आये थे लेकिन पहाड़ी के ढलवान पर बनी गुफ़ाओं की साफ़-सुथरी कतारें दिखाई देने लगी थीं। ज़रूर ही इनमें लोग रहते होंगे, मैंने सोचा। उनके द्वारों पर लगी सदावहार की सघन लताएँ रह-रह कर झूम उठती थीं। गाँव के आसपास की बड़ी सड़क पर अनेकों वेदवृक्ष भी लगे थे। सारा दृश्य इतना रमणीय था कि मैं मन ही मन वहाँ दो सप्ताह के लिए टिकने के विचार मात्र से पुलकित हो उठी।

अचानक ही मुझे अपनी साथिन के कमज़ोर पैरों का ख्याल हो आया। मैंने उसे कुछ देर रुक कर विश्राम करने की सलाह दी। "हम यहाँ आ तो पहुँचे ही हैं, क्यों न आगे चलने से पहले थोड़ा सुस्ता लें?"

वैसे तो अपनी साथिन द्वारा दिये गये विवरण को सुनकर मैं मन ही मन इस गाँव के निवासियों से परिचित हो चुकी थी। लेकिन गाँव में घुसने पर हमें कोई औरत, मर्द या कुत्ता भी न दिखाई दिया। हवा के तेज़ झोंकों से सिर्फ़ कुछ पत्ते उड़कर हमारे पैरों पर गिर रहे थे।

"यहाँ पहले एक प्राइमरी स्कूल हुआ करता था।" आह कुई ने मुझे चलते-चलते बताया। "लेकिन पिछले साल जाने से पहले जापानी शैतान इसको तहस-नहस कर गये। उन सीढ़ियों की ओर देखो। पहले वह एक बड़े हॉल से जुड़ी हुई थीं।" मेरी साथिन आवेश में आ गई थी, और दिन भर की चुप्पी की कमी अब पूरी कर रही थी। काँटों से भरे एक चौरस मैदान की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "डेढ़ साल पहले इस जगह

कितनी रौनक़ रहती थी ! खाना खाने के बाद हमारे साथी यहीं बैठ कर हँसते-खेलते थे ।"

कुछ देर चुप रहने के बाद वह फिर आवेश में आ गई । उसे सारी स्थिति पर मानो खीज-सी आ रही थी । "क्या बात है कि आज आस-पास कोई भी नहीं दिखाई देता ? हम पहले किधर जायें ? गाँव के दफ़्तर की ओर या पहाड़ी पर ?" फिर मानो अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं देते हुए उसने कहा, "मैं पहाड़ी का रास्ता तो जानती हूँ, फिर भी पूछताछ कर लेना ठीक रहेगा । और हमें अपने सामान का पता भी कर लेना चाहिए ।"

गाँव के दफ़्तर की दीवार पर अनेक नोटिस चिपके हुए थे, लेकिन कमरे में मौत का सा सन्नाटा था । सात या आठ मेजें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, लेकिन वहाँ भी कोई नहीं दिखाई दिया । कुछ देर बाद किसी के पाँव की आहट सुनाई दी । एक आदमी तेज़ चाल से वहाँ से गुज़रा । उसने कनखियों से हमारी ओर देखा, फिर जैसे कुछ पूछने के लिए उसके क़दम ज़रा सा रुके, लेकिन न जाने क्या सोचकर वह चुपचाप दरवाज़े की ओर चल दिया । हमने फ़ौरन उसे वहीं जा घेरा । हमारे पूछताछ के जवाब में उसने विवश होकर इतना ही कहा, "सब लोग कहाँ गये ? सब के सब गाँव के पश्चिमी हिस्से में चले गये हैं, और सामान ? अरे हाँ, कुछ सामान यहाँ आया था, बहुत देर पहले, उसे पहाड़ी के ऊपर मा ल्यू के घर पहुँचा दिया गया है ।" इतना कहकर वह हमारी ओर टुकर-टुकर ताकने लगा ।

जब हमें मालूम हुआ कि वह किसानों के जापान-विरोधी संगठन का सदस्य है तो हमने उससे रास्ता दिखाने का आग्रह किया । साथ ही मैंने एक स्थानीय कामरेड के लिए लिखा हुआ परिचय-पत्र उसके हाथों में पकड़ा दिया । उसने कहा कि वह पत्र तो पहुंचा देगा, लेकिन हमारे साथ जाना उसके लिए कठिन है । और फिर मानो हम दोनों से पीछा छुड़ाने के लिए वह जल्दी-जल्दी वहाँ से चल दिया ।

गाँव की सड़कें सुनसान थीं। कुछ घरों के दरवाजे खुले थे और कुछ के बन्द। हमने कुछ खिडकियों से झाँक कर अन्दर देखा तो सिवा अंधेरे के कुछ न दिखाई पड़ा। हम चाहते थे कि कोई ऐसा आदमी मिले जिससे हम रास्ता पूछें। लेकिन किससे पूछें, कुछ समझ में न आता था। सौभाग्य से आह कुई इस गाँव से भली-भाँति परिचित थी, और हम दोनों ने पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया। सरदियों के दिन छोटे होते हैं, इसलिए जल्दी ही अंधेरा पड़ने लगा।

पहाड़ी विशेष ऊँची नहीं थी। कुछ दूर चढ़ने के बाद हमें रास्ते में बहुत-सी गुफाएँ दिखाई दीं। कुछ लोग सामने के बने चबूतरों पर खड़े थे।

यद्यपि आह कुई को भलीभाँति मालूम था कि हम अपनी मंजिल के काफ़ी निकट आ पहुँचे है तो भी वह हर किसी से मा ल्यू के घर का पता पूछती जाती थी, "क्या मा ल्यू के घर का यही रास्ता है? मेहर-बानी करके हमें मा ल्यू के घर का रास्ता बता दीजिए।" एकाध बार उसने यह भी पूछा, "क्या आपने मा ल्यू के घर किसी को सामान ले जाते देखा है? क्या वह घर पर ही है?"

सब लोगों ने सन्तोषजनक उत्तर दिए और हमें विश्वास दिलाया कि हम ठीक रास्ते पर ही जा रहे हैं। उनकी सहायता से हम लम्बी चढ़ाई पार करके पहाड़ी की सब से ऊँची चोटी तक पहुँचे जहाँ ल्यू दम्पति रहते थे। हमें देखते ही उनके कुत्तों ने भोंक कर हमारा स्वागत किया।

फ़ौरन ही कुछ लोग दिखाई दिये। जब उन्हें हमारे आने का समा-चार मिला तो दो और आदमी वहाँ आ गये और मशाल की रोशनी में हमें बायीं ओर की गुफा में ले गये। गुफा में कोई फर्नीचर नहीं था, लेकिन बीचों-बीच बनी काँग[२] पर मेरा बिस्तर, छोटा चमड़े का बक्स

२. काङ्ग—ईटों का बना एक चबूतरा जिसके नीचे सरदियों में आग जलाई जाती है—उत्तरी चीन में काँग सर्वत्र पाई जाती है।

रखा था। आह् कुई का सामान भी वहीं था।

आह् कुई वहाँ की कई औरतों से परिचित थी। इसलिए वे सब की सब घुल-मिल कर बातें करने में तल्लीन हो गईं। कुछ देर बाद औरतें उसे घसीट कर अपने साथ ले गईं। मैं अकेली रह गई थी। मैंने सोने के लिए अपना बिस्तर ठीक किया, और इस नई जगह में अजनबीपन का अनुभव करने लगी। अभी मैं सोने के लिए बिस्तर पर लेटी ही थी कि झुण्ड की झुण्ड औरतें गुफा में घुस आयीं। उनमें से एक के हाथ में तरकारी की बड़ी-सी हँडिया थी, आह् कुई, मा ल्यू और एक नन्ही लड़की के हाथों में प्याले, लकड़ी के चम्मच और प्यास और लाल-मिर्चों से भरी एक तश्तरी को नीचे रखकर लड़की बाहर चली गई और दूसरे ही क्षण जलते हुए कोयलों की एक अँगीठी लेकर लौट आई।

उन्होंने मेरी जी-जान से खातिर की और बार-बार तरकारी खाने का आग्रह करने लगीं। कई स्त्रियों ने बड़े दुलार से मेरे शरीर पर हाथ फेरा। लेकिन कुछ देर बाद ही वह अपनी पहले वाली बातचीत में पुनः तल्लीन हो गईं। मा ल्यू और उसकी पतोहू कांग पर जा बैठे। उनकी मुख-मुद्राएँ अत्यन्त रहस्यमय थीं मानो वे आपस में किसी भेद का आदान-प्रदान कर रही थीं। पहले तो मुझे सन्देह हुआ कि शायद वे मेरे बारे में कानाफूँसी कर रही हैं, लेकिन अगले ही क्षण ख्याल आया कि मेरे आने से इतनी तीव्र उत्सुकता का जगना असंभव है। इसके अलावा मैं व्यर्थ ही बाल की खाल निकालना भी नहीं चाहती थी। इसलिए मैंने चुप रहना ही ठीक समझा। लेकिन उन लोगों की बातों का कोई सिर-पैर समझ में न आता था। विशेषकर मा ल्यू बड़े ही रहस्यमय ढंग से धीमे स्वर में कुछ फुसफुसा रही थी। आह् कुई की चुप्पी तो जैसे काफ़ूर हो गई थी। उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व बदल-सा गया था। उसके बोलने के ढंग से कार्य-कुशलता का आभास मिलता था। वह बड़ी संजीदगी से हर मामले में अपनी राय दे रही थी। साथ ही साथ औरों की बातें भी ध्यान से सुनती जाती थी। मैं उसके चेहरे को देख कर जान गई कि वह

काम की बातों को फौरन पकड़ लेती हैं। बाकी औरतें बीच-बीच में टीका-टिप्पणी कर देती थीं। लेकिन अधिकतर वे आह् कुई के शब्दों को सतर्क होकर सुन रही थीं।

अचानक ही कुछ शोर-गुल सुनाई पड़ा। लोगों के झुण्ड के झुण्ड आँगन में खड़े चिल्ला रहे थे। मा ल्यू झटपट कांग से उतर कर सब औरतों समेत गुफ़ा के बाहर भागी। मैं भी हैरानी से उनके पीछे हो ली। इस समय बाहर घोर अन्धकार छाया था। सिर्फ़ लाल काग़ज़ की बनी दो लालटेनें रह-रह कर टिमटिमा रही थीं। मैं भीड़ में घुस गई, लेकिन मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दिया। लोगों की बातचीत सुन कर मेरी हैरानी और भी बढ़ गई।

"क्या तुमने उसे देखा?"

"क्यों नहीं, लेकिन मुझे डर-सा लगा।"

"काहे का डर? आख़िर वह भी तो और औरतों की तरह एक औरत ही है। क्या वह पहले से अधिक सुन्दर नहीं दिखाई देती?"

मैं समझी कि यह बातचीत किसी नई दुलहिन के बारे में थी। लेकिन मेरा अनुमान ग़लत निकला। फिर मैंने सोचा कि हो सकता है कि किसी कैदी स्त्री के बारे में ये लोग बातें कर रहे हों। लेकिन यह बात भी न थी। मैं चुपचाप लोगों के पीछे चलकर बीच की गुफ़ा में पहुँची। लोगों के चेहरों पर मशालों की धुएँ से भरी रोशनी पड़ रही थी। मैं टकटकी लगाकर उनकी ओर देखती रही, लेकिन मामला कुछ समझ में न आया। मैं अपना-सा मुँह लेकर वहाँ से खिसक आई। कुछ मिनटों में ही सारा आँगन खाली हो गया। बाक़ी लोग भी बाहर आ रहे थे।

लोगों की हलचल के कारण मेरे लिए शान्तिपूर्वक सोना असम्भव हो गया था। इसलिए मैंने गुफ़ा में लौट कर अपना चमड़े का सन्दूक खोला और बारी-बारी से सब चीजें बाहर निकालने लगी। सफ़र की

थकान के बावजूद नये अनुभवों की कल्पना से ही मेरे मन को एक नई स्फूर्ति मिली।

मैं अभी इसी उधेड़-बुन में थी कि समय का सही उपयोग कैसे किया जाय, क्योंकि मैंने अगले दिन से ही लिखने का पक्का इरादा बना रखा था, कि इतने में एक आवाज़ सुनाई पड़ी। "अभी तक नींद नहीं आई, कामरेड ?"

मेरे जवाब देने से पहले ही आगन्तुक कमरे में दाखिल हो चुका था। मैंने बीस वर्ष के एक सुसंस्कृत किसान को अपने सामने खड़ा पाया।

"मुझे अध्यक्ष मो का पत्र कुछ देर पहले ही मिला है।" उसने मुझे आश्वासन देते हुए कहा। "और स्थानों की अपेक्षा यहाँ अधिक शान्ति है। मा ल्यू आपकी देख-भाल करेंगी। यदि किसी चीज़ की जरूरत हो तो आप निस्संकोच उनसे कह दें। अध्यक्ष मो ने अपने पत्र में लिखा है कि आपका इरादा यहाँ केवल पन्द्रह दिन टिकने का है। पर यदि आपकी इच्छा हो तो आप ज़रूर कुछ दिन और ठहरें। मैं बग़ल वाले हाते में रहता हूँ। अगर जरूरत पड़े तो आप यहाँ से किसी के हाथ भी सन्देश भेजकर मुझे बुलवा सकती हैं।"

उसे मेरे साथ एक ही काँग पर बैठने में कुछ संकोच-सा अनुभव हुआ, न ही कमरे में बैठने के लिए कोई स्टूल था; इस लिए मजबूर होकर मुझे काँग से नीचे उतर कर उसके पास खड़ा होना पड़ा।

"आहा", मैंने कहा, "तो आप ही कामरेड मा हैं, आपको मेरा भेजा हुआ पत्र मिल गया।" मुझे सहसा ख़्याल आया कि वह अभी मिडिल स्कूल का विद्यार्थी ही था, लेकिन तो भी इस गाँव में उसे महत्वपूर्ण पद सौंपा गया था।

उसने मेरे खुले हुए सन्दूक में पड़े काग़ज़ों की ओर देखकर कहा, "मुझे मालूम हुआ है कि आपने ढेर-सी किताबें लिखी हैं लेकिन हमारे यहाँ तो आपकी किताबें बिकने के लिए कभी नहीं आईं, इसी लिए मैं अभी तक आपकी कोई किताब नहीं पढ़ पाया।"

इसके बाद हम क़ाफ़ी देर तक गाँव में राजनीतिक सिद्धान्तों की शिक्षा के प्रबन्ध के बारे में बातें करते रहे और उसने इस कार्य में मेरी सहायता माँगी।

"सांस्कृतिक मनोरंजन की समस्या हमारे लिए एक अच्छी-खासी सरदर्दी है", उसने स्वीकार किया।

अगर मैं इस श्रेणी के नौजवानों से परिचित न होती तो शायद उसकी बातों में अधिक दिलचस्पी लेती। लेकिन मोर्चे पर रहने के कारण मेरा सम्पर्क इतने अधिक लोगों से हुआ है कि यह जानते हुए भी कि वह मुझसे इतने भिन्न हैं, मुझे उनकी बातों पर अधिक हैरानी नहीं होती। इसी लिए उसकी समस्याओं के बारे में कोई पूछताछ करने की बजाय मैंने उन बातों के बारे में पूछना ही अधिक उपयुक्त समझा जो मेरे दिमाग़ में चक्कर काट रही थीं।

"अभी किस बात पर इतना शोरगुल मचा था ?"

"मा ल्यू के पति की भतीजी अभी लौटकर आई है। मुझे तो सपने में भी ख़्याल नहीं आ सकता था कि वह चेन-चेन इतनी प्रसिद्ध वीरांगना बन जायगी।" अचानक ही मुझे लगा कि उसकी आँखों में से स्नेह और उत्साह की किरणें फूटने लगी हैं। मैं कुछ पूछने ही वाली थी कि उसने समझाते हुए कहा, "वह अभी जापानियों के यहाँ से लौटी है। वहाँ वह साल भर तक हमारे लिए काम करती रही।"

"आह !" मैं अपने आश्चर्य को दबाने में असमर्थ थी।

वह अभी मुझे और बातें बताने को ही था कि इतने में बाहर से किसी के पुकारने की आवाज़ सुनाई दी और वह चला गया। जाने से पहले उसने वायदा किया कि वह अवश्य ही अगले दिन चेन-चेन को मुझसे मिलने के लिए भेजेगा। वह चाहता था कि मैं चेन-चेन पर विशेष ध्यान दूँ क्योंकि उसके पास "क़ाफ़ी समग्री है।" शायद उसका मतलब मेरे लिए उपयुक्त साहित्यिक सामग्री से था।

उस रात को आह कुई बड़ी देर से लौटी और बिस्तर पर लेटने के

बाद भी वह इधर-उधर करवटें बदलती और ठंडी साँसें भरती रही। मैं बहुत थकी हुई थी, फिर भी शाम की घटना को जानने की उत्सुकता मेरे मन में बराबर बनी थी। लेकिन आह् कुई से मैं कोई बात न निकाल पाई।

"नहीं कामरेड, मैं आपको नहीं बता सकती", उसने एक लम्बी साँस लेकर कहा। "इस समय मेरा चित्त ठिकाने नहीं है। शायद मैं कल आपको इस सम्बन्ध में कुछ बता सकूँ। हाय ! हम औरतों को क्या कुछ बर्दाश्त नहीं करना पड़ता ?"

फिर उसने अपने मुँह पर चादर तान ली और चुपचाप लेट गई। अब उसकी ठंडी साँसें भी बन्द हो गई थीं, मालूम नहीं, उसे कब नींद आ गई।

दूसरे रोज़ जब मैं तड़के ही सैर करने के लिये निकली, तो मैंने अपने-आपको गाँव में पाया। एक पंसारी की दुकान देख कर मैंने सोचा कि कुछ देर वहीं सुस्ता लूँगी, और पुलाव में डालने के लिये ढेर-सी खजूरें ले जाकर मा ल्यू को सौंप दूँगी। मैंने दुकान वालों से कहा कि वे खजूरें पहुँचाने के लिये किसी आदमी को मेरे साथ घर तक भेज दें। ज्यों ही दुकानदार को यह मालूम हुआ कि मैं मा ल्यू के यहाँ ठहरी हूँ, उसने अपनी छोटी-छोटी चतुराई से भरी आँखें मेरी ओर घुमाईं और रहस्यमय ढँग से पूछा, "क्या आपने मा ल्यू की भतीजी को देखा ? सुनते हैं कि उसकी नाक बीमारी से गल गई है—यह सब उन्हीं जापानी राक्षसों को करतूत है !" फिर उसने दुकान के भीतर से अपनी पत्नी को आवाज़ दी, "ज़रा देखो तो उस लड़की की हिम्मत ! क्या मुँह लेकर घर लौटी है ! बूढ़े बाप ल्यू-फ़ू-शेङ्ग को अच्छा इनाम दिया है, उसकी सुलच्छनी बेटी ने !"

"वह नेकबख़्त तो पहले दिन से ही तेज़ थी", उसकी पत्नी अपने कपड़ों को संभालती हुई दुकान में दाख़िल हुई। "तुम्हें याद नहीं, वह कितनी उछल-कूद मचाया करती थी ? सिया-पो के पीछे तो वह हाथ

धो कर पड़ी थी। बाप रे बाप ! इतने ग़ज़ब की आशनाई ! अगर वह बेचारा ग़रीब न होता तो वह कभी की उससे शादी कर डालती !"

"जितने मुँह, उतनी बातें !" दुकानदार ने बड़ी ही कठिनाई से निन्दा करने का लोभ संवरण करते हुए कहा, फिर उसने कुछ ज़ोर दे कर कहा, "कहते हैं कि वह कम से कम एक सौ आदमियों के हाथों से गुज़र चुकी है। इसके अलावा उसने एक जापानी अफ़सर से भी शादी की थी। ऐसी कुलटा औरतों को वापिस घर में नहीं घुसने देना चाहिए।

मैं चुपचाप अपने गुस्से को पीकर वहाँ से चली आई, क्योंकि ज़रा-सी देर और रुकने से लड़ाई-झगड़ा हो जाता। लेकिन वहाँ से पीठ मोड़ते ही मुझे ऐसा लगा कि वह मूछों पर ताव देकर सन्तोष-भरी हँसी हँस रहा है।

गिरजे वाली सड़क की नुक्कड़ पर दो औरतें पानी लेकर घर लौट रही थीं। वहाँ भी यही चर्चा सुनाई दी।

एक ने कहा, "उसने पादरी लू के पास जाकर सन्यासिनी बनने की आज्ञा माँगी ! जब पादरी लू ने इसका कारण पूछा तो वह फफक-फफक कर रोने लगी। कौन जानता है कि उसके साथ क्या-क्या बीत चुकी है ! अब तो वह एक घिसे हुये जूते से भी गई गुज़री है !"

दूसरी ने जवाब दिया "मुझे कल किसी ने बताया था कि वह लँगड़ा कर चलती है। हाय री दैय्या, वह किस मुँह से लोगों के सामने आती है ?"

"सुनते हैं कि उसने एक उँगली में सोने की अँगूठी पहन रखी है— ज़रूर किसी न किसी शैतान से भेंट मिली होगी !"

"और तो और, वह तातुँग तक हो आई है ! और शैतानों की भाषा भी बोल लेती है।"

मुझे सैर पर जाने से कोई मानसिक शान्ति नहीं मिली। गुफ़ा में वापिस आकर देखा तो आह कुई अभी बाहर से नहीं लौटी थी। इस लिये मैं चुपचाप अकेली बैठकर एक किताब पढ़ने लगी।

मुझे सख्त बेचैनी हो रही थी। गुफ़ा में दिलचस्पी के लायक कोई

चीज न थी। सिर्फ़ अनाज रखने की दो फटी-पुरानी बोरियाँ जो मैल के कारण काली पड़ गईं थीं एक कोने में पड़ी थीं। खिड़की पर लगा कागज़ कई स्थानों पर से फट गया था। खिड़की से बाहर झाँककर देखा, तो आकाश का रंग मटमैला था। परसों जैसी धूप का कहीं पता न था, और चौरस ज़मीन धुली-पुती-सी दिखाई दे रही थी। फीके आकाश की पृष्ठभूमि में सूखे पत्ते वाली टहनियों की सजावट हो रही थी। रह-रह कर हवा की सरसराहट, सन्नाटे को भंग कर रही थी।

आँगन सुनसान पड़ा था।

मैंने अपना छोटा सा सन्दूक खोला और काग़ज़ कलम बाहर निकाली। सोचा, चलो खाली बैठने की अपेक्षा दो ख़त ही लिख डालूँ।

आह कुई अभी तक क्यों नहीं लौटी? मैं यह बात बिल्कुल भूल गई थी, कि उसे यहाँ काम करने के लिये भेजा गया है, न कि मेरा साथ देने के लिये।

सर्दियों के दिन छोटे होते हैं, लेकिन वह दिन तो गर्मियों के दिनों से भी अधिक लम्बा था।

कुछ देर बाद मुझे कल रात वाली छोटी लड़की की एक झलक दिखाई दी, और मैं उसको बुलाने के लिए काँग से कूद कर नीचे उतरी। लेकिन उसने मेरी ओर केवल मुस्करा दिया और पड़ौस की किसी गुफ़ा में ग़ायब हो गई। तब मैं आँगन में कुछ देर तक टहलती रही और मैंने एक गरुड़ को उड़कर गिरजे के पीछे जंगल की ओर जाते देखा। और मैं आँगन के विशाल वृक्षों को एकटक निहारती रही।

आँगन के अन्तिम छोर पर पहुँच कर मुझे किसी के रोने का स्वर सुनाई दिया। ऐसा लगा मानो कोई स्त्री अपनी व्यथा को दबाने की चेष्टा कर रही है। रह-रह कर वह नाक से सूँ-सूँ करती थी, पर फिर भी उसकी सिसकियाँ फूटी पड़ती थीं।

मैंने अपने मन पर क़ाबू करना चाहा और अपने को स्मरण दिलाया कि मैं इस स्थान पर क्यों आई हूँ—आराम करने और अपनी खोई शक्ति

को पुनः पाने के लिए। इसके अलावा मुझे पहले से निश्चित किये हुए प्रोग्राम के अनुसार ही चलना चाहिए। इस लिए मैं गुफ़ा में वापस लौट गई, लेकिन मेरा मन उद्विग्न बना रहा। मैंने अपनी कापी में जो नोट लिख रखे थे और जिन्हें मैं सैकड़ों बार पढ़ चुकी थी, वे गढ़ही के पानी की तरह निःस्वाद और फीके लगे।

यह एकरसता तब भंग हुई जब उस नन्हीं बालिका को साथ लिए श्रीमती ल्यू मिलने के लिए आईं। कुछ देर में ही उनकी पतोहू भी आ गई। वे सब काँग पर रखी जलते कोयलों की अँगीठी के इर्द-गिर्द पाल्थी मार कर बैठ गईं।

"तब किसी को किसी दूसरे की देख-संभाल करने की फ़ुरसत न थी", श्रीमती ल्यू ने लाल आकाश वाले गाँव पर हुए डेढ़ बरस पहले के जापानी हमले की ओर संकेत करके कहा। "यहाँ पहाड़ी पर हम कुछ अच्छी स्थिति में थे—कम से कम यहाँ से भाग निकलना आसान था। नीचे गाँव में तो शायद सभी के सभी जापानियों के घेरे में फँस गये थे। बाद में हमें पता चला कि मेरी भतीजी उस विदेशी पादरी के पास सन्यासिनी होने गई थी—अनेकों अफ़वाहें उड़ाई जा रही थीं—उसका पिता पश्चिमी वेद-वृक्ष गाँव के एक चावलों के व्यापारी लड़के के साथ उसकी शादी तै कर रहा था। उस लड़के की उमर तीस के क़रीब थी, और वह शादी-शुदा था। पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी और अब मेरी भतीजी उसकी दूसरी पत्नी बनने वाली थी। वे खूब खाते-पीते सम्पन्न लोग थे। हमें इस सम्बन्ध से बड़ा सन्तोष था, लेकिन चेन-चेन न मानी, और पिता के बार-बार अनुरोध करने पर रोने लगी। पिता भी अपनी जिद का पक्का था। उसने कहा कि मैं तुम्हारी हर बात मान सकता हूँ, पर यह नहीं। अपने बेटे की मृत्यु के बाद उसकी हमेशा से यह इच्छा रही थी कि अपनी बेटी की शादी किसी अच्छे घर में करे। कौन जानता था कि चेन-चेन पहाड़ी लाँघ कर गिरजे तक दौड़ी हुई जायेगी। इस

तरह वह आग में कूद पड़ी। ज़रा सोचिए तो, माँ-बाप को कितना दुख हुआ होगा ?

"क्या अभी-अभी उसकी माँ रो रही थी ?" मैंने पूछा।

"हाँ वही थी।"

"और तुम्हारी भतीजी का क्या हाल है ?"

"अरे उसका क्या ? आख़िर है तो कच्ची उमर की छोकरी ही। पिछली रात जब वह लौटकर आई तो ढाड़े मार-मार कर रो रही थी। लेकिन अब वह ऐसी ख़ुश-ख़ुश दिखाई देती है जैसे कभी कुछ हुआ ही नहीं। इस वक्त वह किसी जलसे में गई हुई है। अभी अठारह साल की ही है।"

"क्या यह बात सच है कि उसने एक जापानी से शादी की थी ?"

"निश्चित रूप से कहना कठिन है। कुछ ठीक नहीं कहा जा सकता। जितने मुँह उतनी बातें सुनने में आती हैं। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि वह भयानक रोग से पीड़ित है। वह ऐसे-ऐसे स्थानों में रही है, जहाँ अपनी पवित्रता की रक्षा करना उसके लिए संभव न था। मेरा ख्याल है कि अब व्यापारी के लड़के ने भी रिश्ता तोड़ लिया है। आख़िर शैतानों के यहाँ रही औरत को कौन चाहेगा ? यह तो पक्की बात है कि उसे बीमारी है। पिछली रात उसने ख़ुद इस बात को माना था। इतनी देर घर से बाहर रहने के कारण उसमें ज़मीन-आसमान का अन्तर आगया है। वह जापानियों की चरचा इतने सरल भाव से करती है जितने सरल भाव से हम चावल खाते हैं। अठारह वर्ष की उमर और शरम-हया का नामोनिशान नहीं।"

उसकी बहू ने टोक कर कहा, "सिया-ता-पाओ भी तो आज यहीं था।" उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से सास को देखा।

"सिया-ता-पाओ कौन है ?" मैंने पूछा।

मां ल्यू ने जवाब दिया, "वह नीचे की मिल में काम सीखता है। स्कूल में वह क़रीब एक साल तक चेन-चेन का सहपाठी रहा था। दोनों

की खूब पटती थी, लेकिन उसके माँ-बाप ग़रीब हैं। उनकी हालत हमसे भी गई-बीती है। शायद इसी वजह से वह चेन-चेन के साथ अधिक नहीं खुला। दरअसल तो हमारी चेन-चेन उसे अपनी उंगली पर नचाया करती थी। लेकिन उसके सन्यास लेने की इच्छा का कारण कुछ और ही था। जापानी जब चेन-चेन को पकड़ ले गये तो सिया-ता-पाओ कई बार उसके मां-बाप से मिलने गया। चेन-चेन के पिता ने जब उसे देखा तो उनके गुस्से का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने उसे जी भर के कोसा। वह बेचारा चुपचाप सुनता रहा। जापानियों द्वारा पहली बार गांव से खदेड़ दिये जाने के बाद वह फिर वापस लौट आया। यह लड़का बड़ा नेकदिल और सीधा है। अब वह आत्म-रक्षा-सेना में हवलदार के पद पर है। जहाँ तक मेरा अन्दाज़ है, वह आज फिर चेन-चेन से शादी करने का प्रस्ताव लेकर मेरी भाभी से मिलने आया था। लेकिन भाभी फफक-फफक कर रोने लगी और जाते समय सिया-ता-पाओ भी रो रहा था।"

"क्या उसे तुम्हारी भतीजी की दुर्दशा का हाल मालूम होगया ?"

"क्यों नहीं ? गाँव का हर बच्चा सारी घटना से परिचित है। जहाँ देखो यही चर्चा है।"

उसकी बहू ने दुबारा टोक कर कहा, "सब यही कहते हैं कि सिया-ता-पाओ बेवक़ूफ़ है।"

"मगर दिल का तो अच्छा है" मां ल्यू ने तपाक से जवाब दिया। "कम से कम मुझे तो इन दोनों की शादी में कोई एतराज नहीं। रहा रुपये-पैसे का सवाल, सो तो जब से जापानियों ने यहां झाड़ू फेरा है, किस की हालत खस्ता नहीं रही ? बातचीत से तो ऐसा लगता है कि भाई और भाभी भी इस रिश्ते का विरोध नहीं करेंगे। ता-पाओ के अलावा इस लड़की से और शादी करेगा भी कौन ? अगर उसे बीमारी न होती, तो भी उसकी शोहरत सुनते ही लोग भाग खड़े होते।"

छोटी लड़की भी बड़ी देर से बातचीत में शरीक होना चाहती थी। उसने छूटते ही सिया-ता-पाओ का बखान कर डाला। "जब वह यहाँ

आया था तो उसके बदन पर नीली फतूही और भूरी गरम टोपी थी।"

मुझे कुछ ख्याल-सा आया कि सुबह सैर पर जाते समय एक इसी तरह का आदमी दिखाई दिया था। वह मेरी गुफ़ा के सामने वाले आँगन में चहल क़दमी कर रहा था, और उसके चेहरे-मोहरे से गंभीरता और चतुराई टपकती थी। वापसी पर मैंने उसे फिर देखा। वह चीड़ के जंगल में से निकल कर बाहर आ रहा था। मैंने सोचा कि वह घर का कोई आदमी या पड़ौसी होगा, इस लिए उस पर विशेष ध्यान न दिया। मुझे लगा कि वह इतना बुरा लड़का नहीं है।

न जाने क्यों मां ल्यू का दुखड़ा सुनने के बाद मेरी मानसिक शान्ति भंग हो गई। मेरे मन में इतनी हलचल क्यों मच रही थी। मैं किसी विशेष व्यक्ति से मिलने के लिए उत्सुक नहीं थी, लेकिन मेरे मानस-पट पर अनेकों चित्र उभरने लगे। ये चित्र इतने शक्तिशाली थे कि इनसे पीछा छुड़ाना कठिन होगया।

शायद आह कुई मेरी मानसिक स्थिति को ताड़ गई थी। उसी शाम को वह मेरी गुफ़ा में आई। उसके पीछे कोई और व्यक्ति भी था। मैं उस समय गुफ़ा में अकेली थी। लेम्प जलाने के बाद मैंने आग पर अभी पानी की केतली चढ़ाई ही थी कि इन लोगों के क़दमों की आहट सुनाई दी।

"कामरेड देखिये आपसे मिलने कोई आया है।" आह कुई ने अपना वाक्य अभी ख़तम भी न किया था कि उसके स्वर की गंभीरता में से एक हल्की हँसी फूट निकली।

मैंने आगे बढ़कर नवागन्तुक से हाथ मिलाया। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि उसके हाथ अंगारे की तरह गरम थे। दोनों आकर कांग पर बैठ गये, और मैंने देखा कि उसकी पीठ के पीछे बालों का एक लम्बा गुच्छा लटक रहा है।

जिस गुफ़ा को मैं इतना सुनसान और नीरस समझती थी, उस लड़की को वह बहुत दिलचस्प जगह मालूम हो रही थी। वह अपनी कोहनी टेक

कर आराम से बैठ गई और नज़र घुमा कर चारों ओर देखने लगी। अन्त में उसकी दृष्टि मेरे चेहरे पर आकर टिक गई। मुँह पर परछाई पड़ने के कारण उसकी आँखें और भी लम्बी लग रही थीं। लेम्प की रोशनी तथा जलते हुए अँगारों के प्रकाश में उसकी आँखें उन झरोखों की तरह लग रही थीं जो सूरज की किरणें पड़ने से झिलमिला उठते हैं —वह इतनी स्वच्छ और निष्कपट थीं।

मुझे खुद नहीं समझ में आया कि बातचीत कैसे शुरू की जाय। आखिर मैं किस ढंग से बात करूँ जिससे उसके ज़ख्म फिर हरे न हो जायें और उसके आत्म-सम्मान को चोट न पहुँचे? मैंने केतली में से एक प्याला चाय उँडेली।

आखिरकार चेन-चेन ने ही चुप्पी तोड़ी। "क्या आप दक्षिण की रहने वाली हैं? मेरा ऐसा अनुमान है क्योंकि आप हमारे प्रान्त वासियों जैसी नहीं लगतीं।"

"क्या तुमने बहुत-से दक्षिण वासी देखे हैं?" मैंने यह सोचकर कि उसने बात का जो सिलसिला छेड़ा है, उसी का सूत्र पकड़कर चलना उचित होगा, उससे प्रश्न किया।

"नहीं" उसने सिर हिलाकर जवाब दिया। वह अब भी उसी निष्कपट भाव से मेरी आँखों में आँखें डालकर देख रही थी। "मुझे सिर्फ़ इने-गिने दक्षिणवासियों से मिलने का मौका मिला है। वे हम लोगों से बहुत भिन्न हैं। मुझे आपके प्रान्तवासी बेहद पसन्द हैं। आपके यहाँ की औरतें ढेर की ढेर किताबें पढ़ती हैं। वे हमारी तरह जाहिल नहीं। काश, मैं भी आपसे कुछ सीख सकती। क्या आप मुझे पढ़ायेंगी?"

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी। उसने छूटते ही कहा, "जापानी औरतें भी ढेर की ढेर किताबें पढ़ती हैं। जापानी सिपाही भी अपने पास अच्छे लिखे हुए पत्रों को संभाल कर रखते हैं। उनमें से कुछ पत्र तो उनकी पत्नियों के होते हैं, कुछ उनकी प्रेमिकाओं के और कुछ ऐसी लड़कियों के जिनसे वे परिचित भी नहीं। पत्रों के अन्दर उन

लड़कियों के चित्र लगे होते हैं। जिन्हें देखकर उन्हें रोमाँच हो आता है। सचमुच यह कितनी अजब बात है कि ऐसे खौफ़नाक आदमी, जिनका काम ही मरना-मारना है, इतना भी नहीं जानते कि उन्हें बुद्धू बनाया जा रहा है। वे उन पत्रों को अपनी सबसे क़ीमती धरोहर समझकर सदा छाती से चिपकाए फिरते हैं।"

"अच्छा, तो जापानी भी बोल सकती हो ?" मैंने पूछा।

उसके चेहरे पर घबराहट की एक रेखा-सी खिंच गई। लेकिन इस बात को खुले ढंग से क़बूल करने के बाद उसने तत्काल ही जवाब दिया, "एक साल तक उन लोगों के साथ अनेक स्थानों पर घूमते रहने के कारण मैं थोड़ी-बहुत सीख ही गई हूँ। उन लोगों की भाषा जानने के अनेकों लाभ थे।"

"क्या तुम उनके साथ बहुत-सी जगहों पर घूम आयी हो ?"

"नहीं, मैं किसी एक रेजिमेन्ट के साथ नहीं रही, लोगों का ख्याल है कि मैं एक जापानी अफ़सर की बीवी रह चुकी हूँ। लेकिन दरअसल मैं दो बार घर भाग आई थी। यह तीसरी बार है। पिछली बार उन्होंने मुझे जबर्दस्ती भेजा था। मैं इन्कार नहीं कर सकी। लेकिन अब वह मुझे फिर नहीं भेजेंगे। वे मेरी बीमारी का इलाज करना चाहते हैं। मैं भी माँ-बाप की चिन्ता करते-करते इसी बहाने उनसे मिल लेती हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि माँ का क्या करूँ। जब उसे मालूम हुआ कि उसकी बेटी खो गई है तो उसने रो-रोकर अपनी आँखें अन्धी कर डालीं। लेकिन अब मेरे लौट आने के बाद भी उसका रोना वैसे ही जारी है।"

"तुम्हें बहुत-से कष्ट झेलने पड़े होंगे।"

कष्ट का नाम सुनते ही आह कुई के चेहरे पर व्यथा की एक झलक दिखाई दी। उसकी आँखों में आँसू छलक आये। यह कल्पना करना भी असंभव है कि नारी का जीवन कितना बड़ा अभिशाप है। "अपनी बात

जारी रखो चेन-चेन," उसने बड़े दुलार से चेन-चेन का कन्धा सहला कर आग्रह किया।

"कष्ट और कटुताएं !" चेन-चेन ने मानो किसी गहरे सोच में पड़कर इन शब्दों को दुहराया। "अब मैं कुछ नहीं जानती। कई चीजें एक समय के लिए कष्टदायी थीं, लेकिन अब वे वैसी नहीं लगतीं। कुछ ऐसी भी थीं जिन्हें मैं आसानी से झेल गई। पर अब उनका ख्याल आते ही मेरा कलेजा धक् से रह जाता है। एक वर्ष के अन्दर ही यह सब घटनाएँ स्मृति में धुंधली हो गई। जब मैं घर लौटी तो लोग मेरी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगे। अपने ही गाँव को देखिये। कुछ लोग मुझसे स्नेह करते हैं और कुछ मुझे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। लेकिन सब का व्यवहार ऐसा है जैसे मैं उनके लिए कोई अजनबी हूँ। यहाँ तक कि मेरे अपने सगे-संबंधी भी ऐसा ही करते हैं। मैंने कई बार उन्हें छिप-छिप कर अपनी ओर ताक-झाँक करते देखा है। कोई भी मुझे पहले वाली चेन-चेन नहीं समझता। मगर क्या सचमुच मैं इतना बदल गई हूँ ? मैंने खुद भी इस बारे में बहुत सोचा है और इसी नतीजे पर पहुँची हूँ कि मैं बिलकुल नहीं बदली। हो सकता है कि सिर्फ़ मेरा दिल पहले से कुछ ज़्यादा सख्त हो गया हो। आख़िर ऐसे कटु अनुभवों में से गुज़रने के लिए दिल और दिमाग़ का सख्त हो जाना स्वाभाविक बात है।"

मुझे सब से अधिक हैरानी तो इस बात से हुई कि चेन-चेन के चेहरे पर उस भयानक बीमारी का एक भी लक्षण न दिखाई देता था। उसके गाल एक गुलाबी आभा से चमक रहे थे और उसका स्वर रजत घंटी की तरह मीठा और स्पष्ट था। उसके व्यवहार में किसी प्रकार की घबराहट या अपराध की भावना नहीं झलकती थी। न ही वह फूहड़ और असंस्कृत थी। उसकी निश्चिन्त सरलता से कोई भी यह अनुमान लगा सकता था कि इस लड़की को जीवन में कभी किसी प्रकार की चिन्ता से पाला नहीं पड़ा। मैं यह सब देखकर चकित-सी रह गई, और उससे उसकी बीमारी के बारे में पूछे बिना न रह सकी।

"ज़िन्दगी में ऐसा ही होता है," उसने सरलता से जवाब दिया। "भला आप ही बताइये कि आप मुझसे भी कठिन परिस्थितियों का सामना कैसे कर लेती हैं। फिर भी आप गर्व से सिर ऊँचा करके बहादुरी से चलती हैं! आप मौत का भी सामना कर सकती हैं! लेकिन मैं अब इस ढंग से नहीं सोचती। जहाँ तक हो सके इन्सान को आख़िरी दम तक जीने की कोशिश करनी चाहिए, इसी लिए जब इन लोगों ने मेरा इलाज करने का फ़ैसला किया तो मैं झटपट मान गई। पिछले कुछ दिनों से तो मुझे अपनी बीमारी का ख़्याल भी नहीं आता। मुझे दो इन्जेक्शन और खाने के लिए कुछ गोलियां दी गईं। उस समय तो कुछ फायदा हुआ लेकिन पतझर आते-आते मेरी हालत फिर बिगड़ गई। मैं अन्दर ही अन्दर गलने लगी, और बदक़िस्मती से उसी मौक़े पर मुझे ज़रूरी ख़बरें भेजने का काम सौंपा जाता। न ही मैं अपनी जगह पर किसी और को भेज सकती थी, इसलिये मुझे रातभर तीस ली का सफ़र करके घर जाना पड़ता था। अक्सर अन्धेरे में मैं रास्ता भूल जाती और ठोकर खा कर गिर पड़ती। जी में आता कि वहीं सुस्ता लूँ लेकिन हर समय दिल में जापानियों का डर बैठा रहता, कि कहीं वे शैतान मुझे देख न लें। देरी हो जाने के डर से मैं फिर उठ खड़ी होती। एक बार तो थकावट से चूर होकर मुझे पूरे एक सप्ताह के लिये चारपाई की शरण लेनी पड़ी थी। आख़िरकार मरना भी कौन सा आसान है?"

चेन-चेन अपनी बातों के बीच में थोड़ी-थोड़ी देर बाद रुक जाती थी और उसकी आँखें रह-रह कर आह कुई और मेरे चेहरे पर टिक जातीं। शायद वह यह जानना चाहती थी कि हमारे ऊपर उसकी बातों का क्या असर पड़ा है। लेकिन संभवतः इसलिए भी कि ऐसे मौलिक अनुभव को सुनाने के लिए बीच-बीच में ठहरना ज़रूरी था। उसने ज़रूर आह कुई के चेहरे की दशा देख ली होगी। आह कुई की टिप्पणियाँ अगाध सहानुभूति से सराबोर थीं, लेकिन जब उसने अपनी आदत के अनुसार चुप्पी साध ली, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

मुझे न जाने क्यों ऐसा लगा कि चेन-चेन को यह नहीं मालूम कि हम अपने को उसकी स्थिति में रख कर सोचने की कोशिश कर रहे थे। अपनी कल्पना से हम उसकी समूची वेदना को उतनी ही गहराई से अनुभव कर रहे थे। उसका एक-एक शब्द दिल की गहराइयों से निकल रहा था और अपनी निष्कपट सरलता के कारण उससे सत्य की अनुगूँज सुनाई देती थी। अगर वह पूरी कहानी उतनी सच्चाई से न सुनाती, या ऐसी निस्संगता न बरतती मानो किसी और की कहानी सुना रही है तो शायद हमारे ऊपर इतना गहरा प्रभाव न पड़ता, और इकट्ठे बैठ कर रो लेने के बाद कहानी के समाप्त होने पर शायद हम चैन की साँस लेते। आखिरकार आह कुई रोने लगी और उल्टे चेन-चेन उसे तसल्ली देने लगी। चेन-चेन से कहने के लिए मेरे मन में लाखों बातें उमड़ रही थीं लेकिन मैं एक को भी व्यक्त न कर पाई। चेन-चेन के जाने के बाद मैं एक घण्टे तक लैम्प की मन्द रौशनी में कुछ पढ़ने की कोशिश करती रही। मैंने इस डर से कि कहीं आह-कुई का चेहरा न दिखाई दे जाये, जान-बूझ कर अपनी आँखें किताब में गड़ा दीं। मैं उससे एक शब्द भी न बोली, हालाँकि उसके बार-बार करवटें बदलने और सर्द आहें भरने की आवाज़ सुन कर मैं यह जान गई थी कि उसके लिये सोना दुश्वार हो रहा है।

इस मुलाक़ात के बाद चेन-चेन मुझे मिलने के लिये हर रोज़ आने लगी। वह घंटों बैठी मुझ से बातें करती रहती। अपनी बातें बताने के बाद वह अक्सर मुझ से नई-नई बातों के बारे में पूछती, उसे दक्षिण-वासियों में बहुत दिलचस्पी थी। कभी-कभी तो उसके लिये मेरी बातों को समझना कठिन हो जाता, विशेषकर नये विषयों पर। तो भी वह बड़ी तल्लीनता से मेरी बातें सुनती थी।

वह एक बार मेरे साथ पहाड़ी के ढलवान पर सैर करने भी गई थी। रास्ते में अनेकों ऐसे नवयुवक मिले जिनका नाम मोर्चे पर जाने वालों की सूची में लिखा था। वे चेन-चेन से बड़ी आत्मीयता से बातें

करने लगे, उनके व्यवहार से मालूम होता था कि वे चेन-चेन के कई गुणों पर मुग्ध हैं। लेकिन गाँव के दुकानदार की क़िस्म के कई लोगों ने हमारे गुज़रने पर नाक-भौं सिकोड़ी। चेन-चेन के प्रति उनकी घृणा तो इस सीमा पर पहुँच चुकी थी कि वे सिर्फ़ इसी लिये, कि मैं भी उसके साथ थी, मुझे भी हिक़ारत भरी आँखों से देख रहे थे। औरतों का रवैय्या तो और भी बुरा था, क्योंकि वे मन ही मन चेन-चेन से अपनी तुलना करके अपनी प्रतिष्ठा तथा सच्चरित्रता पर फूली न समाती थीं। उन्हें इस बात का गर्व था कि उनका सतीत्व सुरक्षित है और उनके साथ कभी भी बलात्कार नहीं हुआ।

आह कुई के चले जाने के बाद हमारी घनिष्ठता और भी बढ़ गई, एक-दूसरे को देखे बगैर चैन न पड़ता। वह रक्त-मांस की एक सजीव पुतली थी। वेदना और सुख—दोनों का अनुभव वह गहराई से कर सकती थी। उसकी आत्मा स्वच्छ और निर्मल थी।

चेन-चेन के साथ बात-चीत करने में मेरा बहुत सा समय बीत जाता। लेकिन मैं ऐसा महसूस करती कि मैं बहुत-कुछ सीख रही हूँ और उस वातावरण से मेरा स्वास्थ्य भी सुधर रहा है। लेकिन दिन जल्दी-जल्दी बीत रहे थे। मुझे ऐसा लगा कि शायद चेन-चेन का पूरी तौर से मैं विश्वास नहीं प्राप्त कर पाई। किन्तु मुझे इस बात से निराशा नहीं हुई, ना ही मैंने उसके दिल की गहराई में झांकने की कोशिश की। क्योंकि मेरा ऐसा ख़्याल था कि हर इन्सान के दिल में एक-न-एक ऐसा राज़ जरूर छिपा होता है, जिसे वह ग़ैरों के सामने नहीं खोल सकता चूंकि और लोगों का इस राज़ से विशेष संबंध नहीं होता, इसलिए इस राज़ का व्यक्ति के अन्य गुणों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मेरे जाने के दिन करीब आ गये थे। इसलिए मुझे चेन-चेन के बारे में चिन्ता होने लगी। वह हर समय इस तरह बेचैन रहती थी, मानो उस के दिल पर कोई भारी बोझ हो। वह पहले ही की तरह मेरी गुफ़ा में आती लेकिन शांतिपूर्वक बैठने की बजाय इधर-उधर चहल-क़दमी

करती रहती और कुछ ही मिनटों बाद वहाँ से चली जाती। मुझे मालूम था कि इन दिनों उसकी भूख बहुत ही कम हो गई थी, और अक्सर वह खाना नहीं खाती थी। चूँकि जबरदस्ती उसका विश्वास प्राप्त करना उचित न समझ कर मैंने उसे इधर-उधर की बातों में लगाना चाहा; लेकिन ऐसा लगता कि वह आशा भरी दृष्टि से मेरी ओर देख रही है। फिर दूसरे ही क्षण वह उदासीनता का अभिनय करके अपनी सारी चिन्ताओं पर परदा डाल लेती थी। मैंने इस बात को ग़ौर से देखा कि वही होशियार-सा दिखाई देने वाला लड़का,जिसका नाम लोग चेन-चेन के साथ लेते थे, चेन-चेन की माँ के शयन-गुफ़ा से निकलकर बाहर आया। मुझे उसके साथ इसलिए हमदर्दी थी कि वह चेन-चेन के बारे में सब बातें विशेषकर उसके रोग के बारे में भी सब कुछ जानते हुए भी उससे मिलने लिए इच्छुक था। लोकनिन्दा की परवाह न करते हुए उसने चेन-चेन के माँ-बाप से चेन-चेन के साथ शादी करने का प्रस्ताव किया। उसकी इस बात से यह स्पष्ट था कि वह अपनी ज़ुम्मेदारी को समझता है विशेषकर ऐसे समय में जब कि उसकी प्रेयसी को उसकी आवश्यकता हो। जहाँ तक चेन-चेन का सम्बन्ध था उसके व्यवहार में यह बात प्रकट नहीं हुई थी कि उसे सुरक्षा की जरूरत है या वह इस बात की इन्तज़ार में है की कोई पुरुष आकर उससे शादी का प्रस्ताव करे। तो भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसके घावों को भरन के लिए असाधारण स्नेह, समझदारी तथा सहानुभूति की ज़रूरत थी। मेरे जी में तो आया कि एक कोने में जाकर जी भर कर रो लूँ और उसके बाद चेन-चेन की शादी की दावत में शामिल होऊँ। मेरे जाने से पहले ही इस खुशख़बरी के आने की सम्भावना थी। लेकिन "चेन-चेन के मन में कैसे विचार उठ रहे हैं," मैंने अपने से पूछा तो भी मुझे पक्का भरोसा था कि जल्द ही सब मामला तय हो जायेगा, इसलिए यह सोचकर में निश्चिन्त हो गई।

मा ल्यू, उसकी बहू और नन्ही सी लड़की अक्सर मेरी गुफ़ा में आती रहती थीं। उन्होंने कई बार मुझ से चेन-चेन के विवाह के सम्बन्ध में

बातचीत करने की कोशिश की। वे मुझे चेन-चेन के बारे में नई-नई बातें बताती थीं लेकिन मैंने कभी उन्हें बहुत ज़ुबान खोलने का मौक़ा नहीं दिया। मेरा ख्याल था कि मान लीजिए कि मेरी सहेली मुझ से अपना कोई राज छिपाकर रखती है, तो मेरे लिए यह अनुचित होगा कि मैं उससे इस विषय में सीधा सवाल करूँ या और दुनिया भर में इस की चर्चा करती फिरूँ। क्योंकि ऐसा करने ऐसे बदनामी के साथ-साथ' हमारी मित्रता को भी ठेस लग सकती है।

एक रोज साँझ के झुटपुटे में सारा आँगन उसी तरह भीड़ से भर गया जिस तरह चेन-चेन के आने के रोज भर गया था। पास-पड़ोस के लोग सर हिला-हिला कर काना-फूँसी कर रहे थे। उनके बोलने के ढंग से सही बात का अनुमान लगाना कठिन था, क्योंकि कुछ लोग उदास दिखाई देते थे और कुछ की बाछें खिली हुई थीं, मानो कोई तमाशा देख रहे हों। कोहरे से भरे ठण्डे वातावरण में रह-रह कर उनके मुंह से भाप सी निकल रही थी। कुछ लोग अपने कन्धे हिला रहे थे और कुछ बात सुनने की चेष्टा में नीचे की ओर झुके हुए थे। एक-आध ने तो साफ़ सुनने के लिए कानों पर हाथ भी धरा हुआ था। उन सब के काना-फूँसी और आँख मटकाने के ढंग से ऐसा लगता था कि वह किसी मनो-रंजक स्थिति का आनन्द ले रहे हैं।

चेन-चेन की माँ की गुफ़ा में शोर मच रहा था। अचानक ही मुझे चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं। कोई पुरुष, सम्भवतः चेन-चेन का पिता कुछ कह रहा था और चीनी के बर्तन चकनाचूर किये जा रहे थे। मेरे लिये अपने ऊपर और अधिक काबू पाना कठिन हो गया और मैं भीड़ को चीरती हुई वहाँ पहुँची।

चेन-चेन की माँ ने मुझे देखते ही कहा "अच्छा हुआ, आप आ पहुँचीं" चेन-चेन को समझाने में हमारी कुछ मदद कीजिये।" उसके स्वर में आग्रह था।

चेन-चेन एक कोने में खड़ी थी। उसके बाल बिखरे हुए थे और

आँखें खूँखार हो रही थीं। मैं उसके सामने जाकर खड़ी हो गई, तो भी उसने मुझे नहीं पहचाना। शायद उस समय वह मुझे अपना दुश्मन समझते हुए मेरी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखना चाहती थी। वह इतनी बदल गई थी कि उसे देखकर उसकी पहली स्फूर्ति तथा सजीवता का अनुमान लगाना भी कठिन था। इस समय वह पाशविक प्रतिहिंसा से धधक रही थी। लेकिन मुझे अभी तक यह न पता लगा था कि आखिर उसकी इस असीमित घृणा का पात्र कौन व्यक्ति है ?

"अरी ज़ालिम छोकरी, तुझे कुछ अन्दाज़ भी है कि तेरे मां-बाप ने पिछले डेढ़ वर्ष में कितने कष्ट झेले हैं ?" उसकी मां बार-बार अपनी जाँघों को पीट कर रुँधे हुए गले से कह रही थी। बोलते समय उसकी आँखों से आंसू ढलक-ढलक कर नीचे काँग पर गिर रहे थे। उसका चेहरा भी आँसुओं से भीग गया था और जब वह काँग से उतरने के लिये नीचे झुकी तो कुछ बूंदें गालों से गिर कर फ़र्श पर चू पड़ीं।

आस पड़ोस की औरतों ने इस डर से कि कहीं वह मारपीट पर उतारू न हो जाये उसे एक ओर धकेल दिया। उसका रौद्र रूप देखकर मैं दँग रह गई। मैं उससे कहना चाहती थी कि ऐसी स्थिति में शोर शराबा मचाने से कोई लाभ नहीं, लेकिन साथ ही मैंने यह भी अनुभव किया कि उसकी वर्तमान मानसिक स्थिति में अगर मैं उससे कुछ कहूँगी भी तो उसका कोई असर नहीं पड़ेगा।

उसका पति हतबुद्धि हो गया था। वह देखने में बूढ़ा और दुर्बल लग रहा था और लगातार आहें भर-भर कर अपना सिर हिला रहा था।

सिया-ता-पाओ उसके पास ही बैठा था। उसके चेहरे पर घोर निराशा का भाव था।

"बोलो, जवाब दो ! जवाब दो !" चेन-चेन की माँ ने चीख कर कहा।" क्या अपने बूढ़े माँ-बाप पर दया करके तुम्हारे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता !"

उसे सान्त्वना देने के लिए औरतें समझा रही थीं, "वह हमेशा तो

ऐसी हठी नहीं बनी रहेगी। कुछ देर बाद तो समुद्र का ज्वार भी उतर जाता है।"

पर मुझे साफ़ नजर आ रहा था कि उनकी आशाओं के अनुसार इस मामले का अन्त न होगा। चेन-चेन की मुख-मुद्रा से साफ़ झलकता था कि न तो उसके दिल में किसी के लिए दया है और न वह किसी की दया की भूखी है। उसने अपना इरादा पक्का कर लिया था। इस बार समुद्र का ज्वार नहीं उतरेगा। वह दाँत भींच कर उनके प्रस्ताव का अन्त तक विरोध करेगी।

बहुत-कुछ कहने-सुनने के बाद मैंने उन्हें इस बात पर राज़ी कर लिया कि वह चेन-चेन को शाम तक के लिए अपने हाल पर छोड़ दें ताकि वह आकर मेरी गुफ़ा में आराम करले। इस तरह मैंने उन औरतों से तो उसका पिण्ड छुड़ा लिया लेकिन उसने मेरे साथ न आकर वहाँ से छूटते ही भागकर पहाड़ी का रास्ता पकड़ा।

आँगन में अभी भी भीड़ जमा थी। लोगों को उम्मीद थी कि अभी और नोंक-झोंक चलेगी।

"उस लड़की के मन में ग़रूर समाया है, सच !"

"अजी, वह तो हम किसानों से नफ़रत करती है !"

"सूप बोले तो बोले पर अब चलनी भी बोलने लगी जिसमें बहत्तर छेद हैं। दरअसल शिकायत करने का हक़ तो सिया-ता-पाओ को है।"

वहाँ से गुज़रते समय मैंने ऐसे ही दुर्वचन सुने। लेकिन जल्द ही यह देखकर कि अब तमाशा खत्म हो गया, पड़ोसी अपनी-अपनी गुफ़ाओं को वापस चले गये।

मैं कुछ देर तक तो आँगन में खड़ी सोचती रही, फिर मैंने पहाड़ी पर उस दिशा में ही जाने का निश्चय किया जिधर चेन-चेन गई थी।

पहाड़ी की चोटी पर लम्बे-लम्बे चीड़ के वृक्षों की छाया में असंख्य समाधियाँ बनी हुई थीं। चारों ओर पत्थर के स्मारक बने हुए थे। इनमें

से बहुत से टूट चुके थे, और उनके टूटे टुकड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे। इस स्थान की निर्जन वायु मन में अवसाद भर देती थी। इतनी निस्तब्ध शान्ति छायी थी कि हवा के झोंकों में पत्तों का मर्मर भी न सुनाई देता था। मैंने चेन-चेन का नाम पुकार-पुकार कर यह शान्ति भंग करदी। पहाड़ी की एक बग़ल से दूसरी बग़ल तक मैं पुकारती फिरी। प्रतिध्वनियां मेरी पुकारों का उत्तर देतीं और पुनः पहाड़ियों में निबिड़ शान्ति छा जाती। इस समय तक अस्त होते सूरज की आखिरी किरणें भी डूब चुकी थीं, केवल एक हल्का धुँधलका-सा बाक़ी रह गया था, जो पहाड़ियों के गर्तों में और घना होकर बसता जा रहा था।

मेरी समझ में न आता था कि मैं आगे बढ़ूँ या वहीं रुक कर चेन-चेन का इन्तज़ार करूँ। इस विकल्प की दशा में मैं वहीं एक टूटे स्मारक के पत्थर पर बैठ गई।

वहाँ से मैंने एक छाया को पहाड़ी पर चढ़ते हुए देखा, और कुछ देर में ही मैंने उस व्यक्ति को पहचान लिया। वह सिया-ता-पाओ था। मैं यह सोचकर चुप रही कि वह मुझे वहाँ देखे बिना ही गुज़र जायेगा। लेकिन ज़ाहिर है कि उसने मुझे दूर से ही देख लिया था।

मुझे विवश होकर उसे बुलाना पड़ा। "क्या तुम उसकी तलाश में हो ? मुझे तो उसका कहीं चिन्ह भी नहीं दिखाई दिया।"

जहाँ मैं बैठी थी वहाँ आकर वह सूखी घास पर मेरे कदमों में पल्थी मारकर बैठ गया। सचमुच ही वह बहुत कम उम्र का दिखता था। उसकी भौंहें पतली और लम्बी थीं और आँखें बड़ी-बड़ी थीं जिनमें इस समय पीड़ा का भाव झलक रहा था। उसने अपना छोटा सा मुख इस समय कसकर बन्द कर रखा था। उसके मुख पर चमक और उल्लास की मुद्रा भी कभी झलक सकती है; मैंने सोचा, लेकिन इस समय तो उसकी आकृति चिन्ताग्रस्त हो रही थी। मैंने देखा कि उसकी नाक से वफ़ादारी का भाव टपकता था, लेकिन इससे उसे कौन-सा लाभ हो सकता था ?

"दुखी मत हो," उसको धीरज बँधाने के लिए मैंने ज़बर्दस्ती

अपने को मजबूर करके कुछ सान्त्वना के शब्द कहे। "शायद वह कल तक ठीक होजाय। आज शाम को मैं उससे अच्छी तरह बात करूँगी।"

"कल-कल—वह हमेशा मुझ से नफ़रत ही करती रहेगी। मैं जानता हूँ कि उसे मुझसे नफ़रत है," वह भर्राये स्वर में फूट पड़ा, और उसकी आवाज़ में दर्द था।

"नहीं," मैंने इन्कार किया। "उसने कभी किसी के खिलाफ़ नफ़रत नहीं दिखायी।" और अपनी स्मृति को टटोल कर मैंने अनुभव किया कि मैंने झूठ नहीं कहा है।

"वह आपसे नहीं कहेगी। वह किसी से न कहेगी। लेकिन वह मुझे कभी माफ़ नहीं कर सकती।"

उसकी भावना की उग्रता से किंचित चकित होकर मैंने पूछा, "आखिर वह तुमसे क्यों नफ़रत करती होगी ?"

"सुनिये," हठात् मुड़कर मेरे मुख पर टकटकी बाँधते हुए उसने उत्तर दिया, "सोचिए तो, मैं छोटी उम्र का था और गरीब भी—क्या मैं उसको लेकर भाग जा सकता था ? क्या इसमें मेरा दोष था ? बताइये !" लेकिन मेरा उत्तर सुनने की प्रतीक्षा किये बिना ही वह कहता गया जैसे अपने आप को ही सुना रहा हो," ग़लती मेरी थी, निश्चय ही ग़लती मेरी ही थी। तो उसको मैंने ही बर्बाद किया। अगर मुझ में इतना ही साहस होता तो वह कभी भी......"फिर अपना स्वर बदल कर वह बोला, "मैं उसके स्वभाव से खूब परिचित हूँ। वह मुझसे क़यामत तक नफ़रत करती जायेगी। बताइये, मैं क्या करूँ ? वह मुझसे क्या चाहती है ? मैं उसे किस तरह सुखी बना सकता हूँ ? मेरे जीवन की कोई क़ीमत नहीं। काश मैं उसके किसी काम आ सकता। क्या आप मुझसे कुछ नहीं बता सकतीं ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि आखिर क्या करूँ। इस व्यथा को मैं कैसे झेल सकूँगा ? इससे तो यही ज्यादा अच्छा होता कि जापानी दरिन्दे मुझे घसीट ले जाते और खत्म कर देते।"

वह अभी अपनी बात जारी रखता लेकिन अँधेरा बढ़ रहा था,

इसलिए मैंने उससे लौट चलने का प्रस्ताव किया। कुछ क़दम चलने के बाद वह अचानक ठिठककर रुक गया और कहने लगा कि उसे पहाड़ी की चोटी से कुछ आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। मैंने उसे जाने दिया और तब तक उसके पीछे देखती रही जब तक कि वह चीड़ के जंगल में आँख से ओझल नहीं हो गया।

जब मैं पहाड़ी से नीचे उतरी तो अँधेरा हो चुका था। उस रात मैं बड़ी देर से सोयी, लेकिन उन दो व्यक्तियों की कोई ख़बर नहीं आई। न मुझे यही पता चला कि उन पर क्या बीती।

दूसरे दिन तड़के ही मैंने अपनी चीज़ें चमड़े के सन्दूक में बन्द कीं और अपना बोरिया-बिस्तर समेटा। कामरेड मा सामान उठवाने में मेरी मदद के लिए आने का वायदा कर गया था। अब मैं किसी सूरत में और अधिक नहीं रुक सकती थी, क्योंकि हाल ही में ख़बर मिली थी कि दुश्मन—अर्थात् जापानी हमारे ख़िलाफ़ मोर्चेबन्दी कर रहे थे और विभाग के अध्यक्ष मो ने आज्ञा निकाली थी कि तमाम ज़ख्मी और बीमार साथियों को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाया जाय। मेरे सामने एक ही चारा रह गया था कि मैं मोर्चे से दूर स्थित राजनैतिक विभाग के पास चली जाऊँ, लेकिन मेरे मन में भारी उथल-पुथल मच रही थी। क्या मैं कुछ दिन और यहाँ ठहरने का आग्रह करूँ? दूसरे ही क्षण ख्याल आया कि गड़बड़ी की हालत में अपनी बीमारी के कारण मैं दूसरों पर भार डालने के अतिरिक्त उनके और किसी काम न आ सकूँगी। मान लो मैं यहाँ से चली जाऊँ तो फिर लौटना कब संभव होगा? मैं अपने बिस्तर पर पल्थी मारे इसी उधेड़बुन में थी कि अचानक किसी के दबे पांव गुफा में आने की आहट हुई।

चेन-चेन एक छलाँग में उछल कर मेरे साथ काँग पर आ बैठी। मैं ने एक ही नज़र में देख लिया कि उसका चेहरा कुछ सूज-सा गया था। और जब आग पर हाथ सेकते समय मैंने उसका हाथ छूआ तो आज फिर

पाया कि वह अँगारे सा तप रहा था। उसे छू कर ही मुझे मालूम हुआ कि उसकी बीमारी कितनी गंभीर है।

"चेन-चेन !" मैंने उससे कहा, "देखो, अब मैं यहाँ से जा रही हूँ। न जाने फिर कब मुलाक़ात हो। कभी-कभी अपनी तथा अपनी माँ की कुशल के बारे में समाचार भेजती रहना।"

"मैं भी ठीक यही आपसे कहने आई थी। उसने बीच में टोककर कहा।" मैं भी कल यहाँ से चली जाऊँगी, जितनी जल्द इस जगह से छुटकारा मिले, उतना ही अच्छा है।"

"तुम सचमुच जा रही हो ?"

"निश्चित रूप से।" उसने जवाब दिया। उसकी पुरानी सजीवता फिर लौट आई थी। और एक अजब सी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर खेल रही थी।" ये लोग मुझे इलाज करवाने के लिए शहर भेज रहे हैं।"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई। सोचा चलो अच्छा है, इकट्ठे सफ़र करने का अवसर मिलेगा। मैंने भी एक दिन अधिक रुकने का फ़ैसला किया।

"क्या तुम्हारी माँ को इस बात का पता है ?" मैंने पूछा।

"पूरी तौर से नहीं।" उसने जवाब दिया। "उसका ख्याल है कि मैं इलाज के लिए जा रही हूँ इसलिए जल्द ही लौट आऊँगी। यह सोचकर अब वह अधिक शोर नहीं मचायेगी।"

उसके गहरे आत्मविश्वास को देखकर मैं मन ही मन पिछली शाम की घटना से उसकी तुलना करने लगी। मुझे अचानक सिया-ता-पाओ के शब्द स्मरण हो आये, जो उसने चेन-चेन के विषय में कहे थे। मैंने हिम्मत बाँध कर पूछा, "क्या तुम्हारी शादी तय हो गई है ?"

"भला शादियाँ भी कहीं ऐसे तय होतीं ?" उसने तपाक से जवाब दिया।

"अच्छा तो तुम माँ की सलाह पर राज़ी होने लगी हो ?" मैंने जानबूझ कर उसके भावी जीवन : बन्ध में अपनी सद्भावनाएँ प्रकट

नहीं कीं। मैं सिया-ता-पाओ के व्यक्तित्व के विषय में अधिक नहीं सोचना चाहती थी, तो भी मैं उसके सुख की कामना करने लगी।

"माँ की सलाह ?" चेन-चेन ने क्रोध से आगबबूला होकर कहा। वह फिर आवेश में आ गई थी। "भला मैं उसकी सलाह क्यों लूँ ? क्या वह कभी मेरी सलाह लेती है ?"

"तो तुम्हें सचमुच ही सिया-ता-पाओ से सख्त नफ़रत है ?"

उसने बहुत देर तक चुप रहने के बाद कुछ सोचकर गम्भीर शान्त स्वर में जवाब दिया, "नफ़रत की बात तो मैं नहीं जानती। लेकिन मैं बीमारी से पीड़ित हूँ। कितने जापानी दरिन्दे मेरे साथ रह चुके हैं, इसकी गिनती मैं स्वयं नहीं कर सकती। इसलिए मैं अपवित्र हूँ। यही कारण है कि मैं इस दशा में सुख खोजने के लिए उत्सुक नहीं हूँ। एक पति के साथ रहने की बजाय मेरे लिए यही बेहतर होगा कि मैं अपरिचितों के साथ रहूँ अब मुझे ये लोग शहर के अस्पताल में भेज रहे हैं। वहीं रहूँगी। सुनते हैं कि शहर में ढेर से स्कूल हैं। शायद मैं भी किसी में भरती हो सकूँ। कहते हैं कि वहाँ हर किसी को भरती कर लेते हैं। यहाँ रह कर मेरी किसी से नहीं पट सकती। तो फिर क्यों न हर किसी को अपने ढंग से जिन्दगी बसर करने की आज़ादी हो ? उसी में सब का कल्याण है। मेरा ख्याल है कि ऐसा करने से मैं किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा रही। न ही मैं स्वार्थवश अपना सुख खोज रही हूँ। फिर भी अगर लोग सोचते हैं कि मैं कच्ची उम्र की और नासमझ हूँ या उद्दण्ड स्वभाव की हूँ—तो सोचा करें ! मुझे क्या ग़रज़ पड़ी है कि उनसे सिर-खपाई करती फिरूँ। आखिर उन्हें इससे क्या लेना-देना कि मैं वास्तव में क्या सोचती हूँ।"

मैं यह देख कर दंग रह गई कि उसने कितनी जल्दी सब बातें तै कर डालीं। मुझे उसकी आत्मा की गहराइयों की एक और झलक मिली और मैं गहरे सोच में डूब गई। लेकिन उस समय तो मैंने केवल उसके निश्चय का समर्थन मात्र किया।

मैं और अधिक रुकने का विचार छोड़कर उसी रोज़ वहाँ से चला

आई। परिवार के सारे लोग मुझे विदाई देने आये थे, लेकिन सिया-ता-पाओ फिर दिखाई नहीं दिया।

मुझे चलते समय किसी बात का खेद न था क्योंकि मैं उसके भविष्य के बारे में आश्वस्त थी। हम जल्द ही फिर मिलेंगे। फिर मिलेंगे और साथ-साथ काम करेंगे।

पहाड़ी से उतरते समय कामरेड मा मेरे साथ थे। चेन-चेन ने अपने भावी जीवन की योजनाओं के बारे में जो कुछ मुझे बताया था, उन्होंने भी उसकी सचाई की साक्षी दी।

लाल आकाश वाले गाँव की ओर पीठ कर के जब मैंने उस लम्बी, धूलभरी सड़क का सामना किया उस समय मेरे मन में यह भावना जाग रही थी कि चेन-चेन और उसके जैसी असंख्य दूसरी लड़कियों के साथ हम एक ऐसे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं, जो अपनी संभावनाओं के कारण उज्ज्वल है।

शाओ-जू-नान

१९१६—

आप जेचुआन प्रान्त में जूयाँग के रहने वाले हैं।

शाओ जू-नान नई पीढ़ी के श्रमजीवी लेखकों में से हैं; लेखक होने के साथ-साथ क्रान्ति के लिये सक्रिय रूप से लड़ने वाले योद्धा हैं। जापान-विरोधी युद्ध के प्रारम्भ में आप उत्तरी चीन में अठारहवीं फौज के सदर दफ्तर की फौजी एकेडमी के सदस्य थे। यह एकेडमी इस फौज के पीछे-पीछे चलती थी और उसकी कठिनाइयों तथा विजयों में समान रूप से सहभागी होती थी। आप छापेमार युद्ध में प्रवीण हो गये और साथ ही जनता के बीच काम करते हुए आपने लिखना सीखा। उन दिनों आप एक छापेमार दस्ते के कमान्डर भी थे। सन् १९३८ से ४४ तक आप उत्तर-पश्चिमी युद्धस्थल के सर्विस दस्ते के साथ नियुक्त रहे। यह दस्ता शान्सी, जहार और होपे आदि सीमान्त जिलों में अपना कार्य कर रहा था। तब से आपका प्रधान कार्य लिखना रहा है। इस समय आप चुंगकिंग लेखक संघ के मेम्बर हैं। उनकी लिखी सर्व-प्रसिद्ध कहानी "धरती में सुरंगें बिछी हैं! सावधान!" है।

धरती में सुरंगें बिछी हैं ! सावधान !

"धरती में बिछने वाली सुरंगें तरबूज की तरह गोल होती हैं,

धरती खोदकर उन्हें नीचे गाड़ दो,

और फिर जापानी दरिन्दों के लहू से जमीन के उस चप्पे को सींच दो,

फिर देखो कितने ज़ोर का धमाका होता है;'

ये थीं जापान-विरोधी युद्ध के दिनों में शान्सी, चहार और होपी प्रान्तों के आन्तरिक प्रदेश की साम्यवादी जन-सेना द्वारा गायी जाने वाली 'सुरंगों का गीत' की कुछ पंक्तियाँ। जनसेना के न जाने कितने सैनिकों ने इन खिलौनों को धरती में दबाना सीखा था ! वे बड़ी सतर्कता से इन "तरबूजों" को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। लोहे और फौलाद के बने इन खिलौनों में लगे पलीते देखने में बहुत पतले थे, लेकिन उन्हें छेड़ते ही ऐसी फुलझड़ी फूटती थी कि आस-पास के लोग याँग-को[1]

१. याँग-को उगती फ़सल का नृत्य होता है। साम्यवादी लोग हर समारोह में इस नृत्य का आयोजन करते हैं। सड़कों के चौराहों पर रंग-बिरंगे कपड़े पहने मजदूर, सैनिक तथा विद्यार्थी नाचते हुए दिखाई देते हैं। याँग-को चीन का राष्ट्रीय नृत्य बन गया है। आमतौर पर लोग तेज ताल के साथ बाहों तथा शरीर से गति करते हैं लेकिन कभी-कभी इच्छानुसार इसमें जटिल नृत्य-रूपकों का समावेश भी किया जा सकता है जैसा कि नाम से स्पष्ट है, याँग-को नृत्य फ़सल बोने का प्रतीक है। खेतों में लहलहाती हुई फ़सलें किसानों की उमंगों तथा अथक परिश्रम को प्रतिबिम्बित करती हैं।

नृत्य की तरह कलाबाजी खाकर चारों खाने चित्त गिरते ! अगर कोई सहारा देने वाला न हो तो एक बार का गिरा उठने का नाम नहीं लेता। और अगर उठाया जाता है तो केवल लाश के रूप में ही। सब से बड़े "बारूद भरे तरबूज़" को उठाने के लिए आठ आदमियों की ज़रूरत होती है। छोटे-मोटे तरबूज़ों की बात अलग है। अकेला आदमी भी कई को उठा सकता है।

सन् १६४३ के वसन्त तक जापानियों को इस घातक फल का भरपेट स्वाद मिल चुका था। आखिर तंग आकर उन्होंने सैनिक-विभाग को इस विषय में संधि-प्रस्ताव भेजा। लेकिन सैनिक-विभाग ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और जवाब दिया कि "आप जितनी तादाद में आना चाहें, शौक से आयें, आपकी दावत के लिए हमारे पास काफ़ी तरबूज़ हैं।"

जरा अनुमान लगाकर देखिए कि जब जापानी हमले का जोर था तब हर सड़क के चप्पे-चप्पे पर सुरंगें बिछी थीं। तंग आकर जब उन्होंने पगडंडियों और गलियारों का आश्रय लिया तो वहाँ भी सुरंगें मौजूद थीं। आखिर उन्होंने गेहूँ की लहलहाती फसलों के बीच से अपने चमड़े के खुरनुमा जूते गड़ाकर रेंगना शुरू किया। लेकिन देखते ही देखते गेहूँ की बालियों के भी दाँत निकल आये। जापानी टुकड़ियाँ जमीन के जाँच-पड़ताल के बाद बड़े विश्वास से घोषित करती "हम सामने वाली पहाड़ी पर आसानी से मशीनगन लगा सकते हैं।" लेकिन उनके क़दम बढ़ाने की देर होती कि एक भयानक धमाके के साथ मशीनगनें, सिपाही और सारा साजोसामान टुकड़े-टुकड़े होकर हवा में उड़ता हुआ दिखाई देता। कुछ समय बाद वे सतर्क हो गये और उन्होंने खतरे के स्थानों के नजदीक गोल चक्कर के निशान खींचने शुरू कर दिये। जगह-जगह पर "धरती में सुरंगें बिछी हैं ! सावधान !" की तख्तियाँ दिखाई देने लगीं। एक ही गाँव में ऐसी दर्जनों तख्तियाँ मिल सकती थीं। जिधर देखो सुरंगें ही सुरंगें ! आखिर वे बचकर कहाँ जायेंगे। विस्फोट का सामना किये बगैर एक क़दम भी आगे न बढ़ सकते थे।

सुरंग बिछाने वाले सैनिकों ने इस दृश्य का वर्णन नीचे लिखी पंक्तियों में किया है—

'चाहे पालकी में चाहे घोड़े पर सवार होकर आओ,
लकड़ी के ताबूत से बचने की लाख कोशिशें करो,
लेकिन हम अपनी सुरंगें बिछाकर हर सूरत में तुम्हें दबोच लेंगे।
एक इंच भी आगे बढ़े तो तुम्हारी जान की खैर नहीं।'

लेकिन सुरंगों का असली मजा तो ली-युँग के आने के बाद ही मिला। ली-युँग फ़ूपिंग जिले के बुचाँगव्यान गाँव का रहने वाला था। जब से उसने होश संभाला था तभी से जमीन के ऊसर खेत से बस जीने भर के लिए पैदा करने में वह अपने बाप की मदद करता आया था। पत्तियाँ खा-खा कर ही उसने सदा पेट भरा था। फिर भी वह किसी तरह जी कर पनपता रहा और युद्ध छिड़ने के शुरू में वह एक दुबला, पीला, भूख का मारा नौजवान था और अपनी उमर के लिहाज से बहुत छोटा दिखता था।

आठवीं सेना को देखते ही उसने ऐलान किया कि वह एक सैनिक बनेगा। उसके बाप ने उसे ताले में बन्द कर दिया, लेकिन वह निकल भागा। वह निर्भीक भाव से चहलक़दमी करता हुआ रेजिमेन्ट के हेडक्वार्टर में पहुचा और बहाना बना कर बोला कि उसके बाप ने फौज में भरती होने की इजाज़त दे दी है। वहाँ उन्होंने पीली चमकती हुई खाकी वर्दी उसे पहना दी, लेकिन वह फिर भी खामोश न बैठा। वह आकुलता से आगे-पीछे चहलक़दमी करता रहा और पूछता रहा कि वे लड़ने के लिए कब चलेंगे।

लेकिन रेजिमेन्ट अभी लाम पर नह जाने वाली थी। उन्होंने अपना रात का भत्ता पकाने में समय लगाया, और फिर भोजन करके सब लोग सो गये। यह बात उसके हक़ में : थी। उसे डर था कि कहीं उसका बाप न आकर उसे ढूँढ निकाले। सिर्फ़ यही उम्मीद थी कि शायद उसके बाप को आठवीं सेना के हेडक्वार्टर में घुसने की जुर्रत न पड़ेगी। अपने

स्वभाव की सरलता के कारण ही वह ऐसा सोचता था, क्योंकि अभी वह किशोर बालक ही तो था। वह यह न जानता था कि बड़ी उम्र के आदमी खोये लोगों का पता कितनी अटूट लगन से लगाते हैं, और दुनिया का कोना-कोना खोज मारते हैं। यकायक उसने देखा कि उसका बाप सामने खड़ा है! उसने भागने की कोशिश की, लेकिन उसका बूढ़ा बाप दरवाजे को घेरे खड़ा था और उसने ऐसी जोर का थप्पड़ जमाया कि वह मुँह के बल जमींन पर गिर पड़ा। जब उसे अपनी नई चमकती हुई वर्दी को उतारने पर मजबूर किया गया तो वह सुबक-सुबक कर रोने लगा। लेकिन उसे फिर से अपने पुराने कपड़े पहनने पड़े और उसका बाप उसे हाँकता हुआ घर ले गया।

वह घर के रास्ते भर रोता गया। जब किसी खेत के पास पहुँचता, एक झपाटे से भाग कर वह फ़सल के बीच छिपने की कोशिश करता लेकिन उसका बाप उसके पीछे लपक कर पहुँच जाता और खींच कर बाहर निकाल ले आता। फिर वे लोग कुछ देर तक सड़क पर साथ-साथ चलते रहते और फिर वह सिर पर पाँव रख कर भाग खड़ा होता और पकड़ा जाता। इस तरह बीस ली लम्बे रास्ते भर बार-बार यही क़िस्सा चलता रहा। अन्त में दोनों थक कर चूर-चूर हो गये। वह रात भर सुबक-सुबक कर रोता रहा और दूसरे दिन उसने खाना-पीना छोड़ दिया।

लेकिन जो भी हो, बाघ भी अपने छौने को नहीं खा सकता। और इस बूढ़े की ममता तो अपने बेटे के प्रति बहुत गहरी थी। वह धैर्य-पूर्वक उसे समझाता-बुझाता और दिलासा देता रहा, जिससे कुछ दिनों में उसने घर छोड़ कर भाग जाने का इरादा बदल दिया।

कुछ दिनों के अन्दर ही ली युंग कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बन गया। वह अपने जिले के नौजवानों का नेता हो गया। जहाँ कहीं भी शोषण या अत्याचार होता तो ली युंग को उसका पूरा पता रहता। उसके एक ही इशारे पर नौजवान मधु-मक्खियों की तरह झुण्ड-के-झुण्ड दौड़ते चले आते। "न उसे स्वर्ग का मोह था, न नरक का ही डर!"

ली युंग का यही परिचय था। उसका स्वभाव अत्यन्त उग्र था। वह सूखे ईंधन की तरह ज़रा-सी आँच लगते ही भभक उठता था और क्रोध का पारा चढ़ने पर वह जो न कर डाले सो थोड़ा था।

साम्यवादियों ने बू-चाँगवान के ग़रीब लोगों को अपने पाँव पर खड़ा होने लायक बना दिया। यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे और औरतें भी अपने अधिकारों के लिए खुद आवाज़ उठाने लगे और अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत हो गये। ली युंग ने अपने आप को इतने स्वाभाविक ढंग से इन परिस्थितियों में ढाला जैसे बतख़ पानी में तैरती है और उड़ने वाला अजगर समुद्र में। पार्टी में भर्ती होने के बाद कुछ दिनों तक तो वह मारे खुशी के फूला न समाता था। वह पागलों की तरह इधर-उधर कूदता-फाँदता और गीत गाता झूमता फिरा।

उसकी मस्ती देख कर लोगों ने आपस में चर्चा की, "इस छोकरे को आख़िर कौन-सा कुबेर का ख़ज़ाना हाथ लग गया जो ज़मीन पर पाँव नहीं पड़ते ?"

लेकिन ख़ुशी का नशा उतरते ही वह फिर से गम्भीर हो गया और एक समझदार आदमी की तरह व्यवहार करने लगा। गाँव के मामलों में वह और भी अधिक संजीदगी से दिलचस्पी लेने लगा।

कुछ समय बाद वह जापान-विरोधी हरावल दस्ते की एक टुकड़ी का कमांडर चुना गया। जब सुरक्षा-सेना का संगठन हुआ तो वह स्थानीय सैनिक कमेटी का अध्यक्ष हो गया—जिसकी हैसियत एक उच्च सैनिक अधिकारी के बराबर होती है। बाद में उसका ओहदा बढ़ा कर उसे कम्पनी कमांडर बना दिया गया। इस सारे सम्मान का सब से बड़ा कारण यह था कि ली युंग उत्साही, कुशाग्र बुद्धि तथा साहसी होने के साथ-साथ राइफ़ल चलाने और सुरंग बिछाने में भी सिद्धहस्त था। बन्दूक चलाने का अभ्यास करते समय हम यह तो निश्चित नहीं कह सकते कि हर बार उसका निशाना अचूक बैठता था, लेकिन हाँ काफ़ी कुछ सही होता था। रही सुरंग बिछाने की बात, सो वह खलिहान के फ़र्श

पर भी इतनी सफ़ाई से सुरंग बिछा सकता था कि अनुभवी से अनुभवी व्यक्ति के लिए भी उसे ढूँढ निकालना असंभव हो जाता। कुछ ही दिनों में उसने सुरंग बिछाने तथा गुरिल्ला युद्ध के सब दाँव-पेंच सीख लिए। कोई भी ऐसा भेद न था जिससे ली युंग अपरिचित हो।

अचानक उसके बाप को जवाबी हमले के बीच जापानी दरिन्दों ने मौत के घाट उतार दिया। जैसा कि अक्सर देहाती क़ायदा है कि 'जिन्दा हो तो ढूँढ के लाओ, मर गया हो तो लाश को पेश करो,' ली युंग दो दिन तक अपने बाप की लाश की खोज में इधर-उधर भटकता फिरा। आखिरकार जब लाश बरामद हुई तो वह बेहोश होकर गिर पड़ा---उसके दिल को इतना गहरा आघात लगा था। होश आने के बाद उसने पाया कि वही अपनी माँ, बहिन तथा छोटे भाई का एक-मात्र सहारा है। अभी उसकी आयु के बीस वर्ष भी न गुजरे थे।

पिता की अन्त्येष्टि-क्रिया के बाद उसे अनुभव हुआ कि जिन्दगी दिन-प्रतिदिन एक भयंकर समस्या का रूप धारण करती जा रही है। वह किस तरह पूरे परिवार का पालन-पोषण कर पायेगा, कुछ दिन तो वह इसी सोच में डूबा रहा। फिर उसने एक बाँस लेकर उसके दोनों ओर दो टोकरियाँ लटका कर एक बँहगी बनायी। नाते-रिश्तेदारों द्वारा दी गई अपनी स्वल्प पूँजी से मैदा खरीद कर बाजार में बेचने को चल दिया।

एक बार ग्यारह मई १९४३ के रोज़ वह उसी तरह कन्धों पर बँहगी लटकाये तेंगचियातीन की हाट की ओर जा रहा था कि अचानक ही किसी ने पीछे से पुकार कर कहा, "ली युंग!"

उसने सिर घुमाकर देखा तो जिले की बटालियन (Battalion) के कमान्डर को सामने खड़े पाया। ली युंग ने पूछा, "कहो, देहात में कैसे आना हुआ?"

कमान्डर ने जवाब दिया, "मैं ऐन मौक़े पर यहा पहुँचा हूँ। जापानी आगे बढ़ रहे हैं। उनका इरादा फ़ूपिंग पर कब्जा करने का है।" इसके बाद उसने ली युंग को सारी स्थिति समझायी और कहा, "हो सकता है

कि वे तुम्हारे गाँव से होकर गुजरें। उनके लिए सुरंगें बिछा रखना।"

"तब तो मुझे फ़ौरन ही लौट जाना चाहिए," ली यूँग ने कहा।

कमान्डर ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की और कहा, "ख़्याल रखना, सुरंगों को फूटना चाहिए।"

"ज़रूर," ली यूँग ने बँहगी को कन्धे से नीचे उतारते हुए कहा।

"मगर यह टोकरियाँ कहाँ जायेंगी ?" कमान्डर ने पूछा।

"इनकी चिन्ता मत करो। मैं इन्हें किसी परिचित के यहाँ रख आऊँगा।"

इसी समय उसे सड़क पर एक परिचित व्यक्ति आता दिखाई दिया। ली यूँग ने फ़ौरन ही टोकरियाँ उसके हवाले कीं और मुट्ठी बाँधकर गाँव की ओर भागा।

कमान्डर ने ली यूँग की ओर देखते हुए सोचा, "लो मेरा तो ख़्याल था कि शायद यह शिकायत करेगा कि उसे इतनी देर से ख़बर क्यों दी गई। न जाने यह लड़का किस धातु का बना है !"

गाँव में पहुँचते ही ली यूँग ने सुरक्षा-सेना का संगठन आरंभ कर दिया। गाँव के सब रास्तों की जाँच-पड़ताल के बाद जहाँ कहीं होकर जापानियों के आने की संभावना थी, उन सब जगहों पर उसने सुरँगों का जाल बिछा दिया।

फिर वह खड़ा होकर जापानियों की राह देखने लगे।

'जापानी दरिन्दे आ रहे हैं,
सुरंगें भी तैयार हैं,
पल भर में ही सब दरिन्दे
मुँह के बल गिरते दिखाई देंगें,
और एक बार गिरने पर
छाँह के नीचे क़यामत तक पड़े सोते रह सकेंगे।

जापानी दरिन्दे उस दिन नहीं आये। दूसरे दिन १२ मई को, जब आसमान में बादल छाये थे, वे सड़क के रास्ते जुजुबी, एल्म और अकेशिया

के पेड़ों की छाँह में छिपते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते आये; जुजुबी के वृक्ष शगूफ़ों से लहलहा रहे थे, जिनसे एक मादक गन्ध उठकर वायु को सुवासित कर रही थी। उस दिन भारी ओस पड़ी थी जिसके बोझ से पत्तियाँ झुक आयी थीं! एक सुन्दर दृश्य था! जापानी जब उसी स्थान पर पहुँचे, जहाँ पहुँचना अपेक्षित था, तो ली युँग, जो अपने छापेमार दस्ते और सुरंग बिछाने वालों की टुकड़ी के साथ एक टीले की चोटी पर छिपा बैठा था, मारे खुशी के लोट-पोट हो गया।

वे साँस रोककर जापानियों के एक-एक क़दम को गिन रहे थे, जो धीरे-धीरे बढ़कर सुरंगों के निकट आते-जाते थे। उन सब की आँखें एक ही दिशा की ओर टकटकी बाँधे देख रही थीं। जापानी सुरंगों के क्षेत्र में घुस आये थे। इस क्षेत्र में पहले एक ने क़दम रखा, फिर दूसरे ने, और फिर उसके बाद आने वाले तीसरे ने। यह क्रम जारी रहा।

ली युंग के कान उस समय और कुछ न सुन सकते थे। आँखें केवल उस घटना को ही देख सकती थीं। उस उत्कण्ठा की अवस्था में वह खुद अपने को भूल गया और भूल गया उन साथियों को जो आदेश की प्रतीक्षा में थे।

लेकिन वह सभी ऐसी मनः स्थिति में थे। एकाग्रता के एकान्त प्रयत्न में और सब बातों से बेखबर हो गये थे। ऐसी एकाग्रता से वह सभी किसान परिचित हैं जिन्होंने गुरिल्ला लड़ाई में हिस्सा लिया है। कभी-कभी आपको समूचे दिन या आधे दिन तक एक क्षण के लिए भी रुके बिना घुटनों के बल रेंग-रेंग कर आगे बढ़ना होता है। न आपको भूख लगती है, न प्यास! न आपको सूरज की झुलसा देने वाली किरणों की ही परवाह होती है। कहीं कोने में रुक कर शंका-निवारण का भी समय आपके पास नहीं होता। आप बस तीक्ष्ण दृष्टि से आगे देखते हुए औरों के साथ आगे बढ़ते जाते हैं, आपकी जबान बन्द होती है और मुँह की पेशियाँ तनी होती हैं। अगर आगे वाला साथी हाथ हिलाकर इशारा करता है तो आपका कलेजा उछल कर मुँह को आ जाता है। उस समय

आपके लिए जैसे हवा का बहना और चिड़ियों का चहचहाना बन्द हो जाता है। जब तक आप फिर अपने आपे में आपाते हैं, सूरज पश्चिम की ओर झुकने लग जाता है।

वे लोग सुरंगों के फटने का इन्तज़ार कर रहे थे, लेकिन सुरंगें न फटीं। एक-एक करके जापानी दरिन्दे सुरंगों को बग़ल से छूते हुए आगे गुज़र गये। जब पहला जापानी निर्विघ्न सुरंगों से बाहर निकल आया तो ली युंग का मुँह पीला पड़ गया। तीसरे जापानी के निकल जाने तक तो उसका चेहरा फक होगया। आसमान में काले बादल छाये थे, जैसे किसी गहरी गुफ़ा का निबिड़ अन्धकार हो, जैसे तूफ़ान से पहले की मध्य निशा हो।

धरती की सुरंगें एक ताक़तवर हथियार है, लेकिन उनके बारे में एक बात है—अगर आपका पाँव पलीते पर नहीं पड़ेगा तो सुरंग का बिस्फोट न होगा। इसलिए आप इस बारे में पूरी तरह निश्चित नहीं हो सकते कि आपका दुश्मन आप पर ऐहसान करके चौड़ी सड़क में स्थित ठीक उसी बिन्दु पर पाँव रखेगा जहाँ सुरंग का पलीता है। नहीं तो सुरंगें बेकार होजाती हैं कितने अफ़सोस की बात है! लेकिन इस कमी का उपाय आज तक किसी ने नहीं सोचा।

लेकिन ली युंग ने हिम्मत नहीं हारी। उसने सोचा, "वे पलीते पर पाँव नहीं डालते। न सही, मैं उन्हें मजबूर कर दूँगा। मैं एक गोली छोड़ूँगा। इससे वे चौंक कर उछल पड़ेंगे, और जब वे घबराहट में अगल-बगल झाँकते होंगे, किसी न किसी का पाँव पलीते पर जा ही पड़ेगा।"

उसने अपने कन्धे से बन्दूक़ लगाते हुए अपने साथियों से दबी जबान में कहा, "आओ, गोली चलायें।"

लेकिन दूसरों ने उसे रोक दिया। "इससे कोई फ़ायदा नहीं। उन्हें हमारा पता चल जायगा और वे हमें ही अपना निशाना बना लेंगे।"

अगर मैं गोली नहीं चलाऊँगा तो वे पलीते पर पाँव नहीं रखेंगे," यह कहते हुए ली युंग ने अपनी राइफ़िल दाग़ दी।

उस गोली का वही असर हुआ जो मुर्ग़ी के चूज़ों पर चील के झपटने का होता है। यांगत्सी नदी जहाँ समुद्र में मिलती वहाँ पानी जैसी विक्षिप्तता से उद्वेलित होता है, वैसा ही हाल यहाँ हुआ। अगले दो जापानी तो फ़ौरन वहीं गिर पड़े और बाक़ियों में भगदड़ मच गई। किसी का सिर राइफ़िल के कुन्दे से टकराता तो किसी की कोहनी दूसरे की आँख में जा गड़ती। सब एक-दूसरे से सहम कर चिपके हुए थे और भय से आतंकित थे कि इतने में भीषण धमाका हुआ और आकाश में नीले रंग के धूएँ की इक छतरी तन गई। आख़िर सुरंग ने अपनी करामात दिखा ही दी। चारों ओर लहू के छींटे बिखर गये और चारों दिशाओं में बाँहों, सिरों और शरीर के टुकड़ों का अम्बार लग गया! यह दृश्य ठीक 'पानी की सतह' नाम की प्राचीन कहानी में वर्णित बुढ़िया सुन के क़साई खाने जैसा था जो इन्सान का गोश्त बेचा करती थी। आसपास के सब पेड़-पौधे मृत सैनिकों की टोपियों, दस्तानों और खाकी रंग की वर्दियों से सजे हुए थे और ज़मीन पर राइफिलें, कार्तूस और दूसरी चीज़ें इस तरह बिखरी थीं मानो जापानी माल की नीलामी हो रही हो।

इधर ली युंग के चेहरे में फिर रौनक आगई। ऐसा लगता था कि काले बादलों में से सूरज की किरणें फूट निकली हों, जैसे हिमपात के समय बादाम के शगूफ़े खिल गये हों, जैसे सख़्त गर्मी के दिन अचानक ठँडी, सुखद हवा का झोंका आ गया हो। उसके चेहरे पर एक अपूर्व दीप्ति थी, ठीक किसी जँगल में लगी आग की लपटों की तरह।

मानसिक उद्वेग से उसका चेहरा लाल हो गया। उसने चिल्ला कर कहा, गोली बरसाओ! इस घपले का फ़ायदा उठा लो!"

इस गड़बड़ के बीच गोलियों की दनदनाहट सुनाई पड़ी। हर एक गोली कौए की भाँति जा कर अपने ठीक स्थान पर बैठती थी।

एक पुरानी कहावत है कि "छत्तीस तिकड़मों में से सर पर पैर रखकर भागना ही सबसे ज्यादा फ़ायदेमन्द साबित हुआ ।" जापानियों ने इस घबराहट में नदी का रास्ता पकड़ा और एक दूसरे से टकराने लगे । उन्हें देख कर लगता था मानो कुत्तों का कोई झुण्ड बोटियों के लिये आपस में लड़ रहा हो ।

जब ली-युँग ने उन्हें खिसिया कर नदी की ओर भागते देखा, तो वह हँसने लगा, "शाबास ! खूब भागो ! तुम्हारे लिये सब सामान तैयार है !"

"धड़ाम !" हवा में एक और विस्फोट हुआ, यह पहले से भी अधिक भयानक और कारगर था । क्योंकि इस समय तो जापानी दरिन्दे एक ही जगह पर इकट्ठे थे । वे एक-एक करके ज़मीन पर गिरने लगे । उनकी लाशों का ढेर एक पिरामिड की तरह दिखाई देने लगा—जैसे पिरामिड व्यायाम सीखने के समय स्कूल के बच्चे बनाते हैं ।

ली-युँग ने फिर निशाना लगाया, अबकी बार एक जापानी अफ़सर घोड़े से नीचे गिर पड़ा । बचे खुचे जापानी दुम दबा कर नदी की ओर भाग रहे थे । यह देख कर ली-युँग उछल कर खड़ा हो गया । बाकी लोगों ने भी ऐसा ही किया । ली-युँग का चेहरा वीरता के तेज से लाल हो रहा था । उसने कड़क कर कहा, "आओ, इन कुत्तों का पीछा करें ।"

अचानक ही उसका चेहरा फिर लाल से नीला पड़ गया । इसका कारण, "युद्ध की वासना, तथा मरने-मारने की भीषण इच्छा" थी । सब लोगों की आँखों में यही प्रचण्ड प्रकाश था । वे दुश्मन की ओर झपटे ।

यह लड़ाई सीमान्त प्रदेश के सुरँगकौशल के विकास में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना बन गई । गोली चलाकर दुश्मन में घबराहट पैदा करने के अनूठे ढंग का श्रेय ली-युँग को ही दिया गया । उसे उत्तरी शान्सी के पहाड़ी ज़िले की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष ने 'पार्टी का आदर्श मेम्बर' घोषित किया और जनरल नीह ने उसे सम्मान पदक

प्रदान करके तमाम सुरक्षा-सैनिकों को ली-युँग का अनुकरण करने की ताकीद की।

इस घटना के दो महीने बाद ही हर किसी की जबान पर उसकी प्रशंसा के गीत थे। उत्तर-दक्खिन, पूरब-पच्छिम—चारों दिशाओं में यही गीत सुनाई देता था—

'दुश्मन को पागल कुत्तों की तरह भूँकता हुआ आने दो,
जनता में से वीर उठेंगे
पहाड़ियों और घाटियों में सुरंगें तैयार हैं,
ऐ शैतानो जरा आगे तो आओ
तुम अपना स्वागत देखकर चकित रह जाओगे
आह ! हमारा ली-युँग कितना बहादुर और साहसी है !
१२ मई को तड़के ही
दुश्मन ने वीचांगवान पर धावा बोला,
अभी पेड़-पौधों की ओस सूखी भी न थी
कि वह मार्च करते हुए आ पहुँचे
लेकिन हमारी भी तैयारी पूरी थी !
आह ! हमारा ली-युँग कितना बहादुर और साहसी है !
उसने अपनी राइफल उठाई और घोड़े पर उँगली रखी,
जो भी सामने आया वह जमीन पर लोटने लगा,
इस गड़बड़ में दुश्मन लड़खड़ा कर गिर पड़े
और उनके पाँव पलीते पर पड़ गये
और उन्हें आसमान के तारे दिखाई देने लगे।
आह ! हमारा ली-युँग कितना बहादुर और साहसी है !
उसने बड़े यत्न से दो सुरंगें बिछा रखी थीं।
वे सार्थक हुईं और तेंतीस जापानी खेत रहे।।
फिर उसने उनके अफ़सर को गोली का निशाना बनाया
जो घोड़े पर सवार होकर अकड़ रहा था,

देखो, वे सब ज़मीन पर लोट रहे हैं,
मर रहे हैं या मर चुके हैं,
और बचे-खुचे दरिन्दे दुम दबा कर भाग गये
आह ! हमारा ली-युँग कितना बहादुर और साहसी है !
अभी तो सैकड़ों और हज़ारों की तादाद में ली-युँग पैदा होंगे,
अब भी हमारे पास अनगिनत ली-युंग हैं,
उनकी बिछायी हुई सुरंगें दुश्मन की राह देख रही हैं,
कोई बात नहीं, आओ ऐ हरामी कुत्तो,
जितनी अधिक संख्या में आओ उतना ही अच्छा है,
हिम्मत हो तो आगे आओ,
हमारे ली-युंग तुम से निपट लेंगे
धरती में सुरंगें बिछी हैं ! सावधान !"

सूर्योदय के बाद सूर्यास्त हुआ। गर्मियाँ गुज़रने के बाद पतझर का मौसम और यह गीत सीमान्त प्रदेश के हर सुरंग बिछाने वाले किसान और सैनिक की ज़बान पर था। इस गीत की पंक्तियों को गुनगुनाते ही उनके हाथ दुश्मन को तहस-नहस करने के लिए खुजला उठते।

जहाँ तक ली-युँग का सवाल था, उसकी ख्याति चारों दिशाओं में फैल गई। यह पहली दफ़ा थी जब एक साधारण घरेलू किसान को इतनी शोहरत मिली हो। झुण्ड के झुण्ड लोग उसे मिलने के लिये आने लगे। इनमें अखबारों के रिपोर्टर, कार्टूनचित्र बनाने वाले, गीतकार, फ़ोटोग्राफ़र तथा हर क़िस्म के 'कान-पू'[1] सभी होते। वे सब उसके दर्शन तथा अभिनन्दन के लिये वूचॉगवान आते। मँझले क़द का यह तगड़ा जवान जिसने अभी बाईसवाँ भी नहीं पार किया था, वही दुबला-पतला नवयुवक था जिसने कभी भुखमरी से तंग आकर सेना में भर्ती

१. कान-पू—सरकारी शासन व्यवस्था के मेम्बरों का साम्यवादी नाम—अर्थात् "कार्यकर्त्ता।"

होने का निश्चय किया था। उसका चेहरा अत्यन्त गम्भीर था और बोल-चाल में वह किसी के सामने भी-न झुकता था। वह बढ़िया कपड़े पहने दिन-रात अपने मेहमानों की आवभगत में जुटा रहता। मेहमान लोग भी उसके व्यवहार से बहुत प्रसन्न थे। उसे आते देखकर ही गाँव वाले कह उठते, "यह है हमारा बहादुर!"

ली-युँग मन ही मन जानता था कि वे लोग उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं, तो भी उसने इस मज़ाक का विरोध नहीं किया, क्योंकि लोगों के स्वर में प्रशंसा भी थी।

मैदे की बँहगी उठाकर जब वह बाज़ार जाता तो राह चलते लोग वहीं ठिठक जाते और उसे देखकर कहते, "देखो, यही ली-युँग है!"

कुछ टिप्पणी करते, "इस घरेलू किसान को देखो जो सूबे के सबसे बड़े अफ़सर से भी ज़्यादा मशहूर है।" कई लोगों का ख्याल था कि सचमुच ही कम्युनिस्ट पार्टी अच्छे लोगों को भरती करती है और उनकी ज़िन्दगी सुधार देती है।

कभी-कभी तो अजनबी तक भी उसका नाम लेकर पुकारते, "ली युँग!" मानो वे उसके गहरे मित्र हों।

जहाँ तक ली-युँग का सवाल था, उसे खीज उठती कि लोग उस पर इतना अधिक ध्यान क्यों देते हैं। वह बार-बार सोचता कि "पार्टी के नेताओं का ध्यान मेरी ओर आकर्षित हो गया है, इसीलिए वे मेरा ओहदा बढ़ा रहे हैं। लेकिन अगली बार जापानियों के आने पर मैं क्या करूँगा। पार्टी के लोगों को मुझसे बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं, मैं उन पर पानी कैसे फेर दूँ?"

लेकिन उसने कभी भी अपने मन की बात ज़िला-पार्टी या प्रान्तीय पार्टी के अध्यक्ष से नहीं कही। वह जब भी उनसे मिलने जाता तो वे बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनते और उसे दुबारा दफ़्तर में आने के लिए आग्रह करते। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह पार्टी के नेताओं से मिल-जुलकर बहुत प्रसन्न होता। लेकिन बाद में वह हमेशा गहरे सोच में डूब

जाता । वह अपने आप से पूछता, "अगली बार जापानियों के आने पर मैं क्या करूँगा ?" वह मन ही मन पक्का निश्चय करता कि चाहे जो कुछ भी हो वह जनरल नीह तथा अन्य नेताओं की आशाओं को पूरा कर दिखाएगा ।

जिला पार्टी के मन्त्री ने उसे बुलाकर कहा, "ली युँग जब तक तुम जनता के हित को मन में रखकर दुश्मन का सामना करने की नई तरकीबें सोचते रहोगे, तब तक तो कोई खतरा नहीं, लेकिन मिथ्याभिमान के पैदा होते ही जनता से सम्बन्ध टूट जाता है । मान लो मिथ्याभिमान भी नहीं है, तो भी जनता के हित को भुला देने से आदमी बेकार हो जाता है, विशेषकर जब वह नाम कमा चुका हो । जरा-सी भी लापरवाही हुई कि जनता आपको भुला देगी । जनता से एक इंच भी दूर सरकने का नतीजा यह होता है कि जनता आपसे विमुख हो जाती है ।"

मन्त्री की इन नसीहतों को सुनकर ली-युँग के माथे पर पसीने की बूँदें झलक आईं और वह मारे शर्म के लाल हो गया । वह खड़ा होकर मन्त्री की बातें ग़ौर से सुन रहा था । "जब से जनरल नीह ने तुम्हें सम्मान पदक भेंट किया है, तब से यह जानते हुए भी कि तुम पार्टी के सदस्य हो, तुम्हें देखकर गाँव वालों की आँखें चमकने नहीं लगतीं । उनका कहना है कि तुम कुछ मग़रूर हो गये हो ।"

इसके उत्तर में ली-युँग ने कहा, "मैं तो सिर्फ़ एक मामूली गृहस्थ हूँ । मेरे पीछे अगर पार्टी न होगी तो मैं अकेला क्या कर पाऊँगा ? और अगर बड़े नेताओं ने सुरक्षा-सेना का संगठन करने और सुरंगें बिछाने का फ़ैसला न किया होता तो निरा अकेला मैं क्या कर पाता ? खुद अपने आपसे तो मैं दुश्मनों की उस टुकड़ी को नष्ट नहीं कर सकता था ।" उसने विनीत भाव से कहा, "अगर आज से आगे कभी आपको मेरे व्यवहार में अभिमान नज़र आये तो कृपया मुझे जरूर सावधान करदें ।"

उसकी विनम्रता को पसन्द करते हुए पार्टी के मंत्री ने उसे आश्वस्त

करते हुए कहा, "सावधान रहे तो तुम सफल होओगे। जनता में कौन ऐसा है जो तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता ? पार्टी तुम्हारा ओहदा बढ़ाने में सहायता करना चाहती है, क्योंकि तुमने यह कर दिखाया है कि तुम पार्टी और जनता के लिए जी जान से काम कर सकते हो।"

इस बातचीत के बाद से ली-युंग का दृष्टिकोण बदल गया। पहले सभाओं में सिर्फ़ उसकी आवाज ही सुनायी दे सकती थी, लेकिन अब हालत सुधर गई। पहले, उसे किसी का विरोध सहन न था। उसकी राय से यदि किसी की ज़रा भी राय न मिलती तो वह गधे की तरह अपनी बात पर अड़ जाता और बहस में अधिक से अधिक गरमी आती जाती। लेकिन अब जब दूसरे बहस करते होते तो वह चुप रहता और उस समय तक मुँह न खोलता जब तक बोलने वाला अपनी बात समाप्त नहीं कर लेता। इसके बाद वह धैर्यपूर्वक संजीदगी से अपने विचारों को समझाता। शुरू-शुरू में तो उसे लगा कि बेसब्री से उसका कलेजा फट जायगा, लेकिन धीरे-धीरे वह अपनी ही आलोचना सुनने का आदी हो गया, और अपने गुस्से पर क़ाबू पाने लगा।

गाँव वालों ने टिप्पणी की, "ली-युंग तो बदल गया !"

लोगों ने कहा, "जब से 'हीरो' बन गया है तब से एक जिम्मेदार आदमी की तरह व्यवहार करने लगा है !"

कुछेक ने कहा, "अगर इसी तरह रहा तो बड़ा यश प्राप्त करेगा। किसी और छोकरे को अगर इतनी ख्याति मिलती तो मारे घमण्ड के ज़मीन पर पाँव न रखता।"

एक रोज बाजार जाते समय ली-युँग की रास्ते में पार्टी के मन्त्री से फिर मुलाकात हो गई। उसने कहा, "ली-युँग, पिछले कुछ दिनों से तुमने काफ़ी उन्नति की है। अब गुरिल्ला युद्ध की योजना बनाओ। स्थिति फिर बिगड़ रही है। कुछ जानते हो, जापानियों ने तुम्हारा नाम अपने अखबारों में घोषित कर दिया है। वे "ली युंग के सुरंग बिछाने के कौशल" की छानबीन कर रहे हैं। इसलिए फ़ौरन तैयारी शुरू कर दो। ज़रा जापानी

दरिन्दे फिर तुम्हारी हाथ की सफ़ाई का मज़ा चखें।"

ली-युंग ने जवाब दिया, "मेरे व्यवहार में अगर कोई ग़लती रह गई हो तो आप मुझे बतलाइये। आप बटालियन कमान्डर से कह दीजिए कि जापानी हमले के समय हमें ढेर सी सुरंगें सप्लाई करें।"

फिर उन दोनों ने खेतों की लहलहाती हुई फ़सलों की ओर देखा और आसपास की ज़मीन की जाँच करके सुरंग बिछाने के सबसे कारगर तरीके पर सोच-विचार करते रहे।

देर काफ़ी हो चुकी थी। ली युंग ने अपनी बँहगी का कन्धा बदलते हुए पूछा, "क्या मैं पहले जैसा ही हूँ ?"

"पहले से भी बेहतर !" मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा।

ली-युंग अपनी बँहगी लेकर फिर बाज़ार की ओर चल दिया और दोपहर तक मैदा बेचने में लगा रहा। काम करते समय भी उसे सुरंगों का ही ख्याल बना रहा।

पतझर का उत्सव करीब आ गया था और बाजार में सरगर्मी छायी हुई थी। लेकिन लोगों में एक अजब सी बेचैनी फैली थी। हाल ही में यह अफ़वाह सुनने में आई थी कि जापानी दरिन्दे धड़ाधड़ चीनी लोगों को अपनी सेना में जबरन भरती कर रहे हैं।

ली-युंग आज समय से एक घँटा पहले ही काम छोड़कर उठ आया। सुस्ताने के लिए एक मिनट भी रुके बिना वह सीधा घर की ओर चल दिया।

रात के खाने के बाद गाँव के सब लोग जवाबी हमले की योजना बनाने के लिए इकट्ठे हुए। यह मीटिंग काफ़ी देर तक चलती रही।

दूसरे दिन तड़के ही ली-युंग की माँ, बहन और भाई अपने घर की सीढ़ियों के सामने बैठे भात और सब्ज़ी के क़बाब खा रहे थे। ली-युंग भीतर सूअरों के बाड़े के पास पल्थी मारे बैठा था। एक बड़ा-सा सूअर कीचड़ में लोट-पोट कर चिंघाड़ रहा था। सब गुरिल्लों को जमा होने का हुक्म दिया गया। उसने अपनी बात शुरू की—"अब की बार हमें शायद

बहुत दूर जाना पड़े, इसलिए सूअर को बेच डालना ही ठीक होगा। मान लो अगर जापानियों का क़ब्ज़ा हो जाय तो किसी भी हालत में मेरा नाम मत लेना और खुदा के लिए भूल से भी यह न बताना कि मुझ से तुम्हारा कोई रिश्ता है। मुझे अपनी जान की तो रत्ती भर परवाह नहीं, डरता सिर्फ़ इस बात से हूँ कि कहीं मेरी वजह से तुम लोगों पर कोई मुसीबत न आये। इस बीच मैं शायद ही घर आ सकूँ।"

ली-युँग के भाई और बहन दोनों बड़े चुस्त और होशियार थे। वे फौरन ही सारी स्थिति ताड़ गये और गंभीरतापूर्वक उसके शब्दों पर ग़ौर करने लगे। नाश्ते के बाद ली-युँग सीधा फ़ौजी दफ़्तर में पहुँचा और गाँव की सुरक्षा-सेना को साथ लेकर सुरंगें बिछाने में जुट गया।

इतने में स्काउटों ने आकर खबर दी कि जापानी पिक्याँग से आगे बढ़कर तीलींगसुन तक आ पहुँचे हैं। उनकी संख्या पाँच सौ दस के क़रीब है। उनके साथ खच्चर-टट्टू आदि भी हैं जिनकी संख्या अभी तक नहीं मालूम।

पतझर का उत्सव गुज़र चुका था। कुछ दिन पानी बरसने के बाद आसमान साफ़ हो गया था। हवा में एक स्फूर्तिदायी ताज़गी भरी थी जो युद्ध के लिए सर्वथा उपयुक्त थी और रह-रहकर लोगों को उत्तेजित करती थी।

ली-युँग ने जब यह ख़बर सुनी झटसे बोला, "हम जापानी दरिन्दों के आने के इन्तज़ार में क्यों बैठे रहें। क्यों न बढ़कर तिहलिंग के पश्चिमी पुल पर उनका स्वागत किया जाय?"

जापानियों के आगे बढ़ने से पहले ही गुरिल्ला दस्ते पहाड़ियों में जा छिपे। उन्हें सुरंगें बिछाने के लिए पर्याप्त समय मिल गया था। देखते-देखते पुल के चारों ओर की धरती सुरंगों से पट गई।

थोड़ी देर बाद जापानियों के आने की आहट हुई। खतरे की संभावना से भयभीत होकर उन्होंने गाँव के आदमी को जा दबोचा और उसकी गर्दन दबाकर पूछा, "क्या आसपास सुरंगें बिछी हैं?"

"मैं नहीं जानता ।"

उन्होंने उसे बहुत मारा-पीटा, लेकिन उसका एक ही जवाब था, "मैं नहीं जानता ।"

यह सोचकर कि वह सचमुच ही कुछ नहीं जानता, वे उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़े ।

"धड़ाम !" एक सुरंग का स्फोट हुआ और सारे जापानी ज़मीन पर लेट गये ।

पहाड़ी के ऊपर छिपे गुरिल्ले सब कुछ देख रहे थे । उनमें से एक ने ली-युँग से पूछा, "क्या हम गोली चलायें ?"

"अभी नहीं," उसने सिर हिलाकर मना किया ।

जब तक जापानी अपने जख्मियों और लाशों को एक, जगह जमा करते रहे तब तक इन्तज़ार में बैठा रहा । इस बीच सब के सब जापानी एक ही स्थान पर जमा हो गये ।

"लो यह मौक़ा है, गोली चलाओ, ली-युँग ने चिल्ला कर कहा ।

इस अप्रत्याशित गोलाबारी से जापानियों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । बहुत देर तक तो उनमें हाय-तोबा मची रही । लेकिन फिर उन्होंने अपनी टुकड़ियों को दोबारा जमा किया और पहाड़ी के दक्षिणी भाग की ओर बढ़े ।

गुरिल्ले संख्या में जापानियों से कम थे । कुछेक के मन में ख्याल आया कि वहाँ खिसक जाना ही बेहतर होगा, लेकिन लीयुंग ने हुक्म दिया, "ख्याल रखना वे तुम्हें देखने न पावें । पट लेटे रहो । उन्हें गोलियाँ बरसाने दो ।"

फिर उन्हें बताने के लिए वह गोबर के कण्डे की तरह ज़मीन से चिपक रहा ।

इस बीच जापानियों ने अपनी तैयारी कर ली थी । उन्होंने पुल के पश्चिम की ओर जहाँ गुरिल्ले छिपे हुए थे, पाँच मशीनगनें लगा दी थीं जो दनादन गोलियाँ बरसा रही थीं । इसके अलावा जापानी अपनी बड़ी

तोपें भी मैदान में ले आये थे। ली-युंग के सिर के चारों ओर से गोलियाँ सनसनाती निकल रही थीं। आसमान में हवाई जहाज़ मँडरा रहे थे। उनमें से एकाध तो रह रह कर नीचे की ओर भी झपटता था। वे गुरिल्लों की तलाश में बार-बार ज़मीन के पास आते थे लेकिन उन्हें हर बार निराश लौटना पड़ता था।

मशीनगनों, तोपों और हवाई जहाज़ों से लैस जापानियों ने अपनी पूरी ताक़त से पश्चिमी पुल पर धावा बोल दिया। लेकिन पहाड़ी पर पहुँचने के बाद उनमें से कुछ ने तो निश्चित रूप से अपना सिर धुन लिया होगा। क्योंकि उनकी सारी ताक़त और गोला-बारी के बावजूद भी किसी गुरिल्ला की छाया तक उनके हाथ न लगी थी।

उसी समय ली-युंग और उसके साथी दूर खड़े अपने कपड़ों से मिट्टी झाड़ रहे थे। पहाड़ी से नीचे उतरते समय लीयुंग ने सुरंग बिछाने वाले दस्ते के कप्तान से सारी स्थिति पर फिर से विचार किया। दोनों की यही राय थी कि कभी न कभी तो जापानी ध्र्चांगवान की ओर ज़रूर ही आयेंगे, इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि वह जब आये तो उनका गरमा-गरम स्वागत किया जाय।

खाना खाने के बाद उन्होंने इकट्ठे बैठ कर सारी योजना तैयार कर ली।

दो दिन बाद ही उनका अनुमान सही साबित हुआ। जापानियों ने अपने जानी दुश्मन—ली-युंग को खत्म करने का फैसला कर लिया था। वे दो कतारों में आगे बढ़ने लगे। पूर्वी क़तार तो हाथ में पीला झंडा लिए वांगक्वई की ओर से आ रही थी और पश्चिमी क़तार वांगन्यूकू की दिशा से सफ़ेद झंडा फहराती हुई पहाड़ी से उतर रही थी। ये दोनों पंक्तियाँ एक ही बिन्दु की ओर बढ़ रही थीं; लेकिन जब तक उनका अन्तर आधी ली के क़रीब न रह गया तब तक गोली की एक भी आवाज़ न सुनाई दी।

ली-युंग पहाड़ी पर बैठा दुश्मन की सारी गतिविधि देख रहा था।

सब गुरिल्ले और सुरंग बिछाने वाले भी वहीं दुबके बैठे थे और उनके पीछे गांव के तमाम लोग व्यग्रभाव से बैठे देख रहे थे। उनके चेहरे चिन्ता में पीले पड़ रहे थे। यह पहली बार ही थी जब जापानियों ने इतने विचित्र ढंग से हमला किया था। आखिर वे किस उद्देश्य से एक ही बिन्दु पर इकट्ठे हो रहे थे। दोनों क़तारें दो साँपों की तरह रेंगती हुई आगे बढ़ रही थीं। इतने में ही पहाड़ी पर एक धमाका सुनाई दिया। सफ़ेद झंडे की धज्जियां उड़ गई थीं। दूसरे धमाके के साथ पीला झंडा भी ज़मीन चूमने लगा।

पहाड़ी पर इकट्ठे लोगों में से एक ने कहा, "जापानी—!" लेकिन ली-युंग के चेहरे का भाव देखकर उसकी बात मुँह में ही रह गई।

थोड़ी देर बाद ही बिजली की गर्जन के समान एक और विस्फोट सुनाई दिया। लाशों को पहाड़ी के पश्चिमी भाग में ले जाते समय जापानियों के पाँव एक और सुरंग पर पड़ गये। बचे-खुचे जापानी मारे डर के वहीं लेट गये। पहाड़ी के नीचे उनके साथियों ने लाशों को खच्चरों पर लादने के बाद जख्मियों को उठाने के लिए दो सैनिकों को गाँव से एक किवाड़ उतार लाने को दौड़ाया। गाँव में घुसते ही एक विस्फोट के साथ वे दोनों वहीं ढेर हो गये।

दोनों क़तारों की गति वहीं रुक गई। वे ऐसी लगती थीं जैसे दिसम्बर के महीने में जमी हुई दो बर्फ़ीली नदियां हों, या जैसे भूसे के ढेर के भीतर छिपे सिपाही हों जिनके सामने ही बैठा दुश्मन हुक्का गुड़गुड़ा रहा हो। काफ़ी समय बीतने के बाद पहाड़ी पर लेटे जापानियों ने हिलना-डुलना शुरू किया। उनमें से एक तो सीधा खड़ा होकर ऊँचे स्वर में चिल्ला-चिल्ला कर गालियाँ बकने लगा। फिर उसने हाथों से जमीन टटोल कर एक जगह अपने नाखून गाड़ दिये और एक सुरंग खोज निकाली। वाह रे मेरे पट्ठे ! शेर की ठोड़ी से बाल उखाड़ लिया ! वह मारे खुशी के नाचने लगा। उसकी बहादुरी से प्रोत्साहित हो कर बाकी जापानी भी उठ कर तालियाँ बजाने लगे। इतने में ही एक 'धड़ाम'

के साथ सब के सब धराशायी हो गये ।

हँसी के फ़व्वारों के बीच ही मौत ने उन्हें आ दबोचा । उनकी दशा उस भिखारी जैसी थी जो भोजन मिलने की आशा से ही पागल होकर अपना प्याला तोड़ दे । वह पानी के फूटे बुलबुले के समान नष्ट हो गये । शेर की दाढ़ी का बाल उखेड़ने की चेष्टा में वह शेर के मुँह में जा पहुँचे थे ।

दूसरी क़तार के जापानियों ने भी धूमधाम से अपनी बड़ी तोपों में बारूद भरा और अंधाधुंध बीस-तीस गोले बरसा दिये । सिवा उद्दण्डता-प्रदर्शन के उन धमाकों का और कोई असर न हुआ । किसी ने उनकी ओर ध्यान तक न दिया । गुरिल्लों ने इसके जवाब में एक गोली भी न दागी ।

फिर दोनों क़तारें पीछे मुड़ कर पीछे हटने लगीं । थोड़े क़दम चलने के बाद ही उन्होंने सड़क छोड़कर खेतों का रास्ता पकड़ा । उनके पीछे हटते ही पहाड़ी पर बैठे सुरक्षा-सैनिक और किसान मारे खुशी के उछल पड़े । ली-युंग ने पहाड़ी से नीचे उतर कर जापानियों के रक्त में लथपथ सफ़ेद झंडा उठा लिया ।

इस घटना के बाद जब भी जापानी दरिन्दे पक्की सड़क से गुज़रते तो वहीं ढेर हो जाते । अगर कोई पगडन्डी पकड़ते तो उसी में विस्फोट हो उठता ! खेत उनके मुँह में थप्पड़-सा जमाते, नदियाँ उनके पैरों के नीचे धँस जातीं और जमींन पर फैले काँटे आकर उनकी टाँगों से चिपट जाते ।

ली-युंग और उसके साथी रोज रात को बैठ कर अनुमान लगाते कि अगले दिन जापानी किस रास्ते से आयेंगे । फिर फ़ौरन ही वे सब रास्तों पर सुरंगें बिछा देते । उनका अनुमान दिन-प्रतिदिन सही निकलता गया, और हर बार अधिक से अधिक जापानी इन सुरंगों के शिकार बनते गये ।

उधर डर और गुस्से के मारे जापानियों की दशा पागलों जैसी हो

रही थी। वे ली-युंग को क़ैद करने की आशा से उसका चित्र लेकर चारों ओर की ख़ाक छानते फिरते थे। उनके पास तीस टुकड़ियाँ थीं, जिनमें एक हज़ार के क़रीब देशद्रोही चीनी सैनिक भी थे। वे गाँव वालों को पहाड़ी से खदेड़ने के लिये आगे बढ़े। उनके आगे-आगे एक दुबला-पतला आदमी बिना किसी मानसिक आवेग के भाग रहा था। वह बार-बार पीछे मुड़कर उनकी ओर देखता मानो किसी चीज़ की ताक में हो। उसके पीछे आते-आते जापानियों का पाँव एक सुरंग पर पड़ गया। जापानी अफ़सर के होश ठिकाने आ गये। उसने चिल्लाकर कहा, "इसे पकड़लो, यही ली-युंग है।"

वे अंधाधुंध उसके पीछे भागे। लेकिन सब बेकार। वह सरपट भागता ही चला गया। उन्होंने गोलियाँ चलायीं, लेकिन इसका भी कोई फल न निकला। एक देशद्रोही भगोड़े ने फ़ब्ती कसी, "शाबास ली-युंग ! खूब किया। बस एक सुरंग का धड़ाका और करो।"

ली-युंग ने पीछे मुड़कर देखा तो जापानियों को सचमुच ही उसकी बिछाई हुई एक सुरंग के पास खड़े पाया। बस ज़रा-सा ही इधर सरकने का देर थी कि उनकी जीवन-लीला समाप्त हो जाती।

"ज़मीन में सुरंगें बिछी हैं, सावधान !" ली-युंग सहसा चिल्ला उठा।

उनका कलेजा दहल गया। उन्होंने एक साथ ही अपने को ज़मीन पर फेंक दिया। इनमें से कुछ तो सीधे ही सुरंग के मुँह में गिर पड़े और तीन जापानी दरिन्दों ने पकड़े जाने के डर से वहीं हाराकीरी (आत्महत्या) कर ली।

उसी रोज रात को छापेमारों ने इस जीत की खुशी में एक वनभोज किया। वह एक-दूसरे की चावल खाने की तीलियाँ छीन कर स्कूल के बच्चों की तरह एक-दूसरे की पीठ पर "वाँग-ता[२]" लिखने लगे। उनकी

२. वाँग-ता—'कछुआ' अर्थात् 'हरामी' प्रायः व्यंग्यपूर्ण विनोद में इस शब्द का प्रयोग होता है।

हँसी से सारी पहाड़ी गूँज उठी।

इसी उत्सव के बीच अचानक ली-युंग का छोटा भाई उसे ढूँढता हुआ वहाँ जा पहुँचा। उसने बताया कि सुबह जापानियों ने उसे पकड़ लिया था। उसने अपने आपको एक पहाड़ी चरवाहा बताकर अपनी जान छुड़ाई थी। लेकिन उसकी छोटी बहन अभी तक नहीं लौटी। बेचारी माँ ने रो-रो कर घर सिर पर उठा लिया है।

इस घटना का हाल सुनकर लोगों की हँसी काफ़ूर हो गई। लेकिन ली-युंग का चेहरा पहले की तरह ही शान्त और गम्भीर था। फिर भी उसने चावल खाने की तीलियाँ और प्याला उठाकर एक ओर रख दिया। एक कौर भी आगे खाना उसके लिए असंभव हो गया था।

अपने सहायक कमान्डर को आवश्यक आदेश देने के बाद वह अपने भाई के साथ घर चला गया।

लेकिन फिर भी वह अपनी माँ को कोरी सान्त्वना देने के अतिरिक्त और कैसे ढाढस बँधा सकता था। "चिन्ता मत करो, तुम्हें अपनी सेहत की देखभाल करने की जरूरत है ताकि तुम छापेमारों की सहायता कर सको। बहन जल्द ही लौट आयेगी।"

कुछ देर बाद ही वह कैम्प में वापस लौट आया और आकर उसने यह देखने के लिये कि उसके आदेशों का पालन हुआ है या नहीं, सारे कैम्प में चक्कर लगाकर, सब सन्तरियों का मुआयना किया और स्काउटों के बाहर भेजे जाने के संबंध में पूछताछ की। उसके बाद वह बिस्तर पर लेट गया, लेकिन आँखों में नींद न आई।

दूसरे दिन तड़के ही उसने सुरंग बिछाने वाले दस्ते के कप्तान को बुलाकर कहा, "जापानी ट्रक-गाड़ियों का एक बड़ा-सा काफिला आज यहाँ से गुजरने वाला है, आओ हम उनके स्वागत का प्रबन्ध कर डालें।"

नाश्ता करने की परवाह न करके उसने कप्तान को अपने साथ ही चलने का आग्रह किया। लोगों ने बहुत समझाया, "ली-युंग आज कहीं

मत जाओ, तुम इतने थके हुए और परेशान हो।"

लेकिन उसने उनकी एक न सुनी और वहाँ से चल दिया।

पतझर का मौसम था। वृक्षों से पत्ते झड़ कर गिर रहे थे। पास से गुजरने वाली चौड़ी सड़क बिल्कुल सुनसान पड़ी थी। कोई राहगीर उसके नजदीक न फटकता था।

ली-युँग ने पल्टन के कमान्डर से कहा, "तुम चारों ओर देखते रहो, इतने में मैं सुरंग बिछा दूँ।"

अपने औजार लेकर उसने जमीन खोदनी शुरू कर दी। अभी उसने अपना काम पूरा भी न किया था कि दूर से मधुमक्खियों की-सी भनभनाहट सुनाई दी।

कमान्डर ने कहा, "ली-युँग, सुनो! तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या यह उन्हीं ट्रकों की आवाज़ है?"

"नहीं तो," ली-युँग ने जवाब दिया। "ये तो हवाई जहाज मालूम देते हैं।" और उसने उत्तेजित होकर जमीन खोदना जारी रखा।

"आवाज नजदीक आ रही है, ये हवाई जहाज नहीं हैं।"

ली-युँग चुपचाप जमीन खोदता रहा।

सहसा ही पल्टन का कमान्डर चिल्ला उठा, "जल्दी भागो! वे आ पहुंचे!"

ली-युँग ने जल्दी से सिर उठाकर सामने देखा तो सचमुच ही आधी ली की दूरी पर ट्रक चले आ रहे थे। पल्टन का कमान्डर न जाने कहाँ ग़ायब हो चुका था। सुरंग को छाती से चिपकाए ली-युँग पास के एक गड्ढे में जाकर पेट के बल लेट गया। फिर उसने धीमे स्वर से दस्ते के कप्तान को आवाज़ दी। लेकिन जवाब न मिला। तब वह अपनी पूरी ताक़त से तीन इंच गहरी दलदल में सरपट भागता चला गया। वह इतनी तेजी से भागा कि उसके जूते भी न गीले हुए। उसने जोर से दस्ते के कप्तान को दुबारा आवाज़ दी, लेकिन कोई जवाब न आया।

ट्रक-गाड़ियों की क़तार आगे जा चुकी थी—एक के बाद एक—

उनकी संख्या एक दर्जन से ऊपर थी। लेकिन ली-युंग के पास उन्हें गिनने का समय न था। आखिर उसे दस्ते का कप्तान दिखाई दे ही गया। वे दोनों अपनी पूरी ताक़त से विपरीत दिशाओं में भागने लगे। लेकिन जल्द ही ली-युंग को रुकना पड़ा। उसने मुँह से खून उगल दिया। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छागया।

कैम्प में पहुँचते ही वह पछाड़ खाकर गिर पड़ा। उसे मोर्चे से दस ली की दूरी पर स्थित एक गुप्त स्थान में स्वास्थ्य सुधारने के लिए भेज दिया गया। ली-युंग बीमार होगया, तो भी छापेमारों और सुरंग बिछाने वाले विशेषज्ञों ने अपनी सरगरमियाँ जारी रखीं। वे बीच-बीच में ली-युंग से सलाह-मशविरा करते रहते।

इस बीच उसकी बहन पर क्या बीती? उसे जापानी हेडक्वार्टर में लेजाया गया, जहाँ उसने केवल इतना ही बताया कि वह एक सीधी-सादी किसान बालिका है, उसे खाना पकाने, सूअरों को चारा डालने, घर बुहारने और जूतों के तले बनाने के सिवा दुनियाँ की और किसी चीज का पता नहीं। देखने में वह सचमुच पुराने ढंग की लड़की मालूम होती थी। दुर्भाग्य से एक देश-द्रोही सिपाही ने उसे पहचान लिया। वह यह भी जानता था कि वह स्त्रियों की राष्ट्रीय-रक्षा-समिति की स्थानीय शाखा की अध्यक्ष है। वह चट से बोल उठा, "नये वर्ष के दिन यह लड़की पिनयांग के बाजार में होने वाले यांग-को नृत्य की अगुआ थी।"

लेकिन वह साफ़ मुकर गई। उसने कहा, "तुम्हें पहचानने में धोखा हुआ है। भला मैं ऐसी बातों में क्यों पड़ने लगी?"

जापानी दरिन्दों ने उसे सख्त पहरे में बन्द रखा। लोगों के सामने तो वह एक मासूम लड़की की तरह इतना बिलख-बिलख कर रोती जैसे उसे अपनी होश-हवास ही न हो। कुछ देर बाद यह सोच कर कि वह कोई मामूली देहाती छोकरी होगी, जापानी उसके बारे में निश्चिन्त होगये।

एक रोज सारे जापानी छापेमारों की तलाश में पहाड़ की ओर चले गये। वह मौक़ा पाकर चुपके से निकल भागी। लेकिन आने से पहले

उसने कोने में पड़ी चीजों का एक बड़ा-सा गट्ठर बाँधा। यह सब चीजें जापानियों ने ग़रीब किसानों से लूटी थीं। वह दबे पाँव वहाँ से खिसक आयी। अभी वह मुश्किल से आधी ली की दूरी पर ही पहुँची थी कि जापानी दरिन्दों ने उसे देख लिया, और उसके पीछे अपने घुड़सवार सैनिक दौड़ा दिये। विवश हो उसने बण्डल फेंक दिया और पास की एक खाई में जा छिपी। वे चारों ओर की झाड़ियों और चट्टानों की ख़ाक छानते फिरे, लेकिन उसका कुछ पता न चला।

इस बीच ली-युंग अपनी बीमारी की क़ैद से ऊब गया था। ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाते थे, उसकी बेचैनी बढ़ती जाती थी। उसे रह-रह कर ख़्याल आता, "बड़े नेताओं ने व्यर्थ में ही मुझे इतना ऊँचा ओहदा दिया ! मैं तो निकम्मा आदमी हूँ।" उसके कलेजे में एक हूक सी उठती और आँखों से आँसू बहने लगते। फिर उसे ख़्याल आता, "सुरंग लगाने वाले दस्ते का कप्तान और मेरी जगह पर काम करने वाला नं० २ आदमी, दोनों होशियार हैं। वे युद्ध के आरंभ से ही सुरंगें बिछाते आये हैं। उन्हें सब दाँव-पेंच मालूम हैं।" इस ख़्याल के आते ही उसका मन कुछ शान्त हुआ, और उसे नींद आगई।

लेकिन जब उसे हाल की स्थिति मालूम हुई तो वह फिर बेचैन हो उठा। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं, और उठने के प्रयत्न में उसने अपनी चादरें उतार फेंकीं। लेकिन फ़ौरन ही उसे चक्कर आगया, और वह बिस्तर पर गिर पड़ा।

आइये हम कुछ देर के लिए ली-युंग को वहीं छोड़ चू चांगवान के निकटवर्ती इलाके में सुरंग बिछाने वालों की सरगरमियों पर ध्यान दें। जैसा कि गीत में कहा गया था, सैकड़ों ली-युंग पैदा हो रहे थे।

वह सामने शकरकन्दी का खेत है। आप जानते ही हैं कि शकरकन्दी का स्वाद मीठा होता है। खेत की मेंड पर मूलियों की एक क्यारी है। उनमें कितना रस भरा है ! कोई भी थका-मांदा सिपाही उनसे अपनी प्यास बुझा सकता है। इतने में जापानियों की एक टुकड़ी आकर सड़क

के किनारे सुस्ताने के लिए ठहर जाती है। स्वभाव से ही ध्वंसकारी और लालची होने के कारण उनकी नज़र फ़ौरन ही इन सब्ज़ियों पर गई, जिन्हें खाने के लिए पकाना नहीं पड़ता। मूलियों के शौकीन क्यारियों में घुस कर मूलियाँ उखेड़ने लगे। "धड़ाम !" वे खून से लथपथ थे। उनका रक्त मूलियों को सींच रहा था। शकरकन्दियों के प्रेमी ज़मीन खोदने के लिए किसी लकड़ी की तलाश में हैं। सामने के पेड़ की एक टहनी इस काम में आगई। वाह ! कितनी आसान तरकीब है ! एक ने लपक कर टहनी को पकड़ना चाहा, लेकिन अफ़सोस ! बेचारा ज़मीन पर लोटने लगा। टहनी में भी सुरंग का तार लगा था।

"हमारे खेत में आलू उगे हैं।
पास ही में मूलियाँ भी हैं,
अरे दोजख के कुत्तो इन्हें मत छूना,
वरना तुम चिल्ला उठोगे !"

सी-यांग न्यू जापानियों का अड्डा है। वहाँ एक विस्तृत मैदान में उनकी सभाएँ होती हैं। आज सुबह भी यह मैदान पहले की तरह ही समतल और चिकना है, लेकिन जापानियों के पैर पड़ते ही आदमी और घोड़े हवा में कलाबाज़ियाँ खाने लगे

"सुरंगें तो ठीक बन्दर सुन[3] जैसी हैं
वे जहाँ भी होंगी, ज़रूर कोई तमाशा होगा।
बन्दर सुन छिपने में होशियार था—
सुरंगे भी वैसी ही चालाक हैं।
लेकिन जापानियों से वे कहती हैं—'स्वागत'
जापानियों के गुज़रने के बाद सुरँग वाला गड्ढा रक्त और माँस के

३. बन्दर सुन—पुराने उपन्यास 'पश्चिम की यात्रा' का एक पात्र, उसे उच्छृंखल तथा अनैतिक बुद्धि का प्रतीक माना गया है। लेकिन वह है खूब होशियार।

लोथड़ों से पट जाता। दूसरे रोज़ गड्ढे के पास एक तख्ती लटकती हुई नज़र आती है, "जनाब, ज़रा उस व्यक्ति की पत्नी का ख्याल कीजिए जिसने यहाँ अपना खून बहाया है ! यह मत भूलिये कि आपके भाग्य में यही बदा है !"

जापानी सिपाही इस नोटिस को पढ़ते ही अपना सिर नीचे झुका लेते हैं। उनका मनोबल टूट चुका है। उनका अफ़सर भी इसे पढ़कर आग-बबूला हो उठता है और इस आपत्ति-जनक नोटिस को फाड़ने के लिए आगे बढ़ता है। लेकिन काग़ज तक पहुँचने से पहले ही वह अपने रक्त में लोट-पोट होता नज़र आता है।

"सुरँग का दिल सोने का बना है
वह कितनी ईमानदारी से बताती है
कि आपकी मौत नजदीक है।
जब तुम्हें काठ की टिकटिकी पर लिटाया जाय
तो यह मत कहना कि तुम्हें चेतावनी नहीं दी गई थी।"

जापानियों का सबसे बढ़िया स्वागत तो फ्यूपिंग शहर में घुसते समय हुआ। वैसे तो शहर के बाहर ही उन्हें भून दिया गया था, फिर भी वे अपनी ज़िद पर अड़े आगे बढ़ते आये। लेकिन शहर के फाटक पर लाल अक्षरों में लिखा हुआ एक नोटिस टँगा था :

"अन्दर हमने सुरँगें बो रखी हैं
ज़रा देखें तो तुम बचकर कहाँ जाते हो"

जापानियों ने इस नोटिस को पढ़ा लेकिन उसे गीदड़-भभकी समझकर विशेष ध्यान न दिया। उनका ख्याल था कि आगे बढ़ने से पहले सड़क की जाँच कर लेने के बाद वे खतरे से मुक्त हैं।

आगे ही एक खुरदरी सड़क का टुकड़ा था। किवाड़ बिछाकर उसको पार करने में कोई कठिनाई न थी। इस पर मजा यह कि सामने के मकान में ही एक सुन्दर मजबूत किवाड़ों की जोड़ी लगी थी ! कई जापानी दरिन्दे देखते-देखते किवाड़ को उखेड़ने में लग गये। किवाड़

अभी पूरी तरह से ढीला भी न होने पाया था कि एक धड़ाके के साथ उनके शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गये। दरवाजा उलट कर उनके ऊपर आ गिरा।

थोड़ी दूर पर एक वृक्ष के नीचे एक तारकोल का ढोल पड़ा था। उसके ऊपर लिखा था, "कम्पनी हेडक्वार्टर" जापानी इसे देखते ही आग-बबूला होगये। दुश्मन ने इस ढोल को अपनी फ़ौज जमा करने के लिये यहाँ रखा है! इसे फ़ौरन ठोकर मार कर लुढ़का देना चाहिये! एक सिपाही ने आगे बढ़कर ढोल को लात जमाई। सब के सब खुशी से तालियाँ बजाने लगे। अब उन्होंने ढोल को उठाना चाहा।

आह! धुंए का एक बड़ा-सा बादल उठा। ढोल के टुकड़े-टुकड़े हो गये और लाशों का ढेर लग गया।

बचे-खुचे जापानी मारे डर के काँपने लगे। उन्होंने सोचा कि कुछ देर कहीं बैठ कर सुस्ता लिया जाये। उनमें से कुछ तो आस-पास के मकानों की सीढ़ियों पर बैठ गये, कुछ बैठने की जगह की तलाश में इधर-उधर ताँक-झाँक करने लगे। एक घर में बिना किवाड़ों के एक कमरे के भीतर दीवार के सहारे एक बैंच पड़ी थी। आराम से बैठने के लिये कितनी बढ़िया चीज़! पर उनके बैठने की देर थी कि बैंच के पीछे से धुआँ उठा और बैठने वाले वहीं ढेर हो गये।

शहर से निकलकर जब जापानी नदी की ओर बढ़ने लगे तो छापेमारों ने गोलियाँ बरसाईं। वे छिपने के लिये कोई ओट तलाश करने लगे। आह! सामने ही चटाइयों की दीवार वाली झोंपड़ी थी, जिसमें पहले कभी शाओपिन[४] की दुकान थी। हो! वे छप्पर के नीचे घुस गए, लेकिन एक बार अन्दर जाकर वे फिर बाहर नहीं आये।

सुरंगें ख़ूब संभाल कर गाड़ी गई हैं
कौन-सी कहाँ से फट पड़ेगी, कौन जानता है?

४. चपटी डबल रोटियाँ या बन्द, जिन पर अलसी के बीज चिपके रहते हैं।

कुँगमिंग[५] जैसा बुद्धिमान भी
यह देखकर आश्चर्यचकित रह जायगा
और जापानी, वह तो दोजख़ की हवा खाते होंगे !

जापानी इन सुरंगों से इतने डर गये थे कि कभी-कभी एक अजब दृश्य दिखाई देता था—मानो उनका एक गिरोह-का-गिरोह सड़क पर घुटनों के बल बैठा फूँक-फूँक कर अपने आगे की धूल साफ़ करता चलता था। लेकिन सुरंगें इतनी होशियारी से गाड़ी गई थीं कि उनकी इस दण्डवत् प्रणाम का उन पर कोई असर न पड़ता। वे अपनी मौजूदगी का पता न देतीं, कम से कम जहां छिपी होतीं, वहाँ ऊपर की ज़मीन पर न कोई ढेरी होती न कोई गड्ढे।

आइए फिर ली-युँग के पास चलें, जो खन्दक में बीमार पड़ा था। वह बेहद बीमार हो गया था, लेकिन खुशी की बात है कि उधर से ज़िले की सरकार के कुछ सैनिकों की टुकड़ी गुज़र रही थी। उनके साथ डाक्टरी दस्ते के लोग भी थे, जिन्होंने ली-युँग की विशेष रूप से देख-भाल की, क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा न करने पर पार्टी उन्हें ज़ुम्मेदार ठहरायेगी। उसके आस-पास के दूसरे लोगों ने भी उसकी तीमारदारी की।

वह धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा। अभी हालत कुछ ही सुधरी थी कि सुरंगें बिछाने के लिए उसके हाथ खुजलाने लगे। अपनी उद्विग्नता में वह अपने सर और कनपटी को नोचने लगा। उसे एक क्षण के लिए भी शान्त बैठना दुश्वार हो रहा था। तभी उसकी बहन मिलने के लिए आई और अपने बचकर भाग आने का क़िस्सा उसे सुनाने लगी। वह इतना खुश हुआ कि यकायक उसकी सेहत ठीक हो गई। और वह जल्द ही अपने कैम्प वापस लौटकर छापेमारों के साथ फिर काम में जुट गया।

उस रात को ही जापानियों ने इकट्ठे होकर उन पर आक्रमण

५. कुँगमिंग—तीन सलतनतों (तीसरी सदी) में विख्यात रण-नीतिज्ञ, जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि उसके पास दैवी-शक्ति थी।

किया। पौ फटने से पहले ही झुटपुटे का फ़ायदा उठा, उन्होंने खाइयों के रास्ते आकर उन पर अचानक धावा बोलना चाहा। उस समय वहाँ पहरे पर कोई सन्तरी न था, और न कोई ख़तरे की चेतावनी देने वाला। लोगों में घबराहट फैल गई। लेकिन ली-यँग अपनी राइफल में गोलियाँ भर कर एक पेड़ के नीचे डटा रहा। उसने जापानियों के आने पर गोली चलाने का फैसला कर लिया था। इस बीच उसने अपने साथियों को बुलाकर कहा, "आप लोग फौरन पहाड़ी की ओर चले जाइये, बाकी मैं संभाल लूँगा।"

ली-युग को वहाँ देखकर उनकी घबराहट कम हो गई और उसके आदेश के अनुसार वे पहाड़ी पर चढ़ने लगे।

लेकिन जब जापानी पचास-साठ फुट दूर ही रह गये तो उन्हें डर लगा कि वे कहीं ली-युँग को खत्म न कर दें, और उन्होंने चिल्लाकर पुकारा, "ली-युँग ! ली-युँग ! हम सब पकड़े गये !"

यह सुनकर कि वे उसका नाम लेकर पुकार रहे हैं, ली-युँग सचमुच में परेशान हो गया। उसने उन्हें अंधेरे में धिक्कारते हुए सोचा, "क्या तुम्हें डर है कि जापानियों को यह नहीं पता कि मैं कहाँ हूँ, इसलिए तुम उन्हें बता देना चाहते हो !" लेकिन जब तक और सब लोग ऊपर नहीं चले गये तब तक वह अपनी ही जगह पर डटा रहा। फिर वह भी चुपके से पहाड़ी पर चढ़ गया।

चोटी पर पहुँच उसने अपने साथियों को लेकर पहाड़ी के कई थार पार किये। उसका विचार था कि पहाड़ी की दूसरी ओर उतरकर सड़क पार करें और नदी के दायीं ओर से गोली चलाकर जापानी फ़ौज के एक हिस्से को उधर ही रोक लें।

जब यह योजना तै हो गई, तब सहायक कमान्डर यह कह कर चलता बना कि, "आप लोग पहले चलिए। मैं लौटकर पहाड़ी की चोटी पर जा रहा हूँ ताकि देखता आऊँ कि जापानी क्या कर रहे हैं।"

जैसे ही वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, किसी के हाथ ने पीछे से

आकर उसे गर्दन से धर दबोचा। जापानी उससे एक क्षण पहले ही वहाँ पहुँचे थे। लेकिन, बिजली की तेज़ी से एक झटके से अपने को छुड़ा वह ज़मीन पर लेट गया और लोट पोट होता हुआ पहाड़ी के ढलवान से नीचे लुढ़कने लगा। जापानी शून्य में आँख गड़ाये देखते के देखते रह गये।

ली-युँग ने तुरन्त स्थिति भांप ली। अपने साथियों को लेकर वह पहाड़ी से नीचे झपटा और उनकी सहायता से सहायक कमान्डर को बीच में ही थाम कर मोटरों वाली सड़क के पार उठा ले गया। वहाँ दूसरी ओर नदी उछालें मार रही थी और उनका रास्ता रोक कर बह रही थी।

लोगों ने घबराकर कहा, "अह-आह !"

लेकिन ली-युँग को किसी का भय न था। वह चिल्लाया, "चले आओ, हम नदी पार करेंगे। अगर यहाँ ठहरे तो जापानी हमारी खोपड़ी तोड़ डालेंगे !"

सरदियां शुरू हो चुकी थीं और बर्फ़ के छोटे-छोटे टुकड़े नदी में तैर रहे थे। लोगों के सामने मिशाल पेश करने की ग़रज़ से ली-युंग सबसे पहले नदी में कूद पड़ा। उसने अपना रूई का पाजामा भी नहीं उतारा। फिर दूसरे भी कूद पड़े और तैर कर पार निकल गये।

दूसरे किनारे पर पहुँच कर वे एक ऐसी दलदल में फँस गये जिसके दोनों ओर ऊँची ज़मीन थी। उनके कपड़ों पर बर्फ़ की तह जम गई थी।

किनारे के पास उन्हें एक बूढ़ा मिला जो मारे डर के ठिठुर रहा था। "आपकी हिम्मत के क्या कहने ! जान हथेली पर लेकर आप जापानियों के बीच इतनी निडरता से घूम रहे हैं।"

ली-युंग बूढ़े की बात सुनकर चकित रह गया। लेकिन मुँह उठाकर सामने देखा तो ख़ाकी वर्दी पहने हुए बीस या तीस आदमी दिखाई दिये, जो सिवा जापानियों के और कोई नहीं हो सकते थे। जिस जगह पर

ली-युंग और उसके साथियों ने नदी में डुबकी मारी थी, उस जगह से कुछ ही फुट की दूरी पर जापानी सैनिकों की एक टुकड़ी थी। पल भर में ही ली-युंग सारी स्थिति को ताड़ गया।

पानी के ऊपर एक फ़ायर हुआ और किनारे पर गोलियों की बौछार होने लगी। दुश्मन भी चौकन्ना हो गया।

ली-युंग चिल्ला उठा, "गोली चलाओ।"

उसके साथियों ने आपत्ति की, "हमारी राइफ़लों में रेत भरी पड़ी है।"

"तो फिर झटपट उन्हें साफ कर डालो! और फिर दनादन गोली चलाओ।"

जापानियों ने सारी बात सुन ली थी। और यह समझ कर कि उन की बन्दूकें निकम्मी हो गई हैं, जापानियों ने नदी को पार करना शुरू किया। लेकिन उन्होंने मुश्किल से आधा रास्ता पार किया था कि ली-युंग ने उन पर गोलियाँ बरसाईं। उसकी बन्दूक साफ-सुथरी थी। एक जापानी सैनिक गोली से घायल होकर कला-बाज़ी खाता हुआ पानी में गिर गया और बाकी सैनिक घबराकर पीछे हट गये।

हर रोज़ ही इस प्रकार की घटनाएँ होतीं और ली-युँग के जवाबी हमले भी दिन-प्रतिदिन तेज़ होते गये। एक क्षण के लिए भी वह चैन से नहीं बैठा।

स्थानीय पार्टी के मन्त्री ने ली-युँग को शाबाशी का एक खत लिखा और एक छोटी पिस्तौल भेंट में दी। प्रान्तीय सरकार ने उसे बाल-योद्धा चिया-यु द्वारा जापानियों से छीनी गई एक पताका भेंट की, जो चिया-यु ने सादर ली युँग के लिए समर्पित की थी। इन शाबाशियों से प्रोत्साहित होकर ली-युँग अपने काम में और भी तेजी से जुट गया। सुरंगें बिछाने से उसे जो भी खाली समय मिलता, वह छापेमारों को साथ लेकर इर्द-गिर्द के देहातों में चक्कर काटता रहता। हाथ में पिस्तौल थामे वह छिप-छिप-कर जापानियों का इन्तज़ार करता। जापानियों की तलाश में वह और

उसके साथी पिंगयाँग तक हो आए। जापानियों को दोबारा वू-चांग-वान में अपना मुँह दिखाने की हिम्मत नहीं हुई। ली युँग को पकड़ने की उनकी हेकड़ी धूल में मिल गई।

जवाबी हमले के खतम होते-होते ली युंग सीमान्त प्रदेश का पहले नम्बर का सुरंग विशेषज्ञ बन गया। ज़िले के युद्ध-विजेताओं की एक सभा में उसे सेना के कमाण्डर द्वारा सम्मानित किया गया, "ली-युंग के क़दमों पर चलो !" जगह-जगह उसकी बहादुरी के उदाहरण दिये जाते, "वह तीन बार पिंग-याँग तक हो आया। दुश्मन को तीन बार उड़ा दिया, सुरंग हाथ में लिए हुए उसने दुश्मन का पीछा किया। कुल मिला-कर १०६ सुरंगें उसने बिछाईं थीं।"

सभा में ली-युंग की मुलाकात ज़िले के अन्य योद्धाओं से हुई। इनमें सैनिक, श्रमिक वीर और नर-नारी सभी शामिल थे। उनकी वीरताओं की घटनाओं को सुनकर उसे अपनी सारी सफलताएँ फीकी लगने लगीं, लेकिन उसने मन ही मन फैसला किया कि वह अपने आपको उन लोगों के सम्मान के उपयुक्त योद्धा और श्रमिक साबित करेगा।

वह अपने खच्चर की रस्सी थामे घर लौट रहा था। रास्ते में उसे एक गीत सुनाई दिया, जिसमें उसकी बहादुरी के कारनामों का वर्णन था।

"यही वह साल था, यही वह साल था,
१९४३ के पतझड़ में,
अनगिनत ली-युंग पैदा हुए,
जिन्होंने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिये
सड़कों पर, पगडंडियों पर,
वृक्षों पर, हर जगह ली-युङ्ग पैदा हो गये।

पहाड़ों पर सुरंगें गरज रही थीं,
घाटियों में भी उनके धमाके सुनाई देते थे,
ओलों की तरह गोलियों की मूसलाधार वर्षा हो रही थी,

जापानी नदी के किनारे, घुटनों के बल रेंग रहे थे,
इन कड़वी गोलियों की तलाश में,
वे जिधर जाते थे, भयानक विस्फोट होता था

जापानी, आश्चर्य और क्रोध से चारों ओर देख रहे हैं,
सुरंगे मानो उनके ग़ुस्से की हँसी उड़ा रही हैं,
उन्हें मज़ा चखाने के लिये,
खेतों में सुरंगें बिछी हैं, शहर भी राह देख रहा है,
किवाड़ तक तुम्हें काट सकते हैं, ढोल भी तुम्हारी धज्जियां उड़ा सकते हैं,
फिर भला बैंच ही क्यों तुम्हारी परवाह करने लगी ?

आज सुबह तो जापानी घुड़सवार इधर-उधर मारे
घमण्ड के ऐंठ रहे थे ।
अचानक ही परेड के मैदान में भूचाल सा आगया ।
और सब सवार घोड़ों से नीचे गिर पड़े ।
उनके टुकड़े सीधे स्वर्ग जाने की चेष्टा में
ऊपर आसमान की ओर उड़े ।
लेकिन स्वर्ग वालों ने धक्का देकर उन्हें नरक में धकेल दिया

हमारी सुरंगों में जादू है,
हमारी राइफलों में अनूठा चमत्कार है ।
अनगिनत ली युंग पैदा हो रहे हैं ।
ज़रा उनकी गर्जन सुनो !
उनके गीतों में एक रहस्य भरा है ।
जनता के पुत्र ली-युंग बनकर साबित कर रहे हैं कि जनता अजेय है !

चाओ शू-ली

(१९०५—)

चाओ शू-ली शेन्सी प्रान्त के शेन्शुई गांव में पैदा हुए थे। जब वे एक नार्मल स्कूल में पढ़ते थे, उन्होंने जंगी सूबेदार येन सी-शान की निरंकुशता के विरुद्ध आन्दोलन में भाग लिया, जिसके कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया और बाद में गिरफ्तार भी कर लिया गया। उस समय से लेकर जापान से जंग छिड़ने तक वे अनेक प्रकार के कार्यों में लगे रहे—स्कूल में अध्यापन से लेकर ख़ानाबदोश घुमक्कड़ तक बने।

युद्ध के मध्य वे जापानी फौजों के पीछे स्थित छापेमार दस्तों के केन्द्रों में अनेक पत्रों के सम्पादन का कार्य करते रहे। अन्त में वे सिन हुआ प्रेस में काम करने लगे जो कम्युनिस्टों की चीन में सब से बड़ी प्रकाशन संस्था है। तब से चाओ शू-ली पूर्णतः लेखन-कार्य में ही संलग्न हैं। आजकल आप शुओ-शुओ चांग-चांग (वार्ता और गायन) के सम्पादक हैं। इस पत्रिका में कहानियाँ, रेखाचित्र और गीत प्रकाशित होते हैं जिनमें से कुछ तो वर्तमान श्रमजीवी लेखकों की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ होती हैं।

चाओ शू-ली ने सबसे पहले सन् १९४३ में अपनी कहानी 'सियाओ एर्ह-ही की शादी' से प्रसिद्धि प्राप्त की। उसके पश्चात उन्होंने 'ली यू-त्साई के गीत' और फिर 'ली के गाँव में परिवर्तन' नाम की प्रसिद्ध

कहानियाँ लिखीं । उनकी कहानियाँ 'करघा' और 'रजिस्ट्रेशन' भी अत्यन्त लोकप्रिय हुई हैं । इन कहानियों के विषय मुख्यतः दो हैं, जो वहाँ के सामयिक जीवन की दो प्रमुख समस्याओं से सम्बंधित हैं—ये समस्यायें हैं कृषि-सुधार और विवाह के प्रति बुद्धिसंगत दृष्टिकोण का विकास ।

सामयिक प्रश्नों पर मनोरंजक कहानियाँ लिखने में चाओ शू-ली सिद्धहस्त कलाकार हैं । लोक-गीत और लोक-नाट्य परम्परा का ज्ञान उनका इतना अधिक है कि उनकी कला में विशुद्ध चीनी कृति का-सा भाव-स्पर्श पाठक को मिलता है । प्रसिद्ध साम्यवादी आलोचक और सांस्कृतिक विभाग के उप-मंत्री चाऊ यंग ने उनके बारे में कहा है : "वह ऐसे कलाकार हैं जो प्रसिद्धि प्राप्त करने से पहले ही प्रौढ़ हो चुके थे । वे एक मौलिक कलाकार हैं जिन्होंने अपनी अलग शैली गढ़ी है, तथा जो वास्तविक अर्थों में जनता के कलाकार हैं ।"

ली यू-त्साई के गीत

(एक)

इस कहानी में क्या है

येन परिवार के पहाड़ी गाँव येन चियाग्रान में एक आदमी रहता था जिसका नाम था ली यू-त्साई। चीनी भाषा में इसका अर्थ है 'गुणवान् ली', लेकिन उसके उद्धत स्वभाव के कारण लोग उसे 'उचकने वाला ली' पुकारते।

जिस समय यह कहानी लिखी गई थी, उसकी आयु पचास साल की थी। बेचारे के पास कोई जमीन-जायदाद न थी। वह लोगों के मवेशी चराकर गुजारा करता था। गरमियों और पतझर के दिनों कभी-कभी उसके सम्पन्न पड़ौसी अपनी फसलों पर रखवारा भी रख लेते थे, जिससे वह थोड़े पैसे और कमा लेता। वह दुनिया में बिल्कुल अकेला था। उसके बीवी-बच्चे कोई न थे। वह इस बात का खुद ही मज़ाक उड़ाता। कहता "जब मेरा पेट भरा हो, तो समझ लो—मेरा सारा कुनबा तृप्त हो गया। जब मैं ताला डाल कर बाहर चला जाता हूँ तो उस समय मुझे इस बात का डर नहीं रहता कि मेरे पीछे मेरा छोटा-सा स्टूल घर में भूखा होगा। उसे अपने बाप से पुराने टिड्डी वृक्षों'[1] के नीचे रहने के लिए एक

१. टिड्डी वृक्ष—चीन में रहने वाले विदेशी 'वाई शू' के वृक्ष को जो अकेशिया से मिलती-जुलती किस्म का पेड़ होता है, टिड्डी वृक्ष के नाम से पुकारते हैं। इसके फूल मटर के फूल जैसे ही होते हैं, लेकिन इसमें शगूफा बहुत देर से आता है और इसका पेड़ अपेक्षया बड़ा होता है।

गुफ़ा विरासत में मिली थी, जो गाँव के पूर्वी किनारे पर स्थित थी। साथ में उसे तीन माऊ खेत भी मिला था। लेकिन खेत तो कुछ दिनों में ही गाँव के बड़े ज़मीदार यन-हेंग-यूवान के पास रहन हो गई, क्योंकि यूरोप के देशों के विपरीत चीन में यह रिवाज़ है कि जो व्यक्ति जमीन रहन रखकर कर्ज़ देता है, वह तुरन्त ही उस ज़मीन पर अपना दखल कर लेता है और उस समय तक नहीं छोड़ता जब तक कि कर्ज़ा अदा न हो जाय। इसके बाद ली यू-त्साई के पास अपनी गुफा के अलावा और कुछ न रह गया।

यन-चियाशांग का गाँव एक विचित्र ढंग से बसा हुआ था। पश्चिमी भाग में अधिकतर दुमंज़िली इमारतें ही थीं, जिनकी छतें खपरैल से पटी हुई थीं। बीच में एक मंज़िले मकान थे। जबकि पूर्वी भाग में पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे केवल बीस-तीस गुफाओं की एक कतार ही थी, जिनमें गाँव के गरीब लोग रहा करते थे। देखने में तो लगता था कि गाँव चौरस ज़मीन पर बसा हुआ है, लेकिन अगर आप पश्चिमी भाग के सम्पन्न निवासियों की ऊँची इमारतों की छत पर खड़े होकर देखें तो आपको मालूम होगा कि ज़मीन पूरब की ओर ढलवाँ है।

पश्चिमी भाग के सभी निवासी येन-बिरादरी के थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी से गाँव के ज़मीदार चले आते थे। मध्य भाग में भी इस कुटुम्ब के लोग थे जहाँ दूसरे जाति-नामी लोग भी आ बसे थे। लेकिन इस स्थान पर बाहर से आकर बसने वाले लोगों के पास भी अपनी ज़मीन थी, जिस पर वे खेती करते-कराते थे। रही पूर्वी भाग की बात, सो वहाँ की हालत बड़ी गई-बीती थी। वहाँ के आधे निवासी तो ऐसे किसान थे, जिनके पास अपना घर-द्वार और खेती बारी न थी और बाकी विभिन्न नामों वाले ऐसे मुसीबत क मारे परिवार थे, जिन्हें मजबूर होकर गाँव के मध्य भाग से हटकर यहाँ आना पड़ा था। येन-बिरादरी के तीन परिवार ही पूरबी भाग में रहते थे, जो अक्सर एक-दूसरे की मदद करते और हर काम में साथ खड़े होते। उन्हें बुरे दिनों में अपने मकान और सम्पत्ति

बेचकर इधर आना पड़ा था। अगर वे बर्बाद न हो गए होते तो पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे गुफाओं में रहने का कभी सपना भी न देखते।

ली यू-त्साई अक्सर कहा करता कि पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे सिर्फ़ दो किस्म के लोग रहते हैं—उनमें से कुछ 'बूढ़े' हैं, कुछ 'नन्हे'। 'बूढ़े' तो वे किसान हैं, जो और जगहों से आकर यहाँ बस गए हैं। उनका पूरा नाम जानने की आज तक किसी ने परवाह नहीं की। पूरा नाम तो सिर्फ़ नम्बरदार के कागजों में ही दर्ज किया जाता है, जब वह उनसे कोई काम निकालने या कर वसूल करने के लिए हुकुम जारी करता है। बाकी समय उन्हें अपने जाति-नामों से पुकारा जाता है—'बूढ़ा' चेन, 'बूढ़ा' चिन, 'बूढ़ा' चाँग या 'बूढ़ा' जो भी हो। उनके नाम के आगे 'बूढ़े' की सम्मान-सूचक उपाधि इसलिए लगाई जाती थी, क्योंकि वे बाहर से आये थे और गाँव में पैदा होकर बड़े न हुए थे। और सारे लोग, जो गाँव के ही मूलनिवासी थे, नन्हें कहे जाते थे। बच्चों को जो प्यार का नाम दिया जाता था या जिस नाम से परिवार के बड़े लोग उन्हें बुलाते थे, उनके आगे 'नन्हें' जोड़ देने का रिवाज़ था जैसे 'नन्हें' शुन, 'नन्हें' पाव, आदि।

लेकिन पश्चिमी भाग में बसने वाले सम्पन्न परिवारों के लोग अपने सही नामों से ही बुलाये जाते थे। यहाँ तक उनके प्यार के नाम से भी किसी को बुलाने का साहस न होता। मिसाल के लिए 'बूढ़े' मुखिया येन-ह्गि यूवान का बचपन का घरेलू नाम 'नन्हा कोठा' था, लेकिन इस नाम से उसे पुकारने का साहस करने की बात तो अलग रही, गाँव वाले अपनी बातचीत में 'कोठा' शब्द का कहीं प्रयोग करने से डरते थे कि कहीं मुखिया नाराज़ न हो जाय। अगर उन्हें 'नाज के कोठे' की ओर इशारा करना होता तो वे उसकी जगह 'नाज का गोदाम' प्रयोग में लाते। यहाँ की प्रथा पुराने टिड्डी वृक्षों के कुन्ज से बिल्कुल भिन्न थी। वहाँ अगर अब अस्सी साल के बुजुर्ग पितामह भी हैं तो भी आपको 'नन्हें यह' या 'नन्हें वह' कह कर बुलाया जायगा।

अगर आपका नाम बहुत शानदार है और सुनने वाले को प्रभावित

करता है तो कोई भी आपको इस नाम से नहीं पुकारेगा। उदाहरण के लिये चेल-स्याओ-यूआन (अथवा नन्हा यूआन) के पैदा होने के समय पड़ौस के गाँव के एक अध्यापक ने उसका एक सुन्दर-सा नाम रखा था, और वह इस नाम पर फूला न समाता था। लेकिन क्या कभी किसी ने उसे 'चेन वाँग चाँग' (जिसका अर्थ है 'ऐश्वर्यवान चेन') कहकर पुकारा ? नहीं तो ! उस बेचारे के साथ तो बुरी ही बीती। गाँव लौटने पर उसने मुहल्ले के नम्बरदार से रजिस्टर में पुराना नाम मिटाकर अपना नया शानदार नाम दर्ज कर देने के लिये कहा। नम्बरदार ने उसका कहना मान लिया। खैर, सो तो अच्छा हुआ। लेकिन जब बूढ़े मुखिया येन ने सारी फेहरिस्तें देखीं तो उसकी समझ में न आया कि यह 'चेन वाँग चाँग' कौन है। नम्बरदार से पूछने पर उसे सारी बात मालूम हुई। उसने फौरन नया नाम काटकर वही पुराना 'नन्हा यूआन' लिख दिया। कहने का मतलब यह है कि पुराने टिड्डी कुँज के सब बूढ़े-बच्चे 'नन्हे' कहकर पुकारे जाते थे।

सिर्फ़ ली यू-त्साई ही एक अपवाद था, क्योंकि उस बेचारे का कोई प्यार का नाम ही न था। इन 'नन्हों' के कुँज में वही एक ऐसा व्यक्ति था जिसे सीधे यू-त्साई कहकर बुलाया जाता था।

ली यू-त्साई टिड्डी-कुँज का सबसे लोकप्रिय व्यक्ति था। उसके बिना सब महफ़िलें सूनी लगतीं। मसख़रा तो वह अव्वल दर्जे का था। वह सीधी-सादी बातें भी ऐसे ढंग से मुँह बना-बनाकर कहता कि सुनने वाले हँसी के मारे लोट-पोट हो जाते। उसकी एक और विशेषता थी; वह आन की आन में तुकबन्दी कर डालता था। गाँव में कोई भी विशेष घटना होती या कोई आदमी अपने आप को औरों से अलग जताता, तो ली यू-त्साई ज़रूर ही उस पर कोई न कोई तुकबन्दी रच डालता। उसके गीत बड़े अनूठे होते, और हर किसी की ज़बान पर आसानी से चढ़ जाते। येन चियाशान प्रसिद्ध था कि वह मुँह से 'गीत उगलता' है। मंडारिन भाषा में उन्हें 'खड़ताल के गीत' कहा जाता था क्योंकि गवैये अक्सर उन्हें

खड़ताल की जोड़ी बजा-बजाकर गाते थे।

यहाँ ली यू-त्साई के गीतों का एक नमूना दिया जाता है। जापान-विरोधी युद्ध से पहले पश्चिमी कुंज का सबसे बड़ा जमींदार बूढ़ा येन हेंग-यूश्रान हर साल गाँव का मुखिया चुना जाता था। अब की बार जब वह फिर चुनाव में खड़ा हुआ तो ली-यू-त्साई ने उसके बारे में यह तुक-बन्दी रच डाली—

"हमारे गाँव का मुखिया येन हेंग-यूआन
अपनी दहाड़ से उठा लेता है सिर पै आसमान
बारह सालों से है वही हमारा मुखिया
तनिक देखो तो, ऐसी है उसकी शान
न्याय-धर्म सब बच जायेगा
यदि सदा डालते जायें उसको वोट
इधर-उधर मत देखो भाई
वरना तुम्हें लगेगी गहरी चोट

आओ बना डालें एक तख्ती
सदा को लिखकर उसका नाम
छोड़ वोट-सोट का झगड़ा
बस, तख्ती दो मजबूती से टांग।
एक बार बन जाये तख्ती,
क्यों फिर डालें वोट साल के साल ?
फट जाती जूती जल्द चाम की
पर तख्ती चलेगी सौ-सौ साल।

बूढ़े हेंग-यूआन का बेटा गाँव के स्कूल में मास्टर था। उसका नाम चिया-स्यांग (गृह-अभिनन्दन) था। उसने चीनी प्रजातन्त्र के उन्नीसवें वर्ष—१९२० में एक छोटे-से स्कूल से नार्मल का इम्तहान पास किया था। देखने में भी वह विशेष कुछ न था। उसकी शक्ल कुल्हड़ जैसी थी—ऊपर से चौड़ी और नीचे से ठोड़ी नदारद ! बोलते समय वह हर

शब्द के साथ कम-से-कम बीस दफ़ा आँख झपकाता। लेकिन अगर चेहरे-मोहरे से ही उसके व्यक्तित्व का अनुमान लगाकर आप उसे निरा आँख झपकाने वाला बुद्धू समझने लगें तो घोर अन्याय करेंगे। दरअसल उसे बीसियों हथकण्डे आते थे, और उसके सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति उसकी चालाकियों का शिकार बने बिना न रहता।

ली यू-त्साई ने उस पर भी एक तुकबन्दी रची थी—

दो-दो इंच है जिसकी भौंहों की लम्बाई
जाता है वह चिया-स्याँग, लो उसने आँखें झपकाईं
ऊँची है गाल की हड्डी, चपटी नाक है बेमानी
आँख झपकना देख के उसका होती है हैरानी
बिजली सी चकमक-चकमक आँखें वह मटकाता
पेट में भरे भेद छत्तीस, कोई जान न पाता
तुम हो मूरख वह है ज्ञानी, तुम ग़लत वह ठीक
तुम झूठे, वह सच्चा, वह नेक तुम चार सौ बीस
औरों को नुकसान पहुँचाना उसका धर्म महान,
उसमें भूल-चूक होने पर रंग हो जाता उसका म्लान,
ग़ुस्से से आँखें चढ़ जातीं, निकलने लगती मुँह से झाग;
उसके रंग-ढंग देखकर, सूअर भी जाते भाग।

ली यू-त्साई प्रायः रोज़ ही एक न एक तुकबन्दी गढ़ता। इसका एक कारण तो यह था कि वह तुकबन्दी करने का आदी हो गया था, इसके अलावा टिड्डी-कुँज के तमाम छोकरे रोज़ रात को खाने के बाद तुकबन्दी सुनने के लिये उसका दिमाग़ चाटा करते। इस तरह उसकी रचनाओं का भण्डार दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही गया। जब भी वह कोई नई तुकबन्दी करता तो उसकी ख़बर फ़ौरन ही पूर्वी कुँज के सब छोकरों में शाम होने से पहले फैल जाती। लेकिन पश्चिमी कुँज के लोग इन सारी बातों से बेख़बर रहते, क्योंकि जहाँ तक उनका बस चलता, वे पूर्वी कुँज की ओर पैर रखने में भी घबराते। और कहीं भूल से भी अगर कोई बच्चा मन

बहलाने के लिये उधर जा निकलता तो उसकी शामत आ जाती। बड़े-बूढ़े उन्हें धमकाते, "अच्छा बच्चू, अपना सामान बाँध लो, कल ही तुम्हें पूर्वी कुँज में छोड़ आयेंगे। वहीं रहना। पूर्वी और पश्चिमी कुँज में इतना भारी अन्तर था कि ली यू-त्साई की तुकबन्दियों के लिए गाँव के सम्पन्न इलाके में पहुँचना आसान न था।

ली यू-त्साई की ख्याति का कारण उसकी तुकबन्दियाँ ही थीं। और इन्हीं के कारण उसे मुसीबत में फँसना पड़ा। वह मुसीबत में कैसे फँसा, उसमें से कैसे निकला और उसके कारण येन-चियाशान में क्या-क्या परिवर्तन हुए—यही इस कहानी का विषय । इस कहानी से सम्बन्ध रखने वाली तुकबन्दियाँ भी ज्यों की त्यों दी गई हैं।

कविता लिखने वाले व्यक्ति को 'कवि' कहते हैं, और उसकी बनायी तुकबन्दियों को कविता कहा जाता है। लेकिन ली यू-त्साई की रचनाएँ तो केवल खड़ताल के साथ गायी जाने वाली तुकबन्दियाँ ही थीं। इसलिए शायद उसे 'खड़तालवाला' कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। कहानी के लिए भी सबसे अच्छा शीर्षक 'ली यू-त्साई की खड़तालवाली तुकबन्दियाँ' ही हो सकता है।

(दूसरा)
ली यु-त्साई की गुफ़ा में होने वाली शाम की महफ़िल

ली यू-त्साई जिस गुफ़ा में रहता था, वह सचमुच बड़ी दिलचस्प थी। उसके तीनों हिस्से एक दूसरे से बिलकुल भिन्न थे। द्वार दक्खिन की ओर था। अन्दर घुसते समय बायें हाथ पश्चिम की दीवार से लगा बीच में एक कांग था, जिसके दोनों किनारों पर लगभग पाँच फुट का खुला स्थान था। सामने की खुली जगह में एक ईंटों की भट्टी थी जिस पर पानी का घड़ा और एक बर्तन में कुछ सब्जियाँ, एक लोहे का भगौना, कुछ

तश्तरियाँ प्याले और चम्मच रखे हुए थे। अन्दर की दीवार से लगी खाली जगह में टोकरियों और अखरोट से भरे झाबे रखे हुए थे, जो उसे फसल की रखवाली करने की एवज में कन्जूस किसानों ने दिये थे। पीछे की दीवार में कांग के पीछे दरवाजे की ओर को और कांग की ऊँचाई पर ही एक बड़ा आला बना हुआ था, जिसमें आधी चटाई बिछ सकती थी। इस प्रकार घुसने पर एक कोना तो परचून की दूकान सा दिखाई देता और दूसरा गाँव के चायघर जैसा। और बीच में एक खाली आला था जैसे गौतम बुद्ध की मूर्ति स्थापन के लिए बना हुआ हो।

सरदियों में शाम को ली यू-त्साई एक गरम अलाव की तरह ही लोगों को प्रिय लगता। उस के घर वापस लौटते ही आस-पास के जिन्दादिल नौजवान अपना मनोरंजन करने के लिए उसकी गुफ़ा में जा जमते। वहाँ हँसी-मजाक से उत्साहित होकर वे एक-दूसरे से बढ़चढ़ कर गप्पें हाँकते।

इस साल पहले महीने की पच्चीस तारीख को ली यू-त्साई जब अपना खाना खतम कर के बैठा ही था कि उसके पड़ोस का एक नौजवान 'नन्हा फू' अपने चचेरे भाई को लेकर दाखिल हुआ। चूंकि और भी मेहमान इकट्ठे हो चुके थे, इसलिए यू-त्साई ने दीवार पर ठंडा अलसी के तेल का लैम्प जला दिया। 'नन्हे फू' ने अपने चचेरे भाई की ओर मुड़कर कहा, "यह हैं हमारे—काका यू-त्साई।"

उन सब को कांग पर बैठने के लिए कह कर यू-त्साई खुद आले में पलथी मार कर बैठ गया। "ये मेहमान कहां से आया है?" उसने पूछा।

'नन्हे फू' ने उत्तर दिया, "यह पास के गाँव से आया मेरा चचेरा भाई है।"

अपने को मेहमान बताये जाने पर भाई ने विनयपूर्वक प्रतिवाद किया। "मुझे मेहमान तो नहीं समझना चाहिए। पिछली बार १६ तारीख को गाँव के नाट्यशाला में मैंने आपको इतना अच्छा गाते हुए

सुना था कि आज मैं कुछ जानने-बूझने की गरज़ से चला आया हूँ।"

यू-त्साई ने चुटकी लेते हुए पूछा, "इस बार तुम्हारे गांव में नये साल के मौके पर कोई गीत-नाट्य क्यों नहीं खेला गया ?"

'नन्हे फू' के चचेरे भाई ने उत्तर दिया, "हम रंगशाला का सामान किराये पर न ला सके, इसी लिए। लेकिन वैसे कल शाम को हमने गाने का आयोजन रखा है।"

अपने प्रिय विषय पर बातें करते-करते यू-त्साई का उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता गया। बिना कोई भूमिका बाँधे वह निस्संकोच अपने विचार प्रकट करने लगा। अपने पाइप की लम्बी नली को गुँथे हुए चाबुक की तरह उठाते हुए (जो चीनी नाटकों में घोड़े का प्रतीक होता है) उसने अपने स्थान से बिना हिले-डुले केवल शरीर के ऊपरी भाग की चेष्टाओं द्वारा घोड़े पर चढ़ने और उतरने का अभिनय किया। साथ ही साथ वह मुंह से आर्केस्ट्रा के घड़ियाल की आवाज़ भी करता जाता था। 'ठंग-ठंग-तिंग-तिंग-ठंग-तिंग-तिंग-ठंग।'

वह इसी धुन में था कि अचानक दरवाज़ा खुला और उसका एक और पड़ौसी, नन्हा शुन हाथ में ढेर सा मकई का हलवा लिए दाखिल हुआ।

"काका, ज़रा रुको तो, कहीं अपना घड़ियाल फोड़ न बैठो," उसने अपनी भेंट देने के लिए आले की ओर बाँह बढ़ाकर कहा जहाँ ली यू-त्साई बैठा था। "काका, मेरे बापू ने यह हलवा भेजा है। ज़रा चखकर देखो !"

इस पच्चीस तारीख़ को उस इलाके में 'कोठे भरने का त्यौहार' मनाया जाता है और इस मौके पर पीली मकई का विशेष ढंग से हलवा तैयार किया जाता है।

यू-त्साई ने हलवा लेते हुए नम्रतापूर्वक कहा, "इसे तुम अपने लिए ही क्यों न रखो ? इस साल कोई भी अधिक हलवा नहीं बना पाया है।"

सब के आगे हलवा पेश करने और सब के मना कर देने के बाद वह उसे खाने लगा।

इस बीच 'नन्हा' शुन पांव चढ़ा कर कांग पर जा बैठा था जहां और लोग पहले से मौजूद थे। "माना कि हम ज्यादा हलवा नहीं बना पाए तो भी हम लोग ची-चांग की बीवी की तरह तो नहीं हो सकते।"—उसने टिप्पणी की, "हालांकि 'नन्हा' तान उनके यहाँ इतने दिनों से मजदूरी कर रहा है, लेकिन फिर भी उन्होंने उसे हलवे के सिर्फ़ दो छोटे-छोटे टुकड़े ही दिए।"

'नन्हे फू' ने ताना मार कर कहा, "अगर तुम अपने काम के लिए मजदूर नहीं रख सकते हो, मत रखो! लेकिन अगर किसी को नौकर रखने की हैसियत तुम्हारी है तो वह कौन सी बात है कि तुम उसे खाना नहीं दे सकते?" "ची-चिंग उतना बुरा आदमी नहीं है। यह तो सिर्फ़ उसकी बीवी है, जो—।" यू-त्साई की यह राय थी।

"यह नन्हा तान कौन है?" नन्हें फू के भाई ने पूछा, "तुम्हारा मतलब उससे तो नहीं, जिसने नाटक में हिस्सा लिया था?"

"हाँ हाँ, वही।" नन्हें फू ने उत्तर दिया। वह बूढ़े ते-क्यूई का बेटा है और अब स्थायी तौर से ची-चांग के यहाँ नौकर हो गया है।"

"वह अपने बाप से जो हजार गुना अच्छा है!" नन्हें शुन ने जोर देकर कहा।

"इसमें तो कोई सन्देह नहीं,"यू-त्साई ने हामी भरी।

नन्हें फू येन-चियाशान गाँव के सभी लोगों से परिचित न था, इसलिए उसने अपने भाई से पूछा, "क्यों भला, बूढ़ा ते-क्यूई कैसा आदमी है।"

यद्यपि उसने बहुत धीरे से पूछा था, फिर भी नन्हें शुन ने उसकी बात सुन ली और वह तुरन्त आगे बढ़कर उसकी जिज्ञासा शान्त करने को तत्पर हो गया। "उसके बारे में एक गीत है। सुनिए:"

'चांग ती-कुई यों तो है बड़ा भलामानस
सिर उसका है बूढ़े हेंग-युग्रान की कढ़ाई में बस
कहता हेंग-युग्रान, "अरे दिन है लम्बा आज।"
"कसम खुदा की ! नहीं है छोटा," ती-कुई तुरत मिलाता राग।
कहता हेंग-युग्रान, "यह तख्ती है चौकोर।"
"ले लो क़सम किसी की मुझसे, बिलकुल नहीं यह गोल।"
कहता हेंग-युग्रान, "यही है वह इमामदस्ता
लहसुन कुटवाने को लाया जिसे मैं सस्ता।"
"मिट्टी का होने पर भी है यह कितना मजबूत,
लोहे की छड़ से पीटो तो भी नहीं सकेगा टूट"
कहता हेंग-युग्रान, "अजब है पर यह सच्ची बात
मुर्गे भी देते अण्डे, संख्या हो चाहे अज्ञात।"
"खुद अपनी आँखों से देखा है मैंने यह सरकार !
मिलाता हाँ मैं हां ती-कुई, बन कर अति हुशियार।
हेंग-युग्रान तो करता रहता दिनभर ऐसी ही बकवास
चुहिया-सा ती-कुई बेचारा खो देता अपने होशहवास।"

दूसरों ने यह तुकबन्दी पहले से सुन रखी थी, सो वे तो अधिक नहीं हँसे। लेकिन नन्हें फू का चचेरा भाई इसे सुन कर लोट-पोट हो गया।

उसे इतना प्रसन्न देखकर नन्हें शुन ने कहा, "इसमें हँसने की कोई बात ही नहीं। ती-कुई के बारे में तो इससे कहीं अधिक दिलचस्प बातें तुम्हें सुनने को मिलेंगी। वह हमारे गाँव का चपटी रोटी वाला प्रसिद्ध कान-पू[1] है।"

"अच्छा वह कान-पू है, सच ?" नन्हे फू के चचेरे भाई ने पूछा।

"वह किसान सहायक-समिति का चेयरमेन है। पूरा अफ़सर है !

[1]. कान-पू—साम्यवादी एक अफ़सर को कान-पू कहकर पुकारते हैं।

"लेकिन उसे 'चपटी रोटी वाला कान-पू' पुकारने का क्या मतलब है ?"

नन्हे शुन ने धैर्य्यपूर्वक समझाया, "हमारा गाँव और गाँवों से भिन्न है। जिसे भी सरकारी दफ़्तर से कोई काम निकलवाना होता है, उसे एक दर्जन आटे की कट्टियां तथा पांच सूअर के गोश्त की कट्टियां दफ्तर वालों को भेंट करनी पड़ती हैं। हर अफ़सर लोगों से काम की बात करने से पहले एक चपटी रोटी और गोश्त से लबालब एक कटोरा और सब्जियों की मांग करता है। और ती-कुई तो ऐसा है जो सारा माल खुद हड़प लेता है। कम्बख़्त की नज़र हमेशा बढ़िया चीज़ पर ही पड़ती है!"

"लेकिन अफ़सरों को खाने का सामान और शराब की रिश्वत देने का रिवाज़ तो हमारे गाँव में दो साल पहले कम्युनिस्टों का राज आते ही खत्म हो गया," नन्हे फू के चचेरे भाई ने प्रतिवाद करते हुए कहा।

'हाँ और किसी गाँव में यह रिवाज बाकी नहीं रहा," नन्हे शुन ने स्वीकार किया। "लेकिन हमारा गाँव कुछ विचित्र ही है। इसकी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ बूढ़े हेंग-युआन पर है, यह उसी के दिमाग की उपज है। अगर वह मर जाय तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि फिर किसी की हिम्मत इस तरह दावतें उड़ाने की नहीं होगी।"

अभी वे बातें कर ही रहे थे कि लोगों का एक झुंड का झुंड आगया। उनमें बूढ़ा चिन (नन्हे फू का बाप), नन्हा युआन, नन्हा मिंग और नन्हा पाओ आदि थे।

नन्हा युआन सबसे पहले उस बड़ी घटना का समाचार सुनाने का श्रेय लेना चाहता था। "एक बहुत बड़ी घटना हो गई है—बहुत बड़ी घटना!" उसने चिल्ला कर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

"क्या हुआ ? क्या हुआ ?" ली यू-त्साई ने उत्सुकता से पूछा।

नन्हे युआन के मुँह से अभी बात निकलने भी न पाई थी कि नन्हे

मिंग ने चिल्ला कर कहा, "भैय्या यू-त्साई—बड़ी भारी ख़बर है ! सी-फ़ू को बरख़ास्त कर दिया गया !"

नन्हा शुन ंग से नीचे कूद कर नाचने लगा। सब लोगों को यह जानकर खुशी हुई कि गाँव का बदनाम मुखिया, जो हेंग-युग्रान के हाथ की कठपुतली था, अपनी नौकरी से हटा दिया गया। "इस घटना की खुशी में हम तीन दिन तक गीतिनाट्य खेल कर उत्सव मनायेंगे।"

"मैं भी हिस्सा लूँगा ! नन्हा फ़ू चिल्लाया।

"मैंने सपने में भी न सोचा था कि यह दिन देखने को मिलेगा," यू-त्साई ने कहा। "मेरा ख्याल था कि उसका भात का प्याला ईस्पात का बना है। लेकिन तुमसे किसने कहा ?"

"यह बात सोलहो आने सही है !" नन्हे युग्रान ने विश्वास दिलाया। जिला-सरकार की ओर से दफ़्तर का बाबू चाँग उसकी बर्ख़ास्तगी का काग़ज लेकर आया था।"

नन्हे फ़ू का चचेरा भाई इन सब लोगों के उल्लास का दृश्य किंचित विस्मय के साथ देखता रहा था। अब उसने पूछा, "आप लोग सी-फ़ू से इतनी सख्त नफ़रत क्यों करते हैं ?"

"इसकी एक कहानी है," नन्हें शुन ने कहा। "मैं उसे गीत में सुनाऊँगा :"

येन सी-फ़ू, हमारे गांव का मुखिया
है भयानक चीता जानें सब दुखिया
खाने-पीने की उसके घर रहती है भरमार
उसने यह सब पाया कैसे ? सुनलो हो हुशियार
रहा सिपाही पर अफीम का करता था व्यापार
और मवेशी-चोरों का था वह एक बड़ा सरदार
चोरी, जूआ औ' बदमाशी से चलती उसकी रही कमाई
दे दे रिश्वत उसक भारी चोरों ने अपनी जान बचाई
कमीशन वसूल करने को उसके खुजलाते रहते हाथ

बिना दर्द के बेच डालता विधवाएँ कोमल गात
बुरे से बुरा काम है उसके बायें हाथ का खेल
बच के रहना उससे, वरना उसका वार नहीं सकोगे झेल
भूले से भी राह में उसकी तुम रोड़ा बनकर मत आना
नहीं तो जो कर बैठे सो थोड़ा, है वह बड़ा सयाना !
"अब जान गये, हम उससे क्यों नफ़रत करते हैं ?"

"लेकिन यह सब काम तो उसने बहुत पहले किये थे," नन्हे मिंग ने तैश में आकर कहा। "तुम दूसरे गाँव में रहते हो, भला तुम्हें क्या मालूम कि यहाँ क्या गुजरती रही है। लड़ाई छिड़ने के बाद इस शैतान ने गड़बड़ी और अव्यवस्था का फ़ायदा उठाकर अपने को गाँव का मुखिया चुनवा लिया। इससे वह और भी बिगड़ गया, खासकर इसलिए कि उसकी पीठ पर बूढ़े हेंग युआन का हाथ था, जो इतनी उमर का हो जाने पर भी मरने का नाम नहीं लेता। उसे दुनिया के सब हथकण्डे आते हैं। छोटी-से-छोटी बात का भी फैसला कराने के लिए लोगों को गाँव के दफ़्तर में जाने के लिए विवश होना पड़ा। वहाँ पर सी-फू एक मेहमान की तरह मेज पर बैठा रहता और उसकी जेब में रिश्वतों के सिक्के भरते जाते। किसी को भी गिरफ़्तार कर लेना या पिटवा देना उसके लिए मामूली बात थी। बिना किसी बात के लोगों की जिन्दगियाँ तबाह करदी जाती थीं। इन पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे रहने वाला अगर कभी गांव के दफ़्तर में जाता था तो हमें बाहर खड़े रहकर ठंड में ठिठुरना पड़ता था। हमें उसकी मेज़ तक जाने का कभी साहस न होता। लेकिन जब टैक्स लगाये जाते तो अदा हमें ही करने पड़ते। और हममें से इतनी मजाल किसकी थी जो पूछता कि यह टैक्स किस बात के लिये लगाये गये हैं ? अगर आपका नाम येन है तो साल में चाहे जितना पब्लिक वर्क्स का काम होता रहे, आपको बेगार के लिए एक दिन भी न बुलाया जायगा। बेगार और सरकारी मजदूरी करने का सारा भार तो हम ग़रीबों के सिर ही पड़ता था जो यहाँ टिड्डी वृक्षों के नीचे रहते हैं। इससे हमारे

अपने खेत वीरान होते गये, क्योंकि हमें उनकी देख-भाल का मौका ही न मिलता। तुम्हें इन सब भेदों का कुछ पता नहीं। वह आदमी सड़े अंडे से भी बदतर है, हां सड़े अंडे से भी।"

"लेकिन उसे नौकरी से निकालने की क्या वजह थी?" यू-त्साई ने सतर्क स्वर से पूछा।

"हमें कुछ नहीं मालूम," नन्हे पाओ ने उत्तर दिया। "शायद जिले की सरकार को उसकी करतूतों का पता चल गया है।"

"सिर्फ मुखिया की नौकरी छूटने से ही उसे विशेष दुख नहीं होगा। वह तब भी सारे गांव को सर पर उठाये रखेगा। हमें तो चैन तभी मिलेगी अगर वह झाग की तरह बैठ जाये। क्या सरकार उसको पकड़ने वाली है?"

नन्हे पाओ ने कहा, "अनेकों लोग इस इन्तज़ार में हैं कि उसकी ताक़त कम होते ही उस पर धावा बोला जाये।"

इस बातचीत के बीच दूर से किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। पास आने पर पता चला कि कोई आदमी ऊँचे स्वर से मुनादी कर रहा है।

"कल गांव के मन्दिर में मुखिया का चुनाव करने के लिये सब लोग हाजिर हों। अठारह साल से ऊपर के सभी लोग आयें।"

वह आदमी बड़ी देर तक ज़ोर-ज़ोर से मुनादी करता रहा।

नन्हे फू ने सब से पहले वह आवाज़ पहचानी। "यह तो ती-कुई है! तुम उसकी क्षीण आवाज़ नहीं पहचान पाये?"

तब तक मुनादी करने वाला भी मानो यह सिद्ध करने के लिए कि वह ती-कुई ही है, और कोई नहीं, गुफ़ा में दाखिल हो गया।

उस महफ़िल का मेज़मान होने के कारण सिर्फ़ यू-त्साई ने ही सिर हिलाकर उसका स्वागत किया। नन्हे फू और नन्हे शुन ने मुँह बिचकाकर आपस में इशारा किया।

ती-कुई ने घोषणा की, "यहाँ तो बड़ी भीड़ जमा है! चलो, मुझे दर-

दर की खाक छानने से छुट्टी मिली। कल गाँव के मुखिया का चुनाव होगा। अठारह साल से ज्यादा उमर वाले सभी लोग बुलाये गये हैं।" फिर अपनी आवाज़ धीमी करके उसने किंचित चालाकी भरे ढंग से कहा, "बूढ़े मुखिया का ख्याल है कि क्वांग-चू को चुना जाना चाहिए। आपको अगर कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसे इस बात का पता न हो तो मेहरबानी करके उसे बता दें।"

यह कहकर वह बाहर चला गया।

उसके जाने पर द्वार बन्द होते ही नन्हा शुन ने चिल्लाकर फ़ब्ती कसी, "यह कम्बख़्त भी चपटी रोटी खाने चला है।"

"रोटी न इसे मिलेगा ठेंगा, करले चाहे जितनी दौड़-धूप !" नन्हा युआन चिल्लाया। "ज़िले के दफ़्तर का कर्मचारी चांग अभी यहीं है। उसे इस बार एक चपटी रोटी न मिलेगी !"

बूढ़ा चिन ने, जो अब तक चुप बैठा सुन रहा था, सतर्क भाव से कहा, "ज़रा ध्यान रखो, वह कहीं सुन ले तो !"

"सुन ले, यहाँ किसे इसकी परवाह है ?" नन्हे युआन ने उद्धत-भाव से उत्तर दिया। "मैं तो चाहता हूँ कि वह भी सुन ले।"

"अब इसने भी सरकारी भाषा का लहजा सीख लिया," नन्हे पाओ ने चुटकी लेते हुए कहा, "अठारह साल से अधिक उमर वाले सभी लोग…"

"और बूढ़े मुखिया का ख्याल है कि……" नन्हे शुन ने जड़ दिया।

"तो अब नक़ली डॉलर असली डॉलर बनने वाला है," नन्हे फू ने टिप्पणी की।

"नक़ली डालर कौन है ?" नन्हे फू के चचेरे भाई ने पूछा।

नन्हे शुन की स्मरणशक्ति अच्छी थी, उसने झट से एक और तुक-बन्दी सुनाई—

"अरे ओ ल्यू-कुआंग-चू, कौन नहीं जानता यह बात
तुम ढोंगी हो ऐड़ी से चोटी तक, बगुले की है तेरी ज़ात

सोचते हो जब, कि तुम्हारी बात में है सत्य की गूँज
तब मुँह बिचका कर हम केवल कह देते आहा ! ऊँह
हेंग युआन के आगे तुम रहते घुटना टेक, यही तुम्हारा खेल
जैसे किसी बड़े पेड़ से लिपटी हो सिरपेंचे की बेल
है तुमने उसको खूब बनाया अपना धर्म का बाप
आड़े वक्त वह तुम्हें बचाता और छिपा लेता सब पाप
चाह रहे हो अब तुम बन जाओ उसके भी बाप
कौन बाप और कौन है बेटा, क्या ह गी फिर इसकी माप
देख के खाली पद सरकारी तुम भर लाते मुँह में पानी
पर किसे है इस ऐंठूपन की परवाह, सोच तो रे अज्ञानी
उत्तर से लेकर दक्खिन तक और पूरब से पश्चिम हरदम
कटाक्ष तुम्हारे चलते रहते यही तुम्हारा परिचय कम से कम

लेकिन यह सुनकर नन्हे फू का चचेरा भाई इतना हैरत में आ गया था कि हँसना भी भूल गया। "तुम्हारे गाँव में इतने गीत कहाँ से आये ?" उसने पूछा।

"गाँव के पश्चिमी भाग में एक भी ऐसा दो पाँवों पर चलने वाला जीव नहीं जिसके बारे में हमारे यहाँ गीत न हो," नन्हे शुन ने कहा। "यहाँ तक कि चेचक-मुँह औरत के बारे में भी गीत है। गाँव में कोई भी नई बात हुई कि उसके बारे में गीत रच डाला जाता है।" ली यू-त्साई की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "इन काका से जितने चाहो गीत बनवा सकते हो।"

ऐसा मालूम होता था कि नन्हा यूआन कुछ सोच में निमग्न था क्योंकि उसने अब सुझाया, "'बूढ़े मुखिया का यह विचार है'—इस बात पर हमें ध्यान ही नहीं देना चाहिए। आओ, कल हम लोग किसी और को मुखिया चुनकर इन लोगों का मुँह काला कर दें। क्वांग-चू को छोड़ो।"

लेकिन बूढ़े चिन ने प्रतिवाद किया, "इससे काम न चलेगा। यहाँ

टिड्डी वृक्षों के नीचे रहने वालों में क्या एक भी ऐसा है जो हेंग-युआन को नाराज़ करने की जुर्रत कर सके ? अगर उसका कहना है कि क्वाँग-चू को चुनना चाहिए, तो फिर उसी को चुनना ठीक होगा। जल में रहकर मगर से बैर करना अच्छा नहीं होता।"

"तुम तो किसी के आगे सर उठाके खड़े होने की हिम्मत नहीं कर सकते, और उस पर सठिया गये हो !" नन्हे युआन ने अपना धैर्य खोकर कहा। तुम्हारे सिर पर यदि बाँस की एक पत्ती भी गिर पड़े तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम डर के मारे यही सोचोगे कि तुम्हारा सिर कट कर बस अब गिरने ही वाला । और फिर किसी से बैर बाँधने से डर किस बात का ? क्या चाहते हो कि हम लोग टैक्स देते जायें और क़यामत तक सरकार की बेगार करते रहें।"

बूढ़ा चिन चुप रहकर कुढ़ता रहा। उसकी आदत थी कि जब कोई नई पीढ़ी का नौजवान उसकी बात का विरोध करता तो वह चुप्पी साध कर अपने अन्दर ही सिमट-सिकुड़ जाता।

लेकिन उससे सहमत न होने वालों की संख्या अधिक थी क्योंकि नन्हे पाओ ने भी नन्हे युआन का समर्थन किया, "तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। अब वक्त आ गया है कि हम इन सबका मुंह काला करके अलग कर दें। क्वांग-चू अगर मुखिया बन गया तो हम तो फिर भी हेंग-युआन की ही मुट्ठी में क़ैद रहेंगे। क्यों न हम अपने लोगों में से किसी को चुन लें ? माना कि हम लोगों में बहुत योग्य व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन फिर भी लगातार उनके जूतों के नीचे रौंदे जाते रहने से तो यह अच्छा ही होगा।"

सब लोग नन्हें पाओ से सहमत थे लेकिन किसे चुना जाय, यह तै करना मुश्किल था। नन्हा युआन की राय नन्हे पाओ के पक्ष में थी। लेकिन औरों का ख्याल था कि नन्हे मिंग को ज्यादा वोट मिलेंगे, जब कि नन्हे मिंग ने घोषणा की कि नन्हा युआन ज्यादा अच्छा रहेगा क्योंकि उसे सभाओं में धारा-प्रवाह बोलने का अभ्यास है।"

क्या करना चाहिए, इस बारे में ली यू-त्साई ने अन्त में अपना निर्णय दिया। "मेरी राय यह है, बिल्कुल निष्पक्ष और सोलहो आने ठीक !" उसने घोषणा की। "इसमें कोई सन्देह नहीं कि वोट तो नन्हे मिंग को ही सबसे ज़्यादा मिलेंगे, लेकिन इस काम के लिए वह बहुत सीधा आदमी है। वह जरूरत से ज़्यादा भला मानस और ईमानदार है। मुझे डर है कि बूढ़े हेंग-युआन और उसके गुट के लोगों की सारी तिकड़मों और चालबाज़ियों को भाँपते रहना इसके बस का काम नहीं। लेकिन नन्हा पाओ भेड़ें चराता हुआ अनेक जगहों की ख़ाक छान आया है—हम उसे 'भेड़ों का होशियार मैनेजर' कहकर पुकारते हैं, इसके अलावा उसे लिखना-पढ़ना और हिसाब-किताब भी आता है। लेकिन उसके परिवार में पाँच-छः प्राणी हैं जो कुछ उस पर ही निर्भर करते हैं। इसलिए मेरा प्रस्ताव यह है कि नन्हे युआन को तो चुन लिया जाय, लेकिन हिसाब रखने और लिखने लिखाने के काम में उसे मदद करने के लिए नन्हे पाओ को उसका सहायक बनाया जाय।"

सभी लोग यू-त्साई के प्रस्ताव से सहमत थे।

अपने मुख्य सहायक के पद को जैसे अभी से संभालते हुए नन्हे पाओ ने तुरन्त गंभीरतापूर्वक प्रस्ताव किया, "तो अगर हम लोगों ने यह फ़ैसला पक्का कर लिया है तो हमें फ़ौरन चलकर नन्हे युआन के लिए वोट जुटाने चाहिएँ।"

इससे सहमत होते हुए नन्हे शुन ने कहा, "तुम ठीक कहते हो। हम अभी इस ख़बर को फैला देंगे।"

बोलते-बोलते वे सब उठकर द्वार की ओर बढ़े।

नन्हा फू भी उनके पीछे हो लिया। यह देख बूढ़ा चिन परेशान हो गया, "तुम कहाँ चल दिये ?" उसने चिल्लाकर अपने बेटे को डाँटा। "चलो, वापस लौटो ?"

लेकिन नन्हे शुन ने नन्हे फू को बाँह पकड़ कर आगे खींच लिया, "आओ ! आओ !" उसने आग्रह किया। द्वार से बाहर निकलते-निकलते

उसने बूढ़े चिन से कहा, "नन्हे फू का ज़िम्मा मेरे ऊपर है। अगर कहीं खो जाय तो मुझसे आकर-पूछले !" और वे ख़रगोशों की तरह कुदक कर बाहर निकल गये।

बूढ़ा चिन उन्हें पुकारता ही रह गया, लेकिन वे कोने से मुड़कर ग़ायब हो चुके थे, और वह पड़ौस के गाँव से आये हुए अपने भतीजे के साथ अकेला खड़ा ताकता रह गया। उसे लेकर सोने के लिए वह अपने घर चल दिया।

उन सब के चले जाने के बाद गुफ़ा में शान्ति छा गई। यू-त्साई अकेला रह गया। वह उठकर अपने काँग पर जा लेटा और कुछ ही देर में वह निद्रा की सुखद गोद में ख़ुर्राटे भरने लगा।

(तीसरा)

चीते का शिकार

अगले दिन नाश्ते के बाद ली यू-त्साई अपने बैल की रस्सी थामे हुए पहाड़ी की चरागाह की ओर जा रहा था, कि रास्ते में नन्हें शुन से मुलाक़ात हो गई। "काका, तुम कहीं मत जाओ। हर वोट क़ीमती है। आज ही सब फैसला हो जायेगा, हमने नन्हें युआन के लिये पहले से ही चालीस वोटें जमा कर रखी हैं।"

ली यू-त्साई ने जवाब दिया, "मैं मीटिंग में हाज़िर रहूँगा। इस समय तो ज़रा बैल को ठँडे चश्मे तक ले जा रहा हूँ, थोड़ी देर में ही लौट आऊँगा। आजकल खेत में फ़सलें न होने से कुछ फुर्सत है। सोचता हूँ कि बैल को तन्दुरुस्त कर लूँ। इसके अलावा जिला सरकार के सदस्य चाँग को उद्घाटन की स्पीच झाड़ने में भी काफ़ी समय लगेगा। मैं उसका भाषण समाप्त होने से पहले ही लौट आऊँगा।"

नन्हे शुन ने चेतावनी देते हुए कहा, "यह मीटिंग चुनाव के लिए हो रही है, लैक्चरबाज़ी के लिए नहीं।"

"मैं जानता हूँ," यू-त्साई ने उसे विश्वास दिलाया। "लेकिन चाहे कैसी भी मीटिंग हो, वह हमेशा अपना भाषण, "आज की ज़रूरी बातें," तथा "विचारणीय प्रश्न क्या है ?" से शुरू करता है। मैं यह सब ख़त्म होते ही पहुँच जाऊँगा।"

"अच्छी बात है, जाओ।" नन्हें चुन ने राज़ी होकर कहा। "लेकिन देखना, कहीं पूरी की पूरी मीटिंग से ही ग़ायब मत रहना।" फिर वह गाँव के मन्दिर की ओर चल दिया।

वहां विधि-पूर्वक मीटिंग चल रही थी। ज़िला सरकार का सदस्य चाँग और कान-पू बड़े कमरे में बैठे थे और किसान जनता आँगन में खड़ी थी। साधारण मीटिंगों से इसमें फ़रक सिर्फ़ इतना था कि आज भीड़ बहुत ज़्यादा थी। लोग उत्सुक थे कि देखें पुराना मुखिया सी-फ़ू आज अपनी नाक ऊँची रख सकेगा या नहीं।

वह पहली पंक्ति की आख़िरी कुर्सी पर बैठा था। वह अपनी पुरानी ठसक क़ायम रखने की कोशिश तो बहुत कर रहा था लेकिन जब वह बोलने के लिए खड़ा हुआ तो उसकी आवाज़ भर्राई हुई थी। कुछ मीठे-मीठे विनम्र शब्द कह कर उसने ज़िला सरकार के सदस्य चाँग से बोलने का आग्रह किया।

आशा के विपरीत चांग ने बहुत घुमाव-फिराव से बातें नहीं कहीं और न वह 'आज की ज़रूरी बातें' तथा 'विचारणीय प्रश्न क्या हैं,' की व्याख्या करने पर तुल गया, बल्कि उसने सीधे काम-धाम की बातें शुरू कर दीं। "गाँव के मुखिया ने कुछ ग़लतियाँ की हैं," वह बोला, "इसलिए हमें आदेश मिला है कि नया चुनाव होना चाहिए। लेकिन चुनाव होने से पहले यह ज़रूरी है कि अगर किसी को रिटायर होने वाले मुखिया के खिलाफ़ कोई शिकायत हो तो निसंकोच कहें।"

गाँव वालों को यों तो सी-फ़ू के ख़िलाफ़ हज़ारों शिकायतें थीं, लेकिन इस अकस्मात चुनौती के लिए वे तैयार न थे। साथ ही वे उसकी पीठ पर हाथ रखने वाले बूढ़े हेंग-युआन से भी डरते थे। उनका जमींदार

होने के कारण उनकी गर्दन उसके पंजे में फँसी हुई थी। वे सी-फू को अपना दुश्मन भी न बनाना चाहते थे। कौन जाने किस समय मौका पाकर वह उन्हें पीस डाले। इसलिए चुनौती स्वीकार करने का तुरन्त किसी को साहस न हुआ। आँगन में खड़े लोग छोटे-छोटे झुंड बनाकर आपस में कानाफूसी तो कर रहे थे, लेकिन आगे बढ़कर बोलने की जुर्रत किसी को न हुई।

कुछ लोग धीमे स्वर में ताकि उनकी आवाज़ कमरे में पड़ी कुर्सियों तक न पहुँच जाय, सतर्कता से प्रस्ताव कर रहे थे, "उसे नीचे गिराने का यह मौका भी अगर हमने खो दिया तो वह सारे गांव को नंगा नाच नचायेगा।"

दूसरों ने चुपके से सुझाया, "इसको अभी खत्म कर दो तो अच्छा हो। तुम तो जानते ही हो कि अगर चीते को पहाड़ पर आजाद घूमने की छूट दे दो तो वह खूब मनमानी करता है।"

वे सब गुपचुप दलीलें तो खूब बढ़-बढ़कर दे रहे थे, लेकिन आगे आने को कोई तैयार न था।

लेकिन वहाँ एक मा फेंग-मिन्ग था जो कभी अन्हवी में चाय का व्यापार करता था। वह चाँग चिग-चाँग का चचेरा भाई था और येन-चियाशान में आकर बस गया था। चूँकि उसने घूम-फिर कर दुनिया देखी थी, इसलिए उसकी झिझक खुल गई थी और वह गाँव वालों की तरह भीरु प्रकृति का भी न था। मुखिया होने के पहले ही साल में सी-फू ने और गाँव वालों पर अत्याचार करने के साथ-साथ मा को भी काफ़ी तंग किया था। मा उस समय तो दब गया था, लेकिन अब उसे लगा कि बदला लेने का यह अच्छा मौका है।

अपने पड़ोसियों से उसने कहा, "मेरे बाद अगर तुम भी बोलो तो पहली गोली दाग़ने में मुझे कोई हिचक नहीं होगी।"

उसका प्रस्ताव सुनकर नन्हे युआन का उत्साह उमड़ पड़ा। "चलो,

आगे बढ़ो। अगर तुम शुरूआत कर दो तो मैं तुम्हारे बाद बोलूँगा। फिर तो सभी बोल पड़ेंगे।"

लेकिन आपस में ही बहस करते हुए उन्हें इतना समय लग गया कि ज़िला सरकार के सदस्य चाँग ने तंग आकर उतावलेपन से कहा, "तुम लोगों को कुछ कहना है? मैं सिर्फ़ एक मिनट तक और इन्तज़ार करूँगा।"

इस पर मा फेंग-मिंग उठ कर खड़ा हो गया, "मुझे एक शिकायत करनी है। मेरे खेत से लगा हुआ ही येन-ब्रू परिवार का कब्रिस्तान है। क़ब्रों के ऊपर कँटीली झाड़ियाँ और जंगली बेलें उग आयी हैं, जो आगे बढ़कर मेरे खेतों में भी फैल गई हैं। मेरे आधे खेतों में ये कँटीली झाड़ियाँ छा गई हैं। जिससे उनमें नाज पैदा करना असम्भव हो गया है। पिछले साल से पहले की सरदियों में मैंने उन झाड़ियों को काट कर साफ़ करने की कोशिश की तो येन-ब्रू ने गाँव के दफ़्तर में मेरे ख़िलाफ़ रिपोर्ट कर दी। इसका नतीजा यह निकला कि गाँव के मुखिया ये सी-फू ने मुझे आज्ञा दी कि येन-ब्रू के जिन पूर्वजों की शान्ति मैंने भंग कर दी है उनके क्रोध को शान्त करने के लिए मुझे एक सूअर की बलि चढ़ानी चाहिए। येन खान्दान के सभी लोगों से माफ़ी माँगने के लिए मुझे दो सौ केटी आटा देकर उन्हें दावत भी खिलानी पड़ी। इन सबके बावजूद मेरे ऊपर पाँच सौ डॉलर ज़ुर्माना किया गया और अपने खेतों में से कँटीली झाड़ियों और जंगली बेलों को कभी न काटने का हुक्म भी दिया गया। वह सूअर और आटा येन खान्दान के लोग खाकर हज़म कर गये। मैं इसकी कोई कीमत वापस नहीं चाहता, लेकिन यह बात उचित नहीं लगती कि मेरे खेतों में सदा के लिए कंटीली झाड़ियाँ फैली रहें। अब चूँकि गाँव का मुखिया बदला जा रहा है इसलिए मेरी प्रार्थना है कि पुराने मुखिया का हुक्म रद्द कर दिया जाए।"

जब यह कहानी सुनाई जा रही थी, ज़िला सरकार का सदस्य बैठा-

बैठा आश्चर्य से चकित हो रहा था। अब उसने पूछा, "क्या सचमुच ऐसी बात हुई थी ?"

सिर्फ़ येन ख़ान्दान के लोग ही चुप रहे नहीं तो बाक़ी सब लोगों ने एक स्वर से चिल्लाकर कहा, "हाँ, यह सच है।"

इस समय तक ली यू-त्साई भी आ गया था और उसने जान-बूझकर ख़ूब ज़ोर से चिल्ला कर कहा, "इससे कहीं ज्यादा बुरी बातें यहाँ हो चुकी हैं।"

अब नन्हे युआन की बारी थी और कूदकर खड़ा होते हुए वह ज़ोर से बोला, "मुझे भी एक शिकायत करनी है !"

एक बार हिम्मत खुलने की देर थी कि शिकायतों का ताँता बँध गया। धीरे-धीरे सी-फू के काले कारनामों की सूची लम्बी होती गई। उसने लोगों से कितने सिक्के वसूल किये, दावतों के लिये क्या-क्या लिया, कितनों को बेक़सूर पिटवाया, कितनों से बेगार ली—

जो-जो बेजा काम सी-फू ने किये थे वे सब लोगों की आँखों के सामने आ गये। लेकिन इन बातों के पीछे बूढ़े हेंग युआन का हाथ रहता था, इसका ज़िक्र तक करने का किसी को साहस न हुआ।

दोपहर होते-होते शायद सभी शिकायतें पेश की जा चुकी थीं। ज़िला सरकार का सदस्य चाँग क्रोध से तमतमा रहा था, विशेषकर इस लिए भी कि उसने कभी अनुमान भी न किया था कि गाँव में ऐसी-ऐसी बातें भी होती हैं। वैसे वह इस गाँव में कुछ दिनों से कामधाम के सिलसिलें में अक्सर आता रहता था। प्रान्तीय सरकार के सामने वह बार-बार यही डींग मारता आया था कि येन चियाशान तो एक आदर्श गाँव है।

जब क्रोध के मारे वह अपने ऊपर काबू रखने में असमर्थ हो गया तो चीख कर बोला, "अच्छा मुखिया था यह ! इसके हाथ-पाँव बाँध दो !"

इस आदेश का पालन करने के लिए तुरन्त बीसियों हाथ तत्पर हो गये, और रस्सियों में बँधा येन सी-फू पीठ के बल इस तरह पड़ा हुआ

था मानो कढ़ाई में पकाने के लिये खरगोश रखा हुआ हो।

खुशी से उन्मत्त लोगों ने पूछा, "इसका अब क्या करें?"

जिला सरकार के सदस्य चाँग ने उत्तर दिया, इसे निचले आँगन की छोटी कोठरी में बन्द करके दो आदमियों का पहरा बैठा दो। बाक़ी लोग खाना खाने जाओ। खाने के बाद हम नये मुखिया का चुनाव करेंगे। फिर मैं इसे लेजाकर प्रान्तीय सरकार के हवाले कर दूँगा।"

नन्हे शुन, नन्हे फू और दूसरे सात-आठ आदमियों ने वहाँ रुककर उस पर पहरा देने का बीड़ा उठाया। "खाने में देर होने से यह काम ज्यादा क़ीमती है," नन्हे शुन ने किलकारी मारकर कहा।

जिला सरकार के सदस्य चाँग ने यह सुझाव भी रखा कि मीटिंग में सी-फू के विरुद्ध जो-जो शिकायतें की गई थीं, कोई व्यक्ति उन सब की एक रिपोर्ट लिख डाले जिसे वह प्रान्तीय सरकार के पास ले जा सके। मा फेंग-मिंग और नन्हे पाओ ने इसका जिम्मा लिया। जब यह सब बातें तै हो गईं तब जिला सरकार के सदस्य चाँग ने मीटिंग को तत्काल के लिए स्थगित कर देने की घोषणा की।

सुबह की मीटिंग की कार्रवाही से हेंग-युआन और उसके आँख झपकाने वाले बेटे को जान के लाले पड़ रहे थे। सी-फू की काली करतूतों के पीछे उनका कितना हाथ था, इस बात का किसी ने भण्डा फोड़ न किया था, लेकिन उनकी जान साँसत में थी। हेंग-युआन इशारे से सी-फू को समझाना चाहता था कि प्रान्तीय सरकार की ओर से जब उससे प्रश्न किये जायें तो उसे अपना मुँह बन्द रखना चाहिए, लेकिन पहरेदारों के कारण वह अपने पापों के साझीदार मित्र के निकट भी न जा सकता था। तीसरे पहर तबियत खराब होने का बहाना करके बूढ़ा हेंग-युआन घर पर ही रह गया और सिर्फ़ चिया सियांग ही मीटिंग में शामिल हुआ।

जिला सरकार के सदस्य चाँग ने यह समझाते हुए कि चुनाव कैसे करना चाहिए मीटिंग शुरू की, "विधान के अनुसार तो सबसे पहले गाँव के प्रतिनिधि चुने जाने चाहिएँ, फिर ये प्रतिनिधि अपने में से एक को गाँव

का मुखिया चुनते हैं। लेकिन यह सब करने का समय आज हमारे पास नहीं है। इसलिए मेरा सुझाव है कि आप तीन नाम पेश कीजिए और फिर सिर्फ़ एक को वोट दीजिए। चूँकि यहाँ बहुत से लोगों को लिखना नहीं आता इससे वोट डालने का तरीका यह होना चाहिए : एक निर्जन कोने में तीन प्याले रख दिये जायेंगे जिनमें से हरेक पर एक-एक उम्मीदवार के नाम होंगे। आप लोगों में से हरेक को एक दाना दे दिया जायगा जिसको आप उस उम्मीदवार के प्याले में रख दें जिसे आप वोट देना चाहते हैं। मेरा सुझाव क्या आप सब को मंजूर है ?"

तालियों की गड़गड़ाहट से उसके भाषण का स्वागत किया गया।

सिर्फ़ येन चिया सियाँग के चेहरे पर मुर्दनी छा गई। उसने सोचा था कि गाँव का अध्यापक होने की वजह से शायद उसी को वोटें दर्ज करने को कहा जायगा और उसे अनपढ़ देहातियों के साथ धोखाधड़ी करने का मनमाना मौक़ा मिलेगा। लेकिन वोट डालने का तरीका बदल दिया गया था। उसे एक नई तरकीब सूझी। उसने अब भी ईमानदारी से मदद करने का ढोंग रचा और वोट डालने के तीन प्याले तैयार किये।

तीन उम्मीदवारों के नाम पेश किये गये—एक था ल्यू क्वाँग चू, जिसके लिये बूढ़े हेंग युआन ने खूब कोशिश की थी; दूसरा मा फेंग मिंग था, जिसका नाम उसके अनुभवी होने के कारण पेश किया गया था और तीसरा नन्हा युआन था जिसके पीछे एक संगठित दल था।

चिया सियांग ने तीनों उम्मीदवारों के नाम प्यालों पर चिपका दिये। एक लाल और दो काले। फिर लोगों की ओर मुड़कर उसने ऐलान किया, "ज़रा ध्यान से सुनिये ! ये तीनों प्याले मन्दिर के हॉल में रखे जायेंगे। उनका क्रम इस प्रकार होगा—दाँये से बाँये, पहला लाल रंग का प्याला ल्यू क्वाँग चू का, दूसरा प्याला मा फेंग मिंग का और तीसरा प्याला चेन सियाओ युआन (नन्हा युआन) का है।" उसने कई बार बड़ी चालाकी से इस ऐलान को दुहराया और फिर तीनों प्यालों को बड़े हॉल की वेदी पर रख दिया।

वोटरों की क़तारें दायीं ओर से आकर बायीं ओर से बाहर निकलने लगीं। हर वोटर अपनी पसन्द के उम्मीदवार के प्याले में अपना दाना डालता जाता था। नतीजा निकलने पर पता चला कि मा फेंग मिंग के पक्ष में ५२ वोट पड़े थे, ल्यू क्वाँग चू को ८८ और नन्हे युआन को ८६ वोट मिले थे।

चुनाव ख़त्म होने के बाद ज़िला सरकार के सदस्य चांग ने घोषणा की, "मैं अब प्रान्तीय सरकार के पास जा रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि सी-फू पर निगरानी रखने के लिए मेरे साथ दो आदमी और भेजे जायें।"

यह सुनते ही चिया सियाँग ने झट से दो आदमी जुटाने का ज़िम्मा लिया। लेकिन भीड़ में से कई आदमियों ने चिल्ला कर कहा, "इसके दिये आदमियों को मत लीजिए। हम आपके साथ जाने को तैयार हैं।"

एक दर्जन के क़रीब आदमी भीड़ में से निकल कर आगे आये। यह देखकर ज़िला सरकार के सदस्य चाँग ने उन्हें रोकते हुए कहा, "मुझे सिर्फ़ दो आदमी चाहिएँ।"

नन्हे युआन ने फिर भी आग्रह किया, "कुछ ज्यादा आदमी ले जाना ही बेहतर होगा।"

अंत में पाँच आदमी चुने गये। इसके बाद ज़िला सरकार के सदस्य चांग ने माँ फ़ेंग मिग और नन्हे पाओ द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट माँगी जिसे वह अपने क़ैदी सी-फू के समेत प्रान्तीय सरकार के सामने पेश करने के लिए अपने साथ ले गया।

नये मुखिया की हैसियत से जिला सरकार के सदस्य चांग को विदाई देने के बाद ल्यू क्वांग चू चुपचाप हेंग युआन के घर की ओर चल दिया। वह बूढ़े हेंग युआन को उसकी मदद के लिए धन्यवाद देने के साथ ही साथ आगे के लिए उससे आदेश भी लेना चाहता था। जब बूढ़े हेंग युआन ने यह सुना कि सी-फू को प्रान्तीय सरकार के सामने

ले जाया गया है और नन्हा युआन सिर्फ़ दो वोटों से ही हारा है, तो वह कुछ घबरा-सा गया। उसने चिन्तित स्वर में क्वांग चू से कहा "बेटा, अब तुम्हें फूँक-फूँक के क़दम रखना होगा। हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जाती है। मा फेंग मिंग तो बाहर का रहने वाला है। वह जरूर किसी न किसी दिन उलट कर हमें ही आँखें दिखायेगा। और उन पुराने टिड्डी वृक्षों के रहने वाले गंवार बुद्धू भी अब विद्रोह करने पर उतारू दीखते हैं।" उसने अपनी दो टेढ़ी-मेढ़ी उंगलियाँ क्वाँग चू के चेहरे में गड़ाते हुए कहा, "बाल-बाल बचे हो! दो वोट! सिर्फ़ दो वोट!" फिर वह बताने लगा कि क्वांग चू को क्या करना चाहिए। "बेटा, बेटा, किसी तरह मॉ फेंग मिंग को अपनी ओर तोड़ लो। उसे कोई मामूली सा ओहदा दे दे! मिसाल के लिए निर्माण कमेटी का सदस्य बना दो। काफ़ी होगा। रही नन्हे यूआन और उसके संग-साथ के बदमाशों की बात, सो उनकी चमड़ी उधेड़ने के लिए हमें कोई मौक़ा तलाश करना चाहिए। नहीं तो पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे बसे हुए गाँव के पूर्वी भाग पर हमारा कोई नियन्त्रण न रहेगा, लेकिन अभी हमें बहुत सावधानी से काम लेना पड़ेगा। और जब तक सी-फू का मामला तय नहीं हो जाता, तब तक चुपचाप इन्तजार करना होगा। अब बेटा, तुम अपने घर जाओ! आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही है, इसलिए जल्दी सोना चाहता हूँ।"

इन आदेशों को प्राप्त करके क्वांग चू वापस लौट आया। मुखिया चुने जाने का उसका उल्लास काफ़ूर हो चुका था।

लेकिन पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे, जहाँ ली यू-त्साई की गुफ़ा में पूरी महफ़िल जमा हो गई थी, खुशियों का स्रोता फूट पड़ा था। शाम की बहस के परिणाम-स्वरूप दो और गीत रचे गए थे, जो दूसरे ही दिन चारों ओर फैल गए।

नये साल का दिन पचीसवां था ऐसा निश्शंक,

चीते ने मुँह की खायी, खतम हुआ आतंक।

दिन छब्बिसवाँ नये साल का था इससे भी सुन्दर,
चीते को बन्दी कर डाला लौह-बेड़ियों के अन्दर,
जिन जुल्मों, अत्याचारों पर फूला नहीं समाता था
आज उन्हीं से नतशिर हो वह पड़ा-पड़ा पछताता था
फूट गया जब घड़ा पाप का खुल गया कच्चा खाता
कुत्ते सी तब पूँछ हिलाकर वह सौ-सौ हा-हा खाता
बलपूर्वक हमने फिर उसको पटक दिया धरती पर
क्षणभर में बांध दिये फिर हाथ-पैर उसके कस कर।
चियां-स्यांग भौचक्का होकर, था आँखें झपकाता,
घबड़ा कर उसका बाप पसीने में था नहाया जाता।
लेकिन हम थे बड़े प्रसन्न, हृदय की कली-कली खिल पाई
क्योंकि चीते ने परास्त हो खूब थी मुँह की खाई

दूसरा गीत इस प्रकार था :

बूढ़ा हेंग-यान है बहुत बड़ा ठग
हर नया मुखिया छूता है उसके पग
जब यदि भतीजा गद्दी से हटाया जाता।
तो धर्म-पुत्र आकर उस पर जम जाता।

यह बताना जरूरी नहीं कि सी-फू बूढ़े हेंग-युआन का भतीजा और क्वांग-चू उसका धरम का बेटा था।

(चौथा)

ज़मीन की पैमाइश

जब से सी-फू को पकड़ कर ले गये थे, तब से बूढ़े हेंग-युआन को चिन्ता हो रही थी कि आज नहीं तो कल उसकी साजिशों का भंडाफोड़ भी हो जायगा। उसके दुर्भाग्य से नयी हकूमत पुरानी हकूमत से बिलकुल भिन्न थी और रिश्वत देकर काम निकाल लेने की कोई सूरत बाक़ी न

रही थी। उसने प्रान्तीय सरकार के दफ़्तर में चिया-स्याँग को कई बार भेजा था, लेकिन वह बिना कुछ खोज-ख़बर पाये ख़ाली हाथ लौट आया था। इस तरह तीन महीने गुज़र गये और सी-फ़ू की कुछ ख़बर न मिली।

अन्त में एक नोटिस आया जिसके द्वारा गाँवों के सारे मुखियों को एक मीटिंग में शामिल होने के लिए बुलाया गया था। बूढ़ा हेंग-युआन इसी मौक़े की प्रतीक्षा में बैठा था और उसने सभी बातों का यथासंभव पता लगाकर आने की क्वांग-चू को हिदायत कर दी।

क्वाँग चू दो दिन बाद लौटकर आया और बिना खाना खाये ही सिर हिलाता हुआ हेंग-युआन की हवेली की ओर चल पड़ा।

हेंग-युआन उस समय लेटा आराम कर रहा था। उसका धरम का बेटा उसके पलंग की पाटी पर एक किनारे बैठ गया और सीधी कमर करके उसने अपनी रिपोर्ट सुना दी। "सी-फ़ू के मामले ने इतना वक्त इस लिए लिया क्योंकि उसके ख़िलाफ़ बहुत-सी शिकायतें थीं। इसके अलावा उन मामलों की सही-सही पड़ताल करना भी मुश्किल हो गया था क्योंकि वह और किसी को इस मामले के बीच नहीं घसीटना चाहता था। लेकिन अब मामला तै हो गया है। उसे अपनी ग़लतियों को स्वीकार करके प्रायश्चित करने की इजाज़त दे दी गई है और उसे आदेश मिला है कि उसने जिस-जिसको जितना नुकसान पहुँचाया है, वह उसकी पूर्ति करे। बस।"

इस ख़बर को सुनकर हेंग-युआन ने चैन की लम्बी साँस ली, "ख़ैर तब तक ग़नीमत है जब तक किसी और को इसके बीच नहीं घसीटा जाता!" फिर उसने पूछा, "मीटिंग किस लिए थी?"

क्वाँग-चू ने उत्तर दिया, "तीन बातें थीं। पहली तो यह थी कि लगान में तुरन्त काफ़ी कमी की जाय। भरने के लिए एक फार्म दिया गया है। उसमें काश्तकार और ज़मीदार के नाम दिये जाने चाहिएँ, कितनी ज़मीन लगान पर उठाई गई है, लगान कितना है और कितना

कम किया जा रहा है, यह सब दर्ज होना चाहिए। दूसरी बात यह थी कि तुरन्त ज़मीन की पैमाइश होनी चाहिए। सरकार के सदस्यों और अलग-अलग समितियों और संस्थाओं के कान-पू लोगों के अलावा इस काम में मदद देने के लिए हर बीस घरों पर एक प्रतिनिधि भी चुना जाना चाहिए। तीसरी बात यह थी कि सुरक्षा-सेना का संगठन करने के लिए तुरन्त एक फ़ौजी कौंसिल बनानी चाहिए। इस काम को शुरू करने से पहले १५ जून तक एक आदमी को ट्रेनिंग लेने के लिए प्रान्तीय सरकार के पास भेजना है।"

सी-फू के मामले का नतीजा सुनकर बूढ़े हेंग-युआन ने चैन की साँस ली थी, लेकिन इतनी नई समस्याओं का सामना होते ही उसके माथे पर फिर बल पड़ गये। तो भी उसने क्वाँग चू से अपनी परेशानियों का ज़िक्र तक न किया। जब वह चला गया तो वह अपने बेटे चिया-स्यांग से इस संबंध में बातें करने लगा।

"फ़ौजी शिक्षा पाने के लिए किसी को भेजने का सवाल तो उतना टेढ़ा नहीं," उसने कहा। "मैं तो समझता हूँ कि यह सिर्फ़ फ़ौज में नये सिपाही भरती करने की एक चाल है। इसलिए किसे भेजा जाय यह महत्व की बात नहीं, कोई भी ठीक रहेगा। लेकिन लगान कम करने और ज़मीन की पैमाइश करने का हुक्म हम ज़मीदारों को नुक़सान पहुँचाने के लिए ही दिया है। इससे सिर्फ़ हम लोगों को ही नुक़सान उठाना पड़ेगा। फिर भी पहली बात का तो इन्तज़ाम किया जा सकता है। हमें सिर्फ़ इतना ही करना होगा कि काश्तकारों को सिखादें जिससे वे यह बयान दें कि उनका लगान पहले से ही कम कर दिया है। इस आदेश की अवज्ञा करने का उन्हें साहस न होगा, क्योंकि उन्हें इस बात का डर है कि उन्हें अपनी ज़मीन से बेदख़ल न कर दिया जाय। फिर बाद में तुम जाकर गाँव के दफ़्तर में फ़ार्म भर आ सकते हो। लेकिन यह ज़मीन की पैमाइश वाला मामला इतना आसान नहीं। मदद के लिए

जब इतने आदमी बुलाये जा रहे हैं तब उन सब की आँखों में हम कैसे धूल झोंक सकेंगे ?"

चिया-स्यांग ने कई बार आँखें झपक कर कहा, "मैं तो नहीं समझता यह इतनी मुश्किल बात है। आइये कान-पू लोगों की फेहरिस्त की जाँच करलें। मुखिया क्वांग चू हमारा आदमी है। नागरिक विषयों की कमेटी के चेयरमैन आप और शिक्षा-कमेटी का चेयरमैन मैं हूँ। मज़दूर यूनियन का चेयरमैन, बूढ़ा फैन, हमारा ज़रखरीद पिट्ठू है। किसान-सहायक-समिति का चेयरमैन ती-कुई निश्चय ही हमारे खिलाफ़ नहीं जायेगा। वित्त-कमेटी का चेयरमैन ची-चांग है। उसका नियम है कि 'अगर फ़ायदा नहीं होता तो नुक़सान भी नहीं होना चाहिए।' जब तक उसका हम न बिगाड़ें, वह भी हमारे खिलाफ़ कुछ न करेगा। उसका बेटा नन्हा-ल्यू बिल्कुल नासमझ है, हालाँकि कहने को वह राष्ट्रीय सुरक्षा संघ के नौजवानों का कान-पू है। अब सिर्फ़ मा फ़ेंग-मिंग और उसकी पत्नी बाकी बचे। मा आसानी से बस में आने वाला आदमी नहीं। एक तो उसकी बुद्धि बहुत पैनी है, दूसरे बाहर से आकर बसने के कारण वह हम लोगों की तरह ही नहीं सोचता। इसके अलावा तपाक से मुँह आयी बात कह डालने में उसे झिझक भी नहीं होती। और फिर उसकी पत्नी क्वी-यिंग महिला-सुरक्षा-संघ की कान-पू है—इस तरह एक ही परिवार में दो कान-पू हैं।"

बूढ़े हेंग-युआन ने अपने बेटे को आश्वस्त करते हुए कहा, "मा फेंग-मिंग को आसानी से क़ाबू में लाया जा सकता है। जो लोग व्यापारी रह चुके हैं वे मामूली फ़ायदा होते देख ही खुशी से फूल जाते हैं। इस मामले से अगर उसे कुछ फ़ायदा होता दिखाई दिया तो वह मेमने जैसा सीधा हो जायगा। कान-पू लोगों की कोई चिन्ता नहीं, वे सब तो ठीक हैं। लेकिन बीस-बीस घरों पर जो प्रतिनिधि चुने जायेंगे उनसे मामला पटाना मुश्किल हो जायगा। ये प्रतिनिधि संख्या में इतने ज़्यादा होंगे कि उनमें से हरेक के विचार भिन्न-भिन्न दिशाओं की ओर दौड़ेंगे।"

"मैं तो नहीं समझता कि उनका चुनाव कराना ज़रूरी ही होगा," चिया-स्यांग ने कहा।

हेंग-युआन फ़ौरन बात काट कर बोला, "ज़िले की सरकार का वह बेहूदा सदस्य चांग बार-बार आता रहता है। उसके आने पर अगर बीस-बीस घरों के प्रतिनिधि न हुए तो हम क्या करेंगे? इसलिए उनका होना ज़रूरी है। हाँ, उन्हें चुनकर लाने की ज़रूरत नहीं। गाँव का मुखिया इन प्रतिनिधियों को नियुक्त कर सकता है। उसको चाहिए कि ग़रीब से ग़रीब आदमियों को ही नियुक्त करे। ऐसे लोगों को चुने जो एक-एक दमड़ी को दाँत से पकड़ते हैं—जैसा पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे रहने वाला बूढ़ा चिन है।"

"आप ऐसे लोगों को क्यों चाहते हैं?" चिया-स्यांग ने पूछा, "वह जितने ही ग़रीब होंगे उतने ही कम टैक्स देते होंगे, साथ ही वे दूसरों की ज़मीनों की सही-सही पैमाइश करने के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा मुस्तैदी दिखायेंगे।"

हेंग-युआन ने उत्तर दिया, "तुम नई उमर के लोग बूढ़े लोगों की तरह दूरन्देश नहीं हो। जब हम नापना शुरू करेंगे तो हम सब से पहले टेढ़े-मेढ़े और मुश्किल खेतों की पैमाइश करेंगे—मिसाल के लिए जैसे चिली दीप वाला हमारा खेत है। वहाँ हर माऊ सात-आठ टुकड़ों में बँटा हुआ है। ऐसे खेतों को बहुत धीरे-धीरे लम्बा हिसाब लगाकर ध्यान से नापना पड़ता है। चिली दीप के पन्द्रह माऊ खेतों की पैमाइश में पूरे दो दिन लग जायेंगे। तो फिर ऐसे ग़रीब जो एक-एक दमड़ी को दाँत से पकड़ते हैं, अपनी कमाई का इतना वक्त इस काम में क्यों कर लगायेंगे? दो या तीन दिनों में ही वे लोग बैठ रहेंगे। जब उनसे हमारा पिण्ड छूट जायगा तो हम उनके उत्साह की कमी से परेशान होने का बहाना करेंगे। लेकिन फिर हमें अपने मन माफ़िक ज़मीन की पैमाइश करने की खुली छूट मिल जायेगी।"

चिया-स्यांग ने इसका प्रतिवाद किया, "मैंने और जगहों पर देखा

है कि पैमाइश के बाद खेतों पर एक बोर्ड लगा कर उनका नाप और रक़बा दर्ज कर दिया जाता है।"

इस पर हेंग-युआन तपाक से बोला, "पहाड़ी पर की ज़मीन में विचित्र-विचित्र आकार के छोटे-छोटे खेत हैं। हर बोर्ड पर अगर एक ही संख्या में उनका रक़बा लिख दिया जाय तो वह काफ़ी होगा। नमूने के लिये अगर लिखा हो, "इस स्थान से पहाड़ी की ढलान तक इतने 'माऊ', तो फिर कौन भकुआ इसकी जाँच करता फिरेगा? और थोड़ी सी चालाकी बरतने से ही ग़रीब प्रतिनिधियों को अपने पक्ष में किया जा सकता है। भला उन्हें क्यों आपत्ति होने लगी? मान लो एक खेत तीन माऊ का है। तुम कह सकते हो, "इन छोटे-छोटे टुकड़ों को नापने की कोई ज़रूरत नहीं। चलो समझ लो कि यह दो माऊ का टुकड़ा है। इसके अलावा वे खुद भी तो अपने खेतों की सही-सही पैमाइश कराने से डरेंगे, और इसलिए वे दूसरों की ज़मीनों की सही पैमाइश पर भी ज़ोर न देंगे।"

यह सब कहने के बाद हेंग-युआन ने बेटे को आदेश दिया कि वह जाकर मा-फेंग-मिंग से मिले। उसने पिछले बीस सालों में ही अपनी ज़मीन हासिल की है, और उसकी ख़रीद इस चालाकी से की गई थी कि उसे क़ायदे से जितना लगान देना चाहिए वह उसका आधा ही देता है।"

इतने में मा-फेंग-मिंग वहीं आ पहुँचा। बूढ़े हेंग-युआन ने उससे कहा, "चूँकि तुमने ज़मीन हाल में ही ख़रीदी है और उसके काग़ज़ात भी ठीक ही होंगे, इसलिए उसकी पैमाइश करना बेकार होगा। खतौनी में उसकी जो पैमाइश लिखी है, वह हम लिख देंगे।"

मा की खुशी का क्या ठिकाना था!

क्वांग-चू को भी बुलाया गया। चूँकि वह भी ज़िले का एक बड़ा ज़मींदार था और साथ ही उसकी मुखियागिरी हेंग-युआन की कृपा पर

निर्भर करती थी, इसलिए वह झट से अपने धरम के बाप की योजना से सहमत हो गया।

अगले दिन बीस-बीस घरों के प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ और उससे अगले दिन ज़मीन की पैमाइश शुरू कर दी गई। सारा काम हेंग-युआन की योजना के मुताबिक चल निकला। निगरानी के लिए ज़िले की सरकार का सदस्य चांग वहाँ मौजूद था। हेंग-युआन ने सुझाव दिया "मेरी ज़मीन से पैमाइश शुरू कीजिए।"

और वे सब, सारे कान-पू और बीस-बीस घरों के क़रीब एक दर्जन प्रतिनिधि नापने का बाँस, गिनती करने वाला चौखटा, लकड़ी की पट्टियाँ, कलम-दवात और तमाम दूसरी ज़रूरी चीज़ें लेकर चल पड़े और जिले की सरकार का सदस्य चांग भी उनके पीछे-पीछे चिली दीप की ओर चल दिया।

क्वांग-चू की देख-रेख में पैमाइश शुरू हो गई। ती-कुई के हाथ में नापने वाला बाँस था और चिया-स्यांग गिनती करने वाले चौखटे पर हिसाब जोड़ने लगा। यहाँ की ज़मीन बहुत छोटे-छोटे खेतों में बटी थी। कोई खेत एक माऊ के पाँचवे हिस्से से अधिक बड़ा न था, लेकिन उनकी शक्लें इतनी टेढ़ी-मेढ़ी थीं कि उनका रक़बा निकालने के लिए हर खेत के चार-चार पाँच-पाँच हिस्से करके हिसाब जोड़ना पड़ता था। खेत के हर टुकड़े की पैमाइश करने के बाद वे सब थोड़ा विश्राम करते। इस मौक़े पर क्वांग-चू उन्हें लेक्चर देकर बताता कि टेढ़ी-मेढ़ी शक्ल के खेतों का रक़बा किस तरह निकालना चाहिए और चिया-स्यांग इन उसूलों पर इतनी सूक्ष्म और बौद्धिक टिप्पणी करता कि सारी बात दुर्बोध बन जाती; मानो वह यह साबित करने की कोशिश कर रहा हो कि वृत्त को कैसे समकोण बनाया जाय। चूँकि इस काम में मदद करने वाले लोग ज़मीन की पैमाइश के तरीक़ों से अपरिचित थे, इसलिए थोड़ी ही देर में वे ऊबने लगे और उन्होंने महसूस किया कि पैमाइश के काम में ज़रूरत से ज़्यादा वक़्त खर्च होता है। सिर्फ़ जिले की सरकार का सदस्य चांग

इस सारी कार्रवाही का खुले दिल से समर्थन कर रहा था। उनके पैमाइश करने के तरीक़े की तारीफ़ करते हुए उसने कहा कि यह बहुत ईमानदारी और सावधानी का तरीक़ा और दूसरों को आदर्श मानकर इसका अनुकरण करना चाहिए।" यह कहकर वह निश्चिन्त मन से पड़ोस के गाँव की ओर चला गया।

हेंग-युआन ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। दो दिन बीत जाने पर भी वे अभी तक चिली-दीप की ज़मीन भी न नाप पाये थे और इतने से ही ऊबकर कई प्रतिनिधियों ने आना बन्द कर दिया।

पाँचवे दिन काम शुरू करने से पहले सिर्फ़ सात आदमी जमा हुए। ये थे हेंग-युआन, उसका बेटा और उनके नौकर, बूढ़ा फैन, क्वांग-चू, ती-कुई, कुई-इंग (मा फेंग सिंग की पत्नी) और नन्हा ल्यू (ची-चाँग का बेटा)। इनमें से आख़िरी दो ही ऐसे थे, जो हेंग-युआन के आश्रित नहीं थे। लेकिन इनमें भी एक अनुभव-हीन औरत थी, जो गर्भवती होने के कारण अधिक परिश्रम करने में असमर्थ थी और दूसरा अभी नया था। बीस-बीस घरों के प्रतिनिधि बिलकुल ही तस्वीर से बाहर जा चुके थे।

हेंग-युआन बड़े आराम से अपने ऊपर ताड़ की पत्तियों का पंखा झलते हुए चहल-क़दमी कर रहा था और क्वांग-चू हाथ में हुक्का थामे उसके पीछे-पीछे चल रहा था। नौकर बूढ़ा फ़ेन अपने साथ एक लोहे का भगौना लेकर आया था। नन्हे ल्यू के पास एक हँसिया था, जिससे ईंधन की लकड़ी काट कर ले जाने का इरादा करके निकला था। और कुई-इंग, जिसे अपने गर्भ के बोझ से चलना-फिरना मुश्किल हो रहा था, एक टोकरी लेकर आई थी। वह कहीं एकान्त में बैठकर कुछ जड़ी-बूटियाँ बीनना चाहती थी। सिर्फ़ ती-कुई ही, जो आजकल हेंग-युआन के यहाँ रोटी तोड़ता था, पैमाइश के काम में मुस्तैदी दिखा रहा था। नापने का बाँस, गिनती करने का चौखटा, लकड़ी का पट्टियाँ और दूसरी तमाम चीजें, उसी पर लाद दी गईं।

इस प्रकार वे सब लोग चिली-दीप की पीछे वाली खाई की ओर चल पड़े। यह ज़मीन हेंग-युआन की ही थी। लेकिन चलने से पहले बूढ़े हेंग-युआन ने चिन्ता प्रकट करने का ढोंग रचते हुए कहा : "आखिर इन लोगों को हुआ क्या है ? आज भी नहीं आये ! कमेटी के मेम्बर तो इतने हैं, लेकिन काम के वक्त दुम दबा जाते हैं। कोई बात है ! सारा काम हमें ही करना पड़ता है !"

चिली-दीप के पीछे की खाई की सारी ज़मीन हेंग-युआन की ही थी। इसलिए वहाँ पहुँचकर सब ने पैमाइश करने का ढोंग छोड़ दिया और सब-के-सब अपने-अपने काम के लिए निकल गये।

थोड़ी-सी खूबानियाँ खाने के बाद कुई-इंग जड़ी-बूटियाँ बीनने की गरज़ से एक ओर चली गई। नन्हें ल्यू के पास भी कुछ खूबानियाँ थीं। उन्हें खाता हुआ वह भी ईंधन की लकड़ी काटने के लिए कुई-इंग की ओर ही चला गया। चिया-स्याँग ने यह देखकर कि एक जगह पर खेत की मेढ़ टूट गई है, बूढ़े फेन को उसे ठीक करने का आदेश दिया। ती-कुई अपने औज़ार एक ओर पटक उसकी मदद करने में जुट गया। हेंग-युआन और क्वांग-चू आराम से बैठकर गप-शप करने के लिए पास ही अखरोट-वृक्षों की छाया की ओर टहलते हुए चले गये।

यू-त्साई पहाड़ी पर गेहूँ के खेतों की रखवाली में लगा था। जब उसने खाही की ओर सात-आठ आदमियों को जाते हुए देखा तो उसने पहले-पहल सोचा कि कहीं वे गेहूँ चुराने न आ रहे हों, लेकिन उनकी लापरवाह चाल-ढाल देख कर उसे लगा कि ऐसा कोई उनका इरादा नहीं है। वह दूर से आदमियों को पहचान न पाता था, फिर भी उसे नज़र आगया कि वे लोग क्या कर रहे थे। लेकिन अखरोट के पेड़ों के नीचे जो दो शक्लें नज़र आ रही थीं, उनके वहाँ होने का रहस्य वह न भांप सका। उसकी समझ में न आया कि वे कौन-सी तिकड़म में लगे हैं। आगे कान लगाने से उसे उनकी आवाज़ें तो सुनाई देती थीं लेकिन

शब्द साफ़ न थे। इसलिए उसने वहाँ रुक कर उनका पता करने का निश्चय किया।

वह दोपहर तक इसी इन्तज़ार में बैठा रहा, तब कहीं उसने उनमें से एक आदमी को अख़रोट के पेड़ों के नीचे से निकल कर पुकारते हुए सुना। "चिया-स्यांग, अब तख्ती पर लिख देने का वक्त हो गया।" अब उसे पता चला कि वह हेंग-यूआन है।

वे दो आदमी भी, जो मेढ दुरुस्त कर रहे थे, आगये। और यू-त्साई ने देखा कि उनमें से एक चिया-स्यांग है और दूसरा बूढ़ा फैन।

चिया-स्यांग ने लकड़ी की दो तख्तियों पर कुछ लिखा। उनमें से एक तख्ती उसने बूढ़े फैन को पकड़ा दी, जिसे उसने खाई में एक ऊँची ज़मीन पर गाड़ दिया। दूसरी तख्ती चिया-स्याँग ने खुद अपने हाथों गेहूँ के खेत में गाड़ दी।

पैमाइश की इस रस्म के खतम होते ही उन लोगों को भी इकट्ठा कर लिया गया, जो इधर-उधर अपने कामों में जा लगे थे। और फिर उन सबने वापस लौटने की तैयारी की। यू-त्साई ने जब ती-कुई के हाथ में नापने का बाँस और दूसरे औज़ार देखे तब कहीं उसे अन्दाज़ हुआ कि वे लोग ज़मीन की पैमाइश के लिए वहाँ जमा हुए थे।

उसने मन-ही-मन सोचा। "अच्छा! अब मैं जान गया, ये लोग ज़मीन की पैमाइश ऐसे करते हैं! जरा चल कर देखूँ तो तख्तियों पर क्या लिखा है!"

उन लोगों के जाने के बाद उसने चुपके से खाई में जाकर पूरी जाँच-पड़ताल की। गेंहू के खेत में एक तख्ती गड़ी थी जिस पर लिखा था, "यहाँ से खाई के बीच तक ज़मीन के अलग-अलग पन्द्रह टुकड़े हैं। कुल मिलाकर उनका रक़बा ७.२२ माऊ है।" खाई में ऊँचे टीले पर लगी तख्ती पर लिखा था, "टीले से लेकर पहाड़ी के नीचे का रक़बा ३.२८ माऊ है।"

इन आकड़ों को पढ़ कर ली यू-त्साई चकित रह गया। घर जाते समय रास्ते में उसने नीचे लिखी तुकबन्दी जोड़ी।

है ज़मीन की पैमाइश का उनका ढंग अनोखा
खाई और पहाड़ी पर चलता दिन दहाड़े धोखा
वहाँ काटता फिरता नन्हा ल्यू ईंधन की लकड़ी
बीबी क्वी इंग ने जड़ी-बूटियों से भर अपनी डलिया पकड़ी
बूढ़ा फेन और ती-कुई मिल-जुल कर मेंड़ बनाते
दौड़-दौड़ कर चिया-स्यांग का दोनों हुकुम बजाते
बैठा हेंग-युआन अखरोट वृक्ष की छाया में नीचे
संग क्वांग-चू, रहा निरख वन-देवी की शोभा आँखें मीचे
एक झल रहा था पंखा खजूर का, दूसरा हुक्के में दम मारे
एक दूसरे की बातों पर वे हँसते थे ले-ले कर चटख़ारे
बैठे रहे वहीं वे दोनों जब तक सूरज सिर पर चढ़ आया
तब चिया स्यांग ने बांग लगाकर सबको पास बुलाया
धीमी-धीमी घुसपुस की कुछ आवाजें थीं आतीं
कुछ भेद भरी संख्याएँ थी गिन-गिन कर जोड़ी जातीं
तब चिया स्यांग ने लिखकर तख़्ती दो रंग डालीं
यह पैमाइश है या धोखा देखो इनकी करतूतें काली
क्योंकि चिया स्यांग ने अपने हाथों उन पर लिखा है बस
है कुल ज़मीन का रक़बा चिली दीप में माऊ पूरे दस
हाँ यदि बेचते समय यही ज़मीन होजाये माऊ तीस
तो बूढ़े हेंग-युआन की चालाकी पर मत निपोर देना खीस
यह भी क्या कम है जो उसने दस माऊ रक़बा है माना
बिना पसीजे भला मानता, है वह बड़ा सयाना

(पाँचवाँ)

भयानक 'आदर्श गाँव'

कुछ दिनों बाद जब बड़े-बड़े खेतों की पैमाइश खत्म हो गई तब ग़रीब किसानों को हेंग-युआन की योजना के अनुसार छोटी-मोटी छूट दे दी गई। पैमाइश में उनकी तीन माऊ ज़मीन दो माऊ गिनी गई और दो माऊ ज़मीन सिर्फ़ डेढ़ माऊ गिनी गई।

इस बल पर ती-कुई को ग़रीब किसानों के सामने हेंग-युआन की उदारता का ढोल पीटने का मौक़ा हाथ लग गया। ऐसा करने से उसे भी मुफ़्त में नेकनामी मिलने की उम्मीद थी। फिर भला वह क्यों चूकता। वह हेंग-युआन के यहाँ से खाना खाकर सीधा टिड्डी कुंज की ओर चल पड़ा। नज़दीक पहुँचते उसे उन लोगों की आवाज़ें सुनायी दीं जो खाने के बाद साँझ के झुटपुटे में पेड़ों के नीचे बैठे गपशप कर रहे थे। उनकी बात-चीत का रंग-ढंग जानने के लिए उसने अपनी चाल धीमी कर दी और सड़क के किनारे खड़ा होकर वह उनकी बातें सुनने लगा। कोई आदमी उसके बेटे से कह रहा था, "नन्हे तान, क्या तुम अपने पिता को इस बात पर राजी नहीं कर सकते कि वह हेंग-युआन का पुछल्ला न बने। चारों ओर यही चर्चा है।"

इसके बाद ती-कुई को अपने बेटे का क्षुब्ध स्वर सुनायी दिया, "मैं तो उसे रोज़ समझाता हूँ, लेकिन कोई मेरी बात भी तो सुने! न जाने कितनी बार इसी बात को लेकर हम दोनों में झगड़ा हो चुका है। जब कभी वह हेंग-युआन के यहाँ से लौकी या लहसुन लेकर आता है तो माँ और मैं उन्हें हाथ तक नहीं लगाते। लेकिन तो भी उस पर कोई असर नहीं पड़ता।"

ती-कुई ने सोचा कि जब उसका अपना बेटा ही उसकी नुक्ताचीनी कर रहा है तो उसने टिड्डी-कुंज में जाना छोड़ दिया। लेकिन उसके मन में और बातें सुनने की उत्कण्ठा बनी थी, इसलिए वह वहीं खड़ा रहा।

कुछ देर बाद ली यू-त्साई की आवाज सुनायी दी। "अब तो जमीन की पैमाइश खत्म हो चुकी है। आपके ख्याल में बूढ़े हेंग-युआन के पास कितनी जमीन होगी ?"

नन्हें तान ने जवाब दिया, "सुनते हैं कि उसके पास क़रीब एक सौ दस माऊ जमीन है।"

इस पर नन्हा शुन बोल उठा, "इस बात को भला कौन सच मानता है ? अगर आप मौरूसी जमीन को न गिनें तो भी इतनी जमीन तो पिछले दस सालों में लोगों ने क़र्ज़ के ऐवज़ में उसके यहाँ रहन की होगी।"

नन्हे पाओ ने बीच में टोका, "ख़ैर, रहन वाली ज़मीन का हिसाब तो आसानी से लगाया जा सकता है। टिड्डी-कुंज के ज़्यादातर लोग अपनी ज़मीनें उसके हवाले करने के बाद ही तो यहाँ आकर बसे हैं।

इसके बाद उन्होंने रहन की ज़मीन का हिसाब लगाना शुरू कर दिया। कुछ माऊ इस जगह पर, कुछ माऊ उस जगह पर, कुल मिलाकर पूरे चौरासी माऊ निकले। और नन्हे युआन ने संक्षेप में पूरा कच्चा चिट्ठा खोल दिया। "तीन आदमी तो उसने अपनी जायदाद की देख-रेख के लिए ही रख छोड़े हैं। इसके अलावा पहाड़ी के छः या सात बड़े-बड़े खेत उसने किसानों को पट्टे पर दे रखे हैं। ठीक-ठीक हिसाब करने पर अगर उनका रक़बा तीन सौ से एक माऊ भी कम निकले तो मेरा नाम चेन नहीं।"

"तुम को कुछ पता भी है कि ज़मीन की पैमाइश कैसे की गई ?" नन्हे शुन ने पूछा। "क्या तुमने ली यू-त्साइ का गीत नहीं सुना ?"

'है ज़मीन की पैमाइश का उनका ढंग अनोखा

खाई और पहाड़ी पर चलता दिन दहाड़े धोखा।"

और फिर उसने पूरी कविता सुना डाली। लोग प्रसन्नता से गद्गद हो उठे।

सिर्फ़ बूढ़े चिन ने संजीदगी से कहा, "मैं तो सोचता हूँ कि ज़मीन

की पैमाइश काफ़ी ईमानदारी से हुई थी। उन्होंने ग़रीब किसानों और बड़े ज़मींदारों में कोई भेद-भाव नहीं रखा। मिसाल के लिए मेरी तीन माऊ ज़मीन को उन्होंने सिर्फ़ दो माऊ ही लिखा।"

लेकिन नन्हे युआन की धूँआधार बहस से वह भौचक्का सा रह गया। "उन्होंने तो हमें दूध पीता बच्चा समझ रखा है। और तो और, अगर सिर्फ़ हेंग युआन की ज़मीन की पैमाइश ही ठीक से होती तो उसे पूरे गाँव के बराबर टैक्स देना पड़ता, और हम लोग साफ़ छूट जाते। हमारे पास दो माऊ होते या तीन, इस बात से रत्ती भर भी फरक़ न पड़ता। लेकिन उसकी तीन सौ माऊ ज़मीन को सिर्फ़ सौ माऊ गिनने का नतीजा यह होगा कि हम छोटे किसानों पर भी टैक्स लग जायगा नहीं तो रक़म कैसे पूरी होगी ? इसलिए तुम्हारे पास दो माऊ हों या तीन, टैक्स तो अब तुम पर भी ठोंक दिया जायगा।"

यह सुनकर ती-कुई समझ गया कि ये लोग हेंग-युआन की तिकड़म जान गये हैं और अब वे उसके पक्ष में प्रचार न कर पायेंगे। खैर, वह वापस जाकर कम से कम बूढ़े हेंग-युआन को अपने कानों सुनी सारी बातें तो बता ही सकता है। लेकिन वहाँ पहुँचने पर देखा कि हेंग-युआन सो गया है चिया-सियाँग अभी तक जग रहा था और एक टिमटिमाती लालटेन की रोशनी में बैठा कोई फ़ार्म भर रहा था।

ती-कुई ने जो कुछ सुना था, उसे दुहरा दिया, साथ ही ली-यू-त्साई की कविता का जो भावार्थ उसे याद था, वह भी सुना दिया और जहाँ कहीं सम्भव था, अपनी ओर से नमक मिर्च के रूप में गालियाँ भी जोड़ता गया। इस काम के लिये उसे अपनी कल्पना का सहारा लेना पड़ा।

यह सब सुनकर चिया स्याँग के क्रोध का ठिकाना न रहा और वह और भी तेजी से आँखें झपकाने लगा। दोनों ने पानी पी-पीकर नन्हे-युआन और ली यू-त्साई को गालियाँ दीं। ऐसा करके ती-कुई ने परम संतोष का अनुभव किया। घर लौटते समय उसे ऐसा लगा मानो भारी

मैदान मार लिया हो। दूसरे दिन तड़के जब हेंग-युआन सोकर उठा भी न था कि बेटे ने सारा किस्सा जा सुनाया। गालियों की बात से तो वह जरा भी परेशान न हुआ, यह जानकर कि उसकी तिकड़म का भंडा फूट गया, वह गहरी चिन्ता में डूब गया। बहुत देर तक चुप रहने के बाद उसने कहा, "जैसे भी हो, उन्हें अपनी ओर तोड़ लेना चाहिये।"

नाश्ते के बाद उसने क्वांग-चू को बुलाकर नन्हें युआन और यू-त्साई की सारी बातें सुनाईं और अन्त में ताकीद की, "नन्हें युआन को, उस कम्बख्त कमेटी का क्या नाम है—फौजी कमेटी के लिए चुनकर उसे ट्रेनिंग पाने के लिए प्रान्तीय सरकार के पास बोरिया-बिस्तर समेत भेज दो। इस बला को तो यों टालो। अब रह गया ली यू-त्साई, उसे धक्के मार-मार येनचियाशांग से बाहर खदेड़ दो और चेतावनी दे दो कि फिर कभी गांव में अपनी शकल न दिखाये।

हेंग युआन से ये आदेश लेकर क्वांग-चू ने फ़ौजी ट्रेनिंग लेने के लिए किसे भेजा जाय इसका फ़ैसला करने की ख़ातिर एक मीटिंग बुलवाई। जिले की सरकार के सदस्य चांग का अनुकरण करते हुए उसने भी तीन आदमियों का नाम पेश किया जिनमें नन्हे युआन का भी नाम था। लेकिन वोट डालने के तरीके में कुछ फ़रक था—वह यह कि ती-कुई और चिया-स्यांग दोनों अपनी मुट्ठियों में दाने भर कर लाये थे जो उन्होंने चुपके से नन्हें युआन के प्याले में रख दिये। सो वह चुन लिया गया।

चूँकि किसी को भी यह नहीं पता था कि फौजी कौंसिल के मेम्बर के चुनाव का असली महत्त्व क्या है, इसलिए सब, यहाँ तक कि हेंग-युआन और क्वांग-चू भी यह सोचते थे कि यह रंगरुटों की जबरन भरती करने का एक ढंग है। नन्हे युआन के घर पर सिर्फ़ उसकी बुढ़िया माँ थी, जिसका और कोई सहारा न था। जब उसने सुना कि उसका बेटा चुना गया है तो वह रोती हुई क्वांग-चू के पास पहुँची और गिड़गिड़ा कर अपने बेटे की रिहाई के लिए बिनती करने लगी।

क्वांग-चू हेंग-युआन के आदेशानुसार अपनी ज़िद पर अड़ा रहा।

लेकिन ती-कुई ने अपनी मूर्खता से सारा भेद खोल दिया। "उससे किसने कहा था कि वह जमीन की पैमाइश की नुक्ताचीनी करे ?" जब यह खबर टिड्डी कुंज के लोगों के कानों तक पहुँची तो वे सारी चाल को समझ गये। इस मौके पर नन्हे मिंग ने बड़ी सहृदयता दिखाई। वह हमेशा मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने में आगे रहता था। यह सुन कर कि नन्हें युआन को उसकी माँ के रोने-धोने के बावजूद भी नहीं छोड़ा गया तो उसने फौरन नन्हे पाओ, नन्हें शुन और दूसरे लोगों की मदद से इस विपत्तिग्रस्त परिवार की सहायता करने की एक योजना बनाई।

नन्हें पाओ के पास जाने पर जवाब मिला, "वे लोग अपनी जिद के पक्के हैं, उन्हें समझाने-बुझाने से कोई लाभ नहीं। सैनिक बनने में भी क्या हर्ज है ? हम सब एक-दूसरे के दोस्त हैं; मिल-जुलकर बूढ़ी मां की देखभाल कर लेंगे।"

नन्हें पाओ से सहायता का वचन पाने के बाद नन्हें मिंग ने नन्हें युआन से कहा, "चिन्ता मत करो। तुम्हें कुछ नहीं करना होगा। अकेली मां तुम्हारी, कितना ईंधन-पानी उसे चाहिए ? रही तुम्हारी तीन माऊ जमीन, सो वह एक दिन का काम है।

नन्हे युआन के चचा का रोम-रोम इन आश्वासनों को सुनकर कृतज्ञता से भर आया। नन्हे युआन ने भी इन लोगों को हृदय से धन्यवाद दिया। उसके दिल का बोझ हल्का हो गया था।

इस बीच गांव के कर्मचारी अपने काम में व्यस्त रहे थे। लगान कम करने और जमीन की पैमाइश वाले फार्म अब तक तैयार हो चुके थे। इसलिए एक संदेशवाहक के हाथ उन्हें तीसरे पहर जिला सरकार के दफ़्तर में भेज दिया गया। साथ में नन्हा युआन भी गया।

गांव के मुखियों की मीटिंग में जिन तीन बातों का फैसला हुआ था, उनको पूरा करने के बाद क्वांगचू ने अब फुर्सत से ली-यु-त्साई को ठिकाने लगाने का मौक़ा मिला। उसे एक दिन गांव के दफ़्तर में बुलाया गया,

जहाँ क्वांग-यू क्रोध से आग-बबूला हुआ बैठा था और अपना सिर तिरछा झुकाकर मेज पर घूँसे मार रहा था। उसने ली-यु-त्साई को "झूठी अफ़वाहें उड़ाने वाला" और "देशद्रोही" कहकर खूब डांटा।

अन्त में क्वांग-चू ने हुकुम दिया, "अपनी इस मनहूस शक्ल को लेकर गांव से निकल जाओ। और मेन-चिया शान में फिर कभी क़दम न रखना। अगर कभी भी यहां आने की जुर्रत की, तो एक देशद्रोही होने के खातिर तुम्हें गिरफ़्तार कर लिया जायगा।"

इस हुकुम को मानने के अलावा ली-यु-त्साई के सामने और कोई चारा न था। जिन लोगों के मवेशी चराता था, उनसे हिसाब करके वह पड़ोस के गांव में चला गया।

दो दिन बाद ज़िले की सरकार का सदस्य चांग खुशी से बाँसों उछलता गांव में आया। साथ में वह प्रान्तीय सरकार का एक हुक्मनामा लाया जिस पर लिखा था:—

"छठे जिले के दफ़्तर से हमें जो रिपोर्ट मिली है, उससे ज्ञात हुआ है कि येन-चिया-शान गांव के कानपू (कर्मचारियों) लोगों ने अपना काम बड़े जोश, मुस्तैदी और ठीक-ठीक ढंग से पूरा किया है। इसलिए हम गांव को एक आदर्श गांव की कोटि में रखते हैं ताकि दूसरे गांव अनुकरण के लिए एक मिसाल समझें। वहां के कान पू लोगों को आगे भी इसी प्रकार मुस्तैदी से काम करने का उत्साह देने के लिए इनाम दिया जायगा।"

स्वाभाविक है कि इस क़ीमती आज्ञापत्र के बाद येन-चिया शान एक आदर्श गांव के नाम से मशहूर हो गया।

[छठा]

नन्हे युआन की काया-पलट

दो सप्ताह तेज़ी से गुज़र गये। और नन्हे-युआन के वापस लौटने

का वक्त आ गया। सब लोग यह जानने के लिए उत्सुक थे कि उसकी फौजी-ट्रेनिंग का क्या हुआ? यहां तक कि खेत-मजदूर भी दोपहर से पहले ही अपना काम छोड़कर खबर सुनने के लिए चले आये।

वे सब नन्हे-युआन के इर्द-गिर्द जमा हो गये, जो उनके सवालों का जवाब दे रहा था। ऐसा लगता था कि मानों वह इस दुनिया से बहुत खुश है। "ये लोग मेरे साथ बुरा करना चाहते थे। और उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि इससे मेरा भला ही होगा। प्रान्तीय सरकार ने मुझे एक फौजी-कौंसिल का संगठन और सुरक्षा-सेना बनाने के लिए वापस भेजा है। उन्होंने हमें रायफ़लें और हथगोले देने का वायदा किया है। साथ ही उन्होंने कहा है: 'अब से फौजी-कौंसिल के चेयरमैन का दरजा गाँव के मुखिया के बराबर होगा। वह नागरिक मामलों की देख-रेख करेगा और तुम फौजी-मामलों की देख-भाल करोगे। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र हैं। और तुम्हारी फौजी-कौंसिल गाँव के शासन के आधीन नहीं है। उन्होंने मुझे गाँव की सरकार के नाम एक लिखित आदेश-पत्र भी दिया है। जिसमें कहा गया है कि वे फ़ौजी कौंसिल के लिए ज़रूरी चीज़ों का प्रबन्ध करें। आज से पुराने टिड्डी वृक्षों के नीचे रहने वाले हम लोग भी गाँव के मामलों में दखल दे सकेंगे!"

नन्हा शुन निर्दय-भाव से बोला: "फिर क्या है! तुम उन पर अपना ज़ोर तो अजमाओ! और हम देख लेंगे कि यह हेंग-युआन कैसे सारी दुनिया का तानाशाह बना रहता है!"

नन्हें मिंग ने जल्दी से नन्हें-युआन को आश्वस्त करने के लिए बताया: "तुम्हारे खेत गोड़ दिये गए हैं। और तुम्हारी बूढ़ी माँ को एक दिन भी भूखा नहीं रहना पड़ा। यहाँ से थोड़ा-सा नाज और वहाँ से थोड़ा-सा शोरवा—मतलब यह कि उसको पेट भर कर खाना मिलता रहा।" नन्हा-यूआन यह सुनकर बहुत कृतज्ञ हुआ।

दोपहर का खाना खाने के बाद उसने गाँव के दफ़्तर में जाकर प्रान्तीय-सरकार का आदेश-पत्र क्वांग-चू के हाथों में दे दिया। यह जान-

कर कि नन्हें-युश्रान को अधिकार दिये गए हैं, क्वांग-चू को धक्का-सा लगा। और स्वाभाविक-रूप से उसकी पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि वह दौड़ता हुआ हेंग-युश्रान के पास उसकी राय जानने के लिए पहुँचा।

आदेश-पत्र को पढ़कर हेंग-युश्रान अफ़सोस करने लगा। "कौन यह सोच भी सकता था कि इसका नतीजा उसके हक़ में अच्छा भी निकलेगा।" वह अपने सिर को हिलाते हुए बड़बड़ाया। इस समस्या पर विचार करने के लिए वह भौंहें सिकोड़ कर चुप हो गया। "अच्छा ख़ैर, अब ग़लती तो हो ही गयी है, इसलिए हमें अब इस नई स्थिति को मानकर ही अपना काम करना होगा। तुम उससे दोस्ती गाँठो और उसे अपने कैम्प में फोड़ लाओ!"

क्वांग चू ने इसका प्रतिवाद किया। "वह आदमी जिस तरह आग उगलता है, मुझे तो डर है कि उसको हम अपनी ओर नहीं तोड़ पायेंगे।"

इसके जवाब में हेंग-यु-आन ने कहा। "तुम तो कुछ समझते नहीं। यह काम धीरे-धीरे करना होगा। हम सब को चाहिये कि उसकी तारीफ़ों के पुल बाँध कर उसे आसमान पर चढ़ा दें। साथ ही उसे इस नये प्रबन्ध से छोटी-मोटी सुविधाएँ भी जुटाते जाओ। कुछ दिनों में आदत पड़ जायगी, और चन्द महीनों के अन्दर ही उसे पुराने टिड्डी-कुन्ज में रहने वाले लोगों की सी जिन्दगी बिताना नापसन्द हो जायेगा।"

हेंग-यु-आन से यह आदेश पाकर क्वांग चू ने फौजी-कौंसिल के लिए गांव के मन्दिर में उपयुक्त स्थान तैयार करवाया। इस जगह को चार भागों में बांटा गया। हर भाग में मन्दिर के बड़े आँगन का एक हिस्सा पड़ता था। पूर्वीय भाग में गांव की सरकार का दफ़्तर था। दक्षिण भाग में गांव का स्कूल था, पश्चिमी भाग में फ़ौजी कौन्सिल के चेयरमैन का दफ़्तर था और उत्तरी भाग का बड़ा कमरा सुरक्षा-सेना की ट्रेनिंग के लिए रिज़र्व कर दिया गया।

चूंकि सुरक्षा-सेना के अधिकतर लोग टिड्डी कुंज के थे, इसलिए

छोटी-छोटी बातों पर क्वांग चू की राय उनसे न मिलती। लेकिन हेग-युआन की सलाह के कारण वह अपने व्यवहार में काफ़ी सावधानी बरतता। मिसाल के लिए उसके अपने पास कान-पू की एक वर्दी थी, चिया स्यांग के पास भी वर्दी थी लेकिन नन्हे युआन के पास कोई वर्दी न थी। गांव के मन्दिर में दूसरे वर्दीधारी कर्मचारियों के साथ काम करते समय उसमें हीन-भावना लगती। इस लिए एक दिन क्यांग-चू ने उससे कहा, 'फौजी कौंसिल के चेयरमैन होने की हैसियत से तुम्हारे पास भी एक वर्दी होनी चाहिए। हम तुम्हें बनवा देंगे।" इसके कुछ दिनों बाद ही सरकारी पैसे से एक बिल्कुल नई वर्दी बनकर आ गई और नन्हे युआन को दे दी गई।

क्वाँग चू के पास एक फाउन्टेन पेन था। चिया स्यांग के पास भी एक था। लेकिन नन्हें युआन के पास था ही नहीं। और अब चूँकि वह अफसरों की पोशाक पहनता था जिसमें सीने पर भी एक ज़ेब बनी हुई थी, उसे सीने तक हाथ ले जाने पर वहां कुछ खाली-खाली सा लगता। यह भाँप कर चिया स्याँग ने कहा, "मेरे पास एक और फाउन्टेन पेन है जिसे मैं इस्तेमाल नहीं करता।" दूसरे दिन ही नन्हें युआन को क़लम भेंट कर दिया गया। उसने उसे बड़ी शान से अपनी जेब में खोंस लिया।

क्वांग चू अपने लिए ईन्धन की लकड़ी काटने न जाता था, और न चिया स्याँग ही। नन्हें युआन ने लकड़ी बटोर कर छोटे-छोटे गट्ठर बनाये, लेकिन अपनी वर्दी की शान देखकर वह उसके लिए परेशान हो गया। फिर उसे ऐसा नीच काम करते हुए शर्म भी लगी, जबकि सब लोग यह जानते थे कि वह फौजी कौन्सिल का चेयरमैन था।

क्वाँग चू ने कहा, "कमरा गरम रखने के लिए तुम्हें ज्यादा लकड़ी तो चाहिए नहीं। फिर क्यों नहीं ईन्धन काटने के लिए अपनी सुरक्षा-सेना के किसी आदमी को भेज दिया करते?"

नन्हें युआन की काया पलट होने लगी। वह अब अपनी शान के

खिलाफ ईन्धन काटने या पानी भरने न जाता। सुरक्षा-सेना के सिपाही ही उसके लिए यह सब करते जबकि वह स्वयं अपनी मेज़ पर कोहनी टेककर बैठ जाता और चेयरमैन होने के सपनों में रमा रहता।

एक दिन उसके चाचा बूढ़े चिन ने उसकी कड़ी भर्त्सना की, क्योंकि उसकी लापरवाही के कारण वह अपने खेतों को ऊसर बनते न देख सकता था। "देखो नन्हें युआन," उसने कहा, "पिछले एक महीने में ही तुम्हारा हाल क्या से क्या हो गया है ? तुम अपने सीने पर हाथ बाँधे चहल-क़दमी करते फिरते हो और अपने किसी काम को हाथ भी नहीं लगाते। जब तुम ट्रेनिंग के लिए बाहर गये थे उस समय तुम्हारे मित्रों ने तुम्हारे खेत गोड़ दिए थे, लेकिन जब से लौटकर आये तुम्हारे खेत की आधी फसल सूख गई है। तुम्हारी अक्ल में इतना भी नहीं आता कि एक बार फिर से गोड़ने की ज़रूरत है। आज तो वहाँ नाज के पौधों से ज्यादा घास-पात उगी हुई है। अपनी फ़सल के बिना तुम कहाँ से खाकर जीओगे ?"

नन्हें युआन ने एक अरसे से अपने खेतों की ओर आँख उठाकर भी न देखा था। लेकिन चचा की इस फटकार के बाद उसे भी लगा कि कम से कम एक बार तो जाकर खेतों को देख आया जाय। इसलिए नाश्ते के बाद वह अपने कन्धे पर कुदाल रखकर खेतों की ओर चल पड़ा।

दुर्भाग्य की बात रास्ते में स्कूल जाते हुए चिया स्याँग से उसकी मुँठभेड़ हो गई।

चिया स्याँग ने चकित होकर पूछा, "क्या तुम कुदाल चलाओगे ?"

नन्हा युआन शर्म से वहीं गड़ गया। उसे यह लगा कि उसका यह रूप फौजी कौंसिल के चेयरमैन की शान में बट्टा लगाता है। "मैं तो सिर्फ़ खेत पर एक नज़र डालने के लिए जा रहा हूँ," वह इतने धीमे से बुदबुदाया कि उसकी आवाज़ ठीक से सुनाई भी न दी।

"तो फिर ज़ल्दी किस बात की है," चिया स्याँग ने कहा, "जाने से

पहले आओ कुछ देर गपशप ही करें।"

प्रतिरोध किये बिना ही वह चुपचाप उसके पीछे-पीछे मन्दिर के सिंहद्वार तक चला गया और चोरी-चोरी कुदाल को एक कोने में टिका कर वह बड़ी देर तक चिया-स्याँग और क्वाँग-चू से गप्पें मारता रहा। इस तरह कुछ काम-धाम किए बिना ही सुबह का सारा समय व्यतीत हो गया।

दुपहर का भोजन करने के बाद भी वह यही सोचता रहा कि अपने खेत में कुदाल चलाने से उसकी शान में बट्टा लगेगा। इसलिए अगले दिन उसने अपनी जगह काम करने के लिए दो सुरक्षा-सैनिकों को आदेश देकर भेज दिया।

अच्छा तो यह दोनों सुरक्षा-सैनिक कौन थे ? यह तो और कोई नहीं, वहीं नन्हा शुन और नन्हा फू थे, जिनके साथ वह पहले ली यू-त्साई की गुफ़ा में घुल-घुलकर दोस्ती की बातें किया करता था। अब चूंकि वे उसके नीचे काम कर रहे थे, इसलिए उसकी अवज्ञा नहीं करना चाहते थे, वैसे उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी। वे धीरे-धीरे नन्हें युआन के खेत की ओर चल पड़े और वहाँ पहुँचकर उन्होंने अनमने ढंग से आहिस्ता-आहिस्ता काम करना शुरू कर दिया।

'अब एक और देवता की पूजा करनी पड़ेगी' नन्हें शुन ने कहा, "हमने कितनी-कितनी उम्मीदें नहीं बाँधी थीं कि फौज़ी कांउन्सिल के चेयरमैन के रहते हमारी कठिनाइयाँ कुछ कम हो जायगी। लेकिन चेयर-मैन की कुरसी पर बैठने भर की देर थी कि वह पुराने बदमाशों के साथ घुल-मिल कर एक हो गया, और अपनी कोशिशों के लिए हमें नई बेड़ियाँ ही मिलीं।"

इस पर नन्हें फू ने घृणा से उत्तर दिया "एक वक्त था जब हमने उसकी कठिनाई को आसान करने के लिए खुद अपनी ओर से उसका खेत गोड़ने को कहा था और अब है कि वह हुकुम देकर हमसे यह करवाता है!

"हमने तो इसलिए उसकी मदद करनी चाही थी कि उसे बाहर भेजा जा रहा था। भला अब वह अपना खेत कैसे गोड़ सकता है ! इसलिए वह हम पर हुकुम चलाता है। अगर हमें मालूम होता कि हमारी नेकी का यह फल मिलेगा तो क्या उसकी मदद के लिए एक उंगली भी उठाते ? तब तो शायद हमारे स्वास्थ्य के लिए यह अच्छा होता कि हम खूब लम्बी तान कर सोते !"

"कितने दुख की बात है कि बिचारे यू-त्साई को यहाँ से निकाल दिया गया, नहीं तो वह ज़रूर ही इसके बारे में कोई अच्छी सी तुकबन्दी गढ़ता।" नन्हा फू बोला।

"तो क्या हम नहीं गढ़ सकते ?" नन्हे शुन ने सुझाया।

"आओ कोशिश कर देखें।" नन्हे फू ने सहमति प्रगट की, "मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

गोड़ने का काम तो जैसे-तैसे ही चलता रहा। दोनों में से किसी को भी इस बात की परवाह न थी कि गुड़ाई ठीक से चल रही है या नन्हें युआन के खेत की फ़सल को खराब करने के लिए जंगली घास खड़ी रह गई है या नहीं। लेकिन अपनी तुकबन्दी तैयार करने में वे बड़े एकाग्र-चित्त होकर लगे रहे। नन्हें शुन ने एक पंक्ति सोची तो नन्हे फू ने अगली जोड़ी। कभी-कभी एक दूसरे की पंक्ति को बदल कर वे कोई नई और अच्छी पंक्ति सुझाते। और उनके प्रयत्नों का यह परिणाम निकला।

बिगड़ा दिमाग़ नन्हें युआन का
रही नहीं अब खैर
हमें चाटने को वह कहता
अपने दोनों पैर
रंग ढँग उसके बदल गये सब
शोभा देखो न्यारी
जेब में फाउन्टेन पेन लगा है
सिर पर टोपी सरकारी

ईन्धन काटने भला क्यों जाये वह
श्रम से मरती नानी
प्यासा चाहे मर जाये पर वह
नहीं भरेगा पानी

हाथ डालकर जेबों में वह
करता रहता आराम
हम लोगों को करने पड़ते पर
उसके सारे काम

'जोतो खेत हमारे जाकर' वह
फौरन हुक्म सुनाता
आखिर तो वह अफ़सर ठहरा
'ना' कोई नहीं कर पाता

खुद तो करता मौज बहारें
रखकर ऊँची नाक
डाँट डपट पर हमको मिलती
जैसे हों उसके दास

उस दिन शाम को ही यह तुकबन्दी उसके रचनाकारों ने सब ओर फैला दी। गाँव के पूरबी भाग में अगले दिन हर किसी की ज़ुबान पर यह चढ़ गई। लेकिन फिर भी गाँव के मन्दिर में सरकारी रौब-दाब से बैठे नन्हे युग्रान के कानों तक इसकी भनक भी न पहुँची।

खैर यह तो बहुत छोटी-सी बात थी। लोगों को तो सचमुच में गुस्सा आया। उन्हें यह मालूम हुआ कि सताए हुए लोगों को हरजाना देने के लिए सी-फू के ऊपर जो रक़म लगाई गई थी, वह रक़म फौज़ी काउन्सिल के खर्च के लिए दे दिये जाने का फैसला हुआ है। अपने अत्याचारों को स्वीकार करने और आगे उनका प्रायश्चित करने का लिखित वायदा करके सी-फू लगभग दो महीने पहले ही क़ैद से छूट कर आ गया था। उस पर

जो हरजाना बाँधा गया था, उसकी रक़म तीन हज़ार चार सौ डॉलरों के लगभग थी। इसके अतिरिक्त उसे इस बात का भी आदेश दिया गया था कि येन खानदान को दावतें देने के लिए उसने जिन-जिन लोगों से जबरन आटा वसूल किया था उन सब लोगों का कई सौ क़ैटी आटा उस पर उधार था। हेंग-युआन का इस लूट में आधा हिस्सा था, इसलिए सी-फू ने आग्रह किया कि वह भी कर्ज़ अदा करने में हाथ बँटाये। भला हेंग-युआन अपनी जेब से पैसे क्यों अदा करता? उसने सी-फू को कहला भेजा कि वह कुछ देर और रुके।

भाग्यवश पहली अगस्त के दिन सुरक्षा-सेना की परेड होनी थी। नन्हे युआन ने जाकर कुंग-चू से राशन के थैले, हथगोलों के खोल, रसद की बोरियाँ और सात-आठ आदमियों के लिये तीन दिन का राशन माँगा। हैरानी तो इस बात की, कि हेंग युआन ने अपनी आदत के विपरीत, इस मामले में सहृदयता दिखाई। कान-पूओं की एक मीटिंग में बताया गया कि गाँव की शासन-व्यवस्था के लिए पर्याप्त धन नहीं है, साथ ही यह सुझाव भी रखा गया कि सी-फू के हरजाने वाले पैसों से काम निकल सकता है।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया लेकिन कुछ देर बाद लोगों ने इस रक़म के बारे में उत्सुकता प्रकट की। यह तो सभी जानते थे कि सी-फू को हरजाना देना पड़ेगा, लेकिन सही रक़म क्या होगी, यह किसी को मालूम न था। चूँकि मा-फेंग भी एक ही काईयाँ था, इसलिए कुछ लोगों ने उसे सलाह दी कि वह जाकर मुखिया से सारी बातों का पता लगा लाए। मा झटपट राजी हो गया। लेकिन यह जानते हुए कि गाँव का असली मुखिया हेंग-युआन है, वह सीधा बूढ़े के घर पहुँचा।

गहरी दोस्ती जतलाते हुए उसने सलाह दी, "लोगों में सी-फू के मामले पर गहरा असन्तोष है। मुझे डर है कि वे हरजाने की बात मनवा कर रहेंगे।"

काईयाँ हेंग-युआन फ़ौरन ताड़ गया और कहने लगा, "लेकिन हम

करें भी क्या ? पंचायत के पास पैसों की कमी है और अब हम मामले को ज्यादा टाल भी नहीं सकते। फैसले में चार-पाँच दिन ही बाक़ी हैं। इसीलिए कान-पूत्रों की मीटिंग में प्रस्ताव पास हुआ था। तुम भी तो वहीं थे ? क्यों ? हाँ, दोस्तों का हिसाब-किताब अलग से भी हो सकता है। मैं सी-फू से कहूँगा।"

"मैं इसके लिये नहीं आया।" मा-फेंग ने जवाब दिया। "मैं तो……"

हेंग युआन ने फौरन बात काटी "अगर वह तुम्हारा हरजाना अदा नहीं करता, तो मैं उस पर बहुत खफा होऊँगा। तुम्हें जल्दी हो तो मुझ से हरजाना ले लो, मैं बाद में उससे वसूल कर लूँगा हम सब कान-पू हैं। हम लोगों में ही एकता न रही तो क्या फ़ायदा ?"

हरजाना मिलने का आश्वासन पाकर फेंग-मिग चुप हो गया। उसने लोगों की बातों पर कान देना बन्द कर दिया।

हरजाना तय होने की बात सुनकर सी-फू गाँव में लौट आया। उसने हेंग युआन से मिल कर मा-फेंग-मिग की रक़म अदा कर दी। रहे गाँव के और लोग…सो उन्हें कुछ बोरे, हथगोलों के खोल और बाजरे की बीस परातों से टाल दिया गया।

पहली अगस्त के सेना-दिवस के अवसर पर येन चियाशान की टुकड़ी सबसे अधिक हथियारों से सुसज्जित थी। एक बार फिर "आदर्श गाँव" की प्रशंसा की गई और गाँव के मुखिया को पुरस्कार दिया गया।

(सातवाँ)
हेंग युआन और क्वाँग-चू का भंडाफोड़

पन्द्रह सितम्बर के बाद जब फसल की कटाई धूमधाम से शुरू हुई तो कृषक सहायता-समिति के प्रधान कामरेड याँग को फसलों का निरीक्षण करने के लिए छठे जिले में भेजा गया। जिले के केन्द्रीय दफ्तर में आकर

उसने "आदर्श" गाँव देखने की इच्छा प्रकट की। कामरेड याँग जो सदा येनचियाशान की प्रशंसा करते थे, उन्हें गाँव में लिवा लाए।

नाश्ते के बाद कामरेड यांग येन चियाशान की ओर चल पड़े। जब वे दफ़्तर पहुँचे तो क्वांग-चू और नन्हा युआन शतरंज खेल रहे थे। किसी चाल पर आपस में तू-तू मैं-मैं हो रही थी। कुछ देर चुपचाप तमाशा देखने के बाद कामरेड यांग ने पूछा, "तुम दोनों में से गाँव का मुखिया कौन है?"

दोनों ने नज़र ऊपर उठाई तो क्या देखते हैं कि एक फूहड़ देहाती सिर पर तौलिया बाँधे खड़ा है। उसके बदन पर सफ़ेद सूती कुर्ती और नीले पजामे के अतिरिक्त और कुछ न था। उसके भारी-भरकम जूते तो निहायत भद्दे दिखाई दे रहे थे। क्वाँग चू ने सोचा कि पास के गाँव का कोई सन्देशवाहक है। उसने अँगड़ाई लेते हुए पूछा, "तुम कहाँ से आये हो?"

"मैं ज़िला सरकार से आया हूँ।" कामरेड याँग ने उत्तर दिया।

क्वाँग चू अब भी न समझा। उसने लापरवाही से कहा, "क्या काम है?"

नन्हा युआन बेसब्री से पागल हो रहा था। उसने शतरंज की चाल चलने का आग्रह किया।

कामरेड याँग चिढ़ कर बोला, "आप लोग इस समय व्यस्त हैं··· फ़ुर्सत के समय काम बताऊँगा।" और वह अपनी गठरी दहलीज पर पटक कर वहीं सुस्ताने बैठ गया।

अब क्वाँग चू का माथा ठनका। वह फौरन शतरंज छोड़कर खड़ा हो गया। कामरेड याँग भी ताड़ गया था कि मुखिया कौन है। लेकिन उसने अनजान बनते हुए पूछा, "मुखिया कहाँ गया है?"

क्वाँग-चू ने शर्माते हुए अपना परिचय दिया। इस पर कामरेड याँग ने ज़िला सरकार का पत्र निकाला, जिसमें लिखा था—

"इस पत्र के वाहक प्रान्तीय कृषक-सहायता-समिति के प्रधान मिस्टर

याँग हैं। वे येनचियाशान में फ़सल की कटाई का निरीक्षण करेंगे—आशा है कि उनके स्वागत का उपयुक्त प्रबन्ध होगा, आदि।"

आगन्तुक का ओहदा जान कर क्वाँग-चू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने नम्रतापूर्वक अभिवादन किया और उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया।

कामरेड याँग ने 'न' कर दी। "अच्छा हो अगर गाँव वालों पर मेरी खुराक का जिम्मा डाल दिया जाय।"

क्वाँग-चू चिकनी-चुपड़ी बातें करने ही वाला था कि कामरेड याँग ने कहा, "बहस करना व्यर्थ है। यही सरकारी कानून है।"

इस तरह का मुँहतोड़ जवाब सुनकर क्वाँग चू घबरा गया। उसकी समझ में न आया कि ऐसे जाहिल गंवार से क्या कहे। उसने कहा, "अच्छा, आप यहीं ठहरिये, मैं सब इन्तजाम कर देता हूँ।"

वह भागता हुआ हेंग युआन के घर पहुँचा और ज़िला सरकार का खत उसके हाथों में थमा दिया।

हेंग-युआन ने चेतावनी दी "उसके कपड़ों को देखकर लापरवाही दिखाना मूर्खता होगी। मुझे सी-फू ने इस आदमी के बारे में सब कुछ बताया है। कहते हैं कि प्रान्तीय सरकार के मन्त्री भी बहुत से मामलों में उस से सलाह-मशवरा लेते हैं।"

"अरे हाँ—याद आया।" क्वांग चू ने सचेत होकर कहा। "जब मैं ज़िला सरकार की मीटिंग में था तो मैंने नीले कपड़ों वाले ऐसे ही एक व्यक्ति को देखा था। वही चेहरा, वही आँखें।"

"तुम फौरन जाकर उसकी देखभाल करो; देखना कहीं मामला बिगाड़ न बैठना।"

क्वांग चू दरवाज़े तक जाकर वापस लौट आया। "मैंने उसे खाने के लिये घर आने का न्यौता दिया था, लेकिन उसने 'न' कर दी। वह साधारण किसानों के घर ठहरना चाहता है। मैं क्या करूँ?"

हेंग युआन खीज कर बोला, "हर बात में मेरा मुंह क्यों ताकते हो?

इसमें क्या बात है ? उसकी ऐसी ज़िद है तो उसे पुराने टिड्डी कुंज में बूढ़े चिन के यहाँ ठहरने दो। सुबह-शाम भूसी खाने के बाद वह स्वयं ही तुम्हारे पास दौड़ा आयेगा।"

"लेकिन पुराने टिड्डी-कुंज के लोगों का तुम्हें कोई डर नहीं ? विशेषकर जब उनसे हमारा इतना पुराना वैर है।"

हेंग युआन ने झल्ला कर कहा, "तुम्हें इतनी भी तमीज़ नहीं कि कैसे आदमी के यहाँ उसे ठहराना चाहिये। बूढ़ा चिन भला शोरग़ुल मचायेगा ? ज्यों ही मेहमान खाना खा चुकें, उसे फौरन दफ्तर में वापस ले आना। समझे ?"

सलाह-मशवरे के बाद क्वांग चू "खेतों के निरीक्षक" के भोजन का प्रबन्ध करने बूढ़े चिन के यहाँ गया।

बूढ़े चिन पर मानो गाज गिर पड़ी। ज़िला सरकार के अफ़सर पहले कभी देहातियों के घरों में न ठहरे थे। बूढ़े चिन को फिक्र इस बात की थी कि वह अतिथि-सत्कार का खर्च कहाँ से करेगा। उसने सोचा कि देहातियों को लूटने का यह एक नया तरीका है। भला मेहमान की खातिर सूखी दाल रोटी से कैसे होगी ? ज़िला सरकार के अफ़सर को तो बढ़िया खाने देने होंगे। यह सोच कर वह नमक, आटा उधार लेकर अतिथि के आने की टीमटाम करने लगा। सुबह से दोपहर तक रसोईघर में जुटे रहने के बाद पति-पत्नी शोरबे के तीन प्याले तैयार कर पाये।

दोपहर के खाने के समय कामरेड यॉंग ने देखा कि उनके लिए अलग से मिट्टी की हँड़िया में शोरबा पकाया गया है और परिवार के बाकी लोगों का शोरबा एक बड़े से पतीले में अलग से रखा हुआ है। ऐसा अतिथि-सत्कार उन्हें बहुत अखरा।

बूढ़े चिन ने शोरबे का प्याला हाथ में लेकर अतिथि की अभ्यर्थना की, "श्रीमान् जी, आरम्भ करें। हम जैसे ग़रीबों के घर में है ही क्या ? ...सिर्फ़ एक प्याला शोरबा।"

कामरेड यॉंग इस अभ्यर्थना से और घबरा गये। उन्होंने धीमे स्वर

में कहा, "देखिए, आपन यह सब क्यों किया ? हम सब एक ही शोरबा खाएँगे।"

बूढ़े चिन की पत्नी ने जवाब दिया, "श्रीमान् जी, सिर्फ़ एक प्याला शोरबा है। कुछ वर्ष पहले हम अपने मेहमानों की अच्छी ख़ातिर करते थे। लेकिन जब से हमारी जमीन गिरवी रखी गई है, तब से हम भिखारी हो गये हैं।"

कामरेड याँग ज़मीन के विषय में कुछ पूछने वाले ही थे, कि बूढ़े चिन ने गुस्से से चिल्लाकर कहा, "खूसट, बकवासी ! तुम्हारी मनहूस जीभ अब कहाँ लपलपा रही है ? चुप रहने से मौत तो नहीं आ जाएगी तुम्हें। तुम्हें क्या पता ! जब देखो बकवास करती रहती हो।"

बूढ़े चिन का रुख देखकर कामरेड याँग नम्रता पूर्वक चुप बने रहे, बूढ़ा चिन भी पत्नी की ज़बानदराजी के डर से चुप हो रहा।

इतने में नन्हे फू ने पूछा, "अतिथि किस गाँव के रहने वाले हैं ?"

बूढ़े चिन ने जवाब दिया, "ये महोदय ज़िला सरकार से आये हैं।"

कामरेड याँग ने प्रतिवाद किया, "कृपया मुझे 'महोदय' न कहें। मेरा नाम याँग है और मैं प्रान्तीय कृषक-सहायता-समिति से सम्बन्ध रखता हूँ। मुझे आप सिर्फ़ 'कामरेड याँग' अथवा 'बूढ़ा यांग' कह कर पुकारिये।"

नन्हे फू की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?" उत्तर पाने पर उन्होंने पूछा, "तुम्हारी उम्र ?"

नन्हा फू फ़ौरन अतिथि के साथ घुल-मिल गया।

चिन परिवार भोजन करने बैठा। बूढ़ा चिन, चिन की पत्नी, उनका बेटा नन्हा फू और उनकी पाँच वर्ष की बेटी भी थी।

एक प्याला शोरबा खाने के बाद कामरेड याँग ने बड़े पतीले के पास जाकर आलू और कद्दू की तरकारी निकाली। "वाह, कैसी अच्छी खुशबू

है ।" पति-पत्नी ने उन्हें रोकना चाहा, लेकिन कामरेड याँग अपनी ज़िद पर डटे रहे ।

मुश्किल से खाना खत्म हुआ था कि नन्हा शुन, नन्हे फू की तलाश में आया । दरवाज़े पर ही कामरेड याँग से भेंट हो गई और एक नम्र अभिवादन के बाद उसने बूढ़े चिन से मिन्नत की, "चाचा सब लोग फ़सल काटने चले गये हैं । मेरा बाप बीमारी की वजह से नहीं जा सका । क्या नन्हा फू दोपहर के बाद मेरा हाथ बँटा सकेगा ?"

बूढ़े चिन ने जवाब दिया, "हमें अपना बहुत काम करना है ।"

"मैं आपकी मदद कर दूँगा, अगर आप दोपहर के बाद नन्हे फू को भेज दें ।"

कामरेड याँग ने पूछा, "क्या आप अभी तक अलग-अलग कटाई ही करते हैं ? कृषक-सहायता-समिति की ओर से क्या 'पारस्परिक सहायता' की टुकड़ियाँ नहीं संगठित की गईं ?"

"नहीं तो ! हम तो अलग से ही कटाई करते हैं । भला 'कृषक-समिति' अपने सिर पर आफ़त क्यों मोल ले ।" नन्हे शुन ने जवाब दिया ।

"तो कृषक-समिति भला है किस मर्ज़ की दवा ?" कामरेड याँग ने पूछा ।

"ईश्वर जाने, मुझे क्या पता ?"

कामरेड याँग ने धीमे स्वर से कहा, "कैसा 'आदर्श' गाँव है ? आदर्श गांव, वाह !"

आदर्श शब्द सुनते ही नन्हे फू की छोटी लड़की को जो अभी पाँच ही वर्ष की थी, एक तुकबन्दी याद आ गई—

"आदर्श है या बिन आदर्श,
देखो पूरब से पच्छिम की ओर,
यहाँ आटे के पड़ते हैं लाले,
वहाँ मिठाई खाते ढोर ।"

कामरेड याँग ने फौरन इस तुकबन्दी को दुहराने की प्रार्थना की, "तुम बहुत अच्छा सुनाती हो। ज़रा फिर से सुनाना।" लेकिन बूढ़े चिन का क्रोध भरा चेहरा देखकर लड़की को दुहराने की हिम्मत न हुई।

पीठ फेरे रहने के कारण कामरेड यांग बूढ़े चिन का क्रोध भरा चेहरा न देख सका। उसने नन्ही लड़की से दुबारा आग्रह किया, "तुम्हें यह किसने सिखाया ?"

लड़की ने नन्हे शुन की ओर उंगली उठाई—"उसने।"

बूढ़ा चिन ग़ुस्से से उबल रहा था। उसके मन में यह धारणा बैठ गई थी कि अफ़सर, अफ़सर का साथ देता है। आख़िर समाज में दो श्रेणियाँ हैं—अफ़सर और जनता। कहाँ ज़मीन कहाँ आसमान मान लो कहीं कामरेड यांग ने दफ़तर में जाकर उस बात की चरचा की तो चिन परिवार की आफ़त आजायगी। लड़की को घूँसा दिखाते हुए उसने धमकाया, "चुप रहो।"

नन्हे शुन ने खीझ कर कहा "काका" बच्ची को तुकबन्दी सुनाने दो। मैंने ही तो यह तुकबन्दी लिखी है। अगर मैं नहीं डरता तो तुम्हारा क्या नुक़सान है! तुम्हीं बताओ कि इसमें क्या झूठ है ? क्या तुम्हें अधजली-खिचड़ी खाकर अपने पेट की आग नहीं बुझानी पड़ती।"

बूढ़ा चिन चुप रहा। उसे जब कोई बात पसन्द न आती, तो वह मन मसोस कर रह जाता।

बूढ़ा चिन और नन्हा फू खेत पर चले गये।

पहले कामरेड याँग का विचार कृषक-सहायक-समिति के प्रधान से मिलने का था। लेकिन सारी बातें सुन कर वह भांप गया था कि ऐसा करना बेकार होगा। उसने फैसला किया कि ग्रामीण जनता से घुल-मिल कर सही स्थिति का पता लगाया जाय। उसने भी खेत पर जाने का प्रस्ताव किया।

बूढ़े चिन ने बहुत आना-कानी की, लेकिन कामरेड याँग कन्धे पर हँसिया रखकर उनके पीछे हो लिया।

गुफाओं की छत पर लोग धान कूट रहे थे। हर परिवार के अनाज के बीच बाजरे की छोटी-सी ढेरी लगी थी।

कामरेड याँग मेहनती किसान था। उसने देखते ही देखते सारा काम निपटा डाला।

अनाज कूटने के बाद सब लोग पुराने कुँज की छाया में बैठे। सूखी रोटी और पानी से नाश्ता करने के बाद सब लोग कामरेड यांग को घेर कर बैठ गये। सिर्फ़ बूढ़ा चिन आदर भाव प्रदर्शित करने के लिए एक ओर चुपचाप खड़ा रहा।

नन्हे शुन ने कहा, "कामरेड याँग, आप वास्तव में बड़े कुशल किसान हैं। मालूम पड़ता है आपके पास बहुत सी ज़मीन है?"

कामरेड याँग ने जवाब दिया, "मेरे पास तो ज़मीन का बहुत छोटा टुकड़ा है। इस साल तक मैं खेत-मजदूर था।"

ज्योंही बूढ़े चिन ने यह बात सुनी कि कामरेड याँग के प्रति उसका आदर और श्रद्धा का सारा भाव जाता रहा। उसने दीवार से उतर कर नन्हे-फू को आवाज़ दी, "यहाँ से भूसा क्यों नहीं उठाते? आखिर किस बात में लगे हो!"

नन्हे-फू को पिता की यह बात बहुत अखरी, विशेषकर जब कामरेड यांग की बातचीत बहुत ही दिलचस्प हो रही थी। उसने पिता को टालते हुए कहा, "हमें नन्हे शुन के यहाँ भी तो जाना है।"

बूढ़े ने गरजते हुए कहा, "उसके लिए बहुत-सा समय पड़ा है। पहले भूसा उठाओ। जहाँ गप्पें शुरू हुईं कि दीन-दुनियां भूल गये। सभी छोकरों का यह हाल है।"

आखिर नन्हे फू को उठना ही पड़ा। खाली भूसे की टोकरी को बांस पर लटका कर जब वह लौटा तो बूढ़े चिन ने और लोगों का ख्याल न करते हुए चिल्ला कर कहा, "देखो फर्श बिल्कुल साफ़-सुथरा रहना चाहिए। बीच में दो झाड़ू मारकर मेरी आंखों में धूल मत झोंकना।"

बूढ़े की गुस्ताखियों से सब लोग तंग आगये थे। आखिरकार नन्हे

पाओ ने झींक कर कहा, "बूढ़े, क्या बक-बक मचा रखी है ! अगर बात-चीत में कोई दिलचस्पी नहीं तो घर जाकर आराम करो । अपने से कम उमर के छोकरे से झाड़ें खाकर बूढ़ा चिन चुपचाप वहाँ से खिसक आया, और फिर वहाँ दिखाई नहीं दिया ।

बूढ़े के जाने के बाद नन्हे शुन ने कामरेड यांग से बताया, "यह बूढ़ा निरा बुद्धू है । जिन्दगी भर शोषण सहने के बाद उसके मन में डर समा गया है । ग़रीब होने के कारण वह बाक़ी ग़रीबों से भी नफ़रत करता है । आपके प्रति उसका रुख़ उसी दम बदल गया, जब आपने बताया कि आप खेत-मज़दूर थे ।"

कामरेड याँग ने हँसते हुए कहा, "ठीक कहते हो । मैं भी देख रहा था ।"

हेंग युश्रान के आदेशानुसार क्वाँग चू कामरेड यांग को लेने आया । पर मेहमान का कहीं पता न था । लोगों से मालूम हुआ था कि वह पुराने टिड्डी-कुँज में कटाई देखने गया है । लेकिन वह कल्पना में भी न सोच सकता था कि प्रान्तीय कृषक-सहायक-समिति का प्रधान धान कूटने में व्यस्त होगा । यह सोच कर वह वापस लौट आया ।

कुछ देर बाद वह फिर वहाँ पहुँचा । क्वाँग चू को देखते ही लोगों की हँसी बन्द हो गई । सब लोगों की अवहेलना करते हुए उसने कामरेड याँग से कहा, "आइये दफ्तर में चलें ।"

कामरेड याँग ने उत्तर दिया, "अच्छी बात है, तुम वहाँ चले जाओ । मैं इन लोगों से बातें करने के बाद वहाँ आऊँगा ।"

"इन लोगों से भला कोई क्या बातें कर सकता है । चलिए दफ्तर में चल कर हम आराम करें ।" उसने नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा ।

क्वाँग चू की गुस्ताखी को देखकर कामरेड याँग ने तड़ाक से जवाब दिया, "यह मेरा काम है । अगर तुम्हें मुझ से कोई बात करनी है तो कुछ देर इन्तजार करो ।"

इस अपमान से तिलमिला कर क्वाँग चू ने वहाँ से भागना ही उचित समझा। लेकिन साथ ही वह इन लोगों की बातों को जानने के लिए भी उत्सुक था। इसलिए वह थोड़ी दूर जाकर खड़ा हो गया।

उसे खड़ा देख कर सब लोग जान-बूझकर चुप रहे। झुण्ड के लोग मन्दिर में स्थित लोहान[२] की अठारह मूर्त्तियों जैसे दीखते थे। उनकी चुप्पी देख कर ऐसा लगता था, मानो सब लोग गूँगे हों।

क्वाँग चू की उपस्थिति के कारण लोगों में फैली दहशत को देखकर कामरेड याँग सारी स्थिति को ताड़ गये, और उसे भगाने के इरादे से उन्होंने आवाज़ दी, "तुम यहाँ किस लिये खड़े हो ?"

क्वाँग चू "नहीं, ओह कुछ नहीं" कहकर वहाँ से दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ।

"यह आदमी न जाने कैसा अजब मुखिया है!" कामरेड याँग ने उसे सुनाने के इरादे से जान-बूझकर ऊँचे स्वर में कहा, "यह नहीं चाहता कि मैं किसानों से बातें करूँ। तो क्या मैं अपनी सारी ताक़त मुखिया महोदय के लिए ही रखूँ।"

इस बात को सुनकर सब लोग खुशी से गद्‌गद् हो गये। कामरेड यांग के प्रति उनका आदर और भी बढ़ गया।

अंधेरा बढ़ रहा था। नन्हा शुन बार-बार नन्हे फू को खेत पर चलने के लिए आग्रह कर रहा था। कामरेड याँग भी उन लोगों के साथ जाने को तैयार हो गये। वह जानते थे कि नन्हा शुन बड़ा स्पष्टवादी है और उससे गाँव की सही स्थिति मालूम हो सकेगी।

"एक दरान्ती और ले लो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ", कामरेड याँग ने कहा।

यह सुनकर नन्हा मिन और नन्हा पाओ भी साथ चलने के लिये तैयार हो गये। एक सहायक की बजाय नन्हे शुन को चार सहायक

२. बौद्ध भिक्षु

मिल गये। सब लोग मज़े से बातें करते हुए नन्हे शुन के खेत की ओर बढ़े।

(आठवाँ)
बूढ़ों और नन्हों द्वारा अपनी खोई हुई ज़मीन को पुनः प्राप्त करने का संघर्ष

नन्हे शुन के खेत में खूब चहल-पहल थी। जब से कामरेड याँग ने नन्हे फू की बहन द्वारा सुनाई गई तुकबन्दी की प्रशंसा की थी तब से नन्हा शुन उन्हें सब कुछ बताने के लिए तैयार हो गया था।

नन्हे पाओ ने कहा, "यह तो सिर्फ़ शागिर्द है। इसका उस्ताद तो गजब की तुकबन्दी करता है।"

"क्या यहाँ भी कोई तुक्कड़ उस्ताद रहता है ?" नन्हे शुन की ओर देख कर कामरेड याँग ने पूछा। "ज़रा हमें भी अपने उस्ताद की रचनाएँ सुनाओ।"

नन्हे शुन ने हामी भरते हुए कहा, "आपकी ऐसी इच्छा है तो मैं ज़रूर सुनाऊँगा, और अँधेरा होने तक सुनाता जाऊँगा।"

और फौरन ही उसने तुकबन्दियों का सिलसिला शुरू कर दिया और साथ ही साथ हर तुकबन्दी से पहले वह उसकी भूमिका बांधता था। इस तरह उसनें सारे गाँव का इतिहास सुना डाला। कामरेड याँग मन्त्र-मुग्ध होकर सुनता रहा। उनकी दिलचस्पी इन तुकबन्दियों के रचयिता के प्रति बढ़ती गई। उन्होंने नन्हे शुन कहा, "आओ खाने के बाद उस्ताद के यहाँ चलें।"

नन्हे शुन ने कहा, "दुर्भाग्य से उस्ताद अब इस गाँव में नहीं है। हरामी कुंग चू ने उन्हें गाँव से खदेड़ दिया था। इसके बाद उसने ज़मीन की पैमाइश की सारी कहानी सुनाई। साथ ही नन्हे युआन और ली यू-त्साई पर ढाए गये ज़ुल्मों का हाल भी सुनाया।

"वह गाँव यहाँ से कितनी दूर है ?" कामरेड याँग ने पूछा।

"नन्हे शुन ने पहाड़ियों की दक्षिण-पश्चिम दिशा में इशारा किया, "विशेष दूर भी नहीं। क़रीब पाँच ली दूर है।"

"हम खेत में काम करते हैं। तुम लपक कर उस्ताद को बुला लाओ।"

"यह तो चला जायगा। पर मान लो उस्ताद को आने की हिम्मत न हुई ?" नन्हे मिंग ने कहा।

"उन्हें मेरी तरफ से आश्वासन देना। मैं इस बात की गारन्टी करता हूँ कि उनका बाल भी बाँका न होगा।"

"नन्हा फू सब से अधिक तेज़ भागता है। आप उसे भेजिए।" नन्हे शुन ने जवाब दिया।

नन्हा फू अपनी दरांती फेंक कर सरपट भागा।

उसके जाने के बाद उस गाँव का इतिहास फिर दुहराया गया। कामरेड यांग को सब बातें कण्ठस्थ हो गईं। अन्त में उन्होंने पूछा, "क्या कारण है कि स्टाफ़ मेम्बर चांग इन सब बातों से अपरिचित हैं ?"

नन्हे पाओ ने जवाब दिया, "चाँग महोदय सज्जन होते हुए भी अनुभवहीन थे। वह यहाँ आते ही उन दुष्टों से घिर गये।"

रात होने तक बातें चलती रहीं। इधर ली यू-त्साई भी नन्हे फू के साथ आ पहुँचा। सब लोग नन्हें शुन के यहाँ भोजन करने के लिए गये। सब लोगों ने फलियों की तरकारी और शोरबे के साथ बाजरे की रोटियां खाईं। कामरेड यांग भी वहीं रुक गये।

खाने के बीच बूढ़ा चिन पहले की तरह शोरबे का एक प्याला लिए आदर भाव से हाजिर हुआ। जब से उसने सुना कि कामरेड यांग ने गाँव के मुखिया को आड़े हाथों लिया है तब से उसका खोया हुआ आदर-भाव फिर लौट आया था।

खाना खत्म होने के बाद कामरेड याँग ने ली यू-त्साई से कहा,

"आपकी गुफ़ा किस ओर है। आइये वहीं चलकर बातें करेंगे।"

ली यू-त्साई ठीक अपनी गुफ़ा के दरवाजे पर ही बैठा था। उसने गुफ़ा की ओर अंगूठे से इशारा करते हुए कहा, "यही तो है।"

कामरेड याँग ने देखा कि गुफा के दरवाजे पर कागज चिपके हुए हैं और मुहरें लगी हुई हैं। लपक कर उन्होंने मुहरों को तोड़ दिया और कहा, "कमीने कुत्ते ही गरीबों से ऐसा बर्ताव करते हैं।" उन्होंने ली यू-त्साई से किवाड़ें खोलकर अन्दर जाने का आग्रह किया।

"लेकिन ताला तो पंचायत ने लगाया है; हम कैसे खोलें ?"

"बुलाओ पंचायत वालों को, उनसे कहना; कामरेड याँग का हुक्म है।"

कृषक-सहायता-समिति के प्रधान का हुक्म पाकर ली यू-त्साई क्वाँग चू की तलाश में बाहर निकला।

ली यू-त्साई के रंग-ढंग को देखकर क्वांग चू ताड़ गया कि कुछ दाल में काला है। पहले तो उसने सोचा कि हेंग-यूआन से जाकर सलाह की जाय। लेकिन उसे बूढ़े की दी हुई डाँट अभी तक याद थी। उसने सोचा कि क्यों न स्थानीय कान्फू ते कुई को बुला लिया जाय। उसने कुछ रुककर कहा, "तुम यहीं ठहरो, मैं ताली लेकर अभी आता हूँ।" वह फौरन भागता हुआ ते कुई के यहाँ पहुँचा और उसके हाथ में ताली थमा दी। बहुत कुछ पट्टी पढ़ाने के बाद वे दोनों इकट्ठे लौटे।

तेकुई गुफ़ा का दरवाज़ा खोलने के लिए आगे बढ़ा। उस दुष्ट ने भी हेंग यूआन की संगति में रहकर बहुत-सी चिकनी-चुपड़ी बातें सीख ली थीं। कामरेड यांग को प्रभावित करने के लिए उसने शरारत भरी मुस्कुराहट के साथ कहा, "श्रीमान् जी, क्या आप प्रान्तीय कृषक-सहायक-समिति के प्रधान हैं ? मेरे गँवारू लहजे को माफ़ करें। मेरा नाम चांग-ते-कुई है। मैं स्थानीय समिति का प्रधान हूँ। जब से मैंने आपके आगमन का समाचार सुना तब से मैं आपके दर्शनों के लिए दफ्तर के कई चक्कर काट आया हूँ, पर आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।"

बोलते समय वह ताले से खेंचातानी कर रहा था और यू-त्साई के गुफ़ा में घुसने से पहले ही उसने अन्दर जाकर लैम्प जला दिया। उसके व्यवहार को देखकर सब लोग किंकर्तव्यविमूढ हो गये।

कामरेड यांग अलग खड़े रहे। उन्होंने नन्हे शुन से चांग ते-कुई के सम्बन्ध में तुकबन्दी सुन रखी थी और वे जानते थे कि वह किस प्रकार का आदमी था। वह सब लोगों के बैठ जाने का इन्तजार करते रहे, और जब सब लोग बैठ गये तो उन्होंने स्थानीय कृषक-सहायता-समिति के प्रधान से पूछा, "आपके कितने सदस्य हैं ?"

ते-कुई ने गोल-मोल जवाब दिया, "ओह, मेरी स्मरण-शक्ति बड़ी खराब है; मैं याद नहीं रख पाता। एक रजिस्टर है, मैं उसमें देखूंगा।"

"आप लोग कितनी टोलियों में बँटे हुए हैं ?" कामरेड चांग का दूसरा सवाल था।

"ओह !" ते-कुई ने अचकचाते हुए कहा, "मुझे तो यह भी याद नहीं है।"

इस पर कामरेड यांग ने उसे डांटा "तुम इतना भी याद नहीं रख सकते कि तुम्हारे यहाँ कितनी टोलियाँ हैं ? और कार्यकारिणी के कितने सदस्य हैं ?"

यह सवाल सुनकर ते-कुई की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उत्तर देना तो दूर वह इन शब्दों का अर्थ भी न जानता था। अपने बचाव के लिए उसने जबाब दिया, "मैं एक मूर्ख, गँवार किसान हूँ, मुझे माफ़ कर दीजिए।"

"अज्ञानता से देहातीपन का क्या सम्बन्ध ! आखिर कृषक-सहायक-समिति के सभी सदस्य देहाती हैं। तुम्हें अगर संगठन का क ख ग भी नहीं आता तो तुम इस संस्था के प्रधान होना तो दूर एक साधारण सदस्य भी नहीं बन सकते। मैं इसी क्षण तुम्हें समिति की सदस्यता से अलग करता हूँ। भविष्य में इस संस्था से तुम्हारा कोई सम्बन्ध न होगा।"

जब ते-कुई ने देखा कि उसे संस्था से निकाला जा रहा है तो उसने एक नई तरकीब निकाली, "मेरा प्रयोजन तो यह कदापि न था। मैंने

कई दफ़ा इस्तीफा भेजा लेकिन मेरी किसी ने न सुनी। वे मुझ से काम लेना चाहते थे। ओह, कैसी मुसीबत है !"

"तुमने अपना इस्तीफा किस के हाथ में सौंपा ?" कामरेड यांग ने सवाल किया।

"पंचायत को ?"

"तुम्हारी नियुक्ति किसने की ?"

"पंचायत ने। और किसने ?"

"इसी लिए तो तुम मूर्ख हो, क्योंकि तुम्हारी नियुक्ति कृषक-समिति ने नहीं की। अच्छा, अब यहाँ से जाओ। इस बार तुम्हें इस्तीफ़ा देने का कष्ट न होगा।"

ते-कुई अब भी अपनी सफ़ाई दे रहा था, लेकिन कामरेड याँग ने उसे दूर धकेल दिया, "जाओ यहाँ से, मुझे और भी काम करने हैं।" कामरेड याँग ने उन सब लोगों के सामने ते-कुई को बर्ख़ास्त किया जो ली-युत्साई के आने की ख़बर सुनकर गुफ़ा में जमा हो गये थे। कामरेड याँग ने एकत्रित लोगों को समझाया, "कृषक-सहायक-समिति का उद्देश्य शोषकों से मुक्ति पाना है। जापानी दरिन्दों ने हमारा शोषण किया, इसी लिए हम उनके विरोधी थे। धनी और अत्याचारी जमींदार भी हमारा शोषण करते हैं, इस लिए वे भी हमारे दुश्मन हैं। क्या चाँग ते-कुई ने जापान-विरोधी युद्ध में हमारा नेतृत्व किया था ? क्या वह अत्याचारी जमींदारों के विरुद्ध आपका अगुआ बनेगा ? अगर नहीं तो वह कैसा प्रधान है ?" ते कुई की नुक़्ताचीनी करने के साथ कामरेड याँग नें यह भी बताया कि कृषक-समिति के उद्देश्य क्या होने चाहिएँ। लोग बड़ी श्रद्धा से उनकी बातों को सुनते रहे। लेकिन कुछ देर बाद पड़ौस के लोग फ़सल काटने के लिए चले गये। अब सिर्फ़ नन्हा मिंग, नन्हा पाओ और नन्हा शुन रह गये थे। नन्हा फू बचा हुआ भूसा लेने पहले से ही जा चुका था। कामरेड याँग ने इन लोगों से किसानों पर किये गये अत्याचारों का विस्तृत हाल सुनने का आग्रह किया।

जेब से काग़ज़-पेन्सिल निकालते हुए उन्होंने कहा, "आओ सी फू की बर्खास्तगी से शुरू करो।"

"मैं बताऊँगा सब कुछ।" नन्हें मिग ने अपने आपको पेश किया, "जो बातें छूट जायें, वह बाद में बता देना।"

उसने बताया कि किस तरह सी-फू ने चालाकी से लोगों का हरजाना रोक लिया था। अभी बात पूरी भी न हुई थी कि खिड़की के बाहर शोर-गुल सुनाई दिया। नन्हें शुन ने ऊँचे स्वर में पूछा, "बाहर कौन है?" उत्तर में किसी के सरपट भागने की आवाज़ आई। नन्हा पाओ और नन्हा शुन दोनों बाहर निकले। दूर से कोई आदमी भागा आ रहा था। पास आने पर देखा तो वह नन्हा फू निकला।

नन्हें शुन ने हैरानी से पूछा, "कहो, तुम यहाँ कैसे आए? तुम्हें भागने की क्या ज़रूरत थी?"

"मैं क्यों भागूंगा! भागा तो बूढ़ा ती कुई था। ज्योंही मैं भूसे की टोकरी लेकर पहुँचा, त्योंही मुझे देखकर वह भाग खड़ा हुआ।"

"मक्कार बूढ़ा।" नन्हें पाओ ने मुंह विचकाकर कहा, "वह फिर शिकायत पहुँचाने गया है।"

"हमें होशियार रहना चाहिए। वह कहीं कोई नई मुसीबत न खड़ी कर दे। तुम दोनों अन्दर जाओ; मैं चौकसी करूँगा।" वह गुफ़ा की छत पर चढ़ गया।

कामरेड याँग ने फिर बातें सुननी शुरू कीं और काग़ज़ पर लिखते गये। अन्त में उन्होंने कहा, "मेरा विचार है कि इन लोगों के विरुद्ध मुख्य आरोप यह हैं—लोगों को ज़मीन गिरवी रखने के लिए विवश करना, लगान बढ़ाना, सी-फू का हरजाना देने से बचना और सबसे बड़ी बात तो यह है कि पंचायत का संगठन जनवादी नहीं। यह आरोप अत्यन्त गम्भीर हैं। क्योंकि इन्हीं की वजह से बहुत से लोगों का जीवन बर्बाद हो गया है। अगर हमें सचमुच अपने अधिकारों के लिए लड़ना है तो सबसे पहले हेंग-युआन को गिरवी की ज़मीन और ज्यादा वसूल किए

गये लगान को लौटाने के लिए विवश करना होगा। सी-फू को जिला-सरकार की आज्ञा के अनुसार लोगों का पूरा हरजाना चुकाना होगा। और सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि कानपूओं का नया चुनाव किया जाय। इसके बाद छोटी-मोटी चीजों को देखा जायगा। अगर हम इतना कुछ भी कर लें तो भ्रष्ट कर्मचारियों को गद्दी से उतार कर लोग अपना सिर तो ऊँचा कर सकेंगे।"

"अगर इतना भी हो जाय, तो गाँव की काया पलट हो जायगी।" "नन्हें मिंग ने उत्साह से कहा, "लेकिन येन-परिवार के अतिरिक्त कोई भी ऐसा नहीं जो हमारी अगुआई कर सके। गाँव के बाक़ी पढ़े-लिखे लोग जो बुद्धिमान और अनुभवी हैं, वे भी पुराने शासकों के ही दोस्त हैं और हम लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।"

कामरेड याँग ने उत्तर दिया, "हमें जनता पर भरोसा करना चाहिये, ठीक जैसा फ़ौज में होता है। युद्ध में जीत साधारण सिपाहियों पर निर्भर करती है न कि अफ़सरों पर, लेकिन यह बात भी न भूलनी चाहिये कि अफ़सर भी जनता में से ही पैदा होते हैं। निराश होने की कोई बात नहीं। मेरा विचार है कि पुराने टिड्डी-कुंज में रहने वाले लोगों में भी बहुत से योग्य व्यक्ति मिल सकते हैं। यदि हम उन्हें थोड़ा-सा भी प्रोत्साहन दें तो वह सन्तोष-जनक काम कर सकते हैं।

नन्हें पाओ ने इस बात का समर्थन किया, "आप ठीक कहते हैं—व्यावहारिक बात को तो मैं भी समझता हूँ। लेकिन हम हेंग-युआन के ख़िलाफ़ कैसे लड़ें? हमारे पास कान-पूओं की कौन-सी संस्था है? मान लो वे हमसे जवाब-तलबी करें? अगर वे हमसे नाराज़ हो गये तो?"

कामरेड याँग ने कहा, "तुम्हारे सोचने का तरीक़ा तो काफ़ी स्पष्ट है। हमें एक आन्दोलन की योजना बनानी होगी, जिसके लिये लोगों को संगठित करना अत्यन्त आवश्यक है। देश के अन्य भागों में 'मातृभूमि की रक्षा करो' समितियों के अन्तर्गत हज़ारों मज़दूरों, किसानों, औरतों और नौजवानों को संगठित किया जा चुका है।

लेकिन यहाँ जालिम जमींदारों के कारण कुछ भी नहीं किया गया। मेरा इरादा कल ही 'कृषक-सहायक-समिति' स्थापित करना है, जो किसानों के अधिकारों की रक्षा करेगी। जमींदारों को हमारी एक-एक पाई चुकानी पड़ेगी क्योंकि हमारी मांग उचित है। अगर उन्होंने टाल-मटोल की तो नई सरकार उनसे सख्ती से पेश आयेगी। चाहे वे कितने ही बड़े क्यों न हों, उनके होश ठिकाने लाये जाएँगे।

नन्हें पाओ न पूछा, "कृषक-सहायक-समिति का संगठन कैसे होगा?"

कामरेड यांग ने उसे सदस्य-नियमावली दिखाई "यह बहुत कठिन काम नहीं। ज्यों ही हम उन्हें बतायेंगे कि हमारा उद्देश्य हेंग-युआन और उसके पिट्ठुओं को खत्म करना है तो लोग बड़ी संख्या में हमारे साथ आयेंगे।"

"कल ही सारे गाँव की मीटिंग बुलानी चाहिये। आप उन्हें सारी बातें समझा कर समिति में शामिल होने की अपील करें—हम फौरन संस्था का संगठन कर डालेंगे।" नन्हें पाओ ने सुझाव दिया।

"इतने से ही काम न चलेगा" कामरेड यांग बोले।

"क्यों? जिला सरकार के सदस्य कामरेड यांग ने भी तो ऐसा ही किया था!" नन्हें पाओ ने तपाक से जवाब दिया "हाँ, यह बात मैं नहीं जानता कि सब मेम्बरों के नाम दर्ज होने से पहले ही ते-कुई प्रधान कैसे बन गया!"

"यही तो बात है! मीटिंग में तो हम आम बातें कहेंगे। वरना हेंग-युआन के साथी भी तो सदस्य बन सकते हैं। मेरा सुझाव यह है कि आप दोनों तुक्कड़ उस्ताद (यू-त्साई और नन्हा शुन) किसान समिति के विषय में कुछ तुकबन्दियाँ रचडालिए और उन्हें सारे गाँव में फैला दीजिये जिन लोगों पर जुल्म हुआ है, वे अपने आप समिति के सदस्य बनने के इच्छुक होंगे। हम उन्हें चुपचाप अपनी योजना बतायेंगे। इस तरह हेंग-युआन के गिरोह के जाने बगैर हम अपने काम में सफल होंगे।"

सब लोगों ने इस योजना का समर्थन किया, "हम ज़रूर ऐसा ही करेंगे।"

"काका यू-त्साई को सुबह से पहले ही यह तुकबन्दी रच डालनी चाहिये।" नन्हें पाओ ने सुझाव दिया। "कल दोपहर होने से पहले नन्हा शुन इसे हर घर में पहुँचा देगा।"

"अब तो सारा काम बहुत जल्दी हो जायगा। लेकिन हमें तो ऐसे आदमी की ज़रूरत है, जो सदस्य बनने के इच्छुक किसानों को समिति के उद्देश्यों व नियमों से परिचित करा सके।" कामरेड याँग ने कहा।

"मिंग चचा भी बहुत से लोगों को जानते हैं। अगर वे चाहें तो सारा काम इकट्ठा हो सकता है।" नन्हे फू ने कहा। "क्या मैं पहले नहीं कह चुका कि पुराने टिड्डी कुंज में बहुत से योग्य व्यक्ति रहते हैं।"

इतने में नन्हे शुन ने, जो बाहर चौकसी कर रहा था, आकर कहा, "मैं एक ख़बर सुनाने आया हूँ। " क्वाँगचू, नन्हा युआन, माफेंग मिंग और चीचांग आदि लोग हेंग युआन के घर गये हैं। ज़रूर दाल में कुछ काला है। मैंने कान लगाकर सुनना चाहा पर सारे दरवाजे बन्द थे।"

"घबराने की कोई बात नहीं। हमें अपना काम करते जाना चाहिए। मैंने आज तुम लोगों को समिति का सदस्य बनाया है। कल आप लोग नये लोगों को भी लाइए। देर होती जा रही है। अब घर चलना चाहिए।" सब लोग अपने-अपने घरों को वापस चले गये।

(नौ)
'नन्हों की जीत'

कामरेड यांग के आने के बाद गांव का घटना-चक्र बड़ी तेज़ी से चला। सारे गाँव में यह ख़बर आग की तरह फैल गई कि एक ही दिन में कामरेड यांग ने क्वांग चू के होश ठिकाने लगा दिए, ली यू-त्साई को गाँव वापस बुला लिया और यांग ते-कुई को 'कृषक-सहायता-समिति, से

बर्खास्त कर दिया। गाँव का शोषित वर्ग मारे खुशी के फूला न समाया। "आखिर खोटा सिक्का खोटा ही निकला।" लोगों ने मुखिया के बारे में टिप्पणी की। लोग यह जानने के लिए बड़े उत्सुक थे कि आखिर यह कामरेड यांग है कौन जिसने एक ही दिन में गांव की काया पलट दी। दूसरे दिन सुबह लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ पुराने टिड्डी कुंज में इकट्ठी हुई। सब लोग अपने नाश्ते के प्याले और तीलियाँ साथ लाए थे। लोगों को ली यू-त्साई द्वारा बनाई गई तुकबन्दी सुनाने का यह अच्छा अवसर था। नन्हे शुन ने रातों रात उस तुकबन्दी को कंठस्थ कर लिया था।

नन्हे शुन के मुँह से इस तुकबन्दी को सुनकर लोग झूम उठे—

किसान सहायक समिति में भरती हो जाओ इक बार
दुगनी होगी शक्ति हमारी, उतर जाय सब भार
उतर जाय सब भार, जुल्म न कोई ढाने पाये
करदें होश ठिकाने उसके जो आँख उठाने आये
सुनले हेंग युआन, निपटने की तुमसे बारी आई
खींचेंगे अब खाल तुम्हारी, हमने यह शपथ उठाई
उस कुत्ते की जेबों से रिश्वत के रुपये लेंगे झोर
लौटा लेंगे सब खेत रहन के, तब देखेंगे कुछ और
जमीन का लगान भी अब उसको कम करना होगा।

औ' हर किसान का गुस्सा उसको चुपके से सहना होगा
और तो और, कान-पूओं के नादिरशाही गिरोह को
इन नीच ठगों, अत्याचार के पुतले, घमण्डी दानवों को
हम अपनी ठोकर का असली स्वाद चखा देंगे
मार मार कर उनके होश ठिकाने ला देंगे
आओ, तुम सब किसान समिति में भरती हो जाओ
ऐसा मौक़ा फिर न मिलेगा, आओ बढ़कर आगे आओ

जब असत्य पर सत्य और अनय पर न्याय की होगी जीत
तब हम दिन भर खुशी मनायेंगे, सुन लो मेरे मीत

जब यह तुकबन्दी सुनाई जा चुकी तो लगभग बीस-तीस आदमियों ने किसान-सहायक-समिति का सदस्य बनने के लिए अपना नाम पेश किया और नन्हे पाओ ने उन सब का नाम रजिस्टर में लिख लिया। उनमें से अनेक तो बूढ़े हेंग युआन से अपना बदला लेने की भावना से प्रेरित हुए थे और वे उसके द्वारा उठाए नुकसान के लिए हरजाना पाने का यह अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे। लेकिन प्रधान उद्देश्य हेंग-युआन को लूटना था, जिसे वे घृणा करते थे। अपनी इस प्रसन्नता के लिए उन में से कुछ ने ऐलान किया कि इसके लिए अगर उनके कुछ और माओ (बीघे) खेत चले जाए तो वे परवाह न करेंगे।

जमा हुए लोगों में पहाड़ी के ऊपर रहने वाले किसानों में से कोई न था। कामरेड याँग चाहते थे कि वे भी शामिल हों और इच्छा प्रकट की कि कोई उनसे जाकर कहे। ली यू-त्साई ने अपने को पेश करते हुए कहा, "पहाड़ी के ऊपर पशु चराते रहने के कारण मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ।"

ली यू-त्साई के चले जाने के बाद मिंग भी गाँव में समिति के लिए और सदस्यों को जमा करने चला गया और दुपहर से पहले पचपन सदस्यों को और जमा कर लाया।

जब वह लौट कर आया तो उसने कामरेड यांग से कहा, "वे सभी लोग, जो थोड़े-बहुत दिल के अच्छे थे, समिति के सदस्य बन गये। कुछ ऐसे सतर्क व्यक्ति बच रहे हैं जो हवा के रुख़ का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

कामरेड यांग ने बड़े उत्साह से उत्तर दिया, "यह तो बहुत बड़ी संख्या है! मेरे सारे अनुभव में यही सबसे बड़ी संख्या है जो ऐसे गांव में तुरन्त सदस्य बन गई। यह इस बात का ही सबूत है कि वे कितने शोषित रहे हैं। अपने शोषकों के प्रति उनकी घृणा उन्हें प्रेरणा दे रही है, जिसके कारण वे और आसानी से उन पर विजय प्राप्त करेंगे। हम समिति की

स्थानीय शाखा की स्थापना करने के लिए आज ही शाम को सभा बुलाएँगे। हम अपना कानपू चुनेंगे, अपने को विभिन्न ग्रुपों में बाँटेंगे, और कल तक हम गम्भीरता से अपना काम आरम्भ करने के लिए संगठित हो जायंगे। और चूंकि हमारी ज़िला सरकार को कुछ नहीं मालूम कि इस गाँव में क्या हो रहा है, मैं आज रात को वहाँ जाऊँगा और कल की सभा में उनसे आने को कहूँगा।

ये लोग बातें कर ही रहे थे कि यू-त्साई पहाड़ी पर से अनेक किसानों को साथ लेकर लौट आया। वे अभी भी सहमे हुए थे और कामरेड यांग को वहाँ देख उन्होंने पूछा, "मान लो ज़मींदार नाराज़ हो जाता है और हमें हमारे खेतों पर से भगाना चाहता है तो हम क्या करेंगे ?"

उन्हें कामरेड यांग ने आश्वासन दिया और "मौरूसी काश्त" का नियम समझाया।

उनको देखकर नन्हे मिंग ने सुझाया, "हम लोग अपना संगठन-स्थापित करने की सभा तीसरे पहर कर लें; और तब तक ये पहाड़ी किसान भी यहाँ हैं।"

"बड़ा अच्छा विचार है," कामरेड यांग सहमत हो गये। "इससे शाम को ज़िला-सरकार के पास जाने के लिए मुझे काफ़ी समय मिल जायगा।"

"हम सभा कहाँ करेंगे ?" नन्हे मिंग ने पूछा।

कामरेड यांग ने जवाब दिया, "हम उन्हें सदस्यता की अर्जियों के बारे में नहीं जाननें देना चाहते क्योंकि हम नहीं चाहते कि ऐसे लोग संगठन में घुस आयें जो इसके योग्य नहीं हैं। लेकिन हम आम सभा को गुप्त भी नहीं रखना चाहते। हम गाँव के मन्दिर में सभा करेंगे।"

खाना खाने के बाद सभा हुई। नन्हा पाओ, नन्हा मिंग और नन्हा शुन कमेटी के सदस्य चुने गये। नन्हा पाओ प्रधान बना। नन्हा मिंग संगठन का ज़िम्मेदार बनाया गया, और नन्हा शुन प्रचार का। चुनाव के बाद लोग अलग-अलग टुकड़ियों में बँट गये, और इस तरह येन-चियाशान

गांव में किसान-सहायक-समिति की विधिपूर्वक स्थापना हो गई।

कामरेड यांग ने नये कान-पुत्रों को आदेश दिया, "आज ही शाम को बूढ़े हेंग युआन के अत्याचारों के खिलाफ़ गवाहियाँ जमा करो।"

नन्हे शुन ने एक सुझाव दिया," क्वांग चू या फ़ेंग-मिंग ची-यांग और नन्हे युआन के कारनामों का भी भंडाफोड़ होना चाहिए।"

कामरेड यांग ने इस अतिशय उत्साह-शीलता को ठंडा करते हुए कहा, "ऐसा करना उचित न होगा। मा फेंग-मिंग और यांग ची-यांग दरअसल हेंग युआन के पिट्ठू नहीं हैं। कई बार तो उन्होंने उसका विरोध भी किया है। रहा नन्हा युआन, वह तुम्हारा ही आदमी है। हेंग युआन की ताक़त कम होते ही वह जनता का साथ देगा। बाकी लोगों की चिंता छोड़ कर हेंग युआन और क्वाग चू पर निगरानी रखो।"

कामरेड यांग यह सुझाव देकर जिला-सरकार के दफ़्तर लौट गये। जाते समय उन्होंने मीटिंग में गाँव के श्रेष्ठ वक्ताओं को जमा करने की सलाह दी। ऐसा लगता था कि ज़िला-सरकार को येनचियाशान की वास्तविक स्थिति का रत्ती भर पता न था। कामरेड यांग की रिपोर्ट सुन कर सब लोग दंग रह गये। स्टाफ़ मेम्बर यांग ने इसका विरोध किया।

अन्त में ज़िला-सरकार के प्रधान ने कहा, व्यर्थ नतीजे निकालने से कोई लाभ नहीं, हो सकता है कि कई समस्याएँ हमारी आँखों के सामने न आई हों। मेरा विचार है कि हम सब लोग मीटिंग में शामिल हों। वहाँ सारी सच्ची स्थिति का पता चल जायेगा।"

इस बीच बूढ़े हेंग युआन ने अपनी तिकड़मे फिर शुरू कर दी थीं। येन कुटुम्ब को अपने पक्ष में करने के बाद उसने ते-कुई के हाथ किसान-सहायक-समिति के हर मेम्बर के पास चेतावनी भेजी, "अपनी तबाही क्यों बुलाते हो! सरकारी अफ़सर तो बदलते रहते हैं, लेकिन मुखिया तो गाँव में ही रहता है। अफ़सरों के जाने के बाद तो मुखिया से ही निपटना होगा!"

इस चेतावनी से घबरा कर कुछ लोग अपना नाम वापस लेने के लिये नन्हें मिंग के पास पहुँचे।

नन्हें मिंग ने नन्हें पाओ और नन्हें शुन की राय पूछी। नन्हाँ शुन, जो प्रचार समिति का अध्यक्ष था, गुस्से से लाल हो गया, "बूढ़े की धमकियों का जवाब हम भी दे सकते हैं। काका यू-त्साई को कहो कि वह एक और तुकबन्दी बनायें। हम सारे गाँव में उसे चिपकायेंगे।"

फिर क्या देर थी। ली यू-त्साई ने फौरन एक तुकबन्दी बनाई। नन्हें पाओ ने इसे काग़ज़ पर लिखा और देखते-देखते गाँव के हर कोने में इश्तिहार चिपक गये—यहाँ तक कि हेंग युआन के दरवाज़े के बाहर भी।

दूसरे रोज़ गाँव का बच्चा-बच्चा इस नये नारे से परिचित हो गया।

"आते-जाते रहते ज़िला सरकार के अफ़सर
किसान सहायक समिति रहेगी यहीं पर
अपनी चालों से बाज़ आ रे हेंग युआन!
वरना हम सब मिलकर खेंचेंगे—तेरे कान।"

इस प्रकार ते-कुई द्वारा फ़ैलाई गई इस अफ़वाह का गला घोंट दिया गया।

नाश्ते के बाद कामरेड यांग गाँव में आ पहुँचे। उनके साथ ज़िला सरकार का अध्यक्ष, संयुक्त देशभक्त संस्था तथा सैनिक समिति के अध्यक्ष तथा स्टाफ़ मेम्बर चाँग भी आये थे। आने के तुरन्त बाद ही सब पुराने टिड्डी कुंज की ओर चल पड़े, जिससे ज़मींदार के कैम्प में हलचल मच गई।

मीटिंग में हेंग-युआन के खिलाफ़ लगाए गये आरोपों का ताँता बँध गया। शुरू में तो किसान-सहायक-समिति के मेम्बरों ने बूढ़े ज़मींदार के कारनामों का भंडाफोड़ किया। लेकिन बाद में देखा-देखी और लोगों की भी हिम्मत खुल गई। उसके ऊपर आरोप लगाया गया कि उसने किसानों की गिरवीं रखी हुई जमीनें हड़प ली हैं, और उसने

ज़िला-सरकार के आदेशों को अवहेलना करके लगान को कम नहीं किया। हेंग-युआन चुपचाप सुनता रहा। उसके बाक़ी अत्याचारों की सूची भी बहुत लम्बी थी, उदाहरण के लिए अकारण ही लोगों को क़ैद करवाना, मारना-पीटना, जबरन जुर्माना वसूल करना, अदालत में दावा करने वालों के खर्चों पर दावतें उड़ाना आदि। बूढ़े ने इन आरोपों का जवाब देने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन उसके विरुद्ध गवाहियाँ इतनी प्रबल थीं कि उसकी दाल न गल सकी।

अगले दिन भी मीटिंग जारी रही और दुपहर तक चलती रही। हेंग-युआन लोगों की रहन में रखी चौरासी माऊ ज़मीन वापस करने पर विवश किया गया। रिश्वत में लिए गए पैसे और अतिरिक्त लगान को भी लौटाना पड़ा। उसके साथ ही ली क्वांग चू को लोगों का हर्जाना घटाने के अपराध में गाँव की मुखिया-गीरी से हटा दिया गया और सजा के लिए उसे जिला सरकार को सौंप दिया गया। सी-फू को आदेश दिया गया कि वह जुर्माने की पूरी रक़म अदा कर दे।

इसमें शक नहीं कि रहन के काग़ज़ात और इक़रारनामो में हेराफेरी हुई थी। लेकिन इसके ब्यौरे में जाना व्यर्थ होगा। भूमि-सुधार आन्दोलन से परिचित लोग इन कठिनाइयों को भली भाँति जानते हैं।

सन्ध्या के समय नये मुखिया का चुनाव हुआ। इस बार जीत का सेहरा नन्हें पाओ के सिर पर पड़ा। किसान-सहायक-समिति की ताक़त को देखते हुए तत्काल इक्तालीस आदमियों ने सदस्य बनने की प्रार्थना की। बूढ़े हेंग-युआन और उसके लाड़ले सुपुत्र को पंचायत से खदेड़ दिया गया, लेकिन मा फेंग-मिंग और चांग-ची-चाँग अब भी बाक़ी थे।

रात को मीटिंग देर से समाप्त हुई। जिला-सरकार के कान-पूओं को वहीं रात गुज़ारने के लिये विवश होना पड़ा। सब लोग पंचायत के दफ़्तर में ठहरे। खाना खाने के बाद स्टाफ़ मेम्बर चाँग की नुक़्ताचीनी शुरू हुई। वह गांव में होने वाली अन्धेरगर्दी से क्यों अपरिचित रहा?

चांग ने अपनी रिपोर्ट में येनचियाशान को 'आदर्श गाँव' तथा बूढ़े हेंग-युआन को, "नई रोशनी का भद्र ज़मींदार" कहा था। कितनी हास्यास्पद बात है !

कामरेड याँग ने स्वीकार किया कि चाँग की सबसे बड़ी ग़लती तो यह थी, कि उसे जनता से घुलमिल कर रहना न आता था। इसी लिए गांव में क़दम रखते ही वह हेंग-युआन के हथकण्डों का शिकार हो गया था। यही कारण था कि शोषित, दुखी जनता की शिकायतें उसके कानों तक न पहुँच पाती थीं। कई साथियों ने "सैद्धान्तिक अज्ञानता" तथा "ग़लत विचारों" के आधार पर उसकी नुक्ताचीनी की। कामरेड चाँग ने भी अपनी ग़लतियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया।

इस नुक्ताचीनी के बाद सब लोग इधर-उधर की बातें करने लगे। कामरेड याँग ने बताया कि गाँव के सुधारों में ली यू-त्साई का कितना भारी हाथ है। सब लोग इस अनोखे तुक्कड़ उस्ताद को देखने के लिए बेचैन हो उठे। यह तय हुआ कि तड़के सब लोग ली यूत्साई के पास जायेंगे।

(दसवाँ)

"तुक्कड़ उस्ताद" का संक्षिप्त विवरण

रात को देर से सोने के कारण ज़िला-सरकार के कान-पू दूसरे दिन सूरज चढ़ने के बाद तक सोते रहे। अचानक ही सड़क पर शोर-गुल सुनाई दिया। जिससे सब लोगों की नींद खुल गई। ध्यान से सुनने पर पता चला कि यह आवाज़ गाने की थी। कामरेड यांग ने, जो इस प्रदेश की भाषा और रहन-सहन से परिचित थे, बताया, "लोग खुशियां मना रहे हैं। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं। क्या आपको उनके गाने की आवाज़ नहीं सुनाई देती ?" अभी उनकी बात पूरी भी न हो पाई थी कि नन्हा शुन भरपूर गले से एक गीत गाता हुआ अन्दर दाखिल हुआ।

उसकी खुशी छिपाए न छिपती थी। उसने सब लोगों की कुशल क्षेम पूछी।

"लोगों में जमींदारों की हार के बारे में क्या चर्चा हो रही है?" कामरेड याँग ने पूछा।

"क्या आपने गाने की आवाज नहीं सुनी?" नन्हे शुन ने जवाब दिया, "लोगों के गाने की आवाज से आकाश फटा जा रहा है। ऐसी धूम-धाम तो नये वर्ष के दिन भी नहीं हुई होगी। हमारी जमीनें और हमारे खोए हुए पैसे लौट आए हैं। यह नरभक्षी दरिन्दे अब कभी हमारा खून न चूस सकेंगे। इससे अधिक बड़ा चमत्कार भला और क्या हो सकता है!"

कामरेड याँग ने पूछा "क्या ली यू-त्साई इस समय अपने घरहोगा?"

"जरूर उस बेचारे को अभी तक कोई काम नहीं मिला। क्या मैं उसे यहाँ बुला लाऊँ?"

"नहीं! हम उस तरफ घूमने जा रहे हैं। ली यू-त्साई से भी मिल लेंगे।" कामरेड याँग ने कहा।

"अच्छी बात है।"

सब लोग नन्हे शुन के पीछे पुराने टिड्डी-कुँज की ओर चल पड़े।

वे अभी रास्ते में ही थे कि किसी के लड़ने-झगड़ने की आवाज सुनाई पड़ी।

"क्या मामला है?" जिला प्रधान ने पूछा।

"अरे! यह तो बूढ़ा चिन अपने भतीजे नन्हे युआन को डांट-डपट रहा है।" नन्हे शुन ने खुशी से उछलते हुए कहा। "नन्हा युआन पहले तो हमारा साथी था, लेकिन सैनिक समिति का अध्यक्ष बनने के बाद न जाने उसे क्या हो गया? वह हेंग युआन के प्रभाव में आकर अपने को बड़ा अफ़सर समझने लगा। वह रोज़ गाँव के मन्दिर में अकड़ कर बैठता था, लेकिन पिछले दो-तीन दिनों से हमारी मीटिंगें हो रही थीं। इसलिए तंग आकर बिचारा पुराने टिड्डी कुंज में आ टिका है। बूढ़ा चिन भतीजे को

इसलिए डाँट-डपट रहा है कि वह बड़ा घमण्डी था।"

कान-पू इस मामले को भली प्रकार जानते थे। इसी लिए जिला-सैनिक समिति का अध्यक्ष भी वहाँ आया था। उसने सुझाव दिया, "नन्हे युआन को सीधा करने का यह अच्छा अवसर है।"

ली यू-त्साई के यहाँ जाना स्थगित करके सब लोग नन्हे युआन के घर में दाखिल हुए। बूढ़े चेन ने, जो धुआँधार गालियाँ बक रहा था, इन लोगों को देखकर सादर अभिवादन किया।

ज़िला-सैनिक-समिति के प्रधान ने तुरन्त नन्हे युआन की ख़बर लेनी आरम्भ की। बाक़ी लोगों ने भी उसका साथ दिया। नन्हे युआन पर तीन आरोप लगाये गये। पहला तो यह कि उसने अपने रहन-सहन और पहनावे में हेंग युआन की नक़ल की थी। उसे भ्रष्ट करने के लिये जो टुकड़े उसके सामने फेंके गये थे, उनका उसने सहर्ष स्वागत किया था। मूर्खतावश वह उनका असली मतलब समझने में असमर्थ रहा था। दूसरा यह कि उसे शारीरिक परिश्रम से घृणा हो गई थी। और उसने अपनी ज़मीन जोतनी बन्द कर दी थी। और तीसरा आरोप यह कि ताक़त के नशे में चूर होकर उसने अपने ग़रीब साथियों पर मनमाने अत्याचार किये थे।

जब नन्हे युआन ने अपना अपराध स्वीकार किया तो जिला सैनिक-समिति के अध्यक्ष ने उसे चेतावनी दी, "मैं तुम्हें सुधरने के लिये एक महीने का समय देता हूँ। इस बीच गाँव के कान-पू तुम पर कड़ी निगरानी रखेंगे। इसके बाद भी तुम्हारे लच्छन वैसे ही रहे तो तुम्हारे साथ सख़्ती की जायगी।" बूढ़ा चेन इस चेतावनी को सुनकर गद्गद हो उठा, "शाबाश साथियो! मैं भी यही कहने वाला था। तुमने अपनी करतूतों का हाल सुना; शरम नहीं आती तुम्हें?"

कामरेड यॉंग ने उसे समझाते हुए कहा, "गुस्सा करने से क्या लाभ? अगर कोई इन्सान अपनी भूलें स्वीकार करके सुधरने की कोशिश करता है तो वह ईमानदार है। हम उसे अपना ईमानदार साथी समझेंगे। जो

हो गया सो हो गया। डाँटने-डपटने से क्या होगा। हाँ, अगर दुबारा उसके पाँव फिसलें तो तुम उसे थाम सकते हो।"

दुपहर के खाने का समय हो गया था। सब लोग गाँव के दफ्तर की ओर चल पड़े। अचानक बूढ़ा चिन सब लोगों के पाँव छूकर ज़मीन पर लोटने लगा, "आप मेरे रक्षक हैं। आप ही की वजह से मेरी गिरवी रखी हुई ज़मीन लौट आई।" बूढ़े याँग ने उसे उठाते हुए समझाया, "तुम कुछ नहीं समझते। हेंग युआन की हार तो किसान-समिति के कारण हुई, जिसमें सब गाँव वालों का हाथ था। हम लोग तो सिर्फ़ आप लोगों की सहायता के लिये आये हैं। गाँव की जनता आपकी रक्षक है न कि हम। उनका उपकार चुकाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि तुम भी उनकी सहायता करो।"

बूढ़े चिन ने अपने 'पैगम्बरों' का आभार स्वीकार करते हुए उन्हें भोजन का निमन्त्रण दिया, लेकिन वे उससे पिंड छुड़ाकर पंचायत के दफ्तर में पहुँच गये। भोजन समाप्त होने तक ली यू-त्साई भी आ पहुँचा। उसने नन्हे शुन से सुना था कि सब लोग उससे मिलना चाहते हैं। वह अपना लम्बा पाइप हाथ में लेकर भागा-भागा आया था। उसके पाँव में एक नई स्फूर्ति आ गई थी।

सब लोगों को बैठा देख उसने सब को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप लोग मुझे देखना चाहते थे! मैं हाज़िर हूँ।" गाँव के नये मुखिया नन्हे पाओ ने उसका स्वागत किया, "कहो चचा आज तो तुम्हारी बाँछें खिली हुई हैं!"

ली यू-त्साई ने जवाब दिया, "क्यों न खिलें! मेरा पुराना मित्र पन्द्रह वर्ष की जुदाई के बाद आज वापस लौटा है।"

"वह मित्र कौन है?" नन्हे मिंग ने पूछा।

ली यू-त्साई ने कहा, "मेरी तीन माऊ ज़मीन, और कौन? आज से पन्द्रह वर्ष पहले मैंने उसे रहन रखा था।" इस पर सब लोग खिलखिला कर हँस पड़े। कामरेड याँग ने एक सुझाव दिया, "तुम्हारे जैसे गुणी

और उत्साही व्यक्ति को गाँव के लिये उपयोगी होना चाहिए।"

"काका ली यू-त्साई को रात्रि पाठशाला का अध्यापक बना दो।" नन्हे मिंग ने कहा। सब लोगों ने वाह-वाह और करतल ध्वनि से इस सुझाव की सराहना की।

कामरेड याँग ने प्रार्थना की, "हम सब की इच्छा है कि आप इन घटनाओं पर गीत लिखें।"

ली यू-त्साई की बाछें खिल गईं, "वाह, नेकी और पूछ-पूछ!" ली यू-त्साई ने सिर झुका कर हामी भरी।

और यह है तुक्कड़ उस्ताद के फक्कड़पन का नमूना।

जागा है फिर एक बार येन चियाशान
पीटो ताली, नाचो, गाओ गान
जुल्म-सितम सब मिट गए, रहा न नाम-निशान
जान गये सब, जनता की है शक्ति महान्
चारों खाने चित्त गिरा बूढ़ा हेंग युआन
सिट्टी-पिट्टी भूली उसकी निकल गई सब शान
सचमुच ही उसको हो रही अब व्यथा महान्
लूटा माल उगलने में उसकी निकल रही है जान
औ' ल्यू क्वाँग चू की खुल गईं काली करतूतें सारी
काला मुँह कर गया निकाला, हो गई उसकी ख्वारी
नाच-नाच कर गाते हम, खुशियाँ खूब मनाते
ज़मींदार सब मुँह की खा गये, नहीं सताने आते
क्या तुम सुनते हो, जनता के गायन की टेक
"जीता सत्य हराकर असत्य को, ले आँख उठा कर देख!"

लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से इस 'उपसंहार' का स्वागत किया। सब लोगों के दिल में खुशी का सागर लहरें मार रहा था। वे जानते थे कि येनचियाशान में होने वाली घटनाओं का प्रभाव आस-पड़ोस के गाँवों में भी पड़ेगा, जिससे समूचे देश में सुख और समृद्धि फैल जायेगी।

स्याओ-एर्र-ही का विवाह

१

दो अमर प्राणियों के नखरे

ल्यू घाटी में दो अमर प्राणी रहते थे। पाठक यह न समझें कि वे कोई चमत्कारी जीव थे, अथवा हम लोगों से भिन्न कोटि के थे, लेकिन चूंकि वे अपने आपको देव-लोक के वासी बतलाते थे इसी लिए हम उन्हें अमर प्राणी कहेंगे। जिस समय यह कहानी लिखी गई उस समय तक यह साबित नहीं हुआ था, कि वे भी सब लोगों की तरह साधारण मानव हैं। अर्थात् साधारण आदमी तो साधारण होते ही हैं, लेकिन ये दोनों 'अमर प्राणी' इसलिए थे कि वे दुनिया भर के मकर, फ़रेब, अन्धविश्वास, धोखा-धड़ी, सहज श्रद्धा, झूठ, अतिशयोक्ति, दूसरों को गुमराह करने की चतुराई, पापाचार, पाखण्ड, कुण्ठित बुद्धि, व्यभिचार और अन्य मानसिक विकृतियों के आधार पर संसार के सभी साधारण, प्राणियों से भिन्न तथा 'ऊँचे' थे। वे अपने आपको अमर्त्य तथा महान समझते थे।

आस-पड़ौस के गाँवों में उन्हें सब जानते थे। आगे वाले गाँव में कुँग मिंग (द्वितीय) रहता था और पीछे वाले गाँव में परी कन्या (तृतीय) रहती थी।

पर यह सोचना ग़लत होगा कि कुँग-मिंग (द्वितीय) उसका असली नाम था। मां-बाप ने तो उसका नाम ल्यू-सिन-ती (ल्यू घाटी का आचरण-शील ल्यू) ही रखा था। और सीधे-सादे ल्यू के रूप में वह एक मामूली

किसान भर था। लेकिन 'कन्फ्यूशियस की प्रतिभा' से युक्त कूंग-मिंग (द्वितीय) का नाम धारण करके वह अपने को उन सभी चमत्कारी शक्तियों से सम्पन्न होने का दावा करता था जो अठारह शताब्दी पूर्व 'तीन सल्तनतों' में ख्याति पाने वाले उस महान् रण-नीतिज्ञ के बारे में लोक-कथाओं में वर्णित थीं, जबकि कहा जाता है, इच्छा मात्र से पवन की गति को नियंत्रित कर लेना असंभव न होता था। कभी अपनी जिन्दगी में वह व्यापारी भी रहा था, लेकिन व्यापार के ब्यौरे और आंकड़े उसे भाते ही न थे। उसे तो यिंग और यांग की उलटबाँसियों और यी किंग के राशि-चक्र में दिलचस्पी थी, जिनमें लोक-परलोक का सारा ज्ञान निहित समझा जाता है, अर्थात् जिनमें अमर्त्यों के सारे टकसाली लटके भरे हुए हैं। इसलिए उन्हें देखकर और अहितकर प्रभाव डालने वाले रवि और चन्द्र मार्ग के फलाफल पर विचार किये बिना वह अपनी उँगली भी न उठाता था।

और उधर परी-कन्या (तृतीय) थी जो पीछे वाले गाँव के यू-फू से ब्याही गई थी। लेकिन परी-कन्या होने के नाते वह अपने को न जाने क्या समझने लगी थी। इसलिए हर चन्द्रमास की पहली और पन्द्रहवीं तारीख को वह अपने तोबड़े जैसे मुख पर लाल कपड़ा बाँध कर भविष्य-वाणियां किया करती थी, जिनके कारण उसे जल्द ही एक देवी की पदवी मिल गई।

ख़ैर, जो भी हो ये दोनों अमर्त्य देवता कुछ न कुछ तो मानवीय थे ही, क्योंकि एक-एक वाक्य ऐसा था जिसको सुनकर वे बेहद चिढ़ जाते थे, इसलिए इन दोनों वाक्यों को 'अमर्त्यों के लिए निषिद्ध' कहा जा सकता है। 'खेत बोने के लिए दिन अशुभ है' सुनकर कुँग-मिंग (द्वितीय) चिढ़ जाता और 'मकई ज्यादा पक गयी है' सुनकर परी-कन्या (तृतीय) के नथुने फूलने लगते थे और इसमें दो नहीं तो एक कहानी तो जरूर ही छिपी हुई है।

एक साल वसन्त के मौसम में सूखा पड़ गया और मई की तीसरी

तारीख तक बारिश के कोई आसार न दिखाई दिये और जब मेंह बरसा भी तो सिर्फ़ चार अंगुल ही। उसके दूसरे ही दिन गाँव का हर व्यक्ति अपना-अपना खेत बोने में जुट गया। लेकिन दैवकृपा का पात्र कुंग-मिंग (द्वितीय) तो पंचांग देखकर ही इतने महत्वपूर्ण काम में हाथ डाल सकता था। और फिर उसने अगड़म-बगड़म ढंग से उँगलियों पर गिन-गिनकर हिसाब लगाया और इस परिणाम पर पहुँचा कि यह दिन खेत बोने के लिए अशुभ होगा। पाँचवी तारीख को सर्पदेवता का नौका-उत्सव था। उस दिन भी वह काम न कर सकता था क्योंकि तब उसे अपनी सालों पुरानी आदत छोड़नी पड़ती। रविमार्ग के अनुसार छठी तारीख का दिन शुभ था, इसलिए वह अपने खेत की ओर निकल पड़ा। लेकिन तब तक जमीन सूख चुकी थी। उसके चार माऊ खेत में सिर्फ आधे दाने ही अंकुरित हुए। पन्द्रह तारीख को जब फिर बारिश हुई और किसान नन्हें-नन्हें हरे पौधों के इर्द-गिर्द की फालतू घास साफ़ करके निराई करने में लगे थे, उस समय वह अपने दोनों बेटों के साथ उन जगहों पर बीज जमाने में व्यस्त था, जहाँ अंकुर नहीं फूटे थे।

पड़ौस के एक नौजवान ने खाने के समय भेंट हो जाने पर कुँग-मिंग (द्वितीय) से व्यंगपूर्वक पूछा, "अरे, बूढ़े बाबा, खेत बोने के लिए आज की तिथि शुभ है क्या ?"

लेकिन इसके उत्तर में उसे सिर्फ जली-कटी निगाह का सामना करना पड़ा। वह बूढ़ा घाघ वहाँ से जैसे दुम दबाकर खिसक गया। इसलिए बाद में भी जब लोग उसे चिढ़ाना चाहते तो पूछ बैठते, "खेत बोने के लिए आज की तिथि शुभ है न ?" यह प्रश्न सुन-सुनकर उसके कान पक गये थे।

अब हम तीसरी परी-कन्या की बात बतायेंगे। उसकी एक बेटी थी और अपनी क़सम, वह सुन्दर भी खूब थी—उसका नाम स्याओ चिन (नन्ही) था। यह नाम कवित्वपूर्ण था, क्योंकि सब्जी ही नहीं होती बल्कि एक सुगन्धित बूटी भी होती है। एक दिन चिन-वांग का बाप—जो

आदमी तो बुरा था—एक दिन तीसरी परी-कन्या के पास अपने रोग के बारे में सलाह लेने गया। अगर चिन-वांग के बाप को कोई रोग लगे, तो निश्चय ही वह भले मानुसों का रोग तो नहीं ही हो सकता। वहाँ तीसरी परी-कन्या वेदी के पीछे बैठी ऊँचे कण्ठ से मन्त्रों का जाप कर रही थी। सचमुच उस पर कोई बड़ी वाचाल देवी सवार हो गई थी, जो खूब शोर मचाती थी ! और वहाँ चिन-वांग का बाप वेदी के आगे घुटने टेके बैठा देवी के मुख से गिरने वाले ज्ञान और बुद्धिमानी के शब्दों को ध्यान से सुन रहा था। स्याओ चिन या नन्ही तब कुल नौ बरस की बालिका थी। वह खाना पका रही थी, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि उसकी माँ को और दूसरे महत्वपूर्ण दायित्वों को निभाना पड़ता था, जैसे देवताओं से वार्तालाप करना आदि। स्याओ चिन ने बाजरा रांधने के लिए हाँडी चढ़ा दी थी और फिर वह इस बारे में बिल्कुल भूल ही गई, क्योंकि उसकी माँ जो सुन्दर-सा गीत गा रही थी, वह उसके सुनने में तन्मय हो गई थी, कुछ देर में ही चिन-वांग के बाप को पेशाब करने के लिए उठकर बाहर जाना पड़ा। मेरा ख्याल है कि इस काण्ड की उत्तेजना उसके लिए कुछ अधिक ही साबित हुई थी। और अचानक, तीसरी परी-कन्या अपने दैवी उन्माद को भूल कर सीधे-सादे घरेलू अन्दाज़ में स्याओ चिन से बोली—"हाँडी उतार ले ! बाजरा जल गया है।" उसने स्वप्न में भी न सोचा था कि चिन-वांग के बाप ने यह बात सुन ली होगी। फिर उसके द्वारा यह बात हरेक को मालूम हो गई। कुछ ही दिनों में ऐसा हुआ कि तीसरी परी-कन्या अगर कहीं से गुजरती भी होती तो बहुतेरे मूर्ख निठल्ले व्यक्ति ऊँचे-ऊँचे स्वर से एक-दूसरे को सुना-सुना कर पूछते, "क्या बाजरा जल गया है ?" और मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि इस बात को सुनते-सुनते तीसरी परी-कन्या के कान भी पक गये थे।

(दूसरा)

एक देवी का जन्म

तीसरी परी-कन्या तीस सालों से देवताओं को नीचे बुलाकर उनसे वार्तालाप करती आई थी। यह बात तब शुरू हुई थी जब वह अभी पन्द्रह वर्ष की ही थी और यू फू से उसकी शादी बस हुई-हुई ही थी। उन दिनों वह अगले और पिछले दोनों गाँवों की अनुपम सुन्दरी थी।

यू-फू एक ईमानदार और नेक हलवाहा लड़का था। वह मितभाषी था और खेत जोतने-बोने के अतिरिक्त और कुछ जानता समझता भी न था। उसकी माँ मर चुकी थी, सिर्फ़ बाप ज़िन्दा था। इस लिए जब बूढ़ा बाप और जवान लड़का खेत में काम करने निकल जाते तो नई नवेली दुल्हन के पास घर में बैठकर अपनी एड़ियाँ तर करने के अलावा और कोई काम न रह जाता। स्वाभाविक बात है कि गाँव के नौजवानों के मन में यह बात उठी कि उसका अकेलापन दूर करके उसका कुछ मनोरंजन करते रहें। इसलिए बाप-बेटे जैसे ही घर से निकल कर जाते कि उनके आंगन में जवान छोकरों का दल का दल आकर अपनी महफ़िल जमा लेता और खूब रंगरेलियाँ मनाता।

यहाँ तक कि नेक और जड़मति यू फू के बाप की समझ में भी यह बात बैठ गई कि यह लच्छन अच्छे नहीं और रोज़-रोज़ का यह काण्ड बन्द होना चाहिए। एक दिन तो उसके क्रोध का पारा आसमान तक चढ़ गया। उसने भरपेट गालियाँ बक कर यह साबित कर दिया कि वह ऐसे अनमोल शब्दों का अपव्यय साधारण अवसरों पर नहीं करता। छोकरे तो चिकने घड़े थे, उन्होंने एक कान से गालियां सुनीं और दूसरी से निकाल दीं। लेकिन वह गश खाकर गिर पड़ी। वह लगातार चौबीस घंटों तक चीखती-चिल्लाती और सिसकती रही। खाना-पीना छोड़कर वह जड़वत होकर एक ही जगह बैठी रही। नहाना-धोना, कंघी-पट्टी सब बन्द। वह विक्षिप्त अवस्था में काँग पर पड़ी रही। बच्चे-

बूढ़े सब की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। आखिर अब क्या किया जाय। पड़ौस की एक कुटनी बुढ़िया ने सलाह दी कि सर पर जो देवता सवार है उसे उतारने के लिए किसी ओझा को बुलाया जाय। देखते-देखते ही ओझा के रूप में एक और बुढ़िया कुटनी आ धमकी और विधिपूर्वक जादू-टोने का क्रम आरम्भ हो गया। देवी ने कुटनी के मुँह द्वारा यह कहलवाया कि वहू के सिर पर उसकी प्रिय चेली तीसरी परी-कन्या सवार है। यह सुनते ही विक्षिप्त बहू के कान खड़े हो गये, और वह बुदबुदाने लगी, "देवी, तुम ठीक कहती हो, 'हे देवी, तुम्हारा अनुमान ग़लत है—' आदि, आदि। इस सारे काण्ड का नतीजा यह निकला कि हर महीने की पहली और पन्द्रहवीं तारीख को तीसरी परी-कन्या बहू के सिर पर सवार हो जाती। और तो और, लोगों के झुण्ड के झुण्ड उसके सामने अगर-बतियाँ जलाते और उससे अपने भाग्य और बीमारी की बातें पूछते। इस तरह तीसरी परी-कन्या की वेदी की स्थापना हुई।

लेकिन यह सब इतनी आसानी से ही नहीं हो गया। आइए, मैं आप को बताता हूँ। तीसरी परी-कन्या के यहाँ जाने वाले गाँव के जवान छोकरों की दिलचस्पी देवी की भविष्य-वाणियाँ सुनने में न थी। वे तो देवी की रूप-माधुरी का दर्शन करने जाते थे। और देवी भी इतनी भोली बालिका न थी कि उनके अभिप्राय को न समझती हो। देवी की पोशाक दिन-प्रतिदिन भड़कीली होती गई। घण्टों बैठकर वह अपने बालों को सँवार कर मुलायम बनाती। उसके चांदी के गहने नये सिक्कों की तरह हर समय चमचमाते रहते और उसके सुर्खी-पाउडर मले चेहरे को देखकर किसी के मुँह में भी पानी आ सकता था। फिर भला गाँव के छोकरे उस के पीछे क्यों न घूमते।

यह तीस साल पुरानी बात है। इस बीच वे अल्हड़ छोकरे नाती-पोतों वाले हो गये, और उनके सिर के बाल सफ़ेद हो गये। उनके वंशजों की विपुल संख्या उनके जीवन की सार्थकता की प्रतीक है। सो कुछेक अड़ियल कुंआरों के सिवा तीसरी परी-कन्या के पुराने प्रेमियों में से अब

कोई भी उसके पास नहीं फटकता।

तीसरी परीकन्या भला ऐसी अवहेलना को क्योंकर बर्दाश्त करने लगी। इस पैंतालीस साल की उम्र में भी वह अपने सौन्दर्य की छटा चारों ओर बिखेरती। उसके नन्हें जूतों पर बेल-बूटे कढ़े होते हैं, और उसके पाजामे में चौड़ी रंगदार पट्टी लगी रहती है। उसकी खोपड़ी गंजी हो चली है, लेकिन वह जैसे-तैसे उसे एक काले रूमाल से ढंक कर रखती है। तो भी उसके चेहरे की झुर्रियाँ पाउडर से छिपाए नहीं छिपतीं। ऐसा लगता है जैसे गधे की लीद पर सूअर की थूक पोती गई है।

लेकिन तीसरी परी-कन्या ग़ज़ब की तिकड़में जानती है। जब उसके पहले प्रेमियों ने उससे विरक्त होकर अपना घर-बार बसा लिया तो वह अपने आस-पास मँडराने वाले खूसट कुँआरों से ऊब गई, और उसने आगे से भी अधिक संख्या में सुन्दर सजीले जवान छोकरे फिर जुटा लिए।

भला ये सब छोकरे क्यों उसके घर की ओर भागते थे? अब इसका कारण थी तीसरी परी-कन्या की बेटी स्याओ चिन।

(तीन)

स्याओ चिन

आख़िर तीसरी परी-कन्या एक औरत ही तो थी और एक औरत की तरह वह अपने 'पति' के प्रति धर्म निभाना भी जानती थी, जिसका फल था छै बच्चे। उनमें से केवल स्याओ चिन ही बच रही थी। तीन बरस की उम्र में ही स्याओ चिन खूबसूरती, नज़ाकत और मिठास में सब बच्चों को मात करने लगी। उसे सब प्यार करते। उसकी माँ के सारे प्रेमी उसको गोद में लेने के लिए एक दूसरे से होड़ करते।

एक कहता, "यह मेरी है।"

"नहीं, मेरी।"

"मेरी" तीसरा चिल्ला उठता।

पाँच साल की होने पर तीसरी परी-कन्या सोचने लगी कि यह सब बातें अच्छी नहीं। उसने स्याओ चिन को सिखाया कि वह लोगों से कहा करे, "मैं तो तुम्हारी मौसी हूँ।" वह ऐसा ही करती। लोगों का हँसी-विनोद बढ़ता गया, और कुछ ही दिनों में प्रेमियों की उसे अपना कहने की उत्सुकता शान्त हो गई।

स्याओ चिन ने इस साल अठारवें वर्ष में पैर रखा है। गांव के बुज़ुर्गों का कहना है कि वह अपनी माँ से भी अधिक सुन्दर है। गाँव के नये छोकरे किन-किन तरीकों से उससे दो-चार बातें कर लेने का मौक़ा निकाल लेते हैं, उनका ज़िक्र करना ज़रूरी है। सियाओ चिन जब झरने में कपड़े धोने के लिए जाती है तो उस समय गाँव के सभी जवान छोकरों में कपड़े धोने का उत्साह उमड़ पड़ता है। साग-भाजी के योग्य कोंपले तोड़ने के लिए स्याओ चिन जब पेड़ पर चढ़ती है तो उस समय गाँव के सभी छोकरे बन्दरों की औलाद की तरह पेड़ों पर चढ़ते फिरते हैं।

दोपहर को खाने के समय पड़ौसी भी अपने प्याले और खाने की तीलियाँ ले कर तीसरी परी-कन्या के घर जा पहुँचते, यहां तक कि सामने के गाँव वालों के लिए भी एक 'ली' की दूरी मामूली रह गई थी। वैसे तो पिछले तीस बरसों से यही होता आया था, लेकिन इधर, दो-तीन सालों से छोकरों का तांता विशेष रूप से बढ़ गया है।

लोगों की भीड़ जमा होने पर तीसरी परी कन्या का दिमाग़ सातवें आसमान पर चढ़ जाता, और खुशी के मारे उसके पांव ज़मीन पर न पड़ते। वह बुढ़िया छिनाल सोचती, कि सारे लोग, मानो उसी के कटाक्ष पाने की खातिर वहाँ जमा होते हैं। बहुत दिनों तक लोगों को अपने से दूर हटते देख कर आखिर उसकी आँखें खुलीं, उसने देखा कि उन लोगों के आकर्षण का केन्द्र तो स्याओ चिन है।

लेकिन स्याओ चिन दूसरी ही मट्टी की बनी थी। उसने अपनी

माँ के लच्छन नहीं पकड़े थे। वैसे तो वह दिन भर गाँव के जवान छोकरों के साथ हँसती-बोलती रहती थी, लेकिन इससे अधिक वह किसी से मेल-जोल नहीं बढ़ाती थी। सिर्फ़ स्याओ-एर्र ही ऐसा व्यक्ति था जिसकी ओर उसका कुछ पक्षपात रहता।

पिछले साल की गर्मियों में एक रोज सवेरे यू-फू तो खेत पर चला गया था, और तीसरी परी-कन्या कहीं और नज़र लड़ाने चली गई थी। घर में अकेली स्याओ चिन रह गई थी, कि इतने में गांव के सब लोगों पर धौंस जमाने वाला, चिन-वांग, मुस्कुराता हुआ अन्दर दाखिल हुआ।

भयंकर लम्पट भाव से हँसता हुआ वह स्याओ चिन के बिलकुल नज़दीक आकर बोला, "आज तो हमें मिलने का मौका मिला, है न ?"

स्याओ चिन ने उसकी ओर कठोरता से देखते हुये कहा, "चिन-वांग भइया, हमें एक दूसरे से अदब-क़ायदे से बोलना चाहिये। तुम अब बड़े हो गये हो, और तुम्हारी अपनी पत्नी है।"

अपनी जीभ निकाल कर चिन-वांग ने उत्तर दिया, "अब तुम अदब-क़ायदे वाली बनना चाहती हो ? क्यों ? मैं तुम्हारी नस-नस को पहचानता हूँ, अगर अभी स्याओ-एर्र आ जाये तो तुम फ़ौरन मोम-सी पिघल जाओगी। अगर कुछ हासिल करना चाहती हो तो अच्छा है, कि हम आपस में मिल बांट कर रहें तब कोई झगड़ा-झंझट नहीं होगा। लेकिन अगर अदब-क़ायदे की बातें करनी हैं तो याद रखो कि यह उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे वाली कहावत होगी !" बोलते-बोलते उसने स्याओ चिन की बाँह पकड़ ली थी। "आओ भी, इतनी पारसा मत बनो !" उसने फिर लम्पट हँसी हँसते हुए उसे उकसाया।

उसने फ़ौरन बाँह छोड़ दी मानो जलती शलाख हो और चलता बना। लेकिन जाते-जाते वह बड़बड़ाता गया :

"मैं अब और इन्तजार नहीं कर सकता, मेरी हसीन क़ातिल," भागने से पहले उसने कहा, "और इन्तज़ार नहीं कर सकता।"

(चौथा)

चीते

रही चिन वांग की बात सो ल्यू घाटी में एक भी प्राणी ऐसा न था जो उससे नफ़रत न करता हो। सिर्फ़ उसका एक चचेरा भाई, सिंग-वांग ही उसके गुन गाता फिरता था।

चिन-वाँग का बाप यों तो एक मामूली किसान था और उसे सीधा-सादा और निष्कपट होना चाहिए था, लेकिन खूँख्वारी और निर्दयता में वह पूरा जानवर था। बस पशुओं की भाँति चार पैरों पर चलने की कसर बाक़ी रह गई थी। वह ल्यू कुटुम्ब का चीता था। जब से वह गाँव का मुखिया बना था, लोगों की धर-पकड़ और मारपीट ही उसका पेशा बन गया था।

सत्रह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते चिन वांग भी अपने बाप के चरण-चिह्नों पर चलने लगा, 'जैसा बाप वैसा बेटा।' उद्दण्डता सीखते उसे तनिक भी देर न लगी। और तो और सिंग-वांग ने भी यह सब आदतें सीख लीं, और उसे भी इन करतूतों का श्रेय मिलने लगा।

इसके बाद चिन वांग का पिता निश्चिन्त हो गया क्योंकि उसके प्रयत्न के बिना ही चिन वांग और सिंग-वांग अपनी तिकड़मों से उसका काम निकाल देते थे।

जापान विरोधी युद्ध के कारण फैलने वाली गड़बड़ी के दिनों में तो इन लोगों ने जी भर कर मनमानी की। युद्ध के प्रारम्भिक काल में चीन के देहाती इलाकों में देश-द्रोही, जासूस, भगोड़े और डाकू शरण ले रहे थे। उन लोगों ने अजब धाँधली मचा रखी थी। चिन-

वांग के पिता की तो मृत्यु हो चुकी थी, लेकिन चिन-वांग और उसके चचेरे भाई सिंग-वाङ्ग ने इन लोगों से साँठ-गाँठ की, वे पैन्शनयाफ़्ता-सिपाहियों की सहायता करने की आड़ में लूटखसोट और अपहरण में भाग लेते और फिर अपहरण किये गये लोगों के परिवार की तरफ़ से रिहाई की शर्तों का भाव-तोल करने आते। गाँव के लोगों का कहना था कि ये लोग तो शैतान के भी बाप हैं—यहाँ तक कि भूत-चुड़ैल भी इनसे डरते हैं, वे दोनों पक्षों के सामने चिकनी-चुपड़ी बातें करके अपना फायदा उठाया करते थे। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में इन लोगों की अन्धेरगर्दी तब तक चलती रही जब तक कि आठवीं सेना ने आकर इन डाकुओं और सेना के विघटित सैनिकों को तितर-वितर नहीं कर दिया।

पहाड़ी इलाक़ों में रहने वाले लोग प्रकृति से ही डरपोक होते हैं। इस गड़बड़ के बीच जब अनेकों लोग मौत के घाट उतारे गये तो उनका डर और भी बढ़ गया। साम्यवादी सरकार क़ायम होने पर हर गाँव में दफ़्तर, 'देशरक्षा' तथा सैनिक-समितियाँ बनाई गईं। लेकिन ल्यू घाटी में ज़िला-सरकार के प्रतिनिधि के सिवा, अन्य कोई भी व्यक्ति कान-पू[1] बनने का इच्छुक न था। लेकिन कुछ दिनों में ही ज़िला-सरकार की तरफ से कान-पूओं के चुनाव के लिये ल्यू घाटी में कार्यकर्ता भेजे गये। चिनवाँग और सिंग वाँग की जोड़ी ने सोचा कि ताक़त हासिल करने का यह अच्छा मौका है। लोगों ने भी यह देखकर कि गाँव में जिम्मेदारी

१. कान-पू—साम्यवादी सरकारी समिति का पदाधिकारी। इसे 'कार्यकर्त्ता' भी कहा जाता है। लेकिन यह अनुवाद ग़लत है, क्योंकि 'कार्यकर्त्ता' जनता की नीति निर्धारित करते हैं, जबकि 'कान-पू' व्यक्तिगत हैसियत से सरकारी शासन में भाग लेते हैं। उनकी सामूहिक कार्यशीलता को व्यक्त करने के लिये 'कान-पू' नाम दिया गया है। जिसका अर्थ है "सक्रिय श्रेणी।"

उठाने वाले लोग भी हैं—सिंग वाँग को सैनिक-समिति का प्रधान, तथा चिन वाँग को नागरिक मामलों का मन्त्री चुन लिया। यहाँ तक कि उसकी पत्नी भी जापान विरोधी नारीदल की प्रधान चुन ली गई। उनकी तिकड़म से कई बूढ़े खूसट लोग अन्य पदों के लिये चुने गये लेकिन जापान-विरोधी-नौजवान मोर्चे के कप्तान पद के लिये किसी खूसट का चुना जाना सम्भव न था। अब चिन वाँग ने देखा कि स्याओ-एर्र-ही (अथवा नन्हा कलूटा) भला छोकरा है, और बिना किसी विरोध के उसे भी निर्वाचित करवा दिया। स्याओ-एर्र कुआँग मिंग द्वितीय अपने बेटे के निर्वाचन के हक़ में न था लेकिन वह चिन वाँग को कैसे नाराज़ कर सकता था? सो उसने इस मामले में चुप रहना ही ठीक समझा। इस बार उसने जादू-टोने की शरण भी न ली।

गाँव का नया मुखिया, इन सब बातों से अपरिचित था। इस स्थिति का फ़ायदा उठाकर चिन वाँग तथा सिंग वाँग ने मनमाना जुल्म किया। नये मुखिया की आँखों में धूल झोंककर वे दोनों लोगों को लूटते रहे। बाद में कितने अफ़सर आये, और न जाने कितनों का तबादला हुआ, लेकिन ये दोनों भाई पहाड़ की तरह अपने पदों पर डटे रहे। हर किसी के दिल में उनके प्रति तीव्र घृणा थी, लेकिन किसी की ज़बान से विरोध का एक भी शब्द न निकलता। भला म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े? कहीं लेने के देने न पड़ जायें। इस तरह अन्याय और अत्याचार दिन-प्रति-दिन फलते-फूलते गये।

(पाँच)

स्याओ एर्र-ही

स्याओ-एर्र-ही, अथवा नन्हा कलूटा कुंग-मिंग द्वितीय का छोटा भाई था। जापान विरोधी युद्ध के दौरान में, एक बार उसने जवाबी

हमले में दो जापानियों को मौत के घाट उतार कर 'निपुण निशानेबाज़' की उपाधि प्राप्त की थी। साहस और योग्यता के अतिरिक्त उसमें और भी गुण थे। उसकी खूबसूरती की शोहरत ल्यू घाटी के आस-पास के सभी गाँवों में फैली हुई थी। जिस ओर निकल जाता, तो जवान लड़कियाँ और यहाँ तक बूढ़ी औरतें भी उसके स्वागत में आँखें बिछा देतीं। उसे नज़र भरकर देखने के लिये बेचैन रहतीं।

स्याओ-एर्र-ही के बाप ने, उसे स्कूल भेजने की बजाय घर पर ही पढ़ना-लिखना सिखाया था। छ: वर्ष की अवस्था में ही उसने पढ़ना सीख लिया था। लेकिन उसकी पढ़ाई में प्राचीन ग्रंथ अथवा शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें न थीं। उसके पिता ने प्राचीन ग्रन्थों कन्फ्यूशस के सिद्धान्तों, साधारण ज्ञान तथा राष्ट्रीय साहित्य को पढ़ाने की बजाय, बेटे के दिमाग़ में ज्योतिष, आध्यात्म और पा-कुआ जादू भर दिया। पा-कुआ की चौसठ क्रियाओं को कण्ठस्थ करने के बाद उसने 'धर्मशास्त्र की अचूक कुंजी' 'जेड के सन्दूक का रहस्य,' 'यी-चियांग, सटीक, व संक्षिप्त 'रेशमी वस्त्र समिति के शरीरतन्त्र की कला' "संकट व सौभाग्य का द्वार" "यिग-याँग परिवार" आदि रट डाले।

कुशाग्रबुद्धि होने के कारण स्याओ-एर्र-ही ने जल्द ही राशिज्ञान प्राप्त कर लिया। अमुक व्यक्ति कौन-सी राशि में पैदा हुआ है, परदार साँप की, बैल की, चीते की, ख़रगोश की, बन्दर की अथवा साँप की। उसने पा-कुआ पुस्तक से भविष्य बताना भी सीख लिया था। जादू-टोने का एकाध मन्त्र भी उसे याद था। उसका पिता बेटे के इन गुणों का प्रदर्शन करने का बड़ा शौक़ीन था। उसकी शक्ल-सूरत इतनी आकर्षक थी कि हर कोई उसे दुलारना, पुचकारना चाहता था। कोई कहता, "एर्र ही, आओ राशिचक्र सुनाओ।" तो दूसरा कहता, "ज़रा मेरा हाथ देखना।"

तेरहवें वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते वह काफ़ी बदल चुका था। इस साल

एक बहुत बड़ा अपशकुन हुआ । कुँआग मिंग द्वितीय ने भविष्यवाणी की, कि वर्षा के बाद का दिन फ़सल बोने के लिये अशुभ है, यह भविष्यवाणी बिल्कुल झूठ निकली, जिसकी वजह से उनकी फ़सल को भारी नुक्सान पहुँचा और उसकी पत्नी बहुत नाराज़ हुई । अपने सयाने पड़ौसियों की लहलहाती फ़सल को देखकर तो उसके मन में पति के प्रति तीव्र घृणा सुलग उठी । ता-ही (बड़ा कलूटा) भी पिता की इस हरकत से खिन्न हो गया । इधर घर में चावल का एक भी दाना न था, उधर लोग फबतियाँ कसते थे ।

स्याओ-एर्र ही तेरह बरस की आयु में ही बहुत सयाना हो गया था । लेकिन बड़े-बूढ़े, छोटा समझ कर उसका मज़ाक उड़ाते । बाप को ताना देने के लिये वे बेटे को चिड़ाते, "क्यों भई स्याओ, आज का दिन बीज डालने के लिये शुभ है अथवा अशुभ ?" और उससे नाराज़ होने पर वे चिल्ला-चिल्ला कर कहते, "अशुभ है, अशुभ है ।" महीनों तक स्याओ एर्र ही लोगों की नज़रें बचाकर चलता । जब भी माँ-बाप में झगड़ा होता, तो वह हमेशा पिता के विरुद्ध माँ का साथ देता । और तो और, बूढ़े खूसट के पा-कुआ से उसका विश्वास सर्वथा उठ गया था ।

जिस समय यह कहानी लिखी गई थी, स्याओ-एर्र को स्याओ-चिन की संगति में रहते दो-तीन साल बीत गये थे । सत्रह साल का होते-होते वह भी तीसरी परी-कन्या के प्रेमियों के दल में शामिल हो गया । शाम को मन बहलावे के लिये सब लोग परी-कन्या के घर जा बैठते । संयोगवश स्याओ एर्र के दिल में स्याओ चिन के प्रति इतना गहरा प्रेम उत्पन्न हो गया कि बिना स्याओ चिन से मिले, उसे नींद न आती । दोनों का विवाह-सम्बन्ध तय करवाने वालों की गाँव में कोई कमी न थी । लेकिन कुँग-मिंग दूसरा, इसके विरुद्ध था—उसकी दलीलें, निकम्मी और दुराग्रहपूर्ण थीं, तो भी वह अपने निश्चय पर दृढ़ था । उसकी पहली दलील यह थी कि स्याओ-एर्र ही की जन्म राशि 'धातु' है और स्याओ चिन की 'आग' । चूंकि आग से धातु पिघल जाती है, इसलिये स्याओ-

एर्ऱ-ही ऐसी अग्निमय पत्नी को पाकर सुखी न हो सकेगा। उसकी जिन्दगी तबाह हो जायेगी। दलील न दो, स्याओ चिन अक्तूबर में पैदा हुई थी, जो स्त्री के लिये अशुभ है। तीसरा कारण, तीसरी परी-कन्या की बदनामी थी।

इसी समय समस्या का हल दिखाई दिया, दैवयोग से चाँगतेफू से अकालपीड़ितों का एक दल गाँव में आ पहुँचा। इसमें 'ली' नामक एक बूढ़ा भी शामिल था। उसके साथ उसकी आठ-नौ बरस की लड़की भी थी। भुखमरी से तंग आकर बूढ़े ने फ़ैसला किया था, कि जो भी उसकी बेटी को रखने के लिये तैयार होगा, उसी के हाथ सौंप देगा। इतने सस्ते सौदे को देखकर कुँग-मिंग का जी ललचा गया। लेकिन लड़की की जन्म-पत्री देखे बगैर कोई भी फ़ैसला करना असम्भव था। सब कुछ मालूम होने पर उसने सोचना शुरू किया—जिसका परिणाम बहुत शानदार था।

"एक हज़ार 'ली' के फ़ासले पर पैदा होने के बावजूद भी संयोगवश ये दोनों एक ही भाग्यसूत्र से बंधे हैं।" उसने फ़तवा दिया।

और उसने नन्हीं लड़की को, स्याओ-एर्ऱ-ही की भावी पत्नी के रूप में घर पर रख लिया।

कुंग-मिंग दूसरा अपनी दैवी-शक्ति द्वारा जानता था कि ये दोनों एक-दूसरे के लिये सौ फ़ी सदी उपयुक्त हैं, लेकिन वह स्याओ-एर्ऱ-ही को इस बात के लिये राजी नहीं कर पाया। बाप-बेटे में कई दिनों तक लड़ाई होती रही। पिता के बार-बार आग्रह करने पर स्याओ-एर्ऱ-ही ने उत्तर दिया, "अगर आप उसे चाहते हैं, तो शौक से रखें, मैं उसे नहीं चाहता, न ही मेरा उससे कभी कोई वास्ता रहेगा।"

आख़िरकार वह नन्हीं लड़की स्याओ-एर्ऱ-ही के हृदय-परिवर्तन की प्रतीक्षा में वहीं रहने लगी।

(छठा)

सुधार-सभा

स्याओ चिन द्वारा अपमानित किये जाने के बाद से ही चिन-वाँग के हृदय में प्रतिशोध की आग सुलग रही थी। उसका चेहरा पीला ज़र्द हो गया था, मानो बरसों से जिगर का मरीज़ हो। वह चुपचाप उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता रहा। आख़िरकार जब मलेरिया के कारण स्याओ-एर्र-ही सैनिक-समिति द्वारा आयोजित 'कान-पू' के ट्रेनिंग कोर्स में न जा सका तो चिन वाँग ने अपनी मूछों पर ताव दिया।

वह सीधा सिंग-वांग के घर पहुँचा, और कहने लगा, "स्याओ-एर्र बहानेबाज़ है। दरअसल वह स्याओ चिन के हत्थे चढ़ गया है और सारा समय, भोग-विलास में बिताना चाहता है, अब वह अपनी ड्यूटी पर क्यों जाने लगा? सुधार-सभा में खुले आम उसकी जांच की जानी चाहिए।"

सिंग-वाँग पर इस सुझाव का तुरन्त प्रभाव पड़ा। उसने सोचा, गाँव की सैनिक-समिति के अध्यक्ष की हैसियत से सियाओ-एर्र-ही पर रौब जमाने का अव्वल मौक़ा है। अब वह उन्हें दिखा देगा कि वह भी कुछ है। वह मार-मार के उसकी होश ठिकाने ला देगा। उसे भी स्याओ चिन ने एक बार अपमानित किया था। चिन वाँग के सुझाव ने उसकी बदले की भावना को फिर से जगा दिया।

उसने बदला लेने की पूरी योजना बनाई। उसने आँख के इशारे से चिन वाँग को जता दिया कि स्याओ-चिन की अब खैर नहीं। जापान-विरोधी महिला-संघ के लिये यह बायें हाथ का खेल है और उसकी प्रधान भी उसकी अपनी पत्नी थी।

वैसे तो श्रीमती जी हर मामले में पति से भिन्न राय रखती थीं, लेकिन इस बार उनका सहयोग प्रशंसनीय था। वे स्वयं भी बहुत समय से स्याओ चिन से परेशान थीं, उसे देखते ही उनकी भवों पर बल पड़ जाते

थे। इसका कारण था, उनकी स्त्रीसुलभ ईर्ष्या। उन्हें पता चल गया था कि चिन वाँग, स्याओ चिन के प्रेमाभिलाषियों में से एक हैं, और इसी इरादे से स्याओ चिन के घर आते-जाते हैं—इसके अलावा वह कम्बख्त श्रीमती जी से कहीं अधिक खूबसूरत थी—क्रोध से उनका रक्त खौल उठा। और आज जब पति ने स्याओ चिन पर खुलेआम मुकद्दमा चलाने का सुझाव रखा, तो श्रीमती जी अपनी सम्पूर्ण शक्ति से इस पुण्य कार्य में जुट गई।

अगले दिन गांव में दो सुधार-सभाएँ हुईं। एक तो स्याओ-एर्र-ही पर विचार करने के लिये सैनिक-समिति की ओर से बुलाई गई, और दूसरी जापान-विरोधी महिला-दल की ओर से स्याओ चिन को होश में लाने के लिये।

गाँव के एक कोने में मर्द जमा हुए, जिन में गठिया के सताये हुये खूसट बूढ़े भी थे जो 'कान-पू' दल के सामने पालथी मार कर बैठे थे। थोड़ी दूर सड़क के किनारे औरतों का झुण्ड बैठा था, चारों ओर गम्भीरता और उत्सुकता छाई थी।

लेकिन स्याओ-एर्र-ही को झुकाना टेढ़ी खीर थी। चूँकि वह निर्दोष था, इसलिये उसने डट कर अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का प्रतिवाद किया। जब उसने अपराध स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तो तंग आकर सिंग-वाँग ने उसे गिरफ्तार करने का हुक्म दिया, ताकि उसे उच्च अधिकारियों के हाथों में सौंप दिया जाये।

गाँव के मुखिया ने इस बात का विरोध किया। सौभाग्य से उसकी बुद्धि दुरुस्त थी, और उसने इस अन्याय को भाँप लिया था।

"देखो, स्याओ-एर्र-ही को सचमुच मलेरिया हो गया था, उसने बहानेबाजी नहीं की। रहा उसका प्रेम-सम्बन्ध, वह अवैध नहीं, न ही इसके लिये इसे गिरफ्तार किया जा सकता है।" उसने सिंग-वाँग का प्रतिवाद करते हुए कहा।

"लेकिन उसकी मंगनी किसी दूसरी लड़की से हुई है।" सिंग-वाँग ने कहा ।

"कौन नहीं जानता कि स्याम्रो-एर्र-ही उस तथाकथित 'भावी-पत्नी' की ओर फूटी नजर से भी नहीं देखता। यह बात ठीक भी है—क्योंकि वह लड़की अभी सयानी नहीं हुई, न ही इसे भविष्य में स्याम्रो-एर्र-ही से वफ़ादारी की आशा है। वह स्वतन्त्र है, चाहे किसी को प्रेम करे। हम दखल देने वाले कौन होते हैं ?"

इस पर सिंग-वाँग की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। इस घबराहट का फ़ायदा उठा कर स्याम्रो-एर्र-ही ने पाँसा पलट दिया।

"क्या एक निर्दोष व्यक्ति को गिरफ़्तार करना न्याय है ?" उसने माँग की।

गाँव के मुखिया ने बड़ी मुश्किल से उसे चुप कराया। आखिरकार बड़ी मिन्नत-चिरौरी के बाद वह कुछ शान्त हुआ और सिंग-वाँग अपनी इस असफलता को देखकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। उसकी सारी तैयारियों पर पानी फिर गया था, सारी धूमधाम मिट्टी में मिल गई।

वह अभी गाँव के दफ़्तर में ही था कि इतने में जापान-विरोधी महिला-संघ की प्रधाना को चोटी से घसीटती हुई स्याम्रो चिन वहाँ पहुँची। वह मुखिया की तलाश में थी।

कमरे में क़दम रखते ही वह दहाड़ उठी, बरामद माल ही चोरी का सबूत है—रंगे हाथ पकड़े बिना आप कैसे किसी स्त्री अथवा पुरुष पर व्यभिचार का दोष मढ़ सकते हैं ? ज़रा देखिये जापान-विरोधी महिला-संघ की इन प्रधाना जी को, जो निर्दोष लोगों के मुँह पर कालिख पोतती फिरती हैं। मुखिया महोदय, क्या मैं जान सकती हूँ, कि आप इस विषय में क्या करने वाले हैं ?"

सिंग-वाँग ने यह देखकर कि स्याम्रो चिन जोंक की तरह उसकी पत्नी से चिपक गई है, ऐसे अमंगलकारी अवसर पर वहाँ से

पलायन करना ही उचित समझा। वरना उसकी करतूतों का भण्डा फूट जाता।

वह अभी खिसक कर बाहर निकला ही था कि पीछे से गाँव के मुखिया की सान्त्वनापूर्ण आवाज़ सुनाई दी। लेकिन उसके हृदय में जलने वाली प्रतिशोध की प्रचण्ड ज्वाला इन शब्दों से शान्त न हो सकी।

(सात)

तीसरी परी-कन्या की चालें

इन दो असफल सभाओं के बाद स्याओ-एर्र-ही और स्याओ चिन के हाथ मजबूत हो गये। उन्होंने मुखिया के मुँह से सुना था कि नये राज में शादी इच्छानुसार होती है। अब उन्हें सड़े-गले अंधविश्वास तथा रीति रिवाजों का आश्रय लेने की कोई ज़रूरत न थी। यह जानकर कि कानून उनके प्रेम को उचित ठहराता है, उनका सहारा बढ़ गया और वे आपस में खुलकर इस विषय पर बातचीत करने लगे।

जब तीसरी परी-कन्या के कानों तक यह बात पहुँची तो वह गुस्से से लाल-पीली हो गई। वैसे स्याओ चिन उसकी बेटी थी, लेकिन पिछले कई वर्षों से माँ-बेटी में पटती न थी। कारण सीधा-सादा था, वह यह कि तीसरी परी-कन्या जवान लड़कों पर आसक्त थी, और लड़के स्याओ चिन पर फ़िदा थे। क्या हम पहले बता नहीं चुके कि स्याओ एर्र गाँव का सबसे सुन्दर, सजीला जवान था? तीसरी परी कन्या ने अपनी जिन्दगी में स्याओ एर्र से अधिक सजीला, लम्बा, निडर जवान नहीं देखा था। वह एक बड़े, पके फल की तरह से था, जिसे देखते ही परी कन्या के मुंह में पानी आ जाता था—और अब इस फल की स्वामिनी, स्याओ चिन होगी? बुढ़िया कुटनी को छिलका तक भी नसीब न होगा।

वह बहुत दिनों से सोच रही थी कि स्याओ चिन की शादी करके

वह चैन की बंसी बजाए। लेकिन उसकी बदनामी की वजह से कोई भी उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने से घबराता। सुधार सभा के बाद जब यह अफ़वाह फैली, कि अब स्याओ-एर्र ही, दोनों पक्ष के माता-पिता की सम्पत्ति लिये बिना ही अपना रिश्ता स्वयं तय करेगा, तो तीसरी परी-कन्या के क्रोध का वारापार न रहा, दामाद बन जाने पर तो स्याओ-एर्र-ही, चन्द्रमा की तरह हाथ से दूर चला जायेगा। वह उससे छोटा सा मज़ाक भी न कर पायेगी। कितनी बुरी बात है! अब वह वर की खोज में घर-घर चक्कर लगाने लगी। स्याओ-एर्र-ही के अलावा कोई भी लड़का, चाहे वह काला चोर क्यों न हो, उसे पसन्द था।

पुरानी कहावत है, "झंडा फहराते ही लोग भरती होने के लिये टूट पड़ेंगे।" गांव में मिस्टर वू नाम का एक कर्नल भी था, जो पहले, लड़ाके ज़मींदार यिन-सी-शान की फ़ौज में था। नौकरी से रिटायर होने के बाद अब वह गांव में ही रहने लगा था। वह काफ़ी मालदार था, और हाल ही में उसकी पत्नी का देहान्त हुआ था। मन्दिर के एक मेले में स्याओ चिन की एक ही झलक से वह पुलकित हो उठा था, और उसे अपनी दूसरी पत्नी के आसन पर सुशोभित करने को उत्सुक था। विवाह का प्रस्ताव लेकर जब उसके मित्र तीसरी परी-कन्या के घर पहुँचे, तो उस की बाछें खिल गई। सच कहते हैं, कि ईश्वर जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है। मँगनी की लिखा-पढ़ी हो गई और सारा मामला पक्का तय हो गया। परी रानी मन ही मन खुशी से फूल कर कुप्पा हो गई।

उसने सोचा था कि स्याओ चिन आज्ञाकारी बेटी है, लेकिन उसका अनुमान ग़लत निकला। स्याओ चिन के विचार स्वतन्त्र थे और उसने ऐसे महत्वपूर्ण मामले में अपनी विक्षिप्त माँ की सलाह लेना उचित न समझा।

जिस रोज़ मँगनी का शगुन पहुँचा, माँ-बेटी में खूब झगड़ा हुआ। स्याओ चिन ने गुस्से से पागल होकर मिस्टर वू द्वारा भेजे गये रेशमी, कपड़े और गहने ज़मीन पर पटक दिये। उसने जानबूझकर ऐसा किया

था, क्योंकि शगुन लाने वाले लोग भी वहीं मौजूद थे, वह चाहती थी कि सब बातें मिस्टर वू तक पहुँच जाएं।

उनके जाने के बाद स्याओ चिन ने माँ से कहा, "मेरा इस शगुन से कोई संबन्ध नहीं, जिसने मिस्टर वू का शगुन स्वीकार किया है, वही जाकर शादी और करा ले।"

तीसरी परी-कन्या बेटी के स्वभाव से भली-भांति परिचित हो गई थी और वह जानती थी कि उससे बहस करने का कोई लाभ नहीं। दैवी शक्तियों से प्रभावित होने के कारण उसकी एक चाल अब भी बच रही थी। बूढ़े उल्लू की तरह आँखें झपकाती हुई वह सोने के लिये चल दी। डट कर भोजन करना वह नहीं भूली, सारा दिन घर में मंगनी की धमा-चौकड़ी मचती रही थी, इसलिए दलिया कुछ कच्चा रह गया था, जैसे-तैसे करके वह उसे निगल गई। पेटपूजा समाप्त होने पर दूसरा काण्ड शुरू हुआ। परी-कन्या ठंडी आहें भरती हुई इधर-उधर चक्कर काटने लगी। किसी अन्य व्यक्ति को इस दशा में देखकर बदहज़मी का अनुमान लगाया जा सकता था, लेकिन तीसरी परी रानी को तो 'दैवी' आत्माएँ दर्शन दे रही थीं। इन आत्माओं ने महीने की पहली या पन्द्रहवीं तारीख के बजाये वह अवसर क्यों चुना, यह सोचकर कुछ हैरानी होती है। ख़ैर, देवी के तो सात ख़ून भी माफ़ होते हैं।

कुछ देर बाद उसने दो जम्हाइयाँ लीं और फिर बड़बड़ाने लगी। उसकी 'दैवी' वार्ता शुरू हो गई थी।

घोर स्वामी-भक्त यू-फ़ू ने देवी का अभिनन्दन करने के लिये झपट कर लाल मोमबत्तियाँ और वेदवृक्ष की टहनियाँ जलाईं और फिर दैवी आदेश की प्रतीक्षा में दण्डवत् लेट गया।

देवी ने पहले तो घर की व्यवस्था के प्रति लापरवाही दिखाने के लिये उसे जली-कटी सुनाई। उसका यह प्रलाप अत्यन्त प्रभावशाली था। फिर देवी ने यह भी कहा कि स्याओ-चिन और मिस्टर वू, अपने पूर्व कर्मों के कारण एक दूसरे के लिये बने हैं। विवाह-सम्बन्ध ईश्वर के

दरबार में निर्धारित होते हैं। मनुष्य को ईश्वर द्वारा बनाये गये इस सम्बन्ध को तोड़ने का कोई अधिकार नहीं।"

यू-फू का भक्ति-भाव देखकर परी रानी बहुत प्रसन्न हुई। वह देवी का हुक्म पाते ही कुछ भी करने के लिये तैयार था। देवी ने आज्ञा दी कि स्याओ-चिन की मरम्मत की जाये।

यह सुनकर स्याओ-चिन समझ गई कि ऐसी चुड़ैल माँ से पिंड छुड़ाना ही बेहतर है, जो अपनी मर्जी के मुताबिक 'देवी' का रूप धारण कर लेती है। स्याओ-चिन चुपचाप घर छोड़कर चल दी।

वह अंधेरे में स्याओ-एर्-ही के घर की ओर जा रही थी कि इतने में स्याओ-एर्-ही आ पहुँचा। वह भी उसे ढूंढ़ रहा था। दोनों के हाथ एक-दूसरे से छू गये और वे धीमे स्वर में बातचीत करते हुए पास की एक गुफ़ा में दाख़िल हुए। अब उन्हें तीसरी परी-कन्या के हथकण्डों से जूझना था।

(आठ)

गिरफ्तारी

गुफ़ा के अन्दर अंधेरे की पर्तें मखमल को भी मात कर रही थीं। एक कोने में दुबक कर स्याओ चिन ने बताया, किस तरह उसकी माँ ने एक जगह मंगनी तय की थी, किस तरह देवी बनकर उसे मरवाने की साजिश की थी। कहानी लम्बी थी, और स्याओ-एर्-ही उसे धैर्य-पूर्वक सुन रहा था।

वह परी रानी की साज़िश से ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। उसने कहा, "तुम इन बातों की कोई भी परवाह मत करो। मैंने ज़िला सरकार के साथियों से सब बातें मालूम की हैं। उनका कहना है कि यदि दो प्रेमियों ने शादी करने का फ़ैसला कर लिया है तो उसमें रुकावट डालने का अधिकार किसी को भी नहीं।"

उसकी बात पूरी भी न होने पाई थी कि इतने में किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी। स्याओ-एर्-ही ने गुफा से बाहर झांक कर देखा।

चार-पांच व्यक्ति अंधेरे में से निकल कर आगे बढ़े। एक ने चिल्ला कर कहा, "पकड़ लो, इस साले को रंगे हाथ।" यह आवाज़ चिन वाँग की थी।

स्याओ-एर्-ही ने तड़ाक से जवाब दिया, "किस जुर्म में? यहाँ कौनसा पाप हो रहा है?"

इस पर सिंग वाँग ने आगे बढ़कर हुक्म दिया, "पकड़ लो! पकड़ लो! तुम्हारे पाप का फैसला बाद में होगा। इतने दिनों तक तुमने खूब छकाया।"

"जहाँ ले चलोगे, वहीं जाऊँगा।" स्याओ-एर्-ही ने गुस्से में कहा, "यहाँ तक कि प्रादेशिक सरकार तक भी। भला मेरा क्या बिगाड़ सकोगे? आओ चलें।"

"वाह! संग-संग चलने वाले! हम तुम्हें इतनी आसानी से छोड़ने वाले नहीं। आओ जवानो! इसकी मुश्कें कस दो।"

स्याओ-एर्-ही ने पूरी ताक़त से उनका सामना किया। बहुत देर तक मुक्केबाज़ी चलती रही। लेकिन ढेर से आदमियों के सामने वह अकेला क्या करता? बेचारा लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा।

इसके बाद सिंग वाँग को स्याओ चिन का ध्यान आया। उसने चिल्ला कर कहा, "गुफ़ा के अन्दर एक औरत भी है! उसे भी पकड़ कर बाँध डालो! यह छोकरी खुद ही तो कहती थी, कि मर्द-औरत का एक जगह पकड़ा जाना ही व्यभिचार का सबूत है।"

देखते-देखते स्याओ चिन को भी बाँध दिया गया, ठीक वैसे ही, जिस तरह आग पर भूनने से पहले मुर्गे को बांध दिया जाता है।

साँझ का झुटपुटा था। गांव के लोग अभी सोये नहीं थे। शोरगुल सुनकर वे मशालें लिये वहाँ भागे आये। स्याओ चिन और स्याओ-एर्-

ही को देखते ही सारे मामले को ताड़ गये ।

कुआँग-मिंग द्वितीय भी भीड़ में शामिल था। स्याओ-एर्र-ही को अपराधी की तरह बँधा देखकर वह सिंग वाँग के चरणों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर विनती करने लगा, "सिंग वाँग, हमारे परिवारों के बीच कोई द्वेष नहीं। मैं बूढ़ा हो गया हूँ—मेरे सफ़ेद बालों पर तो तरस खाओ।"

सिंग वाँग ने उत्तर दिया, "इस मामले का फ़ैसला मेरे हाथ में नहीं। अपराधियों को उच्च अधिकारियों के सामने पेश किया जायेगा।"

अपने पिता को इस तरह गिड़गिड़ाता देखकर स्याओ-एर्र-ही ने कहा, "बापू चिन्ता मत करो—ये लोग मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मैं बेक़सूर हूँ। फिर डर कैसा ? जहाँ चाहें भेज दें।"

सिंग वाँग ने जलकर कहा, "वाह रे बच्चू वाह ! हम भी देखेंगे, तुम्हारी कैसी दुर्गति होती है। फिर जन-सेना के सिपाहियों की ओर मुड़कर उसने हुक्म दिया, "इन्हें यहाँ से ले जाओ।"

एक सिपाही ने पूछा, "इन्हे कहां ले जाएँ, गाँव के दफ़्तर में ?"

"क्यों ? क्या पिछली बार मुखिया उन्हें गाँव के दफ़्तर में ले गया था ? हम इन्हें जिला सरकार के हवाले करेंगे। फ़ौजी अदालत ही इनका फ़ैसला करेगी।" सिंग-वांग ने ग़ुस्से में भर कर जवाब दिया।

और फिर दोनों क़ैदियों को कड़ी निगरानी में वहां से ले जाया गया।

(नौ)

कुंग-मिंग द्वितीय

गाँव के निवासी चिन-वांग के ज़ुल्मों को सहने के इतने आदी हो चुके थे कि स्याओ-एर्र की गिरफ़्तारी पर भी किसी में विरोध करने का साहस नहीं हुआ। वे निरीह भाव से अत्याचारियों की ओर ताकते

रहे—उनके चले जाने के बाद वे बेचारे कुँग-मिंग द्वितीय को सहारा देकर उसके घर छोड़ने आये।

हालांकि आवेश के मारे उसके घुटने काँप रहे थे तो भी उसकी ज़बान खौलती हुई केतली की तरह गर्म थी। रास्ते भर वह सारे मामले का 'रहस्य' बताता रहा।

बार-बार ठंडी सांसें लेकर वह बोलता गया, "सचमुच प्यारो! मैं जानता था कि दाल में कुछ काला है। कुछ दिन हुए मैं खेत की ओर जा रहा था। रास्ते में पुल पर गधे पर सवार एक औरत दिखाई दी। वह सिर से पाँव तक सफ़ेद वस्त्र पहने थी—शायद किसी सम्बन्धी का शोक मनाने के लिये। मैंने उसी समय जान लिया था कि शकुन अच्छे नहीं। आह प्यारो! इस वर्ष मेरी राशि राहु है और शोक मनाने वाले लोग मेरे सौभाग्य के शत्रु हैं। इसीलिये मैं घर से बाहर कम निकलता हूँ। लेकिन भाग्यचक्र को रोकने की क्षमता भला किसमें है? उस औरत को खेत में देखना ही मेरे भाग्य में लिखा था! इसके अलावा कल रात स्याओ-एर्र-ही की अम्माँ ने सपने में देखा कि मन्दिर में एक नाटक खेला जा रहा है। कितना बड़ा अनर्थ है? भगवान् बुद्ध की मूर्तियाँ भला नाटक कैसे खेल सकती हैं? इससे तो उनके ध्यान में बाधा पड़ती है। आज सुबह की बात है कि एक कौआ पूर्व दिशा से आकर छत पर बैठ गया—और उसने दर्जनों बार काँव-काँव की। कैसा अपशकुन है? आह प्यारो! मेरे बुरे दिन आये हैं—जहाँ जाता हूँ अमंगल ही दीखता है।"

वह अभी और बोलता, कि इतने में उसे ध्यान आया कि सारे पड़ौसी जा चुके हैं—और सिर्फ़ परिवार के इने-गिने लोग रह गये हैं। उसका लाड़ला बेटा स्याओ-एर्र-ही वहाँ नहीं था।

उस रात किसी की आँखों में नींद न थी। हाँ, स्याओ-एर्र-ही की तथाकथित "भावी पत्नी" डट कर सोई, क्योंकि वह अभी बालिका ही थी और स्थिति की गम्भीरता को समझने में असमर्थ थी, वैसे तो ता ही

भी विशेष चिन्तित न था, लेकिन माँ-बाप को दुःखी देखकर वह भी रात भर जागता रहा।

कुँआंग-मिंग द्वितीय की जबान अब शान्त हो गई थी। वह ठोड़ी पर हाथ रखे, हर समय न जाने किस सोच में डूबा रहता। फिर उँगलियों से गालों को थपथपाकर मानो उसने कोई निश्चय किया। उसने ज्योतिष की मेज़ की दराज़ में से तीन तांबे के सिक्के निकाले और उन्हें पांसे की तरह हिलाते हुए एक डिब्बी में फेंक दिया। वह हर बार एक रहस्यमय षट्कोण तैयार करता—जिससे शुभ-अशुभ, यिंग-यांग के खाने थे। सिक्कों का हिसाब लगाकर वह अपने भविष्य का ज्ञान प्राप्त करता था, परिणाम देखने के बाद उसने उँगलियों पर कुछ हिसाब लगाया।

हे ईश्वर ! उसका चेहरा एकदम सफ़ेद हो गया था।

"मुसीबत पर मुसीबत !" उसने कांपती आवाज़ में कहा, "बहुत बुरा, बहुत बुरा। दोपहर की भट्टी के शैतान नाराज़। आग ! जलती हुई आग ! कितना भारी खतरा है !" फिर भविष्यफल की ओर देखकर वह बुदबुदाया, "मैं स्वयं इस हक़ में नहीं था, कि वह—क्या नाम है उसका, 'जापान विरोधी नवयुवक संघ' का कप्तान बने। मैंने तो उसके चुनाव के समय भी हज़ार मना किया, लेकिन इस हरामी के दिमाग़ में तो अफ़सरी समाई थी ! कम्बख्त लोगों के कन्धों पर चढ़कर बड़ा आदमी बनना चाहता था ! और अब उसका फ़ौजी अदालत में मुकद्दमा होगा। अगर वह कप्तान न होता तो उसका मुकद्दमा भी साधारण नागरिक अदालत में होता। कोर्ट मार्शल की नौबत क्यों आती ?"

इन मनहूस भविष्य-वाणियों को सुन-सुनकर उसकी पत्नी सिसक रही थी। चाहे ये भविष्य-वाणियाँ सच थीं या झूठ, लेकिन यह बात तो साफ़ थी कि स्याग्रो-एर्-ही गिरफ़्तार हो गया था और उसका कोर्ट मार्शल होने वाला था। इतने शक्तिशाली शत्रुओं के सामने अब क्या चारा है ?

अपने हाथों को मलते हुए वह विलाप करने लगी। "हाय मेरे

मेमने ! कौन जानता था कि तुम पर इतनी भारी मुसीबत आ पड़ेगी ?"

उसका क्रन्दन क्रमशः बढ़ता गया। ता ही ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, "डरो मत, जो होना था हो गया। रोने से क्या लाभ ? आख़िर इतनी गम्भीर बात तो है नहीं। स्याओ-एर्र-ही निर्दोष है। मैं जिला सरकार के पास जाकर सारी बातें मालूम करूँगा। आप निश्चिंत हो कर सो जायें।"

उसने कागज की लालटैन जलाई और उसे बाँह में लटका कर अन्धेरे में कहीं चला गया।

ता-ही के जाने के बाद कुंग-मिंग द्वितीय ने अपने भविष्यफल को दोबारा जाँचा। कागज पर लिखे हिसाब को वह बड़े ध्यान से जोड़ता जाता था। लेकिन उसके चेहरे से ऐसा लगता था कि उसकी चिन्ता दूर नहीं हुई। अचानक उसकी आँखें पथरा-सी गईं। ऐसा मनहूस भविष्यफल ! उसका बेटा कैसे बच सकता है ? भविष्यफल के अनुसार तो उसे फांसी लग चुकी है। आह ! एक लम्बी चीख़ मारकर वह ज़मीन पर धम्म से गिर गया।

काफ़ी देर इस अचेतावस्था में पड़े रहने के बाद उसे कुछ होश आई। कोई औरत ऊंचे स्वर में विलाप करती आ रही थी। हो-न-हो, यह अशुभ समाचार की भूमिका है। उसी समय कुछ लोग कमरे में दाखिल हुए।

कुँआंग मिंग के हिलने-डुलने से पहले की एक औरत ने आकर उसकी बांह दबोच ली और दर्द-भरी आवाज़ में मांग करने लगी, "ल्यू-सिन-ते ! मेरी बेटी लौटा दो ! तुम्हारा बेटा न जाने उसे कहां भगा ले गया है ? कहां गई मेरी लाड़ली ! उसे लौटा दो !—मेरी बेटी !"

तीसरी परी-कन्या को देखते ही कुंआँग-मिंग द्वितीय की पत्नी के तन-मन में आग लग गई। गांव के सारे फ़िसादों की जड़ यही छिनाल है। श्रीमती कुंग-मिंग द्वितीय ने न आव देखा न ताव, जाकर परी-कन्या को

झपट लिया, "अच्छा हुआ, तुम यहीं आ पहुँची। तुम मां-बेटी ने मेरे बच्चे को फँसाया है, और अब पूछने चली हो कि वह कहां गया है? वाह री हिम्मत! चलो मेरे साथ ज़िला सरकार के पास, वहां पता चलेगा, क़सूरवार कौन है?"

इसके बाद उसने तीसरी परी रानी का झोंटा पकड़ कर उसे ज़मीन पर पटक दिया। दोनों में हाथा-पाई होने लगी।

कुंग-मिंग द्वितीय मुंह बाए सारा दृश्य देखता रहा। भविष्यफल को जांचते समय भी उसका मुंह वैसे ही खुला था। उसने थोड़ी-बहुत उछल-कूद करके दोनों चण्डियों को शान्त करने की कोशिश की। लेकिन उसकी हालत उस बिल्ली की सी थी, जो दो जलती ईंटों के बीच में आने पर, दुम दबाकर एक कोने में दुबक जाती है। इस झंझावात में उसे भविष्यफल कुछ देर के लिये भूल गया।

यदि तीसरी परी-कन्या भी उतने ही आवेश में होती, जैसी मिसिज़ कुंग-मिंग द्वितीय थी तो कोई न कोई दुर्घटना ज़रूर होकर रहती। लेकिन हम जानते हैं कि उसके शोक में अभिनय कुछ अधिक मात्रा में था। श्रीमती कुंग मिंग के रुख को देखकर उसके शोक का मुलम्मा और भी उतर गया। इसमें सन्देह नहीं, कि वह लोगों का ध्यान हमेशा अपनी ओर खेंचना चाहती थी, लेकिन कीचड़ सने वस्त्रों में लोगों का आकर्षण केन्द्र बनना उसे स्वीकार न था। कुछ देर तक झूठ-मूठ की हाथापाई करने के बाद वह वहां से अपना पिण्ड छुड़ाकर भागी।

श्रीमती कुंग मिंग अब भी युद्ध करने की मुद्रा में थी। उसने तीसरी परी रानी का पीछा करना चाहा, लेकिन ऐन मौके पर उसके अमर्त्य पति ने उसे बाहर जाने से रोक दिया। पति की बांहों के बँधन में बँधी होने के कारण वह अपनी बैरिन की आंखें फोड़ सकने में असमर्थ थी, सो उसने भरपेट गालियां दीं और आखिरकार दम फूलने पर चुप हो गई। इधर तीसरी परी रानी ने अपने घर की चारदीवारी के

अन्दर आकर चैन की सांस ली, और ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया, जिसने आज उसके अलौकिक शरीर की रक्षा की थी।

(दस)

कुंग-मिंग की प्रार्थना

कुंग-मिंग द्वितीय रात भर बिस्तर में करवटें लेता रहा। वह सिसकियां लेकर कहता, "ता-ही क्यों नहीं लौटा? क्यों?" पौ फटते ही वह जिला-सरकार की ओर चल दिया।

वह अभी रास्ते में ही था कि दूर से सरकारी लोगों का एक गिरोह दिखाई दिया। कुँग-मिंग द्वितीय के होशहवास ग़ायब हो गये, जब उसने देखा कि तीन सिपाहियों और दो नागरिक अफ़सरों के बीच ता-ही चला आ रहा था। हे ईश्वर! क्या ता-ही भी गिरफ़्तार हो गया है? बूढ़े की सफ़ेद दाढ़ी डर से काँपने लगी।

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने दबी ज़बान में पूछा, "ता-ही, मामला क्या है? क्या और अनर्थ हो गया है?"

गिरोह के लोग उसके पास आ गये। ता-ही के आत्मविश्वास को देखकर उसे कुछ तसल्ली हुई, "बापू, सब कुछ ठीक है, चिन्ता की कोई बात नहीं।"

बूढ़े को यह देखकर और भी प्रसन्नता हुई की तीनों सिपाही ता-ही को घर पहुँचाने आये हैं। संगीनों की नोकों ने जो भयावह वातावरण पैदा किया था, वह उन लोगों के वापस जाने पर दूर हो गया। ता-ही ने शुभ समाचार सुनाया।

"जिला सरकार ने तुम्हें और यू-फू की पत्नी को बुला भेजा है। ये लोग इसीलिये आये थे।" इस बात पर बूढ़े की सिट्टी-पट्टी गुम हो गई। यह देखकर ता-ही ने कहा, "बापू, तुम जाओ। सब कुछ ठीक है। एर्र-ही और स्याओ चिन छोड़ दिये गये हैं। जिला सरकार सारी स्थिति से

परिचित है। वे सिग वांग और चिन वांग की चालों को भी जानते हैं। अब उनकी शामत आने वाली है। कुछ देर में ही उन्हें गिरफ़्तार कर लिया जायगा। जो अफ़सर अभी हमारे साथ आया वह ज़िला सरकार का उप-मन्त्री है। उसे हुक्म दिया गया है कि वह सारे गाँव वालों की मीटिंग बुलाए जिसमें सिग वांग और चिन-वाँग की पिछली सारी करतूतों के सबूत इकट्ठे किए जायें। इन दोनों के खिलाफ़ सैंकड़ों जुर्म और सरकारी अधिकारों का दुरुपयोग करने के उदाहरण मिलेंगे। मेरे आने से पहले ही पूछताछ ख़तम हो चुकी थी। एर्ह-ही और स्याओ चिन छोड़ दिए गए थे। मैंने सुना कि सरकार ने उन दोनों को शादी करने की इजाज़त दे दी है।"

यह बात सुनते ही कुँग मिंग की कट्टरता फिर लौट आई। विशेषकर अन्तिम शब्द तो उसके लिए असह्य थे। "यह तो ठीक है कि वे बेक़सूर हैं, लेकिन भला उनकी शादी कैसे हो सकती है? दोनों के राशिफल एक दूसरे के विपरीत हैं। नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्या तुमने पूछा था कि वे मुझे क्यों बुलाना चाहते हैं?"

इस पर ला-ही ने उत्तर दिया, "पूछा तो नहीं। कोई मामूली सी बात होगी। तुम वहाँ जाओ और मैं जाकर माँ को खबर करूँ।"

सरकारी दूत ने भी कहा कि, "लो तुम्हें तो सन्देशा मिल गया, अब मैं जाकर दूसरे को भी कह आऊँ।"

इसके बाद कुंग-मिंग (द्वितीय) ज़िला सरकार के दफ़्तर की ओर चल दिया। वह किसी गहरे सोच में डूबा था।

वहाँ पहुँचते ही सबसे पहले उसकी नज़र स्यिाओ एर्ह-ही और स्यिाओ चिन पर पड़ी जो कपोत के जोड़े की तरह चुपचाप एक बेंच पर बैठे थे। उसकी आँखों में खून उतर आया।

बेटे की ओर देखकर वह गुर्राया, "फूहड़ कम्बख्त! जहां जाता है, कोई न कोई मुसीबत मोल ले आता है। घर वालों की भी शामत आ जाती

है। मुसीबत से नजात पाने पर भी तू घर नहीं लौटता। तुझे बूढ़े बाप का भी ख्याल नहीं। बेशरम कहीं का!"

इतने में जिले के अफ़सर ने आकर बीच में टोक दिया, "यह क्या हो रहा है? क्या जिला सरकार का दफ़्तर गालियाँ बकने की जगह है?"

बड़े अफ़सर की झाड़ सुनकर बूढ़े नजूमी ने सोचा, "चलो घर जाकर मन का बचा हुआ गुबार निकाल लेंगे।"

जिले के अफ़सर ने पूछना शुरू किया—"क्या तुम्हीं ल्यू रिन ते हो?

"जी हाँ।"

"क्या तुमने अपने बेटे की मँगनी एक बच्ची से तै करली है?"

"जी हाँ।"

"बच्ची की उमर क्या है?"

"उसका जन्म बन्दर की राशि में हुआ था। अब बारहवें साल में है।"

"कानून के अनुसार पन्द्रह साल से कम की किसी लड़की की मँगनी नहीं हो सकती। तुम उसे अपने माँ-बाप के पास भेज दो, क्योंकि अब ल्यू एर्र-ही की मँगनी यू-सियाओ-चिन से हो गई है।"

कुँग मिंग (द्वितीय) ने एतराज किया, "उसे वापस भेजना नामुमकिन है। मुझे नहीं मालूम उसके रिश्तेदारी कहाँ गये। उसका बाप अकाल-पीड़ित शरणार्थी था, पता नहीं वह भी अब कहाँ है? आप कहते हैं कि "पन्द्रह वर्ष से कम उम्र की लड़की की मँगनी करना जुर्म है।" सरकारी कानून में ऐसा होता होगा लेकिन देहात में तो सात या आठ वर्ष की अवस्था में ही लड़कियों की सगाई कर दी जाती है। हमारे यहाँ तो यही क़ायदा है। मैं श्रीमान् से प्रार्थना करता हूँ कि कानून में थोड़ी-सी ढील दी जाये।"

"दोनों पक्षों में से अगर एक व्यक्ति एतराज करे तो मँगनी टूट सकती है।"

"लेकिन दोनों पक्ष राजी हैं।" कुँग-मिंग द्वितीय ने विरोध किया।

जिले के अफ़सर ने स्याओ-एर्र-ही को पूछा, "ल्यू-एर्र-ही, क्या यह मँगनी तुम्हारी रजामन्दी से हुई है ?"

"बिल्कुल नहीं। मैं इसके सख्त ख़िलाफ हूँ।" स्याओ-एर्र-ही ने पिता की नज़र बचाते हुए बहादुरी से जवाब दिया।

कुँग-मिंग द्वितीय ने क्रोध से बेटे की ओर घूरते हुए, चिल्ला कर कहा, "इसका फ़ैसला अब तुम करोगे ?"

जिला अफ़सर ने फिर टोका, "अपनी मँगनी का फ़ैसला यह खुद नहीं करेगा तो फिर कौन करेगा ? क्या तुम करोगे ? बूढ़े आदमी अब, शादी लड़के-लड़की की इच्छानुसार होती है। इसमें तुम्हारी रजामन्दी की कोई ज़रूरत नहीं। अगर सचमुच तुम उस बच्ची को वापस नहीं भेज सकते तो उसे अपनी बेटी की तरह गोद ले लो।"

"ख़ैर यह तो सम्भव है।" कुँग-मिंग ने कहा। "लेकिन श्रीमान् जी, मैं आप से दया की प्रार्थना करता हूँ। इस मामले में आप नर्मी से काम लें। इस लड़के की मँगनी किसी भी हालत में यू फू की बेटी से नहीं हो सकती।"

"तुम्हें इसमें दखल देने का कोई अधिकार नहीं।"

यह सुनकर कुँग-मिंग द्वितीय बार-बार हाथ मलने लगा, "मैं घुटने टेक कर विनती करता हूँ कि आप नर्मी से पेश आयें, इन दोनों की आपस में नहीं पट सकती। दोनों के राशिफल टकराते हैं। ज़रा सोचिये, ये दोनों ज़िन्दगी भर दुखी रहेंगे।"

फिर स्याओ एर्र-ही की तरफ मुड़ कर उसने चेतावनी दी, "एर्र-ही होश में आओ ! फ़ैसला करने से पहले अच्छी तरह सोच लो ! तुम्हारी पूरी जिन्दगी का सवाल है।"

अफ़सर ने मेज़ पर हाथ पटक कर कुँग-मिंग को चुप कराया, "बक-बक मत करो। उन्नीस वर्ष के बेटे की शादी दस वर्ष की बच्ची से करके तुम बड़ा भारी अनर्थ करने जा रहे हो। तुम्हारे बेटे की ज़िन्दगी तबाह हो जायगी। मैं तो सिर्फ तुम्हें सही बात समझाने की कोशिश कर रहा

हूँ। लेकिन दो व्यक्तियों की रजामन्दी में अपनी नाक घुसेड़ने वाले तुम कौन होते हो ? अब तुम घर वापस जा सकते हो। या तो उस बच्ची को लौटाओ नहीं तो उसे अपनी बेटी बना कर रखो।''

लेकिन कुँग मिंग (द्वितीय) वहीं धरना देकर बैठ गया और बार-बार गिड़गिड़ाकर कहने लगा, "श्रीमान् जी, दया करो, दया करो !"

इतने में एक चपरासी ने उसे गर्दन पकड़ कर बाहर निकाल दिया।

(ग्यारह)

ज़रा तीसरी परी-कन्या को तो देखो !

तीसरी परी-कन्या कुंग मिंग (द्वितीय) के घर झगड़ा-वावेला मचाने के इरादे से गई थी। साथ ही उसका मक़सद यह भी था कि दो झूठे आँसू लुढ़काकर पड़ौसियों को दिखा दे कि वह अपनी बेटी से कितना स्नेह करती है। रही स्याओ चिन के लिए चिन्ता करने की बात, सो इस मामले में वह एक पक्षी से भी अधिक निश्चिन्त थी। दरअसल स्याओ चिन को मुसीबत में देखकर वह मन ही मन खुशी से फूली न समाती थी। श्रीमती कुँग मिंग के घर से सही सलामत लौटने के बाद वह जैसे घोड़े बेचकर सोई। उसके मन में दुबिधा न थी।

दूसरे दिन सुबह भी वह काफ़ी देर तक बिस्तर में लेटी रही। सीधा-सादा यू-फू कुछ चिन्तित था। लेकिन उसकी समझ में न आता था कि अब क्या करे। पत्नी को जगाने की धृष्टता करना उसके बस में न था ? वह चुपचाप देवी की नींद खुलने की प्रतीक्षा में बैठा रहा। आख़िरकार प्रसन्न होकर देवी ने आँखें खोलने का उपक्रम किया। उसके बनाव-सिंगार करने तक यू फू ने दोपहर का खाना पकाया। देवी के शृंगार में देर हो जाने के कारण दलिया उबल-उबल कर जलने को आ गया।

जब वह एक रईसजादी की तरह धीरे-धीरे बालों में कंघी करने लगी तो यू-फू ने पूछा, "क्या तुम स्याओ चिन का पता करने नहीं जाओगी ?"

"पता करने से क्या फायदा ? वह अपनी देखभाल खुद कर सकती है," परी कन्या ने अलसाये स्वर में कहा।

यू-फू में और अधिक आग्रह करने की हिम्मत न थी। वह चौके में आकर दोबारा खाना पकाने में जुट गया। परी रानी के शृंगार समाप्त होने की प्रतीक्षा में उसने खाना चूल्हे पर रख दिया।

अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ उसने परी रानी के सामने खाना परसा और उसकी जी-हज़ूरी में लगा रहा।

इतने में एक सरकारी चपरासी आ धमका। ज़िला सरकार ने तीसरी परी रानी को बुलवा भेजा था।

परी रानी के चेहरे पर चिन्ता का नामोनिशान न था। बल्कि उसने यह ख़बर सुनकर सन्तोष प्रकट किया, "हमारी बिटिया रानी हाथ से निकलती जा रही है। मैं ज़िले के अफ़सर से कहूँगी कि उसे नियन्त्रण में रखे।" उसने अपने स्वर को गम्भीर बनाते हुए कहा।

जाने की तैयारी में परी रानी ने फिर शृंगार शुरू किया। इतने महत्वपूर्ण अवसर पर वह बिना सजावट के भला किस तरह जा सकती थी ? उसने नये, भड़कीले कपड़े निकाले। हल्के जामुनी रंग की वास्कट, और अंगूरी रंग का पजामा, जिसकी चौड़ी किनारी पर कढ़ाई का काम हुआ था। सर पर रेशमी रूमाल और पैरों में बढ़िया कामदार जूते।

अपने झुर्रियों से भरे चेहरे पर उसने पाउडर छिड़का और पिचके गालों में सुर्खी लगाई। अपनी सुन्दरता को चार चाँद लगाने के लिये उसने हाथों में चांदी के चमचमाते हुए कड़े पहने, अब उसे पूर्ण विश्वास था कि उसके अलौकिक सौन्दर्य के सामने जिले का अफ़सर भी पानी भरेगा। परी रानी ने गधों को जोतने का हुक्म दिया।

आख़िरकार शाही सवारी ज़िला सरकार की ओर चल दी। यू-फू स्वामिभक्त नौकर की भांति गधे की लगाम थामें साथ-साथ चल रहा था।

एक चपरासी उन्हें अन्दर लिवा ले गया।

ज़िला सरकार का अफ़सर मेज़ पर सर झुकाये कुछ लिख रहा था। परी-कन्या ज़मीन पर घुटने टेक कर बैठ गई।

"मेरे मालिक, गवर्नर महोदय, आप ही हर बात का फैसला करें।" उसने ऊँचे स्वर में प्रार्थना की।

उसी दिन सास-बहू के झगड़े के सिलसिले में एक नई ब्याही बहू को भी बुलाया गया था। ज़मीन पर बैठी रेशमी कपड़ों की गठरी को देखकर ज़िला अफ़सर को भ्रम हुआ कि यह वही नई दुल्हिन है।

"तुम्हारी सास को तुमसे भारी शिकायत है।" अफ़सर ने सर ऊपर उठाये बिना कहा।

परी-कन्या ने चकित होकर अफ़सर की ओर देखा। अफ़सर को अपनी ग़लती मालूम हुई। नई दुल्हिन की बजाये, फ़र्श पर एक खूसट बुढ़िया विचित्र शृंगार किये बैठी थी।

"यह यू स्याओ चिन की माँ है।" चपरासी ने बताया।

अफ़सर ने उसके गंजे सर पर बँधे रूमाल से लेकर एड़ीदार जूतों तक एक नज़र दौड़ाई। तुम ही स्याओ चिन की माँ हो ? सीधी खड़ी हो जाओ ! यहाँ देवी का स्वाँग रचने की ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हारे सब हथ-कण्डों से परिचित हूँ। खड़ी हो जाओ !"

परी कन्या की सारी शेखी धूल में मिल गई। वह लड़खड़ाते हुए पाँवों से खड़ी हो गई। अफ़सर ने सवाल किया, "तुम्हारी उम्र क्या है ?"

परी-कन्या ने नम्रता से जवाब दिया, "पैंतालिस साल।"

"ज़रा आईने में अपनी सूरत देखो। क्या इस उम्र में यह सजावट उचित है ?"

दरवाजे के पास खड़ी एक छोटी सी बच्ची खिलखिलाकर हँस पड़ी। चपरासी ने उसे डांट कर बाहर भेज दिया।

"अच्छा, तो तुम्हारे बुलाने पर देवता दौड़े आते हैं ?"

तीसरी परी-कन्या ने अपनी 'दैवी' स्थिति पर डटे रहना ही उचित

समझा। वह चुप रही। अफ़सर ने फिर सवाल किया, "क्या तुमने अपनी बेटी की मँगनी कहीं तय कर डाली है ?"

"हाँ"

"कितने रुपये लिये ?"

"तीन हज़ार पाँच सौ।"

"इसके अलावा ?"

"कुछ गहने, और रेशमी कपड़े।"

"क्या तुमने अपनी बेटी की राय ली थी ?"

"नहीं,"

"क्या तुम्हारी बेटी इस सम्बन्ध के लिये राजी है ?"

"मैं नहीं जानती।"

"यह बात है ? तो लो, तुम खुद ही अपनी बेटी से पूछ लो" उसने चपरासी को स्याओ चिन को लिवा लाने का हुक्म दिया।

इस बीच खिलखिलाकर हँसने वाली बच्ची ने चारों तरफ़ ख़बर फैला दी थी कि नई दुल्हिन की तरह सजी एक पैंतालीस साल की बुढ़िया ज़िला अफ़सर के सामने बैठी है। उसके पाँव में कामदार जूते हैं। आस-पड़ौस के सब लोग, विशेषकर औरतें इस अजूबे को देखने के लिये जमा हो गये।

लोगों की भीड़ अन्दर झांकने लगी। चारों तरफ़ से आवाज़ें आईं, "देखो तो! पैंतालीस साल की उम्र में ऐसे भड़कीले कपड़े ? ज़रा जूतों की ओर तो देखो ! अरे ! गालों पर सुर्ख़ी भी है ! वाह !"

बीस वर्ष के बाद पहली बार परी-कन्या झेंप गई। पहले तो उसका चेहरा गाजर की तरह लाल हो गया बाद में उसका रंग शकरकन्दी का सा फीका पड़ गया। उसके गालों से पसीने की धार बह निकली।

इतने में चपरासी स्याओ चिन को लेकर आ पहुँचा। आंगन में खड़ी औरतों की भीड़ की ओर देखकर वह ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, "तुम सब खड़ी क्यों तमाशा देख रही हो ? वह भी एक इन्सान है—तुम लोगों

की तरह—एक ओर हट जाओ !" औरतें मारे हँसी के एक दूसरे से लिपट गईं।

स्याओ-चिन के आने के बाद जिला अफ़सर ने तीसरी परी-कन्या को हुक्म दिया, "ज़रा पूछो तो अपनी बेटी से, क्या वह इस मँगनी के लिये राजी है ?"

इधर तीसरी परी-कन्या के होश-हवास ग़ायब थे। वह बार-बार अपने होंठ चबा रही थी। माथे पर त्यौरियाँ चढ़ी थीं। लोगों की टिप्पणियाँ सुनकर उसका मुँह लाल होगया था। पैंतालीस वर्ष ? कामदार जूते ? ज़रा पजामे की तरफ तो देखो ! फबतियाँ और भी बढ़ गई थीं। "वह इसकी बेटी है—वह बेचारी तो सीधी-सादी है, सारी सजावट तो बुढ़िया की है।" कुछ लोग कह रहे थे, "इस पर देवी सवार होती है।" यहाँ तक कि भीड़ में कई लोग 'जली मकई' की मनहूस कहानी भी जानते थे। परी-रानी मारे शर्म के धरती में गड़ गई।

परी-रानी को चुप देखकर अफ़सर ने कहा, "अच्छी बात है, मैं ही सवाल पूछता हूँ। यू-स्याओ चिन ! तुम्हारी माँ ने तुम्हारी मंगनी तय कर दी है। क्या तुम उस आदमी से शादी करने को तैयार हो ?"

"कभी नहीं। मुझे क्या पता, वह आदमी कौन है ?" स्याओ चिन ने जवाब दिया।

तीसरी परी-कन्या की ओर इशारा करते हुए अफ़सर ने कहा, "सुना तुमने ?" और उसने बताया कि नये क़ानून में औरत, मर्द अपनी इच्छानुसार शादी करते हैं। इसमें मां-बाप ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। इसलिए स्याओ चिन और स्याओ-एर्र-ही की मंगनी ही वैध है। क्योंकि दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और विवाह-सूत्र में बंधने के लिए स्वतन्त्र हैं।

इसके बाद अफ़सर ने तीसरी परी-कन्या को आदेश दिया कि वह मिस्टर वू से भेंट में मिली सब चीज़ों को लौटा दे और स्याओ चिन की शादी के मार्ग में कोई रुकावट न डाले।

तीसरी परी-कन्या अपमान और निन्दा के क्षोभ से ज़मीन में गड़ी जा रही थी। उसने अपना सारा देवीपन का ढोंग छोड़कर अपनी स्वीकृति दी। आँगन में खड़ी औरतों की भीड़ की फब्तियां सहती हुई वह बाहर आई जहाँ पत्नी-भक्त यू-फू गधे की लगाम थामे खड़ा था। आज की घटना ने उसे दुखी पर अक्लमन्द बना दिया था। उसके देवीपन का मुलम्मा उतर चुका था। अगले दिन जब वह खाना पकाने के लिए रसोई में घुसी तो रही-सही कसर भी पूरी हो गई।

(बारह)

आखीर में क्या हुआ ?

कुँग मिग (द्वितीय) और ता-ही से मिलने के बाद जिला-सरकार के सिपाही ल्यू घाटी के गाँवों में पहुँचे। जब उन्होंने लोगों को चिंग वाँग और सिग वाँग के गिरफ़्तार होने की खबर सुनाई तो लोगों में खुशी की एक लहर दौड़ गई। यह बताने पर कि वे इन दोनों गुंडों की अन्धेरगर्दी की छानवीन करने आये हैं तो उनका स्वागत और भी धूमधाम से हुआ। लोग खुशी से तालियाँ पीटने लगे।

अगर तुम लोगों में से कोई भी अपना दुखदर्द कहने को तैयार नहीं तो मैं कह के रहूँगा।"

फिर उसने बताया, कि किस तरह चिंग वाँग ने उसके घर में डाकू भेज कर परिवार के लोगों को पकड़ मंगवाया था। उसने चार-पाँच और उदाहरण देने के बाद उससे कहा, "मैं थक गया हूँ—अब कोई और आकर अपनी शिकायतें बताये। मैं इस बीच सुस्ता लूँ।"

देखते ही देखते शिकायतों का तांता लग गया। हर आदमी अपना दुख-दर्द बयान करना चाहता था। कई लोगों से ज़बरदस्ती रुपया-पैसा वसूल किया गया था। इन दुष्टों से तंग आकर आत्म-हत्या करने वाले लोग वहाँ मौजूद नहीं थे। बीसियों लोगों की सम्पत्ति और औरतों का

सतीत्व लूटा गया था। वे लोगों से बेगार वसूल करते। सरकारी काम के लिए भरती किये गये लोगों से अपने लिए ईंधन कटवाते और अपने खेत जुतवाते। लोगों से मनमाने टेक्स वसूल करके अपनी जेबें भरते। सरकारी रुपया हड़प जाते। धमकियाँ देकर लोगों को जबरन भरती करते। दुनिया का कोई ऐसा जुल्म न था जो इन दोनों ने लोगों पर न तोड़ा हो। धीरे-धीरे नुक्ताचीनियों, मिसालों और शिकायतों के जरिए लोगों के मन का क्षोभ प्रकट हुआ। दोपहर से लेकर सूरज डूबने तक चिन वाँग और सिंग वाँग के खिलाफ पचास जुर्म दर्ज किये गये, जिसमें गाँव के सब लोगों ने अपनी गवाही लिखाई। जुर्मों की एक सूची के साथ कैदियों को ज़िला सरकार के पास भेज दिया गया। जिले की अदालत में उन पर मुकद्दमा चलाया गया और चूँकि उनके विरुद्ध सारे आरोप सच्चे थे, इस लिए दोनों को पन्द्रह-पन्द्रह साल की क़ैद हुई और उनकी जायदादें जब्त करके लोगों को हरजाना दिया गया।

इस जल्से के बाद गाँव के लोगों में आत्म-विश्वास की लहर दौड़ गई। वे पहले की तरह अब सरकारी पदों पर चुने जाने से घबराते न थे। कुछ दिनों बाद कान-पू का चुनाव हुआ जिसमें सब लोगों ने हिस्सा लिया। चुने जाने वाले लोग अपने दायित्वों के प्रति सचेत थे, और वोटरों ने भी इस बात का ध्यान रखा कि ऐसे लोग न चुने जायें जो बाद में चिन वाँग और सिंग वाँग की तरह अपने अधिकारों का दुरुपयोग करें। यह बताने की जरूरत नहीं कि नये चुनाव में श्रीमती चिन वाँग हार गई और उसे सबके सामने शपथ लेनी पड़ी कि वह भविष्य में अपने पुराने रंग-ढंग छोड़ देगी।

यह तो हुई गाँव की बात, आइये अब हम उन अमर्त्यों की ओर चलें जिनसे यह कहानी शुरू होती है।

जिला-सरकार की अदालत के बाहर खड़ी हुई औरतों की भीड़ द्वारा अपमानित किये जाने के बाद तीसरी परी-कन्या के होश ठिकाने आ गये। घर लौटकर वह बड़ी देर तक खड़ी आईने में अपनी सूरत देखती रही।

लेकिन आज उसकी आँखों में आत्म-प्रशंसा का भाव न था। अपने बनाव-सिंगार की चीजों और भड़कीले वस्त्रों को देखकर उसका झुर्रियों वाला चेहरा विरक्ति से भर गया। उसे ख्याल आया कि अब वह सास बनने जा रही है। इस उम्र में छिनाल की तरह चटकना-मटकना उसे शोभा नहीं देता। उसने एक हठात् संकल्पवश अपने कपड़े बदल डाले। अब वह एक भली औरत दिखाई देने लगी थी, जिसे कोई भी बिना किसी झिझक के माँ या मौसी पुकार सकता था। तीसरी परी-कन्या की वेदी, जिस पर बैठ कर वह पिछले तीस वर्षों से अपने दैवी भाषण देती आई थी, एक दिन शाम को वहाँ से हमेशा के लिए हटा दी गई।

इधर कुँग मिंग ने जिला-सरकार के दफ़्तर से लौटकर अपनी बीवी से फिर शिकायत की कि स्याओ-एर्र-ही और स्याओ चिन की जन्म कुँडलियाँ एक-दूसरे से टकराती हैं। लेकिन उसकी बीवी ने जो इन बातों से तंग आ गई थी, जलभुन कर कहा, "आग लगे तुम्हारी कुण्डलियों और राशि-चक्रों में। तुम तो कहते थे कि स्याओ-एर्र-ही पर भारी मुसीबत आने वाली है, बूढ़े खूसट, पाखंडी। बिना राशि-चक्रों को देखे तुम तो घर के बाहर एक क़दम नहीं रख सकते। क्या फायदा निकला इस सब का? ज्योतिष का ढोंग रचे बिना ही, कोई अन्धा भी देख के कह सकता है कि स्याओ चिन अच्छी-भली लड़की है। वह हमारे एर्र-ही को सुखी बना सकती है। और एक तुम हो कि उनकी जन्म-कुण्डलियों में दोष ढूँढ़ते फिरते हो। अच्छे बाप हो! याद है तुम्हें अपनी भविष्यवाणी? "बोने के लिए अशुभ दिन है"—कितनी दुर्गति बनाई थी लोगों ने तुम्हारी?"

अपनी पत्नी की इस धुँआधार झिड़की को सुनकर बूढ़े ज्योतिषी ने चूँ तक न की। उसने अपने सारे राशि-चक्र उठाकर ताक पर रख दिये।

इस तरह स्याओ चिन और स्याओ-एर्र-ही के घर लौटने तक वातावरण उनके अनुकूल बन चुका था। यह जानकर उनकी

खुशी का ठिकाना न रहा कि उनके बुजुर्गों ने अपना हठ छोड़ दिया है और पड़ौसियों की सहायता से उनके विवाह का प्रबन्ध हो गया।

इतने सुखी दम्पति बिरले ही मिलेंगे। स्याओ एर्ह-ही एक आदर्श पति था और स्याओ चिन एक आदर्श पत्नी थी। लेकिन जवान होने के कारण वे अपने कमरे के एकान्त में एक-दूसरे से कभी-कभी छेड़खानी करते न चूकते। स्याओ एर्ह-ही बहाना बनाकर कहता कि अपने पूर्व-जन्म के कर्मों को पूरा करने के लिए स्याओ चिन को श्रीमान् वू से शादी कर लेनी चाहिए थी। उसे तीसरी परी-कन्या का स्वांग रचने में बड़ा मज़ा आता। वह भी उस दैवी उन्माद में भरकर भविष्यवाणी करता कि "विवाह-सम्बन्ध तो भगवान् तै करते हैं।" और स्याओ चिन इसके बदले में कुंग-मिंग (द्वितीय) का स्वांग रचती। उसकी ही तरह ज़िला-धीश के सामने घुटने टेक कर विनती करती, "हुज़ूर, दया करो हुज़ूर! इन दोनों की जन्म-कुण्डलियाँ एक-दूसरे से टकराती हैं!"

इस तरह दोनों अमर्त्यों के बारे में इन दोनों के पास भी चिढ़ाने वाली कहावतें बन गईं। एक कहावत में था कि 'विवाह सम्बन्ध तो भगवान् तै करते हैं!" और दूसरी कहावत में था, "इन दोनों की जन्म-कुण्डलियाँ एक-दूसरे से टकराती हैं।" लेकिन इन दोनों के विवाह के विरुद्ध दैवी भविष्यवाणियाँ चाहे जो हों, स्याओ एर्ह-ही और स्याओ चिन एक-दूसरे को अपने दिलों की पूरी गरमाई से प्यार करते और मानवीय बफ़ादारी से एक-दूसरे की मदद करते। साधारण मानवों को इससे अधिक सुख की आशा भी नहीं करनी चाहिए।

परिशिष्ट

चीन का नया साहित्यिक आन्दोलन

इस शताब्दी के प्रारम्भ तक चीन शोषण-दोहन करने वाली साम्रा-ज्यवादी शक्तियों की कृपा कटाक्ष के सहारे ही चल रहा था। आज चीन स्वयं अपने पावों पर खड़ा है। सारे देश में एकता है, वहां स्वतन्त्रता है और उसने अपने सामंती शासकों-शोषकों का जूआ अपनी गर्दन से उतार फेंका है, अपने को अर्ध-औपनिवेशिक अवस्था से बाहर निकाल लिया है और कुमिताग के भ्रष्टाचारी शासन और नौकरशाही पूँजीवाद का अन्त कर दिया है। इस तिलिस्म को कामयाब करने में जिस क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अगुआई की है, वह चीन के अपने साहित्य में भी कई दशकों से प्रतिबिम्बित होता आया है। इस साहित्य के विकास में चीनी जनता के क्रमिक जागरण और एकता और आजादी के संघर्ष का विकास स्पष्ट लक्षित होता है।

चीन के आधुनिक साहित्य का सिंहावलोकन करते समय यह बात ध्यान में रखनी होगी कि उस राजनीतिक पृष्ठभूमि से जिसने उसे पैदा किया है, अलग करके उस पर विचार नहीं किया जा सकता। साहित्यिक आन्दोलन वास्तव में राजनीतिक आन्दोलन का ही मूर्त्त स्पष्टीकरण है। इसके द्वारा साम्यवादी क्रान्ति की अनिवार्य सफलता का सही-सही अनुमान लगाया जा सकता है जिसने साधारणतया मज़दूरवर्ग का दृष्टिकोण

अपनाये जाने का औचित्य भी सिद्ध कर दिया है।

हाल में ही साम्यवादियों ने यहाँ जो सफलता प्राप्त की है, उसने चीन में होने वाली अन्य सभी घटनाओं को गौण बना दिया है। लेकिन गत अड़तीस वर्षों में, सन् १९११ की क्रान्ति से लेकर सन् १९४९ में चीन की समस्त भूमि के आज़ाद होने तक जो घटनाएँ हुईं, उनमें से निम्न घटनाएँ विशेष महत्व की हैं : मई ४, सन् १९१९ का विद्यार्थी आन्दोलन जो साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ बुद्धिजीवियों का सबसे पहला संगठित प्रदर्शन था; जून १, सन् १९२१ में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना जिसके बाद ही हांगकांग के बन्दरगाह में काम करने वाले मज़दूरों ने सन् १९२२ में अपनी हड़ताल की जो चीन के मज़दूरों का साम्राज्यवादियों के ख़िलाफ़ सब से पहला प्रदर्शन था; शांघाई में ३० मई, १९२५ को नान्किंग रोड में होने वाली घटना, साम्यवादियों और कुमिन्तांग में विच्छेद और सन् १९२७ में चांग काई शेक के नेतृत्व में नान्किंग नगर में कुमिन्तांग पार्टी के प्रतिक्रियावादियों का के० एम० टी के नाम से संगठन; अन्त में चीन-जापान युद्ध की सन् १९३७ में शुरूआत और 'संयुक्त मोर्चे' की पुनर्स्थापना जो युद्ध की समाप्ति के साथ ही सन् १९४५ में टूट गया और जिसके बाद चीन का गृह-युद्ध शुरू हुआ जिसके परिणाम-स्वरूप चीन में वर्तमान जनवादी सरकार की स्थापना हुई। इन सारी घटनाओं के बीच एक तर्क-सिद्ध एकोन्मुखी विकास-सूत्र की खोज की जा सकती है—यह कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) की शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती आई, यहाँ तक कि सन् १९४९ तक में वह समूचे देश का नेतृत्व करने लग गई। चूँकि साधारणतया विकास की दिशा यही थी, इसलिए साहित्य की दिशा भी इससे भिन्न न हो सकती थी।

सन् १९१६ में ही ली ता-त्साओ ने, जो कुछ वर्षों बाद ही साम्यवादी लक्ष्य के लिए चीन का सबसे पहला शहीद बना, 'यौवन का वसन्त काल' नाम से एक निबन्ध प्रकाशित किया था जिसमें मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। यह लेख 'नये युवक' नाम की

प्रसिद्ध पत्रिका में छपा था जिसका सम्पादन चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रारम्भिक नेता और ऐतिहासिक भौतिकवाद के महत्व से लोगों को अवगत कराने वाले चेन तू-स्यू करते थे। इन दोनों लेखकों के साम्यवादी विचारों ने आगे बढ़े हुए विद्यार्थियों के हृदयों में उस समय अपनी जगह बनाई थी जब रूस की मिसाल को वह सारे लोग एक प्रकाश-स्तम्भ के रूप में देखने लगे थे जो साम्राज्यी शोषण की चक्की में पिसने वाले चीन देश के सामन्ती पिछड़ेपन के बारे में जागरूक होते जा रहे थे।

४ मई १९१९ के विद्यार्थी-आन्दोलन के अन्तरंग में साम्यवादी धारा ही मुख्यत: प्रवाहित हो रही थी, इस बात को तो अब सभी स्वीकार करने लगे हैं, यद्यपि ऊपरी सतह पर जापान की इक्कीस मांगों के खिलाफ़ होने वाले इन प्रदर्शनों से ऐसा दिखाई देता था कि जैसे कोई सांस्कृतिक क्रान्ति हो रही हो। जो भी हो, इस बात की सामान्य स्वीकृति के साथ की आधुनिक चीन की साहित्यिक रचनाओं का माध्यम सर्वसाधारण में बोली जाने वाली भाषा **पाई-हुआ** को होना चाहिए, न कि प्राचीन महा-काव्यों की भाषा-शैली **वेन-येन** को जिसका आम जनता तक पहुँच सकना अत्यन्त कठिन था, कम से कम चीन में साहित्यिक आन्दोलन की नींव तो पड़ ही गई थी। लेकिन साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए जन-भाषा को स्वीकार कर लेने से भी ज्यादा महत्व की बात यह थी कि चीन में होने वाले देशभक्ति की भावना से प्रेरित प्रदर्शनों को मजदूर-क्रान्ति के विश्व-व्यापी प्रश्नों के साथ जोड़ दिया गया था।

४ मई के आन्दोलन के मात्र साहित्यिक पक्ष को यदि ध्यान में रखें तो इसे सामान्यत: 'साहित्यिक पुनर्जागरण या रिनेसां' कह कर पुकारा जाता है। यह आन्दोलन एक गम्भीर सांस्कृतिक परिवर्तन का सूचक था, क्योंकि इसका अर्थ था कि चीन अब अपने अतीत, अपनी प्राचीन परम्परा से विच्छेद करने को तत्पर हो गया है। एक ओर तो चीन ने राजनीति और अर्थनीति के क्षेत्रों में होने वाले साम्राज्यवादी शोषण के विरुद्ध अपने को सन्नद्ध कर लिया था, दूसरी ओर उसने आधुनिक

सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने द्वार खोल दिये थे, जो उस समय अनुवादों के द्वारा देश को आप्लावित कर रहे थे। चीन की जन-भाषा में जो मौलिक साहित्य लिखा जाने लगा था, अधिकांशतः उसकी विचार-वस्तु क्रान्तिकारी थी और उसका प्रभाव बढ़ता जा रहा था, लेकिन वैसे यह साहित्य अधिकतर प्रयोगात्मक ही था और उससे स्पष्ट जाहिर था कि यह चीनी भाषा में पाश्चात्य शैलियों और प्रणालियों का उपयोग करने का प्रयत्न मात्र था।

इस प्रवृत्ति का सब से महान् अपवाद केवल साहित्यकार लू-सुन थे, जिन्होंने ४ मई के आन्दोलन से कुछ दिन पहले ही 'नये युवक' नाम की पत्रिका में अपनी मौलिक कहानी 'एक पागल की डायरी' प्रकाशित की थी। इसके बाद दो और कहानियाँ आई—'कुंग इ-ची' और 'औषधि'। इसके बाद ही उनकी प्रसिद्ध कृति 'आह क्यू की सच्ची कहानी' भी प्रकाशित हुई। ये कहानियाँ, जो बाद में अन्य कहानियों के साथ 'चीत्कारें' और 'दुविधा' नाम के दो संग्रहों में प्रकाशित हुईं, वास्तव में चीनी साहित्य में एक नये, मौलिक, क्रान्तिकारी और जंगजू साहित्य का सूत्रपात करती हैं।

साँस्कृतिक पुनर्जागरण के पूँजीवादी नेता हू-शीह उन दिनों प्रमुख लेखकों में से एक था, लेकिन बाद की घटनाओं ने दिखा दिया है कि वह बुद्धिजीवी वर्ग के उस अवसरवादी पक्ष का ही प्रतिनिधित्व करता था, जिसमें चीन की जन-भाषा की मजबूत जड़ों में केवल एक विदेशी नक़ल के पौधे की क़लम लगाने भर की क्षमता थी। उसकी सबसे बड़ी देन यह है कि उसने इस बात की खोज की थी कि चीन की जन-भाषा में आदि काल से ही लोग गीतों और लोक-कथाओं के रूप में प्राणवान साहित्य की एक अटूट परम्परा रही है, जिनमें 'शुई हू चुवान' और 'सब मानव भाई-भाई हैं' एक उल्लेखनीय मिसाल है।

४ मई के आन्दोलन पर विचार करते हुए सन् १९२३ में चेन तू-स्यू ने साहित्य के माध्यम के रूप में जन-भाषा के स्वीकार किये जाने का मूल

कारण यह बताया कि इससे कुछ दिन पहले ही चीन में पूंजीवाद का विकास शुरू हो गया था, जिसके परिणाम-स्वरूप जन-संख्या नगरों में केन्द्रित होने लगी थी। उसके अनुसार यह परिस्थितियाँ ही मुख्यतः इसका कारण थीं कि एक लोकप्रिय साहित्यिक अभिव्यक्ति की जरूरत का अनुभव होने लगा। और जन-भाषा आन्दोलन के नेताओं को कदाचित कोई सफलता न मिलती यदि वे इस से तीस वर्ष पहले ही मैदान में आ जाते जब कि इन परिस्थितियों का विकास न हुआ था।

४ मई के आन्दोलन का तत्काल परिणाम यह हुआ कि एक 'साहित्य शोध समिति' की स्थापना हो गई जिसका उद्देश्य अपने समय के सभी प्रमुख लेखकों में एकता स्थापित करना था, यद्यपि उनकी विचारधाराएँ और दृष्टिकोण एक दूसरे से चाहे जितने भिन्न क्यों न हों। इस समिति के प्रारंभिक घोषणा-पत्र पर बारह लेखकों ने हस्ताक्षर किये थे। इनके नाम थे:—चाऊ त्सो-जेन (लू सुन के भाई); चेंग चेन-तो (जो आजकल ऐतिहासिक पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर हैं); शेंग येन-पिंग (जिनका उपनाम माओ तुन है और जो चीन की वर्तमान जनवादी सरकार में संस्कृति-मंत्री है); कुओ शो-यू; चू सी-त्सू; चू शीह इंग, चियाँग पाई-ली; सुन फू-यूआन; केंग ची-चीह; वाँग तंग-चाओ, येह शाओ-चुन (जो इस समय केन्द्रीय प्रकाशन विभाग के उप-डायरेक्टर हैं) तथा सू ती-शान (जिनका उपनाम लो हुआ-शेंग है) इस समिति की ओर से प्रकाशित होने वाली दोनों पत्रिकाओं में, 'मासिक कहानी' (जिसका सम्पादन माओ तुन, चग चेन-तो और केंग ची-चीह करते थे) और 'साप्ताहिक साहित्य' में विभिन्न प्रकार की रचनाएँ प्रकाशित होती थीं—सीह पिंग-सिंग और यू पिंग-पो जैसे लेखकों की भी, जो साहित्य की मुख्य विकास धारा से सदा अलग स्वतन्त्र रहे हैं।

लेकिन नये साहित्य की परस्पर-विरोधी विचारधाराओं का स्पष्ट रूप तो तब सामने आया जब सन् १९२२ में 'रचनात्मक समाज' की स्थापना हुई और उसकी ओर से 'रचना' मासिक का प्रकाशन जारी हुआ

सबसे पहले चरम कोटि के रोमान्टिक लेखकों (छायावादियों) की अभि-व्यक्तियों के कारण जो किसी प्रकार का संयम बर्दाश्त ही नहीं करते थे, यह समाज टूट कर दो टुकड़ों में बँट गया। एक समूह क्रान्तिकारी वाम पक्षी लेखकों का था जिनका नेतृत्व कुओ मोजो ने किया (जो इस समय चीन की जनवादी सरकार के एक उप-प्रधान मंत्री और साथ में ही विज्ञान की एकेडमी के अध्यक्ष भी हैं)। उनकी ओजपूर्ण कविता 'देवी' ने इस आन्दोलन के आगे विद्रोह की पताका फहराई। दूसरा समूह शुद्ध छाया-वादियों का था, जिनमें यू ता फू सब से प्रमुख लेखक था। उसने उन नव-युवक चीनियों के असामंजस्य और विषम-जीवन को अभिव्यक्ति दी जिन का प्राचीन परम्परा से तो विच्छेद हो गया है लेकिन जिन्हें अभी तक खड़े होने के लिये कोई ठोस जमीन नहीं मिली। कुंठा और पुंसत्व हीनता का भाव ही इस धारा का मूल स्वर था, जिसका उस समय कुछ उपयोग भी था क्योंकि यह उन दिनों की 'ह्रासोन्मुखी पीढ़ियों' के जीवन के चारि-त्रिक गुणों का प्रतीक था। लेकिन जिन दिनों इस विचारधारा के लेखक अस्वस्थ आत्मापेक्षण में लगे हुए थे, उस समय दूसरी ओर वामपक्ष के लेखक अपने लक्ष्यों की सिद्धि में लगे हुए थे, अर्थात् एक क्रान्तिकारी श्रम-जीवी साहित्य के निर्माण की दिशा में प्रयत्नशील थे।

इस बीच उच्च वर्ग के बुद्धिजीवी, जिनमें से अधिकतर विदेशों से पढ़ कर लौटे विद्यार्थी थे, अपनी कल्पना के शीश महलों में ही रमे रहे। वे 'सामयिक आलोचक' पत्रिका के इर्द-गिर्द जमा हो गये थे। इस पत्रिका में साहित्य की अपेक्षा राजनीति की चर्चा अधिक रहती थी, और इसके कर्त्ता-धर्त्ता हु-शीह और कवि सू चीह-मो थे। बाद में इन्हीं व्यक्तियों ने 'अर्धचन्द्र समाज' की स्थापना की और इसी नाम से एक पत्रिका भी प्रकाशित की जिसमें उनकी रचनाएँ छपने लगीं। इस पत्रिका में उदार-दली दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति मिली। लेकिन विदेशों से पढ़कर लौटे उच्चवर्ग के वे बुद्धिजीवी जो देश में होने वाले क्रान्तिकारी विप्लवों के प्रति असंवेदनशील न बने रह सकते थे, धीरे-धीरे वामपक्ष की ओर मुड़ने

को विवश हो गये। सू चीह्-मो सन् १९३१ में एक हवाई जहाज़ की दुर्घटना में मारा गया। हू-शीह् और ल्यॉंग शीह्-चिऊ जो मुख्यतः एक आलोचक के रूप में प्रसिद्ध था, अपने ही विचारों के घेरे में बन्द रहे लेकिन तीन-हान और हुआँग-शेन के सामाजिक यथार्थवाद ने, जिन के प्रयत्नों से यथार्थवादी नाटकों की एक नई परम्परा विकसित होने लगी थी, सन् १९३८ में स्थापित होने वाले उदारपन्थी लेखक संघ के निर्माण के लिए मार्ग प्रशस्त किया। कुमिन्तांग की ओर से जो दमन-चक्र चल रहा था, उसको देखते हुए इस संघ का दृष्टिकोण साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए विचार-स्वातंत्र्य का समर्थक था और नागरिक अधिकारों की माँग करता था। हू-येह्-पिंग को (तिंग लिंग के पति) जो प्रारम्भ में 'सामयिक आलोचक' में लिखा करते थे, सन् १९३१ में फाँसी दी गई थी। साथ में वामपक्षी लेखकों की लीग के पाँच और लेखकों को फाँसी दी गई, जिनमें जो शीह् काफी प्रतिभा का लेखक था। और सन् १९३२ में कुमिन्ताँग के प्रतिक्रियावादियों ने 'साँस्कृतिक लुटेरों के विरुद्ध आन्दोलन' के नाम से वामपक्षी लेखकों के विरुद्ध नियमित रूप से जिहाद बोल दिया। यह आन्दोलन बहुत दिनों तक चलाया जाता रहा। वेन ई-तू की, जो 'अर्ध-चन्द्र' मासिक पत्रिका के प्रधान उन्नायकों में से था, सन् १९४६ में कुमिंग स्थान पर अपनी वामपक्षी सहानुभूति के कारण, भयंकर रूप से पाशविक परिस्थितियों में हत्या की गई।

लेकिन शांघाई की नानकिंग सड़क पर ३० मई को जो घटना हुई थी, जिसमें मजदूर प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ बरसाई गई थीं और जिसके कारण सारे देश की सहानुभूति उनके लिए उमड़ पड़ी थी, उसके बाद चीन के साहित्यिक आन्दोलन की धारा वामपक्ष की ओर मुड़ गई। यह विकास तब तक पूरा न हो सकता था, जब तक लू सुन भी इस ओर न झुकते। ४ मई के बाद पैदा होने वाले नये साहित्य में प्राण-शक्ति की कमी से क्षुब्ध होकर उन्होंने अन्य मित्रों के साथ मिलकर सन् १९२४ में एक नयी पत्रिका 'थू स्सू' (वार्तालाप के सूत्र) की नींव डाली। अपने

सात वर्ष के जीवन में और विशेषकर सन् १६२८-२६ के बीच 'यू स्सू' अपने समय की अन्य साहित्यिक संस्थाओं के साथ निरंतर संघर्ष करती रही। 'रचना समाज', 'सुन गोष्ठी' (जो एक वामपक्षी साहित्यिक संस्था थी) और 'अर्धचन्द्र समाज' आदि सभी संस्थाओं को इस पत्रिका के व्यंग बाणों का शिकार होना पड़ा। इस कार्य में लू सुन को लिन यू तांग, लाओ शी और चांग तीन-ई (जो वामपक्षी विचारधारा के कहानी लेखक हैं) आदि बड़े योग्य सहयोगी मिल गये थे। फिर भी यह बता देना जरूरी है 'यू स्सू' पत्रिका का 'रचना समाज' पर आक्रमण हमेशा केवल उसके प्रारम्भिक दौर की तटस्थ नीति के विरुद्ध होता था। निर्मम तर्क और व्यंगों का अस्त्र लेकर लू सुन साहित्य के एक सामाजिक दृष्टिकोण के लिए संघर्ष कर रहे थे। इस दृष्टिकोण के बीज उनकी अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में भी मिलते हैं। इस लिए अन्त में उनके साहित्य में जो श्रम-जीवी दृष्टिकोण आया, वह वास्तव में उनके प्रारम्भिक दृष्टिकोण का ही स्वाभाविक विकास था।

ली ता-साओ, चेन तू-स्यू, कुओ-मो-जो, यू ता-फू और चू चिऊ-पाई ने उन सिद्धान्त-सूत्रों की स्थापना पहले ही कर दी थी जिनके आधार पर एक स्वस्थ श्रमजीवी साहित्य का विकास होना चाहिए। इतने में, 'रचना-समाज' के प्रमुख सदस्य चेंग फेंग-वू ने सन् १६२७ में एक लेख प्रकाशित किया 'साहित्यिक क्रान्ति से क्रान्तिकारी साहित्य की ओर', जिसमें उसने व्यक्तिवाद पर आक्रमण किया और दृढ़तापूर्वक साहित्य में साम्यवादी नये यथार्थवाद के गुणों का विवेचन किया था। इस लेख में क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों का पूंजीपति वर्ग के विश्वासघात के प्रति कटु आक्रोश व्यक्त हुआ था। इसके बाद साहित्य में किसान और मजदूर भी लोकप्रिय नायक-नायिकाओं के रूप में चित्रित किये जाने लगे। श्रमजीवी वर्ग के लोग जिनमें क्रान्तिकारी विद्यार्थी और बुद्धिजीवी भी सम्मिलित हैं, चित्र के केन्द्र में स्थान पाने लगे।

सन् १६३० के आते-आते दक्षिण-पन्थी प्रतिक्रियावादियों के कृत्यों

से तंग आकर लू सुन वामपक्षी आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करने लगे और वे वामपक्षी लेखक संघ के प्रमुख उन्नायकों में गिने जाने लगे। यह संघ सन् १९३० में स्थापित हुआ। प्रारम्भ में इसके कुल पचास सदस्य थे, जिनमें यू ता-फू, तीन हान, चियन सिंग-त्सुन, तिंग लिंग (जो बाद में साम्यवादी दल की सब से प्रमुख स्त्री-लेखिका के रूप में प्रसिद्धि पा चुकी हैं) और वे छः तरुण लेखक भी थे जो अगले वर्ष इस उद्देश्य के लिए बलिदान हो गये। लू सुन ने इसके बावजूद कि वे चेंग-फ़ेंग-वू की अपेक्षा कुछ कम ही कट्टर थे, अपने को मन-वचन-कर्म से क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया। उनका कहना था कि अब सीमा-रेखाओं पर खड़े रहना संभव नहीं है और साहित्यिक व्यक्तियों को भी मज़दूर वर्ग की विजय के लिए आगे बढ़कर संघर्ष में भाग लेना चाहिए। वे मज़दूर वर्ग की अन्तिम विजय को देखने के लिए जीते न रहे लेकिन सन् १९३६ में अपनी मृत्यु-शैया पर लेटे हुए भी वे पूरे विश्वास से इसकी अनिवार्यता को देख सकते थे। इसके एक साल बाद ही जापान ने उत्तरी चीन पर आक्रमण कर दिया।

सन् १९३१ और '३२ के कठिन वर्षों में जब सजग लेखकों का दमन खूब ज़ोर-शोर से हो रहा था और जब मंचूरिया पर आक्रमण हो रहा था और शंघाई के लिए युद्ध जारी था, साहित्य में वामपक्षी आन्दोलन के इर्द-गिर्द अनेक लेखक जमा होने लगे थे। लू सुन द्वारा सम्पादित 'नये अंकुर' और तिंग लिंग द्वारा सम्पादित 'ध्रुव तारा' जैसी पत्रिकाएँ यत्र-तत्र से निकलने लगी थीं और उन्हें कुमिन्तांग की स्पेशल पुलिस के दमन-चक्र का बार-बार शिकार होना पड़ता था। लेखकों को पुलिस की नज़रों से छिपकर रहने को विवश होना पड़ा और अपनी सरगर्मियों को जारी रखने के लिए गुप्त उपनामों का प्रयोग करना पड़ा।

दमन ने इस आन्दोलन की शक्ति को ही प्रमाणित किया। कठिनाइयों का सामना करते हुए और अरक्षित जीवन बिताते हुए नये साहित्यिक आन्दोलन के वफ़ादार लेखकों ने अपनी सच्ची लगन और योग्यता का

समुचित परिचय दिया। अनेक लेखकों ने ऐसी कृतियों की रचना की जो केवल उच्च कोटि की ही नहीं थीं, बल्कि जिनमें समाज की वास्तविक परिस्थितियों की यथार्थ, विवेचनात्मक तस्वीर तो थी ही, साथ ही श्रमजीवी किसान और मजदूर के प्रति सच्ची हार्दिक सहानुभूति भी थी। साम्यवाद की विजय ने इन लेखकों के विचारों की सच्चाई प्रमाणित कर दी है। नये यथार्थवादी आन्दोलन के अग्रणी माओ तुन और तिग-लिंग थे। और दूसरे लेखक जिनकी कृतियाँ इन साहित्यकारों के समकक्ष रखी जा सकती हैं, उनमें चाँग तीन-ई, लाओ शी, शा तिंग, स्याओ चिन और उनकी पत्नी, स्याओ हुँग, वू-त्सू स्याँग, येह तूजू, ऐ वू और वाम-पक्षी नाटककार तीन-हान, हुंग शेन और त्साओ यू (जो इस आन्दोलन में बाद में शामिल हुये, किन्तु जिनकी युगान्तकारी प्रतिभा का परिचय उनके १९३६ में प्रकाशित नाटक 'तूफ़ान' में मिलता है) हैं। रचनाशील प्रतिभा के लेखकों में से केवल एक ही इस आन्दोलन से बाहर रहे, यद्यपि उनकी सहानुभूति इसके साथ थी। उनका नाम है पा चिन। उनकी प्रवृत्ति अराजकतावादी है, जिस से उनकी अभिव्यक्ति अधिक युगानुकूल रही।

उन्होंने अपने सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'परिवार' में (सन् १९३६) कन्फ्यूशियस की रूढ़िवादी मान्यताओं पर आधारित एक परिवार के ह्रास का अविस्मरणीय चित्र खींचा है, जिसे त्साओ यू ने नाटक का रूप भी दे दिया है।

वामपक्ष के इन प्रतिभाशाली लेखकों के मुकाबले में 'राष्ट्रीय साहित्य' के नाम पर कुमिन्तांग ने प्रतिक्रियावादी लेखकों को अपने हित के लिए संगठित करना चाहा। लेकिन सब कोशिशें बुरी तरह असफल हुईं। इस गुट की पत्रिकाओं 'मासिक-साहित्य' और 'अग्रगामी' में देश का कोई भी यशस्वी लेखक सहयोग न देता था। इससे सिद्ध है कि जन-क्रान्ति के दौर में चीनी जनता की आत्मा को नागपाश में बाँधने के सभी सरकारी प्रयत्न बेकार गये।

लू सुन के शब्दों में 'तीसरी कोटि के लेखकों' का भविष्य अन्धकार में था। वे व्यक्तिगत स्वच्छन्दता के प्रचारक तथा निष्पक्षता का ढोंग रचने वाले लोग थे। 'हास्यरस के आन्दोलन' की तरह व्यक्तिवादी आन्दोलन भी साहित्य में निर्जीव हो कर ही रह गया। 'हास्यरस आन्दोलन' के नेता लिन यू तांग की पत्रिका 'रंगरेलियाँ' समय की धारा के विरुद्ध पूँजीवादी प्रयत्न होने के कारण बुरी तरह असफल हुई। युग का तक़ाज़ा यह था कि मनुष्य अपने आदर्शों के लिये अपने प्राणों की बलि दें।

'वामपक्षी लेखक-संघ' के विरुद्ध सरकार ने आतंकवादी ढंग से काम लिया। अनेकों तरुण लेखकों को गिरफ्तार किया गया। बीसियों को फाँसी की सज़ा हुई और कितने ही भाग कर साम्यवादियों द्वारा अधिकृत प्रदेश येनान में जा बसे। यह बात सन् १९३४—३५ के प्रसिद्ध 'महा-अभियान' के समय की है। वहाँ पहुँचकर इन लेखकों ने किसान-मज़दूरों और जनता की क्रान्तिकारी सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर गुरिल्ला युद्ध में सक्रिय भाग लिया और अनेकों मुसीबतें झेलीं।

जापान विरोधी युद्ध के बीच जापानियों के अधिकृत प्रदेश में साहित्यिक प्रगति शून्य के बराबर थी। कुमिन्तांग सरकार के तथाकथित 'स्वतन्त्र चीन' में भी नयी प्रतिभाओं का जन्म नहीं हुआ, यद्यपि पुराने लेखकों में कई बड़े लेखक युद्ध-जनित परिस्थिति का चित्रण करते रहे। यहाँ तक कि 'संयुक्त मोर्चे' के कारण वामपक्षी लेखकों को भी थोड़ा-बहुत विचार स्वातन्त्र्य मिल गया। जापान-विरोधी युद्ध के प्रारम्भिक दौर में माओ तुन का उपन्यास 'ऊसर' इस युग की उत्कृष्ट रचना है। लेखक रूस-चीन मैत्री का उत्साही समर्थक था। लाओ-शी के उपन्यास 'चार पीढ़ियाँ' में जापानी कब्जे में पीपिंग नगर की सिसकती हुई चीनी जनता का करुण चित्रण है। (लाओ-शी ने १९३८ में युद्ध-विरोधी राष्ट्रीय लेखक संघ की स्थापना की। बाद में वह इस संस्था का प्रधान चुना गया।) पा-चिन के तीन उपन्यास 'परिवार' 'वसन्त' और 'पतझड़' लम्बी और चिरस्थायी कृतियाँ हैं।

आधुनिक चीन के वामपक्षी लेखक आन्दोलन के सम्बन्ध में हम बहुत कुछ लिख चुके हैं। मतलब यह कि चीन के अधिकांश लेखकों का विश्वास है कि राष्ट्रीय उन्नति के लिये सर्वहारा क्रान्ति अनिवार्य है। साम्यवाद की राजनैतिक विजय से पूर्व ही साहित्य के क्षेत्र में साम्यवादी सिद्धान्त सम्पूर्ण रूप से स्थापित हो चुके थे। माओ-त्से-तुंग और कम्युनिष्ट पार्टी के नेतृत्व में साम्यवाद को व्यवहारिक रूप दिया गया।

गृह-युद्ध की समाप्ति पर लेखकों के मतभेद भी दूर हो गए हैं। तमाम लेखक देश-प्रेम के सुदृढ़ सूत्र में बंधे हैं। केन्द्रीय जन-सरकार की स्थापना से तीन महीने पहले १९४९ में 'अखिल चीन लेखक तथा कलाकार सम्मेलन हुआ, जिसने इस देशव्यापी एकता की नींव डाली। परिणामस्वरूप एक नये आशावाद का जन्म हुआ। निराशावाद, अतीत की स्मृति मात्र बन कर रह गया है।

पुराने लेखकों में से लाओ-शी ने मार्क्सवादी विचारधारा की विजय के लिये अपना लेखन अर्पित किया। कुछ काल तक विदेशों में प्रवास करने के बाद १९५० में वे वापस लौटे। तब से उन्होंने 'यह मेरी जीवनी' नाम का एक छोटा उपन्यास लिखा, जिसका नायक एक पुलिसमैन है और फैङ्ग चेन-चू और "अजगर की मूछें" नामक दो नाटक लिखे हैं जिनका दृष्टिकोण मूलतः प्रोलेतारियन है। "अजगर की मूछें" नाम से वर्तमान जनवादी सरकार ने राजधानी को सुन्दर बनाने और मजदूरों के रहन-सहन की परिस्थितियों को उन्नत करने की दृष्टि से नगर के गंदे पानी के निकास के लिये नालियों का जाल बिछाया है। यह बात कि लाओ-शी एक नालियों का निर्माण करने वाले मजदूरों में से नायक और नायिकाएँ चुन कर केवल एक हृदय-द्रावक और नाटकीय, बल्कि उनके संघर्ष की उत्प्रेरक कहानी का निर्माण कर सकते हैं। उनकी प्रतिभा के विकास का सुबूत है 'चाओ-त्सू-युऐह,' 'दो माताएँ' और 'बिल्लियों का नगर' आदि पुस्तकों के व्यंग्य और विद्रूप से चलकर वह अब 'लो-तो-सियाङ्ग-जू (रिक्शावाला लड़का) से होते हुए वर्तमान व्यापक

सर्वहारा दृष्टिकोण तक आ पहुँचे हैं। उनकी तमाम कृतियों में एक जन्मजात कलाकार की लेखनी का स्पर्श है। जिनका प्रभाव उनके विशद ज्ञान और पीकिंग के मुहावरों के प्रयोग से और भी अधिक बढ़ गया है।

लेकिन उन लेखकों का क्या हुआ जिन्होंने श्रमिक-वर्ग में जन्म लिया है, और जो साम्यवादी चीन में ऐसे समय में अपनी प्रतिभाओं का विकास कर रहे हैं, जब वर्ग संघर्ष अविराम जारी है ? क्या उनसे भी एक अच्छी फसल पैदा होने की आशा है ? सन् १९३७-४५ के जापान विरोधी युद्ध और सन् १९४७-४९ के गृहयुद्ध के दौर में सर्वहारा साहित्य का बीजारोपण हुआ। सन् १९४२ में येनान में हुए साहित्यिक सम्मेलन में माओ-सी-तुँग ने भी व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी ली थी। चीन के सारे लेखकों ने इकट्ठे होकर इस बात का निश्चय किया था कि भविष्य में वे जन साधारण की भाषा में साहित्य रचेंगे जिसका अर्थ यह है कि वे जनता के साथ स्वयं भी पाठशालाओं में पढ़ने जाएँगे क्योंकि चीन में पढ़े-लिखे लोगों की बातचीत की शैली दुर्बोध होती है। जनभाषा के मुक़ाबले में विद्यार्थी और अध्यापक सभी इस पाप के भागी हैं। इस सम्मेलन में यह भी तय हुआ था कि यथासम्भव साहित्य के लोकप्रिय रूप ही अपनाये जायें।

इस स्वस्थ ठोस ज़मीन पर उतर आने की नीति ने प्राणवान साहित्य के निर्माण में योग दिया। विशेषतः नाटक ने एक नये रूपविधान का विकास किया। जनसाधारण में सामयिक विषय की किसी कहानी का उद्घाटन करने के लिये, संगीत-वाद्य के साथ पद्यमय वार्तालाप को लययुत् ढंग से उपस्थित करने की प्रथा लोकप्रिय थी। नाटक ने उसे ही अपनाया। आधुनिक कथानक का निर्माण करने के आधुनिक विचारों को प्राचीन कहानी सुनाने वाले की कला में गुम्फित कर दिया गया है। इससे कहानी और भी रुचिकर हो जाती है। क्योंकि प्राचीन यूनानी नाटकों की भाँति इनका आधार भी गीतिकाव्य था। इन नाटकों में भी अनेकों पात्र भाग लेते हैं। इनमें 'सफ़ेद बालों वाली लड़की' शायद

सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसका प्रारम्भ पुराने समय में ग़रीबों के दारुण शोषण और दमन से होता है। अन्त में जनता की मुक्ति और विजय होती है। इस सरल और नये कलारूप की प्रचार-शक्ति अतुलनीय है। साथ ही इसके दृश्य अविस्मरणीय होते हैं क्योंकि यह सीधे दर्शकों के गहनतम भावों पर जाकर चोट करती है।

ऐसे नाटकों की रचना के लिए यह ज़रूरी है कि नाटक-मंडली के विभिन्न सदस्य इकट्ठे मिलकर काम करें। इसमें किसी के लिए व्यक्तिगत महत्व पाना संभव नहीं। यही कारण है कि ऐसी रचनाएँ पारस्परिक सहयोग के उच्चादर्शों का प्रतिबिम्ब होती हैं।

इसी सिलसिले में साक्षरता आन्दोलन की चर्चा भी प्रासंगिक होगी। साक्षरता-आन्दोलन बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। देहातों में बड़ी संख्या में पाठशालाएँ खोली जा रही हैं। शहरों में भी मज़दूर यूनियनों द्वारा सायंकाल की पाठशालाओं का आयोजन किया गया है। इन पाठशालाओं में मज़दूरों की इतनी भीड़ रहती है कि तिल रखने को जगह नहीं मिलती। फ़सल काटने के बाद के फ़ुर्सत के समय में किसान लोग शरद् पाठ-शालाओं में भरती होते हैं। आशा है कि नई पीढ़ी आने तक चीन से निरक्षरता का आमूल नाश हो जायेगा। लेकिन जब तक निरक्षरता दूर न हो तब तक अगर अपढ़ जनता सामन्ती शोषण के ज़माने की ही तरह मूक बनी रहे तो देश भी ग़रीब ही बना रहेगा। इसलिए किसान और मज़दूर सभाओं में स्वतन्त्र रूप से अपने विचार प्रकट करने को प्रोत्साहन दिया जाता है बल्कि अगर किसी के पास सुनाने लायक़ कोई दिलचस्प कहानी हो तो उसे लिख लेने के लिये कोई न कोई साहित्यिक कार्यकर्ता ज़रूर मिल जाता है जो उस कहानी को अपने संगठन की ओर से प्रका-शित करवाता है। इस तरह सच्चे सर्वहारा साहित्य की सामग्री लगातार प्राप्त होती जाती है।

साम्यवाद केवल ऐसे व्यक्तिवाद का दमन करता है जो लोकमंगल के विरुद्ध होता है, लेकिन श्रेष्ठ प्रतिभा को तो हमेशा पुरस्कृत करता है।

सर्वहारा वर्ग के लेखकों में चाओ-शु-ली की शक्तिशाली प्रतिभा को अब सब लोग मानने लगे हैं। उसने देश के सम्मुख उठने वाली समस्याओं को लेकर उन्हें कलात्मक अभिव्यक्ति दी।

उनकी 'स्याओ-एर्र-ही का विवाह' नाम की कहानी सन् १९४३ में प्रकाशित हुई थी और तुरन्त ही उसे अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। उसके पश्चात 'ली यू-त्साई के गीत' कहानी पाठकों के सामने आई—जिसमें कृषि सुधार की महत्वपूर्ण समस्या के आशाजनक पहलुओं को चित्रित किया गया है। जब कि, "ली के गाँव में होने वाले परिवर्तन' में इस समस्या का अन्धकारमय पक्ष दिखाया गया है। इन तीन लम्बी कहानियों के अतिरिक्त 'जुलाहे की खड्डी' और 'रजिस्ट्रेशन' उनकी दो और महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं, जो सर्वहारा साहित्य के निर्माण में चाओ शू ली के योगदान की सूचक हैं।

प्रसिद्ध साम्यवादी आलोचक चाओ यांग ने चाओ शू-ली की रचनाओं की विशेषताएँ इस प्रकार बतायी हैं: "कहानियों के सभी पात्र वास्तविक जीवन से लिए जाते हैं। वे सब ऐसे पात्र जीवन को उन्नत बनाने के संघर्ष में सक्रिय भाग लेने वाले होते हैं। इसी संघर्ष के माध्यम से उनके व्यक्तित्वों का विकास और पाठक के निकट उद्घाटन होता है। उनके सब से प्रिय पात्र प्रगतिशील किसान और कार्यकर्त्ता होते हैं। ये पात्र या चरित्र विधेयात्मक होते हैं, निषेधात्मक नहीं। किन्तु फिर उनका आदर्शीकरण नहीं किया जाता कि वास्तव में उनके होने में विश्वास ही न हो। चाओ शू-ली की कृतियों में ग्रामीण जनता की सहज बुद्धि और क्रान्तिकारी आशावाद झलकता है। इसके विपरीत उनके खलनायक प्रायः ज़मींदार वर्ग के प्रतिनिधि होते हैं। जिनका समूचा जीवन किसान-जनता की लूट-खसोट पर ही आश्रित है। चाओ शू-ली ने जहालत और अन्धविश्वास के मारे किसानों का भी चित्रण किया है, लेकिन वे निरीह और असामाजिक प्राणी नहीं होते। सामाजिक व्यवस्था को बदल कर वे भी समाज के उपयोगी सदस्य बन

सकते हैं। लेखक के पात्र सजीव तथा स्वतन्त्र होते हैं। उनमें से कोई भी किसान, मजदूर या सैनिक की पोशाक में सामने नहीं आता, बल्कि वे निम्न-मध्यवर्ग के प्राणी का चेहरा लेकर आते हैं। चाओ शू-ली अपने निर्माण किये हुए पात्रों के साथ गहरी आत्मीयता का परिचय देते हैं। वर्ग-संघर्ष में तटस्थ रहने की बजाय वह किसान-मजदूरों का साथ देते हैं। उनकी शैली स्वाभाविक, सरल और स्पष्ट है। तड़क-भड़क और बनावटी कोमलता से उन्हें चिढ़ है। वे जनता की भाषा में लिखते हैं। भाषा को सरल और सुबोध बनाने के लिए वे स्थानीय बोलियों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं। इस तरह चाओ शू-ली ने प्राचीन साहित्य के आधार पर चीनी भाषा का एक नया राष्ट्रीय रूप-संस्कार किया है।"

इसके अतिरिक्त साम्यवादी पत्र-पत्रिकाओं में लिखने वाले लेखकों के नाम भी महत्वपूर्ण हैं। इनमें कू-यू, चू एर्र-फू, ल्यू पाई-यू, सुन ली, हुँग ल्यू, शाओ जू-नान, हुआ शान, च्याओ फू-चुन, कू ली-काओ, हान फेंग, हान सी ल्यांग और कई अन्य लेखकों के नाम प्रमुख हैं। चूँकि इन लेखकों की शैली सच्चे ब्यौरों पर निर्भर करती है, इसलिए रिपोर्ताज की शैली से मिलती-जुलती है। लेकिन समग्र रूप से देखने पर मालूम होगा कि वे नये संयुक्त जनवादी चीन के संघर्ष का यथार्थवादी चित्र उपस्थित करते हैं।

यहां पर चेन तेन-को का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है। जनवादी मुक्ति-सेना में भरती होने से पहले यह लेखक निपट निरक्षर था। 'बहन तू' और 'जिन्दा आदमियों की खाई' नाम की कहानियों में लेखक ने कहानी के रूप-तंत्र को एक ओर रखकर पाठक के सामने लोमहर्षणकारी और सच्ची घटनाओं को उपस्थित किया है। पाठक को लगता है मानो वह सारा दृश्य अपनी आँखों से देख रहा है।

साहित्य की मौलिक रचनाओं और अनुवादों में एक होड़-सी लग गई थी। इस शताब्दी के प्रारम्भ में, जब चीन में अन्तर्राष्ट्रीय चेतना का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय समूचे विश्व के ज्ञान और साहित्य को जानने